

२१^{११} आशय १२३

पत्र

आशय

पत्र

पहिला खण्ड

गरमीकी पहचान

सरदीकी पहचान

जरीकी पहचान

खुशकी पहचान

दूसरा खण्ड

दवा और खानेके बिषयेमें

अध्याय पहिला

बिगाड पित्तका पांच प्रकारका
रहे है।बनी हुई दवाई जो पित्तको
फायदा करती है।कफका बिगाड भी पांच प्रकार
का है।

दवाये जो कफको अच्छा करे।

बनी हुई दवाई जो कफको लिये
पिजाती है।

१ बिगाड सौदाका भी प्रकार है ६

१ वृद्ध दवाये जो सौदाको अच्छा ६
करती है।

२ बनी हुई दवाये सौदाको लिये। ६

२ वे उपाय जिन्में सिवा परिवर्तने
पिलानेके दवा बाहर लगाने जो
रसूयने आदिसे वदनमें असर करे ७

३ दूसरा अध्याय

फस्के बिषयमें ११

तीसरा अध्याय

४ सींगी और जोकके बिषयमें १५

चौथा अध्याय

५ मुज्जिराके बिषयमें १६

पांचवा अध्याय

६ जुल्लाब और मुल्यनके बि. १७

६ पित्तके जुल्लाबकी दवाये २०

जुल्लाब पित्तके निकालनेके लिये

६ कफके जुल्लाबकी दवाये २०

६ जुल्लाबकी दवाये २०

दूसरा जुल्लाब बलगमका २२

फंकीबलगमकेजुल्लाबकी २२
दवायेजोसौदाकोनिकालती २३
है।

जुल्लाबिसौदाका २२
सौदाकादूसराजुल्लाब। २३

छठाअध्याय

कैलानेवालीओषधियोंकेवि २५
षयमें।

वहदवायेजोकैमेंपित्तकोनि २६
कालतीहै।

कैमेंबलगमकोनिकालनेवा २७
लीओषधयइहैं।

ओषधेंजोसौदाकोकैमेंनिका २७
लतीहैं।

ओषधेंजोपित्तऔरबलगमको २७
कैमेंनिकालतीहैं।

ओषधेंजोपित्तबलगमऔरसौ २७
दाकोकैमेंनिकालतीहैं।

सातवाँअध्याय

उनओषधोंकेवर्णनमेंजोमवा २८
दकोपैशाबकीराइसेनिकाल

तीहैं।
पैशाबलानेवालीदेवाइये
ठरडीहैं।

गरमओषधेंयइहैं। २८
मौतदिलअर्थातबहओषधेंनि २९

नमेंसरदीगरमीबराबरहैं।
मौतदिलओषधेंजोपैशाबच २९

हुतलासीहै..... २९

ओषधजोबन्दहेजुकोजारी २९
करे।

जोशौदाजोहेजुकोजारीकरेओ ३०
रपुरुषकाबीर्यजोठरडसेरुक ३०

रहाहोउसेनिकालदे।
आठवाँअध्याय

उनओषधोंकेवर्णनमेंजोदिल ३०
औरसिरऔरजिगरऔरमेदेको ३०

पुष्टकरतीहैं।
तीसराखंड

रोगोंऔरबनकेउपायकेवर्ण ३१
नमें।

पहिलाअध्याय

आशय	पत्र	आशय	पत्र
सिरकेरोगोंकेवर्णनमें	३२	१८ पा. तमहुदकेविषयमें।	४६
१ पा सिरकेदर्दकेविषयमें।	३२	१९ पा. कजाजकेवर्णनमें।	४७
२ पा. सरसामकेविषयमें।	३४	२० पा. राशेकेवर्णनमें।	४६
३ पा. जूमूदकेविषयमें।	३६	२१ पा. इस्तलाजकेविषयमें।	४६
४ पा. सक्तेकेविषयमें।	३६	२२ पा. लवीकेविषयमें।	४७
५ पा. सबातकेविषयमें।	३७	२३ पा. हिसकेवर्णनमें।	४७
६ पा. सहरकेविषयमें।	३८	२४ पा. अ सार्बकेवर्णनमें।	४८
७ पा. सबातसुहरीऔरसहर सबातीकेविषयमें।	३८	२५ पा. जुकामऔरनजलेकेवि षयमें।	४८
८ पा. काबूसकेवर्णनमें	३८		
९ पा. सृगीकेविषयमें	४०	दूसराअध्याय	
१० पा. मालीखोलियाकेवर्ण नमें।	४१	आंरवकेरोगोंकेवर्णनमें।	४६
११ पा. जुनूतकेविषयमें	४१	१ पा. रसदअर्थात् आंरवअले केविषयमें।	५०
१२ पा. सदर औरदब्बारकेवि षयमें।	४२	२ पा. तुरफाकेवर्णनमें।	५१
१३ पा. निसयानअर्थात्मूल जानेकेरोगकेवर्णनमें।	४२	३ पा. जुफराअर्थात्नारवूनेके विषयमें।	५२
१४ पा. फालिजकेविषयमें।	४३	४ पा. आंरवमेंजालापडजाने केविषयमें।	५२
१५ पा. खदरकेविषयमें।	४३	५ पा. सबलकेवर्णनमें।	५२
१६ पा. लकनेकेविषयमें।	४४	६ पा. मुलतहिमाकेफूलजा नेकेविषयमें।	५३
१७ पा. तशान्जकेविषयमें।	४५	७ पा. मुलतहिमाकोरवुजली	

आशय	पत्र	आशय	पत्र
केवर्णनमें।	५४	केवर्णनमें।	६०
८ पा. सोसतुलसुलतहिमा केवर्णनमें।	५४	२१ पा. करनियॉपगफुन्सीहो जानेकेविषयमें।	६०
९ पा. दोकतुलसुलतहिमा केविषयमें।	५४	२२ पा. मोरसिरचकेवर्णनमें।	६०
१० पा. दमभाअर्थातआँसूब हनेकेविषयमें।	५५	२३ पा. भेंगाहोनेके विषयमें।	६१
११ पा. हिरकतुलभैनअर्थातआँ खमेंजलनहोनेकेविषयमें।	५५	२४ पा. इततिसाभौरइन्तशार केवर्णनमें।	६२
१२ पा. कुजाअर्थात आँखमेंकि रीझसुकेपड़जानेकेविषयमें।	५५	२५ पा. अनवीयाकेछेदकेस काड़ाहोजानेकेविषयमें।	६३
१३ पा. आँखपरचोटलगनेके विषयमें।	५६	२६ पा. ग्वयालातकेवर्णनमें।	६३
१४ पा. आँखकेघावके विषय में।	५७	२७ पा. मोतिर्पिकन्दके विषय में।	६४
१५ पा. कमनाकेवर्णनमें।	५८	२८ पा. असवेमेंसुदा पड़जा नेकेविषयमें।	६६
१६ पा. रतोदीकेविषयमें।	५८	२९ पा. आँखकेकंजाहोजाने विषयमें।	६६
१७ पा. दिनोंदीके विषयमें।	५९	३० पा. जोफवसरअर्थातकम दृष्टीकेविषयमें।	६६
१८ पा. सुदाहिदकडा औरग्रा कीकाचप्रमकेविषयमें।	५९	३१ पा. बतलानवसारतकेवि षयमें।	६७
१९ पा. हनुजुलभैनके विषय में।	५९	३२ पा. च्चुन्धाहोनेके विषयमें।	६७
२० पा. करनियॉके उभरगने	५९	३३ पा. कुभूरअर्थातदृष्टिकेथ काजानेकेवर्णनमें।	६८
		३४ पा. आँखकेदुबलाहोनेके	

आशय	पत्र	आशय	पत्र
विषयमें।	६८	२ पा. पलकोंके सफ़ेद हो जानेके विषयमें।	७३
३ पा. बुगजुलमैनके वर्णन में।	६८	१० पा. पलकमें खुजली और फुंसियां होनेके विषयमें।	७३
आँखके मिज़ाज पहिचाननेकी रीति	६९	११ पा. चरदाके विषयमें।	७३
तीसरा अध्याय		१२ पा. पलकके मोटे और कड़े हो जानेके विषयमें।	७३
पपोटे और पलकके रोगोंके विषयमें।		१३ पा. पलकके मोटे और लाल हो जानेके विषयमें।	७४
१ पा. क्मनाके विषयमें	६९	१४ पा. पलकोंमें जूयेपडनेके विषयमें।	७४
२ पा. पपोटेके टीला हो जानेके विषयमें।	६९	१५ पा. गुहांजनीके विषयमें।	७५
३ पा. पलकोंके आपसमें टिसट जानेके विषयमें।	७०	१६ पा. तोसतुल अज्ञफानके विषयमें।	७५
४ पा. पलकके छोटे हो जानेके विषयमें।	७०	१७ पा. तहज्जुरजफनके विषयमें।	७५
५ पा. शिसनाकके विषयमें।	७१	१८ पा. पलकमें घाव पडनेके विषयमें।	७६
६ पा. पपोटेके ऊपर गाँठ पड जानेके विषयमें।	७१	१९ पा. पपोटेके फूल जानेके विषयमें।	७६
७ पा. शेरमुनकलिव और शेरजायदके विषयमें।	७१	२० पा. पपोटेमें मस्से पड जानेके विषयमें।	७६
८ पा. पलकोंके रुड जानेके विषयमें।	७२	२१ पा. पपोटोंपर पिती उठल	

	आशय	पत्र	आशय	पत्र	
	नेके विषयमें।	७६	३	पा. कानके छावके विषयमें।	८१
२२	पा. नमलमपलकके विषयमें।	७७	४	पा. तरश और चक्र और समके विषयमें।	८२
२३	पा. पलक परसे भूसी उड़नेके विषयमें।	७७	५	पा. किसी वस्तुके कानमें पड जानेके विषयमें।	८२
२४	पा. सुलाके विषयमें।	७७	६	पा. तिनीन और दवीके विषयमें।	८३
२५	पा. चोटसे पयोटे कान नीला या हरा हो जानेके विषयमें।	७८	७	पा. कानसे रुधिर निकलनेके विषयमें।	८३
२६	पा. कौयेके पासना ककी और नासूर हो जानेके विषयमें।	७८	८	पा. कानके टूट जानेके विषयमें।	८३
२७	पा. कौये और पलकमें विना जलन और दानोंके खुजली होनेके विषयमें।	७८	९	पा. जडसे कानके उरबड जानेके विषयमें।	८४
२८	पा. कौयेमें नाककी ओर अधिकांश हो जानेके विषयमें।	७९	१०	पा. कानकी के विषयमें।	८४
	चौथा अध्याय		११	पा. कानमें खुजली होनेके विषयमें।	८४
	कानके रोगोंके विषयमें		१२	पा. कानमें चीखकी सीगा काज मालूम होनी।	८४
१	पा. कानके दर्दके विषयमें।	७९		पांचवां अध्याय	
२	पा. कानकी सूजनके विषयमें।	८०	१	पा. नाकके रोगोंके विषयमें।	८५
			१	पा. स्वप्नके विषयमें।	८५

आशय	पत्र	आशय	पत्र
२ पा.सूधनेकीइन्दीबिगड़ जानेकेविषयमें।	८५	३ पा.जीभकाबदलनाऔर निकलआना।	६९
३ पा.नाकमेंबुरामांसउत्पन्न होनेकेविषयमें।	८६	४ जीभकेटीलेहो जानेके विषयमें।	६९
४ पा.नाककेघाबकेविषय में।	८७	५ पा.जीभकेफटजानेकेवि षयमें।	६९
५ पा.नाककीफुंसियोंके विषयमें।	८७	६ पा.जीभकीरबुझीकेवि षयमें।	६२
६ पा.नाककीरकेविषयमें।		७ पा.जीभकीजलनके बर्तनमें।	६२
७ पा.नाकमेंबुरीगंधआना।	८८	८ पा.जीभमेंखुजलीहोनेके विषयमें।	६३
८ पा.नाककुचलजानेकेवि षयमें।	८८	९ पा.जिफदउललिसानके विषयमें।	६३
९ पा.बहुतसीईकेंआना।	८९	१० पा.फिसादजोंककेविष यमें।	६४
१० पा.नथनोंकासुस्वाहना।	८९	११ पा.बतलानजोंकमें।	६४
११ पा.नाककेभीतरखुजली होनेकेविषयमें।	८९	१२ पा.तकशशरजवानके विषयमें।	६४
बठवाँ अध्याय।		१३ पा.मुरखकेभीतरफुंसियों होनेकेविषयमें।	६५
सुंहऔरजीभकेरोगोंकेविषय में।		१४ पा.सुंहआनेकेविषयमें।	६५
१ पा.जीभकीसूजनकेबर्ण नमें।	९०	१५ पा.आण्डिलतुलपामके	६५
२ पा.जीभकाबोरलहोना।	९१		

आशय	पत्र	आशय	पत्र
विषयमें।		में।	
१६ पा. जागते और सोतेमें मुंहसे बहुत सी सल चहना	६६	७ पा. होठ पर फुंसियाँ होना नेके विषयमें।	६६
१७ पा. मुरबसे दुर्गंध आनेके विषयमें।	६६	८ पा. होठमें घाब पड़के पीप चहना।	६६
१८ पा. तालूकी सूजनके विषय में।	६७	९ पा. होठमें घाब पड़के फल तेजाना।	६६
सातवाँ अध्याय		आठवाँ अध्याय	
होठोंके रोगोंके विषयमें।		दाँतों और मसूटोंके रोगोंमें	
१ पा. होठोंपर सफेदी होजाने के विषयमें।	६७	१ पा. दाँतोंकी पीडाके विषय में।	१००
२ पा. होठकी स्फुरकी और फट ने और छिल्लके उतरनेके वि षयमें।	६७	२ पा. दाँतोंके कुन्द होजाने के विषयमें।	१०१
३ पा. होठके फाड़कनेके विषय में।	६८	३ पा. दाँतोंकी गाबजाते रहने के विषयमें।	१०२
४ पा. होठके छोटा होजाने और सुकडजानेके विषयमें।	६८	४ पा. दाँतोंके टूटने और स्वे ग्वले होजानेके विषयमें।	१०२
५ पा. नीचेके होठपर अधिक मांस उत्पन्न होजानेके विषय में।	६८	५ पा. हज़रके विषयमें।	१०२
६ पा. होठकी सूजनके विषयमें।	६८	६ पा. दाँतके रंग बदलजाने के विषयमें।	१०३
		७ पा. दाँतोंके छिल्लनेके वि षयमें।	१०३

आशय	पत्र	आशय	पत्र
८ पा. दांतकालम्बा और मोटा हो जाना।	१०४	२ यमें।	१०७
९ पा. दांतों में खुजली होने के विषयमें।	१०४	३ पा. कव्वेके लटकाने के विषयमें।	१०७
१० पा. सोते में दांत रगड़ने के विषयमें।	१०५	४ पा. ग्लुन्नाक के विषयमें।	१०८
११ पा. मसूटों की सूजन के विषयमें।	१०५	५ पा. गले और मरी और कुसवैरैया में फुंसियां हो जाने के विषयमें।	११०
१२ पा. मसूटों से रुधिर बहने के विषयमें।	१०५	६ पा. गले में जोंक चिमटा होने के विषयमें।	१११
१३ पा. मसूटों में घाव और नाभुर हो जाने के विषयमें।	१०६	७ पा. मरी के भिच जाने के विषयमें।	११२
१४ पा. दांतों की जड़ में कमजोरी होने से दांत हिलने के विषयमें।	१०६	८ पा. नरखरे के टीले हो जाने के विषयमें।	११२
१५ पा. मसूटों पर बुगामांस उत्पन्न होने के विषयमें।	१०६	९ पा. मरी में खुजली होने के विषयमें।	११३
नवम अध्याय ८		१० पा. कुसवेरैया के फुडकने और कांपने के विषयमें।	११३
गले और कव्वे और मरी और कुसवैरैया के रोगों के बर्णनमें।		११ पा. डूबे हुये के उपायमें।	११३
१ पा. कव्वे की सूजन के विषय		१२ पा. गलाघोंटे हुये और फाँसी दिये हुये का उपाय।	११४

क्र.	आशय	पत्र	आशय	पत्र
१३	पा. वसरउलचलाके विषयमें।	११६	जोड़ोंकी सृजनोके विषयमें।	१२५
१४	पा. मरीकी सृजन के विषयमें।	११६	पा. छातीके आसपासपी	१२५
१५	पा. मरीमें घाव पड़जानेके विषयमें।	११६	परुकरहनेके विषयमें।	१२५
१६	पा. आवाजबन्द होजाने औरपड़जानेके विषयमें।	११६	पा. छातीका ठंडयाजाना औरजकड़जाना।	१२५
	दसवाँ अध्याय		न्यारहवाँ अध्याय	
	छाती औरफेंफड़ेके रोगोंके विषयमें।		दिलके रोगोंके विषयमें।	
१	पा. दसके वर्णनमें।	११६	१ पा. दिलके मिजाजके विषयमें।	१२५
२	पा. खांसीके विषयमें।	११७	२ पा. स्वफूकान अर्थात्दिलके खबरानेके विषयमें।	१२५
३	पा. मुखसे रुधिर निकलनेके विषयमें।	१२०	३ पा. सूच्छीके विषयमें।	१२३
४	पा. मुखसे पीव निकलनेके विषयमें।	१२२	४ पा. दिलके दोनोंकानोंके सृजनेके विषयमें।	१२३
५	पा. फेंफड़ेकी सृजनके विषयमें।	१२३	५ पा. दिलसे धूँगाउठनेके विषयमें।	१२५
६	पा. सिलके विषयमें।	१२६	६ पा. जगतलकण्डके विषयमें।	१२५
७	पा. छातीके परदों औरमिल्लियों औरबंधनों औरज्जलों औरउसके आसपासके	१२७	७ पा. तक्तप्रहरकालके विषयमें।	१२५
			८ पा. कजाफुलकण्डके विषयमें।	१२५

आशय	पत्र	आशय	पत्र
पा. दिलके बैठनेके विषयमें।	१३६	औरतुरबमेंके विषयमें।	१४६
पा. दिलपरतरीछाजानेके विषयमें।	१३६	पा. हैजेके विषयमें।	१४६
बारहवाँ अध्याय		पा. भ्रूखके घटजानेयाजोररहनेके विषयमें।	१४७
स्त्रीकी छातीके रोगोंके विषयमें।	१४७	पा. भ्रूखके बिगडजानेके विषयमें।	१४७
पा. दूधकमहोनेके विषयमें।	१४७	पा. भोजनका होका होजानेके विषयमें।	१४७
पा. दूधघटजानेके विषयमें।	१४७	पा. जूजलवकारके विषयमें।	१४८
पा. छातियोंके सूजने औरतलनेके विषयमें।	१४७	पा. भ्रूखकी सहासनहोनेके विषयमें।	१४८
पा. छातीमें दूधजमजानेके विषयमें।	१४७	पा. अधिक प्यास होनेके विषयमें।	१४८
पा. छातीके पिसजानेके विषयमें।	१४८	पा. मेदेकी सूजनके विषयमें।	१४८
तेरहवाँ अध्याय		पा. दुबैलतुलमेदेके विषयमें।	१४९
मेदेके रोगोंके विषयमें ॥		पा. मेदेके घाब और फुंसियोंके विषयमें।	१४९
पा. मेदेके सिजाज बिगडजानेके विषयमें।	१४८	पा. पेट फूलनेके विषयमें।	१४९
पा. पेटकी पीडाके विषयमें।	१४८	पा. डकार जंभाई और अंगुडई अधिक आनेके विषयमें।	१४९
पा. जौफहज्ज और सूपेहज्ज			

आशय	पत्र	आशय	पत्र
१६ पा. बंलटी उवाकी गौरमत	१५१	डाडोजानेके विषयमें।	१६२
ली गौरत कलुवन फस्तके वि		३० पा. पेट चलने के विषय	
१७ पा. उलटी में रुधिर गानेके		में।	१६५
विषयमें।	१६१	३१ पा. मेदेके छोटा होनेके वि	१६६
१८ पा. मेदेमें रुधिर या दूधके			
जमजानेके विषयमें।	१६२	चौधवाँ अध्याय	
१९ पा. अधिक हिचकी गानेके		जिगरके रोगोंके वर्णनमें।	
विषयमें।	१६३	१ पा. जिगरके विगाडके विष	१७०
२० पा. इंकिलाब मेदेके विष		२ पा. जिगरके कमजोर होजा	
यमें।	१६४	नेंय विषयमें।	१७१
२१ पा. कलकुल मेदेके विष		३ पा. जिगरके सुदेके विषयमें	१७३
यमें।	१६४	४ पा. नासारीका सुदेके वि.	१७३
२२ पा. मेदेके फडकनेके वि		५ पा. जिगरके फूलनेके विषय	१७५
षयमें।	१६५	६ पा. जिगरकी पीडाके विषयमें	१७५
२३ पा. बज उलफावादेके विष		७ पा. शिरकाके विषयमें।	१७५
यमें।	१६५	८ पा. जिगरकी सूजनके विषय	
२४ पा. पेटमें जलन होनेके वि		में।	१७५
२५ पा. मेदेके टीला होनेके वि	१६६	९ पा. पेटके पट्टोंकी सूजन	
के विषयमें।		के विषयमें।	१७७
२६ पा. मेदेकी घुत्ता बटके टीला	१६६	१० पा. जिगरके फाड़के विषय	१७८
हो जानेके विषयमें।		११ पा. जिगरकी फुंसियोंके वि.	१७८
२७ पा. मेदेके खिंच जानेके वि	१६७	१२ पा. जिगरके फाडकनेके वि	१७८
२८ पा. मेदेके कड़ा होनेके वि	१६७	१३ पा. जिगरकी पथरीके वि	१७८
२९ पा. मेदेके जपरके पट्टोंके क	१६८		

आशय	पत्र	आशय	पत्र
१४ पा. जिगरके छोटो होनेके विषयमें	१७१	आं तो के रोगोंके विषयमें	
१५ पा. जिगरसे दस्त आनेके विषयमें	१८०	१. पा. जलकुलजमभाके विषयमें	१९६
१६ पा. सूजलकिनीआके विषयमें	१८२	२. पा. आंतोंसे दस्तोंमें रुधिरआनेके विषयमें।	१९७
१७ पा. जलंधरके विषयमें	१८२	३. पा. आंतोंसे पीप आनेके विषयमें।	२००
पन्द्रहवां अध्याय		४. पा. कृंथकरदस्त आनेके विषयमें।	२००
यस्कान और तिल्ली और पित्तेके रोगोंके विषयमें		५. पा. मरोडके विषयमें।	२०२
१. पा. यस्कानके विषयमें।	१८६	६. पा. आंतोंके फूलने और बोलनेके विषयमें।	२०२
२. पा. तिल्लीके विगाडके विषयमें।	१९१	७. पा. कूलजके विषयमें।	२०३
३. पा. तिल्लीकी सूजनके विषयमें।	१९२	८. पा. बिनापीडाके ज्वरजड़नेके विषयमें।	२०५
४. पा. तिल्लीकी सूजनके जानेके विषयमें।	१९३	९. पा. पेटमेंके चुपेपडनेके विषयमें।	२०५
५. पा. तिल्लीकी कमजोरीके विषयमें।	१९४	सत्तरहवां अध्याय	
६. पा. तिल्लीके सुडेके विषयमें।	१९५	नरोगोंके विषयमें जो पैरवानेकी जगह होते हैं।	
७. पा. तिल्लीकी उससूजनके विषयमें जो वायसे हो।	१९५	१. पा. ववासीरके विषयमें।	२०७
८. पा. तिल्लीमें पथरी पडजानेके विषयमें।	१९५	२. पा. वादी ववासीरके विषयमें।	२०८
सोलहवां अध्याय		३. पा. पैरवानेके स्थान पर नासूरहोजानेके विषयमें।	२०९
		४. पा. पैरवानेकी जगह सूजन	

आशय	पत्र	आशय	पत्र
होजानेके विषयमें।	२१०	विषयमें।	१७७
५ पा. पै खानेकी जगह फटनेके विषयमें।	२१०	६ पा. जियावितुसके वि. में	२१५
६ पा. शिरजके टीला होजानेके विषयमें।	२११	१० पा. गुरदेमें पथरी पडनेके वि. में।	२१५
७ पा. आचनिकलनेके वि. में	२११	सूत्रमें रेत आनेके विषय में।	
८ पा. पै खानेकी जगह गडरा घाव होजानेके विषयमें।	२१२	उन्नीसवाँ अध्याय	
९ पा. पै खानेकी जगह खुजली होनेके विषयमें।	२१२	मसानेके रोगोंके विषयमें	
अठारहवाँ अध्याय		१. पा. मसानेकी सूजनके वि.	२१६
गुरदेके रोगोंके विषयमें।	२१२	२. पा. मसानेके घावके वि. में	२२०
१ पा. गुरदेके बिगाडके वि. में	२१३	३. पा. मसानेकी खुजलीके वि.	२२०
२ पा. गुरदेके दुबला होजानेके विषयमें।	२१३	४. पा. मसानेमें रुधिरजमजानेके विषयमें।	२२१
३ पा. गुरदेकी कमजोरीके वि. में	२१४	५. पा. मसानेकी पीडाके वि.	२२१
४ पा. गुरदेमें वायकी पीडा होनेके विषयमें।	२१४	६. पा. मसानेके टलजानेके वि.	२२२
५ पा. गुरदेकी पीडाके विषयमें	२१५	७. पा. मसानेके फूलनेके वि. में	२२३
६ पा. गुरदेकी सूजनके वि. में	२१५	८. पा. मसानेमें पथरी पडनेके विषयमें।	२२३
७ पा. गुरदेके घावके विषयमें	२१६	९. पा. सूत्रमें जलन होनेके वि.	२२४
८ पा. गुरदेमें खुजली होनेके वि.	२१६	१०. पा. सूत्रमें दंड होजानेके वि.	२२५
		११. पा. सूत्रखुलके न होनेके विषयमें।	२२५
		१२. पा. अचानक सूत्रनिकलनेके वि.	२२५

आशय	पत्र	आशय	पत्र
करनेकेविषयमें।	२२८	यअवानकपैरवानोहोजानेकेविषयमें।	२३८
१३ पा.सोतेमेंमूत्रनिकलजानेकेविषयमें।	२२९	१ पा.पुरुषकोविषयंकरनेकीचाहनाउत्पन्नहोनेकेविषयमें।	२३९
१४ पा.मूत्रमेंरुधिरनिकलनेकेविषयमें।	२२९	१० पा.खुसियोंकीसूजनकेविषयमें।	२३९
बीसवां अध्याय		११ पा.खुसियोंकेबदजानेकेविषयमें।	२४०
उत्तरोरोगोंकेविषयमेंजोकेवलपुरुषोंकेहोतेहैं।		१२ पा.लिंगमेंरहसकेमुहकेफाड़कनेकेविषयमें।	२४०
१ पा.विषयकीचाहनाघटनेकेविषयमें।	२३९	१३ पा.खुसियोंकीपीडाकेविषयमें।	२४०
२ पा.वीर्यजलदीनिकलनेकेविषयमें।	२३९	१४ पा.खुसियोंकेछोटाहोजानेकेविषयमें।	२४०
३ पा.विषयकीचाहनाअधिकहोनेकेविषयमें।	२३९	१५ पा.खुसियोंकेचदजानेकेविषयमें।	२४०
४ पा.वीर्यनिकलाकरनेकेविषयमें।	२३९	१६ पा.रोगउभरानेकेविषयमें।	२४०
५ पा.वीर्यकेबदलेरुधिरनिकलनेकेविषयमें।	२३९	१७ पा.ऊपरकीबालदीलीहोजानेकेविषयमें।	२४०
६ पा.सोतेमेंवीर्यनिकलजानेकेविषयमें।	२३९	१८ पा.लिंगआदिकेघावकेविषयमें।	२४०
७ पा.लिंगकेहरसमयजोरकरनेकेविषयमें।	२३९	१९ पा.लिंगकेसूजनकेविषयमें।	२४०
८ पा.वीर्यनिकलनेकेसमय	२३९	२० पा.लिंगआदिकीखुजलीकेविषयमें।	२४०
		२१ पा.लिंगकेफटजानेकेविषयमें।	२४०

आशय	पत्र	आशय	पत्र
२२ पा. लिंगपर और उसके भास		में वंछामरजानेके विषयमें	२५६
पासकडी फुंसियां और मस	४६	५ पा. रुधिरजननेके पीछे नि	२५७
से होजानेके विषयमें।		कलता है उसके रुकरइने	
२३ पा. मूत्रके छिद्र बंद होजाने		के विषयमें।	
के विषयमें।	२४६	६ पा. रिजाके विषयमें।	२५८
२४ पा. लिंगके टेढ़ा होजानेके		७ पा. हैजकी अधिकताके वि	२६०
विषयमें।	२४७	८ पा. रहमके घाव के वि. में	२६१
इसकी सर्वा अध्याय		९ पा. रहमके फाटजानेके वि	२६२
मिश्राक सिफाक और सर्व के		१० पा. रहमकी खुजलीके वि.	२६३
विषयमें।		११ पा. रहमकी बवासीरके वि	२६४
१ पा. कीलके विषयमें	२४८	१२ पा. रहमकी फुंसियोंके वि	२६५
२ पा. पेट और चट्टोंकी फितर		१३ पा. रहमके मसोंके विषय	२६६
के विषयमें।	२४९	१४ पा. रहमके नासूरके विषय	२६७
३ पा. टूंडीके उभरनेके विमें	२५०	१५ पा. रहमसे पानी बहनेके वि	२६८
चाई सर्वा अध्याय		१६ पा. रहमसे बौर्य्य बहनेके	२६९
१ पा. चंद्रा होनेके विषयमें।	२५१	१७ पा. हैज बंद होजानेके वि. में	२७०
२ पा. बहुधा गर्भ गिरनेके वि	२५२	१८ पा. रक्तके विषयमें।	२७१
३ पा. जन्मे में कठिनता होनेके	२५३	१९ पा. रहमके उभरनेके वि.	२७२
४ पा. भशीमाके रुकने और पेट	२५४	२० पा. रहमके गुकपडनेके वि	२७३
		२१ पा. रहमकी सृजनके वि में	२७४
		२२ पा. रहमके दुबले होनेके वि	२७५
		२३ पा. सरतानर रहमके विषय	२७६
		२४ पा. रवतिनाकर रहमके वि.	२७७

क्र.	आशय	पत्र	आशय	पत्र
२५	पा. रहममें पांजी भर जाने के विषयमें	२७२	पा. हुस्मावबाई के विषयमें	२२५
२६	पा. रहममें वायु भर जाने के विषयमें	२७३	पच्चीसवाँ अध्याय	
	तेईसवाँ अध्याय		सूजनो और पुंसियों और ऊनरोगों के	
	पीठ और हाथ और पाँव के रोगों के विषयमें		विषयमें जो शरीर के ऊपर होते	
१	पा. कुम्भनिकल भाने के विषयमें	२७३	१ पा. सूजनो आदिके विषयमें	२२६
२	पा. पीठ की पीड़ा के विषयमें	२७४	२ पा. खाल के रोगों के विषयमें	२२६
३	पा. कोख की पीड़ा के विषयमें	२७५	३ पा. बालों के रोगों के विषयमें	२२६
४	पा. गठिया के विषयमें	२७५	४ पा. नारखूनो के रोगों के विषयमें	२२६
५	पा. पिंडली की रंगे बडी और मोटे डोकर उभर आवे	२७५	५ पा. अलग रोगों के विषयमें	२२६
६	पा. पाँव सूज कर दृष्टी के से हो जाने के विषयमें	२७५	६ पा. घाव के विषयमें	२२६
७	पा. सेडी की पीड़ा के विषयमें	२७५	७ पा. कुंइ के विषयमें	२२६
८	पा. तलुये की पीड़ा के विषयमें	२७५	८ पा. नारने और गिरपडने से चोट लगने के विषयमें	२२६
	चौबीसवाँ अध्याय		९ पा. जोड़ की चोट के विषयमें	२२६
	तपके वर्णनमें ॥१		१० पा. हड्डी के टूटने और उबड़जा	
१	पा. हुस्मा यौमी के विषयमें	२७३	ने और खिसलने के विषयमें	२२७
२	पा. हुस्मा खिल्ली के विषयमें	२७५	११ पा. छिपके उपायमें	२२७
३	पा. दिक्क के विषयमें	२७५	१२ पा. विपैले जानवरो के काठने	
४	पा. सीतल के विषयमें	२७५	पांडक भाग्ने के उपायमें	२२७
			नाडी परीक्षा	
			नकशासनाई का	२२७
			नकशासलानी का	२२७

आशय	पत्र	आशय	पत्र
नाडीकी मिलाहुई प्रकारों।	३३५	जवारिशजालीनूसा।	३५५
मूत्रपरीक्षा		जदकी मच्छना	३५५
मूत्रफेरंगका वर्णन।	३४६	जवारिशखेजी।	३५५
मूत्रका गाढ़ा और पतला होना।	३४६	हृदयको काया।	३५५
मूत्रका साफ़ और गदला होना।	३४५	हृदयुलमिस्का	३५५
मूत्रका कफ़	३४५	हृदयेराबन्द।	३५५
मूत्रकी तलछटा।	३४५	हृदयसिकवीनज।	३५५
मूत्रका पोडा और घना होना।	३४५	हृदयस्वीजरान।	३५५
बुद्दगनका वर्णन।	३४५	हृदयवासली।	३५५
मिन्गीहुई औषधोंके चनानेकी	३४५	हृदयमिद्रा।	३५५
रीति।		हृदयफतीमून।	३५५
इतरीफलधनियोंका।	३५५	दिवालमिस्का।	३५५
इतरीफलगुददी।	३५५	दवायतुर्बुद।	३५५
अपारिजफोंकारा।	३५५	दवाउलकरकमा।	३५५
भमानासिया।	३५५	दवाउलतुरंजवीना।	३५५
वासलीकून।	३५५	जरूरवासफ़रा।	३५५
वरूदवनफ़सजी।	३५५	मस्तगीकातेला।	३५५
चनादिफुलबुजूर।	३५५	कूटकातेला।	३५५
तिरियाक।	३५५	केसरकातेला।	३५५
सोंठकी मच्छन।	३५५	बिच्छूकातेला।	३५५
भिलखेकी मच्छन।	३५५	सूदावकातेला।	३५५
		नारदीनकातेला।	३५५
		दरोगनमोरचा।	३५५

आशय	पत्र	आशय	पत्र
भासकातेला -	३६६	शर्वतजूफा।	३७०
रोगनवामला -	३६७	शर्वतस्वशरवाश।	३७०
सोयेकातेला -	३६८	शर्वतपोदीना।	३७०
गोस्वकातेला -	३६९	शर्वतदीनार।	३७०
गेहंकातेला -	३६९	शर्वतहव्बुलआस।	३७१
सुमरोशनाई।	३६९	शर्वतअंजवार।	३७१
माजूनजरओनी।	३६९	शर्वतगावजुवो	३७१
सिस्केकीसिकंजबीन।	३६९	शर्वतबालगू।	३७१
सिकंजबीनबजूरीगर्म।	३६६	शर्वतनीलोफर।	३७१
सिकंजबीनअनसिली।	३६६	शर्वतसन्दल।	३७२
सिकंजबीनइफतीमृन।	३६६	शर्वतइन्नाव।	३७२
सिकंजबीनसुफरजली।	३६७	शर्वतफिंजनोश।	३७२
सफूफचारतुस्वम।	३६७	शियाफकुन्दुर।	३७३
सफूफइबुलरुम्मा।	३६७	शियाफअवियजकुन्दुरी।	३७३
सफूफमिकलियासा	३६७	शियाफअहमरलीन।	३७३
सफूफतीन।	३६८	शियाफजंगार-शियाफगर्व।	३७३
सफूफतेरतेजक	३६८	शियाफअहमर। शियाफदीनार	३७४
संजनदांतोंका पुष्ट करनेवा		शियाफसुधिरकागेकनेवाल	३७४
ला। -	३६८	जिमादशोसा।	३७४
कूटकेतेलकीदूसगैरीति।	३६८	फरजजाडाचिसा।	३७४
सुरतीजान।	३६८	फलदिफियून।	३७५
शर्वतवर्दमुकरि।	३६८	माजूनफालाफली।	३७५
शर्वतइफसतीन।	३६८	फिलोनिया।	३७५

आशय	पत्र	आशय	पत्र
कुर्सवस्वरवारीस	३७५	माजूनफिलासफा	३८५
कुर्समाजगीयून।	३७६	माजूननुजाह	३८६
कुर्सभनीसून	३७६	लोहेकेमैलकीमाजून	३८६
कुर्सकिन्न	३७६	लोहेकेमैलकेधोनेकीरीति	३८६
कुर्सकौकाब	३७६	माजूनलवूव	३८६
कुर्समुम्बुल	३७७	माजूनबुजूर	३८७
कुर्सगलाऊस	३७७	विच्छूकीमाजून	३८७
कुर्सकुहल	३७७	विच्छूकेजलानेकीरीति	३८७
कुर्सगुल	३७७	माजूनइजरालयइद	३८७
कुर्सकहरावा	३७८	माजूनकभीला	३८८
कुर्सकाकनज	३७८	मतवूरवमुलप्यन	३८८
कुर्सजियवितुस	३७८	मुफरहमगौर	३८८
कुर्सबौलुइम	३७९	मुफरहदिलकुशा	३८९
कुर्सनफसुइम	३७९	मुलप्यनमुवारिक	३८९
कुर्सतवाशीरमुलप्यम	३७९	मगइमचासलीकून	३८९
कुर्सतवाशीरकाविज	३७९	मगइमूरसूल	३८९
कुर्सकाफूर	३८०	चूनेकमरइम	३८९
कामूनी	३८०	मरइमकाफूर	३८९
कोडकुलजवाहिर	३८०	सिग्येवामरइम	३८९
कुहलअजीजी	३८१	मगइममफेदा	३८९
कालवालानजरम्म	३८१	मसूरकामगइम	३८९
बालवालानजठंटी	३८१	मुदासिंगवामरइम	३८९
मजबर्दकेधोनेकीरीति	३८१	कालामगइम	३८९

आशय	पत्र	आशय	पत्र
सरहसंज्ञंगार गोशदाह	३८	रुधिरके गोठनेको रोकनेवाली औषधें।	४०८
नक्काहा भिज्जु औषधियोंकी कैफियत	३९	गाढेरुधिरकी पतला करनेवाली औषधें।	४०९
पहिले दर्जेकी गरम औ.	३९	पतल रुधिरको गाढा करनेवाली औषधें।	४१०
दूसरे दर्जेकी गरम औ.	३९	पित्तोंको ठीक करनेवाली औषधें।	४११
तीसरे दर्जेकी गरम औ.	३९	पित्तोंको ठीक करनेवाली औषधें।	४१२
चौथे दर्जेकी गरम औ.	३९	कफकी ठीक करनेवाली औषधें।	४१३
पहिले दर्जेकी ठंडी औ.	३९	सौदाकी ठीक करनेवाली औषधें।	४१४
दूसरे दर्जेकी ठंडी औ.	३९	गाढे मवादको पतला करनेवाली औषधें।	४१५
तीसरे दर्जेकी ठंडी औ.	३९	मुजिजों	४१६
चौथे दर्जेकी ठंडी औ.	३९	पित्तोंकी मुजिजों	४१७
पहिले दर्जेकी तरम औषधें	३९	कफकी मुजिजों	४१८
दूसरे दर्जेकी तरम औषधें	३९	सौदाकी मुजिजों	४१९
दवा देनेकी वर्णन	३९	जुल्लावोंकी औ.	४२०
वह औषधें जो रुधिरके विमा	४०	पित्तोंके जुल्लाव	४२१
डकी ठीक करेंगे।	४०	कफके जुल्लाव	४२२
		सौदाके जुल्लाव	४२३

आशय	पत्र	आशय	पत्र
सूत्रलानेवाली औषधें	४१२	नींदखोनेवाली औ.	४१५
हृज्वहानेवाली औ.	४१३	सोतेमें घुरे रस्त्रप्रदिखलानेवा	
वीर्यनिकालनेवाली औ.	४१३	ली औ.	४२०
उल्टीलानेवाली औ.	४१३	घुरे स्वप्न बंद करनेवाली औ.	४२०
उल्टीलानेवाली पुष्ट औ.	४१४	पचाव करनेवाली औ और मूखल	
भेजेकी पुष्ट करनेवाली औ पीध	४१४	गानेवाली औ.	४२०
दिलकी पुष्ट और प्रसन्न करने		दांतों और मसूदोंकी पुष्ट करने	
वाली औ.	४१४	वाली औ.	४२१
जिगरकी पुष्ट करनेवाली औ.	४१५	दांतों और मसूदोंकी हानिकारक	
मेदेकी पुष्ट करनेवाली औ.	४१६	औषधें	४२१
जिगरकी हानिकारक औ.	४१६	दृष्टिकी पुष्ट करनेवाली औषधें	४२१
मेदेकी हानिकारक औ.	४१७	वह औषधें जो मवादको आस	
मेदेकी टीला करनेवाली औष		पर नगिरने दें	४२२
धें।	४१७	दृष्टिकी हानिकारक औ.	४२२
भेजेकी हानिकारक और पीडा		विषयकी चाहनाको पुष्ट करने	
उत्पन्न करनेवाली औषधें।	४१७	वाली औ.	४२२
पेटकी नरम करनेवाली औष	४१७	विषयकी चाहनाकी खोनेवाली	
पेटवन्द करनेवाली औ.	४१८	और हानिकारक औ.	४२३
पेटवन्द करनेवाली औ.	४१८	व्योम्य उत्पन्न करनेवाली औ.	४२४
सुददा औ तवाय दूर करनेवाली		विषय करनेमें अधिक ठहरने	
औषधें।	४१८	वाली औ.	४२४
काबज करनेवाली औ.	४१९	विषय करनेमें मज्रा देनेवाली	
नींद लानेवाली औषधें।	४१९	औषधें	४२४

आशय	पत्र	आशय	पत्र
लिंगकी बटानेवाली औ.	४२५	सूजनकी पकानेवाली औ.	४२६
भगकी तंग करनेवाली औ.	४२५	सूजनकी फोड़नेवाली औ.	४२६
बचचा जं लदी जनानेवाली औषधें।	४२५	चुरेमांसको गलानेवाली औषधें।	४२५
मरे बचचेको निवालनेवाली औ. - १। २	४२६	साफ करनेवाली औ.	४२५
माश्रीमाकी निवालनेवाली औषधें	४२६	कीड़े मारनेवाली औ.	४२५
मसाने और गुरदेकी पथरीकी तोड़नेवाली औषधें -	४२६	घाबकी भरनेवाली औ.	४२५
सूजनकी पटकानेवाली औ.	४२६	घाबकी सुखानेवाली औषधें।	४२५
सूजनकी नरम करनेवाली औ.	४२६	नाकसुंह और दस्तोंके रुधिरको रोकनेवाली औषधें॥	४२५
		इति	

भूमिका

सबवैद्यविद्यानुरागियोंको विदितहोकि आजकलइसवैद्यविद्या को प्रचारमर्त्यत्रवटाहुआहृष्टगोचरहोताहै तथापि आजतककोईसमीलाभदांपर पुस्तक जिसमें आद्योपांतपथाक्रमरोगोंका निदानचिकित्सा आदिहीनछपीइसचचारणभेरेचितमें अभिलाषापाहुई और विचारनेलगाकि अवगोसीकोनसीपुस्तक युंत्नीमेंहैजिसकीउल्थाहिंदीभाषामेंहोकरप्रचलिनहीऔरजिसेसबमनुष्योकोआभहोइसबातकोसोचते स्पइयातनिश्चैहुईकि (बीजानुतिव्व) नामग्रंथजिसको मुहम्मदअकाबर नामीपूनालीवैद्यने अपनेमुहदोंकेनिमित्तजनायाथा औरउरुकाउल्थाउर्दूभाषामेंहैकीमुहम्मदहंसंन साहिवने मुहम्मदअब्दुलरहमानकी आजामेकियाया उसपुस्तकको अत्यंत छोकोपवारी समककारभेरीइच्छाहुईकि इसकाउल्था हिन्दीभाषामेंकाकर अपनेस्वदेशीय भाइयोंकोफायदः पहुंचानाचाहिये- इसहेतु अपनेपम्प्यारे मित्रहकीस वारिसअली साहिवने जोभेरे ऊपरसदैबछपाहृष्टिस्वतेहै और किसीस मयङ्कामफे लोभीथे उनसे उल्थाकी प्रार्थनाकी गई उन्होनें भी प्रसन्नतापूर्वकइसग्रंथकोस्वीकारकिया- पहृष्टकहीग्रंथहै जिसकेपटने गौरपादकरनेसे मनुष्यअच्छीतरहरोगियोंसे प्रतिष्ठा आदि पासत्ताहै- क्योंकि इसग्रंथकीग्रंथ चर्तानेसेभी उत्तमतासे निर्माणकियाहै कि प्रथमरोगका निदान (शनासत्) पीछेउमरोगकी चिकित्सा मरुक्सेलगायपैरोंवेरोग तककीवर्णनकीहै- इसी कारणसबहकीमोंने प्रथमपटनेमें इसीवाञ्छाचारचारकरवाहै।

इसपुस्तकका उल्थासन् १८७९ईसवीमें मुन्शीकन्हैयालाल वैकुण्ठासीकेलघुभाता वन्शीधरने वारिसअली कीसहायतासेकिया औरअपने निजशिलायंत्रालयमथुरामेंछपवाया- टिकानापुस्तककेगिलनेकायहहै- वन्शीधर-रामदासकीमंडी मेंभन्वैअलअलूमनामछापागानामथुरा

श्रीगणेशाय नमः

अथ मीजाचुतिबहिंदी

पहिलारखरुड

गरमी सरदी तरी और खुशकी की पहचान और
रखरुड के विषयमें

गरमी की पहचान ²तरुड

अधिक प्यास होनी, जलन, बदन पर जर्दी या सुखी, मुँह का
अच्छा मालूम होना, जो गरमी रुधिरकी अधिकता से होता सिर बोगल
होगा, और अंगड़ाई तथा जमाई और नींद बहुत आवेगी, और सुस्ती
और मुँह मीठा होगा, बदन और जवान पर खली होगी, फुन्सियां और
पोडे बहुत निकलेगे, मसूह से खून का बहना, नक्सीर बहना, हाथ
पांव गिरना, और बदन का दुखना। जो गरमी पित्तसे होगी उसकी प
हचान यह है, बदन जवान और आंख डूनी तीनों में जर्दी होगी-मुँह
कड़वा और जवान खुश्क होगी, जवान में कांटे पड़ेंगे; नाक में खु
शकीका होना, प्यासका होना, भूखकी कमी, जी भिचलाना, रोमां
चका खड़ा होना, इतने लक्षण से गरमी की पहचान है ॥

सरदी की पहचान

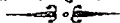
प्यास और जलन का न होना, बदन का रंग सफेद या काला होना, जो सरदी बलगम से हो पहचान उसकी यह है- बदन की सफेदी और नमी सुरती होना, बदन ठंडा होना- पचापु न होना, खही डकार आनी नींद बहुत आनी, इन्द्रियों का सिंथल होना, घूँक का पतला और बेजल न होना, नाक से पतला पानी बहना, जो सरदी सोदा से हो पहचान उसकी यह है बदन का काला होना, फूँद से काला और गाढा रुधिर निकलना बदन का दुबला होना सोचमें दृथा बैठा रहना कोड़ी की जगह अंठा होना और भूँची भूरव होनी ॥

तरीकी पहचान

नरम और टीला होना बदन का, अधिक मूल होना, नींद ज्यादा होना, जो तरी गर्मी के साथ हो उसकी पहचान ऊपर हो चुकी है ॥

खुशकी की पहचान

बदन की सरती और दुबला और कुरूप होना जो गर्मी पित्त और सोदा के साथ ही पहचान उसकी ऊपर हो चुकी है ॥ इति पहचान ॥



अवजानना चाहिये रुधिर, कफ, सोदा और पित्त से आदमी का बदन स्थिर है, जो कोई इनमें से छत बढ़ जाता है तो रोग उत्पन्न हो जाता है- रुधिर गर्म और तर है- पित्त गर्म और खुशक है- कफ सर्द और तर है- सोदा सर्द और खुशक है- इन ही चारों रिस्त्त से एक ठंडा घूँगा मगट होता है- उस्में गर्मी नहीं रहती- और न मनुष्य के बदन की स्थिरता होती है- उसे वायु का हने है- और यह बहुधा कफ और सोदा से उत्पन्न होती है- और इन ही चारों में जो घूँगा उत्पन्न होता है- और बदन की स्थिरता और जान जिस्से होती है उसको रू कहते हैं- इति गथम खर एड ॥

दूसरा खर एड

१- रूख्त अर्थात् रुधिर, कफ, सोदा, और पित्त ॥

दवा और रवाने के विषय में

अध्याय पहिला

उन दवाओं के विषय में जो इन चारों के दिगाइ को खोवें- जन्ना चाहिये कि रुधिर चार प्रकार से बिगड़ता है- एक यह कि अधिक हो जाय- दूसरे पतल पड़ जाय- तीसरे गाढ़ा हो जाय- चौथे सड़ जाय ॥ वह दवा जो रुधिर के जोश को धामें यह है- कासनी, काहू के बीज, धनियाँ, गुलाब के फूल, नींदूकारस, सिकंजबीन, शर्बत वनाव, शर्बत सन्दल, शर्बत के बडा और जो इनके बराबर वही हैं ॥ जो दवा गाढ़े रुधिर को अच्छा करे वे दवा यह हैं- आदर बुस्तोर का पानी, सोंफ का पानी, शाहतेकं पानी, सिकंजबीन, और शहद, अपने से दूने पानी में ओटाया हुआ ॥ और जो दवा सड़े सोदा को निकालेंगी वे गाढ़े रुधिर को भी अच्छा करेंगी- दुखियाँ सोदा के मिलने से रुधिर गाढ़ा हो जाता है- और गाढ़े बल्लगम अर्थात् कफ के मिलने से भी रुधिर गाढ़ा हो जाता है- अतः मध्यमे कफ का लुल्लाव और स्वदी दवाईयाँ दे- कि गाढ़े कफ को काटे- और कफ और सोदा के यतले होने के पीछे सूत्र लाने वाली दवाईयाँ दे- और जब रुधिर में बल्लगम मिला होगा तो फ्रस्द में रुधिर सफेद निकलेगा- और जो सोदा मिला होगा तो रुधिर काला होगा ॥

वे उपाय और दवाईयाँ कि जो पतले रुधिर को अच्छा करें- जब रुधिर बल्लगम के मिलने से पतला हो तो बादरज बोया, रेहा के बीज, हंसराज और जो दवाईयाँ खुशक गर्म हों और बल्लगम को निकालें- काबली इह बल्लगम के निकालने को बहुत अच्छी है- और यह चान इस बल्लगम को रुधिर में मिलने की यही है कि रुधिर का रंग सफेदी मिला हुआ होगा- वदस का मलना और महनत करना, कसरत करना, कफ को फायदा देता है- जो रुधिर पित्त के मिलने से पतला हो जाय यह चान उरकी यह है- कि फ्रस्द से पीला कफ रुधिर पर दिखलाई देगा- उपाय इसका निकालना पित्त का है और पीली

हड़ इसलिये बहुत अच्छी है मसूर का पानी, शर्वत उच्चाव और कासनी का पानी फाड़ा हुआ ॥ और जो दवा राधिर के जोश को फायदा करेंगी वे ही दवा इसको भी फायदा करेंगी - अब जानना चाहिये कि कभी गर्मी पहुंचने से रिबल्लन सड़ जाता है। और बुखार जस्तर हो जाता है और बिना गर्मी के कोई रिबल्लन नहीं सड़ता - इलाज उसका सर्द और खुशक दवा से उचित है जो दवा राधिर के जोश में लिखी गई है - राधिर के गरम होने को जोश राधिर कहते हैं बिना सड़ने के ॥

बिगाड पित्तका पाँच प्रकार करके हैं

एक यह कि पतला बलगम उस्में मिले - दूसरे गाढ़ा बलगम मिले - तीसरे थोड़ा सा मौदा उस्में मिल जाय - चौथे पहिला और तीसरा प्रकार दोनों मिल जाय - पाँचवे पहिला और तीसरा प्रकार बहुत जल के उस्में मिले ॥ चौथे और पाँचवे प्रकार में यह भेद है - कि चौथे में गरमी कम होती है और पाँचवे में ज्यादा - नहीं तो दोनों एक हैं ॥

वे दवायें जो पित्त को अच्छा करती हैं - जहां गरमी अधिक हो वहां ठंडी दवा दें - या एक दिन में दो तीन बार दें - और जहां गरमी कम हो वहां कम ठंडी दें - वे यह हैं - ईसबगोल, बीदाना, कुलफे, कासनी, खीरेककड़ी के बीज, सख्खानिया, कूटन, काइ के बीज, कापूर, ईसबगोल काल्पु आव, निकाल कर दें - या फेंका दें कूटने नहीं कूटने से जहर हो जाता है - और बीदाने का भी लुआ बनिकाले - खासी में खड़ी बिही को बीदाना न दें - कुलफे और कासनी दो बीजों काशीगनिवाले - और इनके पतों को कूटकर रस निकाल लें - कासनी के पतों को धोना न चाहिये - कि उस पत्र असर लाता रहता है - जो कासनी के पतों का पानी फाड़ लें और अकेला या कुछ मिठाई या खटाई मिलाकर पीवें तो राधिर के साफ करने में इसके बराबर कोई दवा नहीं है, कुलफे के बीज के पीसकर बहुत छानना काल के दूर करने केलिये - कुछ अच्छा नहीं है - खीरेककड़ी के बीज और धनिया काशीगनिकाल लें - या पानी में भिगोकर

कुटके पीदें-और यही भिगोया हुआ बहुत नन्दी असर करता है ॥

चन्दन पानीमें घिसकर देना बड़ी भारी गरमी को बुभाता है-और चन्दन सुफेद लाल से अच्छा होता है-कपूर बदन की गरमी को दूर करता है-और जो कि यह बहुत ठंडा है-इस लिये सिवाय जवान आदमी और गरम मित्राज वाले के और को नदे-और ठंडे मेवे जैसे तरबूज आदि और सय तबईयाँ पित्त को अच्छी है-और स्त्री और लड़कों और रोगियों को बहुत ठंडी दवाईयाँ न देने चाहिये ॥

जनी हुई दवाईयाँ जो पित्तको फायदा करती हैं वे यह हैं

कुर्सतवाशीर मुलव्यनर कुर्सतवाशीरकाबिजर कुर्सकपूर ३ शर्यत चंदन शरबत आलूबुखरा, शरबत बनफशा, शरबत नीला फर, और संधना और लगाना भी ठंडी दवाओं का पित्तके लिये अच्छा है-और गर्मी को बुभाता है

कफ का विगाड भी पाँच प्रकार का है

राज यह कि थोड़ा सा कफ में मिल जाय और उसके असर को ब दलदे-उसको मीठ बलगम कहते हैं ॥ दूसरे जला हुआ पित्त थोड़ा सा बलगम में मिल जाय उसको खारी कफ कहते हैं- और स्वभाव पित्तके परावर होता है ॥ तीसरे बलगम गरम हो जाय तो उसको खट्ट कफ कहते हैं ॥ चौथे थोड़ा सा सौदा बलगम में मिल जाय तो कसीला कफ कहलायगा ॥ पाँचवें कफ पतला पड़ जाय उसको फीका कफ कहते हैं और ये सब कफोंसे अधिक ठंडा होता है ॥

दवायें जो कफको अच्छा करें वे यह हैं ॥

सौंफ, अनोसून, मुल्लैठी, जीरा, दालचीनी, इलायची, बालछड़, मुनक्का, विरजाकफ, इनके देने की रीति हकीम की राय पर है-कफमें दवा को ओटाकर देना अच्छा है ॥ और जब बलगम सड़ जाय तो बहुत गरम दवानेनी चाहिये स्वास कर खारी बलगम में क्योंकि उत्तम तप

बहुत होती है। और दुग्ध के बीज जहाँ कहीं रंगों के भीतर बलगम सड़ जाय बहुत अच्छे हैं। और कफ के सड़ने में जो देरें तो कुछ दवायें जो पित्त में बयान हुई हैं मिलाकर दें ॥

बनी हुई दवाई जो कफ के लिये दी जाती है वे यह हैं ॥

मञ्जून फिलासफा, सोर की मञ्जून, गान्जून सोर, नवारिश जालीर, स, इन दवाओं को उस समय में दे जब कि कफ सड़ान हो और बुरवार न हो और तप में कुर्सगुल-कुर्सगाफिस-सिक्जबीन बज्जी मीतदिल-बज्जी मर्शरत बज्जी मीतदिल-और गर्म-और गुल कंद देना चाहिये ॥

बिगाड़ सौदा का भी पाँच प्रकार का है ॥

एक यह कि सौदा अधिक बढ़ जाय-दूसरे यह कि सौदा जलकर बिगाड़ जाय-तीसरा यह कि सधिर जलकर सौदा बन जाय-चौथा यह कि कफ जलकर सौदा हो जाय-पाँचवाँ यह कि पित्त जलकर सौदा हो जाय-

जान लो कि कोई खिल्लत जब जल जाता है तो बिगड़ हुआ सौदा होता है और मतलब जलने से यह है कि तरो उसकी गरमी से उड़कर गाढ़ रह जाता है ॥ और उसकी असल नहीं रहती-और जलने से यह मतलब नहीं है कि जलकर राख हो जाय और अगर कोई खिल्लत सर्दी से गाढ़ होकर नम जाय तो वह सौदा न कहलावेगा ॥

वह दवाओं जो सौदा को अच्छा करती हैं सो यह हैं
 लहसोड़े, गात्रजबा, स्वरबूजे के बीज, मुल्हेदी, कनोत्रे के बीज, इंजीर, मुनबका, आदि जो गर्म और तरहों- जो सौदा गर्म खिल्लत से पैदा होता दवा वंडी और तरदेनी चाहिये- जैसे कुलफा, चौदाना, रवीरे ककड़ी के बीज, आदि और नहीं तो गर्म और तर या वह दवा जो गरमी और सरदी में बराबर और तर हो ॥

बनी हुई दवाओं सौदा के वास्ते यह हैं

सिकंजवीनइसीमूनी, नौशंदाह, मानूनसुकरात, याकूतीचुअली -
 मुफर्रहदिलकुशा, शर्वतगावजया, शर्वतवादर्जवाया, आदि और उचि
 तहैं कि हरजगह गर्मी और सर्दीकभी ध्यान रखवें जी सौदा सहजाय
 और तप होय तो ये दवायें औजकर दें- कामनी के बीज, कश्क के बीज
 तीनतीन दिरम् (१ दिरम् ३॥ भाशेका होता है) मुल्हेदी - जरक हर रक्
 दोदो दिरम्, गावजवा ५ दिरम्, कन्द्या सिकंजवीन के साथ और इस
 में पहिले चाहिये कि मुनजिज देकर जुल्लाव दे लिया हो - तौ जल्दी
 गुण करैगा - सौदाची रोगोंमें बहुत दिनों दवादेनी चाहिये इस लिये कि
 सौदा दवा को देर में गुण करने देता है - सड़े हुये सौदा की दवाई या और
 उपाय तप में लिखेंगे ॥

— ३.६ —

अथ वह उपाय लिखे जाते हैं जिनमें सिवाय
 खिलाने पिलाने के दवा बाहर लगाने और
 सूघने आदि से बदन में असर करे ॥

शमूम - उस खुश्क या तर दवा को कहते हैं जो सूघी जाय ॥

खरखरवा - उसको कहते हैं कि पतली खुश्कदार दवाये सीसी
 या किसी बरतन में डालकर सूँघे ॥

सऊत - उस दवा को कहते हैं जो नाक में डाली जाय ॥

नफूरख - वह खुश्क दवा है जो नाक में डाली जावे ॥

वजूर - अर्थात् तर दवा को गले में चुमाना ॥

सचून - अर्थात् संजन ॥

कादूर - अर्थात् किसी रज की बदन के किसी मुगारत में टपकायें ॥

नतूल - अर्थात् धारना ॥

सकूव - अर्थात् बहेती हुई दवा को दूर से रह रह कर बदन पर डा
 लना ॥

२१/११/११

इंकावाव - अर्थात् मपाए लेना x

कुमाद - अर्थात् कोई दवा गरम करके बदन को सेक दें चाहे वह दवा खुशक होयातर ॥

बुरबूर - अर्थात् दवाओं को जलाकर धूनी उसकी पहुँचना ॥

आबजन - अर्थात् दवाओं को औटाकर बीमार को उसमें बिठाना ॥

पाशोया - अर्थात् गरम पानी में या ओठी हुई दवा में बीमार के पाँव

रखें - भूसी गुलरखैर, बनफशाके फूल, बाबूँके फूल, वेद के पत्ते, और

वेरी के पत्ते औटावें - यह उपाय सिरदेहर्द और बुरवार के लिये बहुत अ

च्छा है, पाशोये के समय बीमार को तकियालगादे, और सिर पँके मु

कार है, और सुरबके आगे परदा डालदे कि भाप सिर को न पहुँचे इससे

खफवान होजाता है ॥

५ ने x

तमरीख - अर्थात् तर दवा को बदन पर मलना ॥

तहहीन - अर्थात् बदन पर कोई तेल मलना ॥

बरद - अर्थात् ठंडी दवायें मिलाकर आँख में लगामें ॥

जखूर - अर्थात् खुशक दवायें पीस कर छिड़कना ॥

लिजाद - अर्थात् गाढ़ी और तर दवा को बदन पर लगावें ॥

तिल्ला - अर्थात् तर और पतली दवा को बदन पर लगावें ॥

कुहल - अर्थात् अंजन ॥

हुपला - अर्थात् किसी पतली दवा को पारखाने या सूत्रकी राह से भीतर पहुँचावें ॥

शाफा - अर्थात् दवा की बत्ती बनाकर बदन के किसी सराख में रखके

फातीला - अर्थात् कपड़े में दवा लगाकर और बत्ती बनाकर बदन के किसी सराख में रखें ॥

हमूल - अर्थात् कपड़ा दवा में भिगाकर के किसी जगह रखें ॥

फुरजा - अर्थात् कपड़े में दवा लगाकर गद्दी की तरह और तने में

सावकारने की जगह रखें ॥

रव

शमूम-गम्भीरमारियों को फायदा करता है-सफेद चन्दन घिसकर सिरका और धनिये के पत्तों का रस-और गुलाब मिलाकर संधें और जो लखलखावनाले तौ बहुत अच्छा है और जो नींद न आती होतो सिरका न मिलावे-और जो गरमी बहुत होय तो वापूर भी मिलावे-और खीरे को काटकर और उंडे सेवे और फूलों का सूघना फायदा करता है और जिस्को हरे धनिये की सुगंध अच्छी न लगे तो तरबूज का रस या भुने हुये घीया-अर्थात् तेलों की का रस मिलावे ॥

रव

शमूम-उंडी बीमारियों को फायदा करता है-सुशक-भंवर-दालचीनी-जुन्द वेदस्तर-लौंग-केसर-सुलोही-थोड़ी रत्न ॥

सऊत-सिरकी गर्भे और सुशक बीमारियों को फायदा करता है-काहू का रस-नीलोफर का तेल-एकर हिस्सा लडकी की माका दूध दो हिस्से-वादास का तेल या काहू का तेल मिलाकर नाक में डालें और जो नींद कम आती होतो खशखश का तेल भी उसमें मिलावे ॥

सऊत-सिरके उंडे और तर रोगों को फायदा करता है-गलुआ सुरमकी कुंदर-माजू-जुन्द वेदस्तर-केसर-दोनामरुवाके पानी में पीस लें ॥

नफूर-सूर्च्छ वाले को होश में लावे और सिरके सुदों को खोलें और नकछिकनी-कुर्की-कूट छानकर थोड़ी न नाक में डूके ॥

बजूर-लडकों के पसली चलने के रोगों को फायदा करता है-सात-जुन्द वेदस्तर-जीराफिरमाची सबको बराबर लेकर दूध में घोलकर लडकों के मुख में टपकावे ॥

बजूर-मिरगी वाले को होश में लावे-हींग-जुन्द वेदस्तर-सिकंज-वीन-सुदामे घोलकर मुख में टपकावे ॥

मंजन-रांतों को मजबूत करता है-सुरंजान-लौंग-मोथा-माई पीली हड़ का बकल-सफेद चन्दन-गुलाब के फूल-सबका दार

वरलेकर मंजन बनावे - जोगरनी होतो लोगन डालें ॥ ६२

कतूर - कान के दर्द को जोगर्मी से हो फायदा करे - रोगन गुलई दिसम रोगन वादा म ३ दिसम अंशूर का सिरका १० दिसम मिलाकर मंद आंच पर पकावे जब सिरका जल जाय और तेल रह जाय तो गुनै गुना कान में टपकावे और जो दर्द बहुत होतो थोड़ी भफीम भी मिलावे ॥ ६३

कतूर - सोजा क को फायदा करे - कास गरी सफेदा - कुन्दर - इजस्त - बबूल का गोंद - निशास्ता - दस्मुल अखवेन वरावर लेकर कूच छांकार लडुकी की माके दूध में घैल कर पेसाव के सुराख में टपकावे ॥ ६४

नतूल - नींद लावे और गर्म सरसाम को फायदा देती है - वन फशे के फूल - काहू के बीज ५ पांच २ दिसम - पोस्तदाने समेत - गुर्लव के फूल - नीलो फर के फूल - हरे चीया के छिल्के - चावूने के फूल दस २ दिसम - जी किलेहुग ५० दिसम - इन सब को ७ ५ सेर पानी में पका कर तरे डालें ॥ ६५

नतूल - सिर की डंडी बीमारियों को फायदा देती है - इकली लुल्लक - नम्मास - मरज जोस - विरक्षाफ - सातर - चरकुल गार - सब को वरावर लेकर पानी में ओटा कर तरे डालें और चढ़र उड़ा कर भपारा दें ॥ ६६

सिर की गर्म बीमारियों में तरे डाने दें जब तक कि जुल्लावन दियो हो

नतूल - चाई को पचावे - चावूने के फूल - इकली लुल्लक - कास के बीज और फो रजीयाना - किरमानी बीग - मरजन् जोश - ताया - सातर - वरावर लेकर पानी में ओटावे और तरे डालें ॥ ६७

कामाद - फंसी हुई रीह को पचावे - चंजरा - नमक पोटली में बांध कर मंदी आंच पर गरम करके सेके - रेड़िया गेहूं की भूसी या गर्म ईंट से कपड़े में लपेटके सेकना भी फायदा करता है ॥ ६८

कमाद-बदनको नरम करे और दर्दको आराम दे वनफशेके फूल, वाघूने के फूल-सोयेके बीज-पानीमें ओटाके इस्पंज अर्थात् मराहुआबादल उस्में भिगोकार सेके ॥

वस्त्र-अर्थात् धूनी सिर और यादको ताकत दे-और खुफकान और सूच्छ और सुस्तीको दूर करे-जदगरकी-मीठाकूठ-सफेद चंदन रक्तदिरम-कैपूर-मुश्क-आधेरदिरम-सबको कूट छानकर गुलाबमें सानकार गोलियां बनाकर सुरवारकवे और आगपर जलाकर धूनीदे ॥

धूनी-जे पसीना लावे और पित्त और कफके बुखारको दूर करे-पहिले मुजिशदेना चाहिये-सोफकी जडकी छाल-सोफ अंगूठीमें जलवे और चदर ओढ़कर धूनीले इस्से बहुत पसीना आवेगा ॥

आवजन-बदनकी खुशकीको और तपेदिकको फायदाकरती है घीया-ककड़ी-कुन्फा-काह-तखुज-नीलोफारके फूल-वनफशेके फूल-छिले हुयेजो-इनसबको ओटाकर सेसे वरतनमें डाले-जिस्में बीमारगले तक वैठजाय-और रक्कचडी भर उस्में वैठालकर निकाले-और रोगने बनफशा-और रोगनकट्टमले-और पाशोया जो ऊपर छिरवागयाहे करे-और हाथोंको भी धोवे-पिंडलियोंको बांधना-और तलुओं और हथेलियोंको मलनाभी बहुत फायदाकरता है-जब पिंडलियां बांधें तो रान से अर्थात् घुटनों से बांधने का प्रारम्भ करे और जब खोलें तो टरवनोंकी ओर से खोलें इस्से जो मवाद सिरसे उतराहीगा वह फिर सिरको न चड़ेगा ॥

दूसरा अध्याय र फ़स्द के विषयमें

जानना चाहिये कि फ़स्दसे सब प्रकारके मवाद निकलते हैं-अर्थात् तरंगोंमें तद्विरभराडोता है-उस्में पित्तसोदा कफभी मिला होता है इस्से

लिये फ़स्द करने से जोरगों में होगा वही निकलेगा - और मकार के जुल्लावों में यह बातें नहीं होती हैं - फ़स्द को कई बातों के निमित्त भ्रष्ट लिखा है - एक बात तो अपर लिखी गई है - और दूसरी यह कि फ़स्द में मवाद का निकालना अपने वस में है - और जुल्लाव पीने के पीछे वह मवाद कि जिस्को निकालना चाहते हैं न निकले तो दस्तों के बंद करने में हानि होगी - तीसरे यह कि फ़स्द में मुजिश पीने की आवश्यकता नहीं है ॥

जानना चाहिये कि बारह बरस की अवस्था से पहिले फ़स्द खोलना चाहिये - और फिर जब तक चाहें तब तक फ़स्द खोलें - और मरी हुई सींगी साठ बरस की अवस्था के पीछे लगानी चाहिये, कभी ऐसा होता है कि फ़स्द खोल के रुधिर कम लिया गया और फ़स्द बंद कर दी तो तप हो जाती है - ऐसे समय में फिर जल्दी से फ़स्द खोलना उचित है - ॥

जब किसी ने ज़हर खाया हो या किसी ज़हर वाले जानवर के काटा हो तो फ़स्द नहीं खोलना चाहिये ॥

जरीगरक विच्छू है जो धरती पर दुम घसीटता हुआ चलता है उस के डंक मारने से रोमर से रुधिर बहने लगता है - उसके काटने में फ़स्द खोलना उचित है ॥

तांऊन - एक ज़हरीली सूजन है जो कि बवा के समय में होती है उसमें जलन बहुत होती है - रंग उस्का लाल - पीलों हिंयां - हरयाली या कालक लिये हुये होता है - उसमें भी फ़स्द खोलना चाहिये - और जो रुधिर अधिक हो और ज़हर ने दिल और जिगर के असार किया हो तो फ़स्द खोलना उचित है - जिस्को फ़स्द खोलने से मूच्छी आजाती है - उस्को फ़स्द से पहिले नीबू का शरबत - या रबटे अना वा शरबत आदि गुलाब में घोळकर पिला देना उचित है - और फ़स्द

कैपीछे जब थोड़ा सा खून निकल जाय तो अंगूठे से दवा दें - इसी प्रकार दोतीन वार उठर २ के रुधिर निकालें तो सूच्छान आवेंगी - और सूच्छा दूर करने का अच्छा उपाय यह है कि - कै अर्थात् उल्टी करवायें - दवा उल मिस्को को पानी में घोलकर सुबह में टप कावें - जिस दिन फस्ट खोलें उस दिन भारी भोजन न दें पानरिबलाना - हरी रा पिलाना और उंडाई पिलाना फस्ट में अच्छा नहीं है जो गरमी की अधिकता हो तो उंडाई पिलाना उचित है - इसमें जो पित्त जो कि रुधिर के निकलने से जोश में आया होगा वह उठर जायगा और जो सरदी हो तो गरम दवा देनी उचित है ॥

अब्धे रोंजिन की फस्ट खोली जाती है लिखी जाती है

(१) **क्रीफाल** अथवा सरग - यह रंग हाथ के जोड़ पर यहीं चेंके ऊपर अंगूठे के साम्हने है - इसकी फस्ट सिर और मुख के रोगों को फायदा करती है ॥१॥

(२) **अकहल** अथवा ह्रु अंदांम - यह रंग तर्जनी अंगुली की सीध पर को फाल के नीचे है - फस्ट इसकी सारे बदन के रोगों को फायदा करती है ॥२॥ २ ३६

(३) **वासलीक** - यह रंग बीच की अंगुली के साम्हने अकहल की तरफ है - फस्ट इसकी उन रोगों को फायदा देती है जो बदन में गरदन से नीचे उपस्थित हों ॥ इस रंग के नीचे एक रंग और है जिसे का हलना तथा फुटकना मालूम होता है ऐसा न हो कि इस रंग में नशतर गहरा लग जाय ॥३॥ ४२

(४) **हवलुज्जिरा** - यह रंग किसी के हाथ में वासलीक से और किसी के हाथ में अकहल से मिली होती है - अंगूठे के सामने कलाई के ऊपर फस्ट खोलना उचित है - इसकी फस्ट का फायदा और क्रीफाल का उगुबर है - और कभी २ या ३

नीक के बराबर भी हो जाता है ॥४॥

(५) **इचती** - छुंगलिया अर्थात् कनिष्ठका अंगली की सीध पर कोहनी के बराबर है - फ्रस्ट इसकी भीतर की वीमारियों को और नीचे के बदन के रोगों को फायदा देती है ॥५॥

(६) **असैलम** - इचती से मिली हुई है - इसकी फ्रस्ट घाई में खोलते हैं और हाथ को गरम पानी में रखते हैं - यह फ्रस्ट दाहिने हाथ से जिगर के रोगों को और बायें हाथ से तिल्ली के रोगों को फायदा देती है और फेंफड़े के रोगों को दैनिं और सेफ्रायदा देती है इस रोग से क्षिधर दिल और जिगर का निकलता है इस वास्ते खून थोड़ा सा ही लेना चाहिये ॥६॥

५१६॥ - २१०॥

(७) **साफन** - इस रोग की फ्रस्ट टरबने के ऊपर पाँव के अंगूठे के समान खोलते हैं - जो कोई स्त्री कापड़ों से नहोती हो उसके खोलने के लिये और चौत्र और खुजली के लिये फायदा देती है और भवाइ को सिर से निचालती है ॥७॥

(८) **माविज** - बहरग है जिसकी फ्रस्ट घुटने के नीचे खोली जाती है यह माफन से अधिक फायदा देती है - पीठ और पाखाने और पेशाब की जगह के रोगों को और भीतर के दर्द को फायदा देती है ॥

(९) **इरकुन्सि** - यह रोग गिरहदार पिहली पर है - पाँव के कसने से दिरवाइ देती है - और जो यहाँ न मिले तो पाँव की छिगुलिया और चौथी अंगली के बीच में खोलें - इसी रोग के दर्द के वास्ते इसकी फ्रस्ट फायदा देती है ॥

५०१२॥

(१०) **चाररग** - चार रोग हैं जो दो ऊपर के होठ में और दो नीचे के होठ में हैं - फ्रस्ट इनकी गोल नशतर से होठ के भीतर खोली जाती है - यह मुख और मसूड़ों के रोगों को फायदा देती है -

नवनशतर शिरीयान को लग जावेता उसकी पहिचान यह है कि क्षिधर

साफ और उल्लूकर निकले-और दिन तुरंत ही सुस्त होता जाय-जब रोसा हो तो जल्दी से रायर अंगुली रखें-और चिप्पी लगाकर और गद्दी रखकर बांधें-और हाथ राक अंचेतकिये पर रखें और हिलने न दें-इस दिन तक बंध रखें-ग्यारवें दिन हो लें से खोलकर फिर बांधें इसी प्रकार से जब तक घाव न पुर जावे किया को-चिप्पी की दवाये गहूँ-दम्मूल अस्ववैन-इंजूरुता-फिटकरी-किलिकितार-अकीकिया-जल्लनार-सलुआ-कुन्दर-रकर-दिरम-बबूल का गांड़ दो दिरम-सबको कूट छानकर अंडे की सफ़ेदी में मिलाकर-खगोश्रा के रूये या मकड़ी के जाले में सानकर सलाई से घाव में भर दें और दूसरी तरफ के हाथ और पैरों को बंध रखें-इससे रुधिर हट भावेगा ॥

तीसरा अध्याय ३ सींगी और जोक के विषय में

भरी सींगी और जोक लडकों के फुस्द की जगह लगाते हैं-दो चरस की अबस्था से कम से न चाहिये-और चौधवीं या पंद्रहवीं तारीख सुसलमानी महीने की को सींगी न लगानी चाहिये-पंगतु मोल्हचीं या तत्रवीं तारीख सुसलमानी महीने की को सींगी लगानी चाहिये-स्नान करने के पीछे सींगी लगाना बुरा है-जिस मनुष्य का रुधिर गर्द हो उसके स्नान से एक घड़ी पीछे सींगी लगाना चाहिये-और जब किसी जगह मवाद बहुत इकट्टा हो तो पहिले फुस्द खोलकर सींगी लगाना चाहिये-सींगी के पीछे पकने लगाना सराह फुस्द की तुल्य है-जरानी चेको लगाना चाहिये और गरदन के सींहरों पर पकने लगाना अकहल की फुस्द के समान है-और दोनों मोंडों अर्थात् मुडों के बीच में लगाना वासलीक का काम देता है-परंतु पेट को और खफ़ान को बुरा है-चाहिये कि अपर चदावार पकने लगावे और पिडली पर पकने लगाना साफनकी फुस्द का काम देता है और खली सींगी बुखार अर्थात् तप और मवाद के निदालने में काम

आती है - जो मनुष्य पढ़ने को न सह सके उसके जो कल गानी उचित है ॥

चौथा अध्याय ४ मुजिसके विषय में ॥

मुजिससे वाच्चा मवाद पक जाता है - और मवादके पकनेसे यह प्रयोजन है - कि गाढ़ा मवाद पतला हो जाय - और जो पतला हो तो गाढ़ा हो जाय - जानना चाहिये कि रुधिर में मुजिस न देना चाहिये - और जब सीधे रमें और मवाद मिले द्वैतो मुजिस फायदा करेगा ॥

वे औषधें जो पित्तको पकाती हैं यह हैं ॥ उन्नाव ७ दाने - बनफाशे के फूल - नीलोफरके फूल - सुआतरा - गुलाबके फूल - हरणकदौर द्रिम - कसनीके बीज ३ द्रिम - पानीया अरक में चार यह र या आठ पहर भिगो दें - और खाली या सिकंजबीन या तुरंजबीन या कोई और शर्वतमिलाकर पीवें - जु सौदा इन ही दवाओंको ओटानेसे बन जाता है - दवा ओटानेसे उसमें गरमी आजाती है - जिस रोगीको गरमी अधिक हो अथवा दवा ओटा कर न दें - भिगो कर वांशीरा निकाल कर या अकेले ठाड़े बीज दें - जो ताल दवाओंकी ऊपर लिखी गई हैं वे जवान मनुष्यके वास्ते हैं - जो बच्चा हो तो दवाओंको कम कर दें - पित्त तीन दिनमें पकता है जो उसमें किसी और दूसरे मवादका मिलाव न हो नही तो पांच या अधिक दिनोंमें पकेगा ॥ ० X

२॥६॥१॥

मुजिस बलगमका - सुनकका ५ दाने - सांफकुटी हुई दो द्रिम - या सांफकी जगह अनीसन हो तो अधिक फायदा करे - मुल्हेटी छिली हुई और कुचली हुई तीन द्रिम - सुवकाई कुचली २ द्रिम - हंसराज ५ द्रिम - पीले इंजीर ५ दाने - गुलाबके फूल ३ द्रिम - इन सबको ओटावे और ७ द्रिम शहदका गुलकंद डाल कर छानके पिलावें - और जो रतौले सिकंजबीन डालें तो अच्छा होगा - जो रोगीका खांसी हो तो सिकंजबीन न मिलावें - खारी बलगममें पित्त और कफ दोनोंको मिलाके मुजिस दें -

और यह बात सब मिले हुये मवादों में याद रखनी चाहिये-चने का पानी
 थोड़ा हुआ कफ और सौदा के पकाने को बहुत अच्छा-परंतु तपमें न दे
 ना चाहिये- और जो तप पुरानी होय तो फायदा करेगा- जो कफ गाढ़ा या
 पतला नहो वह नौ दिन में पकेगा और जो गाढ़ा या पतला होतो पांच
 दिनमें- या नौसि अधिक दिनों में पकेगा ।

मुंजिस सौदा का- ल्हि सोड़े २० दाने- उन्नाव १० दाने- गाउजवाँ- द्वा
 दरंज बीया- उस्तर खुटूस- हंसराज- सौफ- स्यातरा- दोदोदिरम्- अं
 टाकर कंद या तुरंज बीन- या गुलकंद मिलाकर दें- ये दवायें अकेले
 सौदा की हैं ॥

जो सौदा किसी और मवाद के जलने से पैदा हो- तो उसी मवाद के
 पकाने वाली दवाईयां थोड़ी थोड़ी मिलाकर दें- अकेला सौदा १५ दिन
 में या एक दो दिन कामबंद में पकता है- और मतलब पकाने से यहाँ यह
 है- कि मवाद जुल्लाव के जोर में निकल जाय- इससे जाना गया
 कि मुंजिसका असर मवाद में होले होले होता है- ऐसे रोगों में कि
 मादा उनका गाढ़ा हो बार बार मुंजिस देकर जुल्लाव दिया जाता है-
 और जब तक मुंजिसका असर अच्छी भाँति मालूम नहो- तो दूसरा
 जुल्लाव न दिया जावे- कभी ऐसा होता है कि बिना मुंजिस के मवा
 द पक जाता है- और रोग वगैर खाने दवा के जाता रहता है- इस
 से जाना गया कि उपाय से रोगी के दिलको मदद होती है ॥

पाँचवाँ अध्याय ५०७ - जुल्लाव और मुल ग्यन के विषयमें

जुल्लाव उसे कहते हैं जो मवाद को रोगों और दूर दूर में खंचला
 वे ॥

मुलप्यन वह है कि केवलपेट और आंतों से मवाद को निवाले- जु-
ल्लाघको देने में मुंजिस पहिले देना जरूर है- मुलप्यन में उसकी ज़रू-
रत नहीं- और जो मुलप्यन से पहिले मुंजिस देलें तो अच्छा है।

मुलप्यन सुवारिक भीतर और बाहर की बहुत सी बीमारियों को फा-
यदा करता है- गर्भवती स्त्री और बच्चों- और चूटों को भी पिला सकते
हैं सिवाय तपोके और भीतर की सूजन को फायदा करता है- और सब
प्रकारके मवाद को अच्छा है- अमलतास लेकर गुलाब या गरम पानी
में मलकर छान लें और जो गरमी बहुत होय तो कासनी कारस या
ठण्डे चीजों का शीरा उसमें मिलावें- और जो पेट के अन्दर सूजन-
होता हरी मकोय कारस उसमें मिलावें- और वायु गोलके के चासे सौं-
फ का शीरा और गुलकंद मिलावें- और जो अमलतास की बूटूर
किया चाहें- तो सौंफ और गुलाब का मिलाना अच्छा है- जो चाहें
कि उसमें ज़र अधिक होजाय- तो शीर खिश्त असील और तुरज
वीन मिलावें- उर्लाब- लिहसोडे- बनफशेके फल- सुनक्ता-
गाजजवा आदि को ओटाकर अमलतास को उसमें घोल दें तो
बहुत अच्छा है-॥ ५२७५:२. ८. ६. ६१५.

जानना चाहिये कि जिस मनुष्य की अंतर्द्विया कामजोर हों- और
उसे मरोड़ा होसक्ता हो- तो अमलतास में मिलाने रोगन खादाम के
न दें- और रम्भाही गर्भवती स्त्रियों और चूटों को भी- दूध पीते बच्चों
को रोगन खादाम मिलाने की जरूरत नहीं- उनकी अंतर्द्विया दूध
पीनेसे सेसी नर्म होजाती हैं कि अमलतास उनमें चिपेट नहीं-
सक्ता- और अच्छे तहण आदमी को सोल्ह दिरम अमलतास दे-
ते हैं- और एक दिरम साठे तीन माषे का होता है- इससे अधिक
जुलसान करेगा-॥ * ८११२. ८. ६. ६१५.

अथ जुल्लाघ का चरणन होता है- जो बड़ी ज़रूरत के समय

जुल्लाब देना पड़े तो उसके पहिले सुजिस नहीं दी जाती - जैसे कूलंज के दर्द में रात और बदली और मेह और बहुत हवाका बिचार नहीं करते - जिस जुल्लाब की दवा ओटा कारदी जाय या भिगोकर - बसवे जपर गरम पानी नदेना चाहिये - इस से उसका असर जाता रहता है और जो जुल्लाब पेटमें मरोडा करे तो उसके जपर थोडा सा गरम पानी पिला देते हैं - और जो दवा जुल्लाब की गोलियाँ या फंकी होती - गरम पानी पिलाने से उसे मदद मिलती है - और जो जुल्लाब में प्यास लगे तो ठण्डा पानी नपीना चाहिये - ताजा पानी थोडा सा पीके - परंतु गर्म मिजाज वाले को ठंडे पानी का डर नहीं है - और कुछ दवाइयों से सी है - कि जिन पर ठंडा पानी पीया जाता है - गर्म पानी के देने से उनका असर जाता रहता है - जैसे शरबत बर्द - और दवासे जुल्लाब की जिन से - जन्माल गोटा या तुरबुद और नमक मिला हो ॥ जिस मनुष्य को दवा अच्छी न लगती हो उस को दोनो बाँह बस कर बाँध दें - और नाक पकड़ कर दवा पिला दें - और कुल्ली करा दें - और दवा पिलाने के पीके - पोदीनी चवाना और सूँघना या पान और इलायची खाना अच्छा है - ॥

और जो डर हो कि इसपर भी क्रय हो जायगी - तब पहिले कौंकरा के जुल्लाब पिलाना चाहिये - और जुल्लाब के बाद सोना न चाहिये - और आबदस्त उस पानी से लेवें - जिसमें रेशा खतमी - ओटी हुई हो और पानी गुन गुनारहे - ॥

जो जुल्लाब अपना असर न करे - तो उसी दिन दूसरा जुल्लाब नदे - और शाफा करे - आलू खुसारे का रस या इसकी गुलकंद और तुंजवीन मिलाकर जुल्लाब पर पिलावे - और अमलतास भी देते हैं - इसी प्रकार मस्तगी को कूट छान कर - डेढदिरम - बुराया मिश्री मिलाकर गरम पानी में फंका ना बहुत मदद देता है - और जो जुल्लाब

से सूख आजायतो जल्दी से कै करादे- और जो इस्से भी प्रापदा नहे
 और कोई हानि न देखें तो फ्रस्द वासलीक और अकड़ल की खेत
 लें- और जो पेट और अंतर्दियों में गरमी लगे तो बीदाने और इसबगो
 ल कालुआय पिलावे- और जिस मनुष्य का सिजाज- मौत दिक्
 हो उसे तुरखम रेहा शरबत में गुलाब के साथ दे- और एक घड़ी पीछे
 नर्म मोनन करावे- जानना चाहिये कि खराब जुल्काव और फ्रस्द
 से बड़ी हानि होती है- चाहिये कि बीमार का जोर देख कर दूसरा
 जुल्काव दे- जिसो जो मवाद निकालना हो निकाल आवे- और जो
 बीमार कम जोर हो उसे थोड़ा थोड़ा जुल्काव दो दो तीनतीन दिन
 पीछे दें- जुल्काव से जो बहुत दस्त आवें और उनको बन्द कर
 चाहें- और बुरखार भी नहीं तो चावल छाल में मिलाकर दें- और जो
 बुरखार होतो तुरखम रेहा मुना हुआ मुने हुसे डालफे और चार तंग के
 रस के साथ पिलावे- और वह उपाय जो दस्तों के बिषय में लिख
 जायगा करें- ॥

पित्त के जुल्काव की दवाये ये हैं

* पीली हड़- इमली- तुरंजबीन- बनफागे के फूल- इफासन्तीन
 सकसूनिया मुनी हुई (१) इजाक पेचा- आलूबुरबारा- स्यातरे के
 पत्ते- सलुआ- गुलाब के फूल- शीरखिस्त- इन में से कुछ दवाइ
 या जोरदार हैं और कुछ कम जोर चाहे अकेली रदे या मिलाकर-
 और सकसूनिया वे मुने नदे- ॥

* १) सकसूनिया के भूने की रीति यह है- कि नैवे या बिही का पेट स्वाली करके उस
 में गस्तगी के साथ सकसूनिया रखें और उसको बन्द करके किनारों पर आटा
 लगादे जिनमें दरार बंद होजाय और मिट्टी की चरतन में स्वफर चूके या भा
 में रख दें जब भूतजाय निकालकर काम लें ॥

जुल्लाब वास्ते निवालेने पित्तके

पीली हडका चक्रल ६ दिरम काले अलू १५ दाने- ल्हिसोडे २० दाने-
सनामक्की- स्यातरा तीन तीन दिरम- उन्नाव ८ दाने- कासनी के दी-
जर दिरम- कुसूसके बीज डेढ दिरम- शीर खिश्त या तुरंज चीन १० दिर-
म से १५ दिरम तक भिगोकर या ओटाकर पिलावे- और जो दस्त
उससे अच्छे न आवें तो अमलतास भी मिलादे- और जब अमलता
स मिलाया होतो रोगन बनफशा या रोगन बार्दम एक दिरम मिला
ना चाहिये और कमती बढ़ती दवाकी हकीम की बुद्ध पर है-॥
जुल्लाबकी कोई दवा ऐसी नहीं जो एकही मवाद को निकाले
जो जुल्लाब ॥

जिस मवाद को बहुधा निकालता है- उसी मवाद के नामसे मश
हूर है- तपसे एक परदेवाड़े से पहिले पीली हड नदेनी चाहिये- इस्ते
इसहाल कबिदी होजाता है- और जो जरूरत होतो रोगन बादाममें
उसे चिकनाले- और बीदाने और ईसब गोल के लुआवमें मिलाकर
पिलावे तो हानि न करे ॥

काफके जुल्लाबकी दवाये

* २२५ १०१३
अकोमके माल का किलका- कंतूरून- साहीजुं हजज- गा
रीकून- हब्युल नील- तुबुई- इमले- काडियम फायरे- बालोजी
शुकाई-॥

जुल्लाबकाफका

अपारिज प्रैकानु बुद सफेद- हब्युल नील सदा २ दिरम- गारी

१ इसहाल कबदी कलेजे के दस्त आने के कहत है ॥

कून- अनीसून डेट २ दिरम नमक- और चकापन के छिलके डेट २
 दांग- इन सब दवाओं को कूटे- और सोंफ के अर्क में साने यह एक
 पूरी सुराक जवान आदमी की है- गरी कून को कूटना न चाहिये-
 इसमें एक चीज नाखूनसी होती है- वह कूटे से जहर होजाती है इस
 वास्ते उसे वालोंकी चकली में छान लेना चाहिये कि महीन महीन
 उसका निकाल आवे ॥

२ दूसरा जुल्लाब वरुगमका

इस जुल्लाब को तप में भी देसकते हैं- और पुरानी खांसी को भी
 फायदा देता है- उन्नाब- लिहसोडे- बीसदाने सूखा हुआ जूफा- नी
 लोफर- और बनफुशे के फूल- हंसराज- गरिपाना कुचैला हुआ-
 तीन तीन दिरम- मुनकके १५ दाने- इंजीर ७ दाने- सुलहटी छिली
 हुई और कुचली हुई ४ दिरम- तीन रतल पानी में ओटावे जव एक
 रतल रहजाय तब छान लें- और अमलतास- तुसंबीन- सुलकां
 द- दसर दिरम मिलाकर मलें फिर छानकर फिर एक दिरम रोग
 न बादाम डालकर पीवें ॥

फांकी वरुगमके जुल्लाबकी

तीन दिरम तुबुर्द सफेद को- रोगन बदास में चिकनाकर कूट
 छान लें- और सोंठ एक दिरम- सफेद नमक आधा दिरम- पीस
 कर इसमें मिलाकर ठंडे पानी के साथ फांके और जो नमक की
 जगह सफेद बूरा सब दवाईयों के चरावर मिला लें तो अच्छा है-
 और मस्तगी भी मिला लें तो अच्छा होगा ॥

दवायें जो सीदा को निकालती हैं ये हैं

काबली हड - काली हड - सनामक्की - चालंगू अर्थात् बादरंज
 वीया - इसी सूत - उस्तर खुद्दूस - लाजवरद धुला हुआ (१) हजर अर
 मनी - बावला - ॥

जुल्लाबसौदाका

२२२२०५.

अयारिज फीकरा पांच दिरम् - इसी सूत दस दिरम् - लाजवर
 द धुला हुआ सात दिरम् - हजर अरमनी नौ दिरम् - संके मूनिया
 मुनी हुई - बकायन का बक्कल - काली खरु बंका दोढ़ी दिरम् -
 सुम्बलु तंतीव - अनी सूत सक सक दिरम् - सब को कूट छानकर
 करफ्त के पानी में साज कर गोलियां बना रक्वे दाई २॥ दिरम् उस
 में से खावे - ॥

सौदाका दूसरा जुल्लाब

सौदाकी बीमारियों को फायदा देता है - काली हड २ दो तो
 ले ११ माशे - बिस फायज (अर्थात् खंघाली) १ तोले ५ ॥ माशे - इफ
 ती सूत (अर्थात् आवाजी बल) २ तोले ७ ॥ माशे - सनायमक्की २ तो
 ले ४ रस्ती - उस्तर खुद्दूस अर्थात् सुद्दाक्षर २ तोले ४ रस्ती - गुलाब के
 फूल १ तोला २ माशे - गाजजुवा १० ॥ माशे - चालंगू १० ॥ माशे -
 अनी सूत अर्थात् वादियान रुसी ७ माशे - सौफ ७ माशे - काली

(१) लाजवरद के घोने की यह सी वेंहे कि लाजवरद को मही न पौस कर पानी
 में ओंटावे और थोड़ा सा जेहन का तेल डाले फिर नितौर इसके पीछे बहुत सा पानी
 हाल कर होले २ घोलें और रंगीन पानी दूसरे बरतन में निकाल कर उस बरतन
 को टक कर थोड़ी देर रहने दें जो लज्जवरद निकल कर बँड जावे उसे निकाल
 कर सुखालें इसी प्रकार सब घोलें - ॥ (१)

कुटकी २ द्वांग-सफेद तुर्बुद ३॥ माशे-सोठ १॥॥ माशे- इत सबको
 ओटावे और छनी हुई-गोरीकान- हजर अरगनी- मिलाइ निफती
 अर्थात् नमक निफती दोदो द्वांग कुचल कर पकते में मिलादे-
 और छान कर पीये जो अधिक पुष्ट करना चाहें- बकायन के
 बककल- और रलुआ- सकोतरी- और बदादे ॥

जिसदवा में आकाश बेल डालें- चाहिये कि दवाओं के ओट
 ने में उस्को पोटली में बांध कर डालें- और जल्दी से उतार ब छान
 कर पिलादे-॥

हुकना और शाफा भी सुवाद के निकालने के लिये अच्छा
 है- परंतु हमारे देशों में हुकने का रिवाज कम है और जो ब्रह्म वेद्यक
 की रीति से नहीं तो हानि करता है- इसलिये इसका वर्णन यहां नहीं
 किया जाता- और शाफा हुकने की जगह किया जाता है- इसका व
 र्णन यह है कि जब जुल्लाब दिया जाय और अपना असर न करे-
 तो शाफा करना उचित है- और कूलंज में जब तक शाफे से सुवाद को
 न नियाल सके जुल्लाब न पिलावे- और ऐसा ही बड़े क़ष्ठ में जब
 तक आवश्यकता नहीं तब तक शाफा न करें क्योंकि शाफा बहुत
 करने से बवासीर उत्पन्न होती है इस जगह बहुधा शाफे अच्छे
 अच्छे लिखे जाते हैं-॥

१शाफा- जो कूलंज की बीमारी को अच्छा करता है- और द
 स लाता है इसे तपमें भी देसके हैं- वनफशा के फूल
 ७ माशे-सनाय ७॥ माशे- हिन्दुस्तानी नमक (अर्थात्
 खारी नोन) ३॥ माशे अमरुतास का लुआव ३५ माशे-
 लाल शक्कर ३५ माशे- लेकर शाफा बनावे और चा
 हिये कि लम्बाई शाफे की ६ अंगुल रोगीकी हों-॥

२ शाफा— जो जुल्लखले के चादं दिया जाता है— जबकि उमके असरमें देर हीजाय— और गर्म मिजाज वाले को अच्छा है— तुरंज चीन १७॥ माशे— साबन इसकी ७ माशे— रबतमी ७ माशे— सांभर नमक ७ माशे— लाले शक्कर १७॥ माशे— इन औषधों को कूट छान कर शाफा बनाले—॥

३ शाफा— जो तुरंत असर करे— रूक दुकैड़ा सावन का छुहा रे की गुठली की बसंवर लेकर पारवाने की जगह से रक्के— और जो गुल रोगन से चिकना करले तो अच्छा होगा—॥

४ शाफा— लड़के और बूढ़ों को फायदा करता है— मोम ७॥ माशे— नमक ५॥ माशे— चूरह अरसनी ५॥ माशे— इन दोनों को मोम में मिलाकर शाफा बनावे और गुल रोगन में चिकना करके काम में लावे—॥

छठा अध्याय

कैलाने वाली औषधियों के विषयमें

पहिले उन उपायों का वर्णन किया जाता है— जो कैर अर्थात् उरुली से पहिले अवश्य हैं जान ली जब दोका काम पड़े तो उससे एक दिन पहिले नर्म नर्म भोजन करे और जो गरमी या और कोई बात नहोते सुगंधि चाला तेल मले और जिस दिन के करे तो पहिले सुंगकी दालया चावल पतली करके पीवे और योड़ी देर पीछे कैलाने वाली दवा पीकर कै करे और जिसके मिजाज में तरा हो उसको पहिले दाल चावल खिलाना न चाहिये और जिसका

कठिन तासे कैं आती हो उसे तीनतीन दिन गर्म जंगह में रखवें
 और चदन पर तेल की मालिश करें और भ्रांति २ के भोजन कारों
 इसके उपरांत उलटी करें और उलटी करने के समय सीधा बैठें और
 र पेट तथा कमर को दावले बहुधा मनुष्य खड़े होकर कैं करते हैं
 और ऐसी कैं पेटकी जड़से मवाद निकाल लाती हैं और चाहिये कि
 कैं दोबार थोड़ी २ देर के पीछे कीजाय इससे बिलकुल पेटनिर्मल
 होजायगा और कैंके पीछे गरमी में गर्म मित्राज वाले को ठंडे
 पानी से मुंह हाथ धोना चाहिये और गरम पानी में सिकंज बीन
 या कान्जनी मिलाकर कुल्ली करें इसमें जो मवाद मुखमें होगा वह
 ह दूर होजायगा और जाडों के दिनों में ठंडे मित्राज वाले को हा
 थ मुंह गर्म पानी से धोना चाहिये और शहद की सिकंज बीन से
 कुल्ली करें और कुल्ली के पीछे मस्तगी ३॥ माशे पीसकर श
 ककरके साथ या बिना शककर के सेबके अर्क के साथ पीलें और
 जो मस्तगी की जगह गुलकन्द - इतरी फल संगीरे होते भीडर न
 हीं हैं और जो औषधों की तेजी से हिचकियां आने लगेंतो थोड़ा
 गर्म पानी पिलावें और छीके लाने का उपाय करें और जो कैंके पी
 छ छाती और पसलीमें पीड़ा होजाय या पेट फूल जाय तो गुलरोगन
 या बावूने के तेल मलें और गर्म पानी से धारें और जो कैंकी तुरंत आ
 वश्यकता होती इन बातों के विनाही कैं करना चाहिये और जो बिना
 के खाने पर कैं कराना पड़ेतो उसे पेटसे अच्छी भ्रांति निकालना चाहिये
 वह दवायें जो कैंसे पित्तों को निकालती हैं यह हैं -
 सिकंज बीन कन्दी १० मिसकाल - पालक का अर्क ४० मिस
 काल, जेकें और टापेदुसे पानी में या खुब्याजी के पानी में घोलकर
 गुनगुना पिलावें-॥

१७ मिसकाल ४॥ माशे का होता है और बाजे ३॥ माशे का ही मानते हैं ॥

कैमें बलगमको निकालनेवाली औषध यह है

मूली के बीज ७ माशे - सोये के बीज ३॥ माशे - खारी नमक २॥ माशे - सब को कुट छान कर शहद में मिलाके खिलावे जो कै आपसे आजाय तो अच्छ है नहीं तो अपर से गरम पानी पिलादे -॥

वह औषध जो सौदा को कैमें निकालती है यह है ॥

मूली को खाली करके कुटकी उसमें भरदे फिर उसको सिक्ज डीन में रात भर डाले रखवे सवेरे खिलादे और अपर से सिक्ज डीन लोदिये के पानी में चोल कर पिलावे -॥ २५ ३ १२ ० ५ १

वह औषध जो पित्त और बलगमको कैमें निकालती है यह है ॥

शहद की शिकज बीन १० मिसकाल - खारी नमक २ मिसकाल - मूली का अर्क ५० मिसकाल - मिलाकर गुन गुना करके पिलावे -॥

वह औषध जो पित्त बलगम और सौदाको कैमें निकालती है यह है ॥

मुलहठी ५ मिसकाल - मोय के बीज ५ मिसकाल - खुज्याजी के बीज और जौ हर एक ३ मिसकाल - सब को रक कटोरं - यानी में ओट दें जब पानी आंचा रह जाय तब उसमें आर्काशवेल को शक्यत १० मिसकाल डाल के और अगूर का सिरका मिलाके और गुन गुना करके पिलावे और कै करादे -॥

जब तक उल्टी कराने की अत्यंत चाहना न हो - तब तक काली कुटकी न देना चाहिये - क्योंकि वह विष है - और उम्स खुन्नाक अत्यंत

होता है- और इसी प्रकार जिसने क्ले नकी हो उसे बिना जस्तरत के
कराना न चाहिये-॥

सातवाँ अध्याय

उत्त ओषधों के वर्णन से जो मवाद को पेशाब की
राह से निकालती हैं।

इस प्रकार की औषधें मवाद को रोगों के अन्दर से निकालने में बहुत
काम आती हैं परंतु जब मवाद बहुत होतो जब तक फ्रस्ट्रया जुल्लाव
न देले उत्त औषधों को काम में न लावे- इसी मीने कहा है कि जो म
वाद जिगर के पीछे होतो उसका निकालना उत्त औषधों से अच्छा है
पेशाब के जारी होने से परीक्षा- और पारवाना रुका जाता है इसी प्रकार
रदस्तों के आने से पेशाब कम आता है क्योंकि मवाद दूसरी ओर से
निकल जाता है- उत्त औषधों से पतला मवाद निकलता है- इस-
लिये चाहिये कि जब तक तुरी कारोग न हो- इन औषधों को न दे- इस-
लिये- इस्तिस्का- (अर्थात् जलधर)- फालिज- जोड़ों के दर्द में इन्हीं
औषधों को देते हैं और मवाद दो पंचने से पहिले इनको न देना
चाहिये-॥

पेशाब लाने वाली दवाइयाँ जो ठसडी हैं वह यह हैं-

कासनी के बीज- स्वीरे काकडी के बीज- शिक्जर्वान- लो की अ
र्थान घीया का अर्क- कुलफे के बीज- गों खरू- काकनज- तरबू
ज का पानी आदि-॥

गर्भ औषधें यह हैं-

करपत के बीज - सौंफ - जीरा - जिम्जास्फ - सुरवाहु बाजूका - अज
वायन - गाजर के बीज - सुदाव - कायाबलादि ॥

मातदिल अर्थात् वह औषध जिनमे सरदी गरमी व
रबर है यह है।

हंसराज - रवर वृजे के बीज - उंडी और गरम औषधों को मिलाकर
देने से भी यही व्यात होती है ॥

मातदिल औषध जो पेशाब बंद हु तलाती है यह है

जीरा - सौंफ - हरणक ७ सात माशे - कुचल कर एक प्याले पानी में
ओटावे जब पीने के अनुमान रहे जवि तो उसे छान ले - और स्वीरेक का
डीके बीज - और स्वर वृजे के बीज - हरणक १० ॥ सादे दस माशे - पीस
कर इसमें मिलादे - और मिश्री मिलाकर पिलादे - यह दर्चा मवाद
को बंद हुत निकालती है और वन्द पेशाब को जारी करती है और
जो - जीरा और सौंफ को कूट छान कर यहिले फाकले और जपरसे
स्वीरेक का डी और स्वर वृजे के बीज पीसके पीवे से भी यही फायदा
होगा ॥

औषध जो वन्द हैज को जारी करे ॥

तज - काले जीदी मिसकाल - अवहक - जुन्द वेदस्तर - हरणक
७ माशे - सबको कूट छान कर दुगुणे शहद ने मिलावे - और सकामि
सकाल से २ दो मिसकाल की गोली बांधले और मातकाल सकाल
गोली निगलकर ११ तोल २ माशे सौंफ का भर्क पीवे जो वन्द होन
का कारण तधि का कमौ या मिजाज की गर्मी न होती तो यह औष
ध काम करेगी नही तो छान ॥०

जो शांदा: जो हेज को जारी करे और पुरुष का बी
र्य जो ठरह से रुकार रहा हो उसे निकाल दे

इफसन तीन (अर्थात् सताह) दुरमन^४ तुर्की^४ - तुरमस - सुदाव-
सोंफ - करफल के बीज - हरसक ७ माश्री - इंजीर ५ गुलकन्द १० मि
सकाल - सबको औटाकर और गुलकन्द मिलाकर बराबर ३ ती
न दिन पिलावे - और फिर तीन दिन पीछे फिर पिलावे - जिस्से म
वाद अच्छे तरह से निकल जावे और हेज जारी करने वाली औष
धों को रजस्वला होने के दिनों में पिलावे इससे बड़ा लाभ होगा - ॥

आठवां अध्याय

उन औषधों के बर्णन में जो दिल और सिर और
जिगर और मेदे को पुष्ट करती हैं ।

सिर की पुष्ट दाता उसड़ी औषधें यह हैं - मोती - आमला - चिही - सेव^२
और अमरुद के हरे फूल - गुलाब के फूल - गुलाब - नारंगी - ॥

और रंग में यह हैं - चूल्हाहर - फन्दक - चालूगू - सोंठ - नगिर मोथा
वालुछद - मुश्क - अद - अस्वर - गालिया - लोंग - कुन्दर - अज
हर का तेल - भेंडी का दूध - ॥

दिल की पुष्ट दाता और प्रसन्न करने वाली उसड़ी दवाइयाँ यह
हैं - नाशपाती - मोठागनार - आमला - इमली - सेव - चन्दन - व
मलोचन - गिले मखतूम - रेपुवास - वंसद - कहसवा - कपूर -
गाउजुवा - धनियाँ - गुलाब के फूल - मोती - नीलोफर - नारंगी -
हड - याकूत - चांदी के चरक - ॥

गर्म यह हैं- सोनेके वस्त्र- इतरज किलके- उस्तखुद्स- अब
 रेशम- सफेद वह मनु- लाल वह मत्त- विसफायज- वालंगू-
 जंगली तुलसी- निरविशी- दारचीनी- नस्कधूर- इरुनज- आफरा
 न- सुम्बुल- नागर मोथा- तज- शकाकुल ऊदुंगर- अम्बर-
 फिरंजन मुशक- कदसलीव- इलायची- पोदीना- लाजवर्द-

जिगरकी - पुष्टि दाता उस्डी औषधें यह हैं- चासनी- ज़रि
 शक- अनार-॥

गर्म यह हैं- छडीला- अजफारुतीव- जायफल- हम्मा
 मा- हब्व बिलसान- दार चीनी- गाफिस- लोंग- तज- कशू-
 स- रूसी मस्तगी-॥

जानना चाहिये कि जिगर की काम ज़ेरी बहुत मरदी और
 तरीसे होती है- इसलिये जिगर की पुष्टि दाता औषध यह है॥

मेदे की पुष्टि कारक उस्डी औषधें यह हैं- आमला- अ
 नारदाना- समाक- वहेडा- हर्ड- और हर्डका मुख्या- विही
 वंसलोचन- गुलाबके फूल-॥

गर्म यह हैं- सरकंडेकी जड़- नारंगीके किलके- वालंगू-
 जायफल- दारचीनी- ज़रम्बाइ- नागर मोथा- तज- ज़ाज़ि
 ज हिन्दी- लोंग- इलायची- कुन्दुर- रूसी मस्तगी- मणकत
 राम शीह- पोदीना- ऊदुंगर-॥

जानना चाहिये कि जो वस्तु मेदे की पुष्टि कारक है- वह
 अंतडियों को भी पुष्टि करती है- और जो औषध दस्त लाती है वह
 मेदे को काम ज़ेर करती है- परंतु हड दस्त भी लाती है- और
 मेदे की पुष्टि कारक भी है- और सनाप को भी बहुत से लोग
 मेदे की पुष्टि कारक कहते हैं-॥

तीसरा खण्ड

रोगों और उनके उपाय का वर्णन
में

पहला अध्याय

सिरके रोगों के वर्णन में

पहला पाठ

सिरके दर्द के बिषय में

जो दर्द सधिर की अधिकता से होता - फस्द सरासू करे - और सिरके पीछे सीगी लगावे - और थोड़ा ही सधिर निकाले और नीबू का शरबत पिलावे - और सधिर लेने के पीछे जो कज्र होता - नुफू अंजा मज - या मुलख्यन सुवारिक और जो चीज सधिर के लिये लाभदायक है - काम में लावे ॥

और जो पित्त की अधिकता से होता पित्त की पकाने वाली और ठीक करने वाली औषधे पिलावे - इस के पीछे जुल्लाव उसीका दे - और सपोद चदन को हरे धनियों के साथ पीस कर सिर में लगावे ॥

और जो बलगम की अधिकता से होता बलगम को ठीक करें और सौफ को आटा के शहद डाल कर पिलावे और कुस्तका तेल सिर पर मले और मुजस और जुल्लाव बलगम कादे और -

वेद इजीर की जड़ और सौंठ को पानी में बिस कर लगाना अच्छा है ॥

और जो सौंदाकी अधिकता से होता सौंदा को ठीक करे और उसकी मुञ्जस और जुल्लावदे वाचूने और चादाम का तेल सिर में मले ॥

जो दर्द इन मवादों से हो उसमें पाशोया बड़ा लाभ दायक होता है-॥

सेसी पीड़ा में सिर को दवाना नहीं चाहिये क्योंकि इससे पहिले तो चैन पड़ता है परंतु अंतमें दुखः दायक है इसकी जगह पाव को दवावे और तलुगों को मले परंतु जो सिरको केवल रूय से पकड़े तो डर नहीं और जुल्लाव के पीछे होले होले दवाना भी गुण दायक है-॥

जो पीड़ा अकेली गरमी या अकेली सरदी से हो उसमें जुल्लाव की आवश्यकता नहीं जो गरमी से हो तो ठंडई पिलावे और सरदी से होतो गर्म औषधें दें ॥

और जो सिर की पीड़ा किसी और रोग के कारण से होतो पहिले उस रोगका उपाय करें ॥

(आधासीसी की पीड़ा) आधे सिर में होती है और देर में जाती है उसका उपाय वैसेही करना चाहिये जैसेकि अपर लिखा गया है ॥

और इस औषधका सिर में लगाना गुण दायक है- जम्बू लका गोंद ३॥ माशे- अफीम १॥ माशे- केसर ७ रती पीस कर गुलाब में मिलाकर कागज पर लगावे- और कानपटी पर चिपटावे और इस रोगका जल्दी उपाय करें नहीं तो दृढ़ होना जैसे कठिनता से दूर होता है ॥

बहुतसे लोग सिर की पीड़ा में अफीम आदिका लेप करते हैं इनसे तो पहिले तुरंत चैन पड़ता है - परंतु इकीमें ने इनका लगाना नहीं बतलाया है - और जो अत्यंत आवश्यकता होती अफीम के साथ केसर या बाबूना मिला दें - ॥

सिर की पीड़ा में जो गुलाब सिर पर डालें तो इतना डालें कि सिर भीगा रहे नहीं तो हानि करेगा ॥

जो सिर की पीड़ा वाले की नकसीर फूटे तो उसे बन्द न करें क्योंकि वह उसके लिये अच्छे है परंतु जब रुधिर अधिक निकले और उससे काम ज़ोरी बहुत पैदा हो तब बन्द करना चाहिये सिरके रोगों में नाक या कानसे पीप का निकलना बहुत अच्छा है - ॥

दूसरा पाठ

सरसाम के विषयमें

सिरके परदे या भेजेकी भिल्ली में सूजन होजाने को सरसाम कहते हैं - ॥

जो वह रुधिर की अधिकता से होते उसका चिन्ह यह है कि रोगी के मुख पर हंसी सी मालूम होगी ॥

और जो पित्त की विषेयता से होते उसका चिन्ह यह है कि रोगी को बुंरका हट और चिड़ चिड़ा हट होगी ॥

और जो बलगम से होते उसका चिन्ह यह है कि रोगी सुस्त और घबराया हुआ होगा - ॥

और जो सींदा से होते रोगी चौकन्ना मालूम होगा सींदा

बहुत काम होता है- और जो जो चिन्ह हर मवाद के लिये हम पहिले लिख आये हैं वह हर प्रकार के सरसाम में पाये जाय गे- ॥

सरसाम जो रुधिरसेहो उसे करानी तुस कहते हैं और पित्त वाले को करानी तुस खालिस और बलगामी को लीसर गुंस कहते हैं- ॥

जानना चाहिये कि जो सरसाम रुधिर और पित्त सेहो उस में तप अधिकता में होती है और बलगामी ओर सौदावी में हल की और बेहोश रहना और बकना सब सरसामों में जरूर हैं- ॥

उपाय उसका वैसेही करें जैसे सिर की पीडा में वर्णन कर चुके हैं- और इस रोगमें तप का उपाय अत्यंत आवश्यक है और रूनी और पित्त के सरसाम में पिंडालियों पर सींगी और पकने लूगाना अच्छा है- और दूसरों में खाली सींगी लूगाना गुणदायक है और लख लखा सुधानाभी तुरंत लाभ दायक है सिरसे तप के उतारने को और सब सिरके रोगों में पाशोया और पांव बांधना और मलना अति लाभ दायक है- रूनी सरसाम में फस्द तुरंत करनी चाहिये जो रातका समय होतो दिन का विचार नकरें उसी ॥ समय फस्द करादे- पित्तके सरसाम मेंभी फस्द अच्छी है- क्योंकि पित्त रुधिर में मिले रहते हैं- बहुधा मनुष्योंने बलगामी और सौदावी सरसाम मेंभी फस्द को अच्छा लिखा है परंतु इन दोनों में रुधिर कम निकालना चाहिये- ॥

बकना और बहकना सरसाम में अवश्य है परंतु कभी र बिना सरसाम ऐसा होता है जैसे किंवारी के तप में चारी के समय और किसी पीडा या रोग की अधिकता में इसको सरसाम रोरहा कीकी कहते हैं जब वह रोग जाता रहता है- तो बकना और-

बहकना भी जाता रहता है इस लिये पहिले उस रोग का उपाय करना चाहिये ॥

तीसरा पाठ ३ जुम्दके विषयमें

यह बह रोग है कि मनुष्य वैठ होतो- वैठ रहजाता है, और जो लेटा हुआ हो तो लेटा और सोता होतो सोता और खडा होतो खडा रहजाता है कारण इसका यह है कि सौदा सिरके पीछे गिस्ता है और वहीं बन्द होके रहजाता है--उपाय इसका यह है कि वेहोशी के समय कोई गरम शाफ़ा या सौदा का निकालने वाला हुकना दें- और शब्बो के फूलोंका तेल और चादाम के तेल में सोंठ या- जुन्द वे दस्तर- मिलाकर सिर पर सलें- और जब होश होजाय तो सुझिश और सौदा का जुल्लाब दें- और गर्म और तर वस्तु खिचलवें- और सिरके पीछे मोंम रोगन लगावें जो रुधिर की अधिकता से होतो फ़स्द भी करें- और पिंडलियां पर सीगियां लगावें- फ़स्द का नप्रतर तो गहरा दें- परंतु रुधिर काम निकालें- ॥

चौथा पाठ ४ सकतौके विषयमें

यह एक रोग है कि मनुष्य कां हिलना मुँलना बन्द होजाता है- और मुर्देकी तरह चित्त पडा रहता है- जो सांस न आती है तो इसका कारण यह है कि सिरके सब परदे बन्द होगये होंगे जो यह रुधिरकी अधिकता से होतो फ़स्द सरारू करें- नहीं तो

बलगम के निकालने वाले हुकने और शाफे दें- और सिर के बाल काट कर सिरको सेंकें- और नफ्रुख और सज़त कास में लावें- और जो किसी प्रकार उलटी होसके तो बहुत अच्छा है- और हाथ पांव का मलना और जोर से बांधना भी लाभ दायक है- और खोपरी पर पछने लगाकर उसपर पारा मलना या बछनाग- पीसकर मलना अच्छा है और जब होश आजाय तो सुझिआ और जुल्लाव बलगम का दें- ॥

इस रोग में जब दम आता जाता मातृस नहो तो चंगा होना असंभव है- परंतु जिस्में दम आता जाता हो उसका अच्छा होना भी अति कठिन है- इस रोग में और मृत्यु में यह अंतर है कि इस रोग वाले की आंख की पुतली में परछांही दिखवाई देती है- और बुद्धे की आंख में नहीं दिखवाई देती- चाहिये कि रोगी का तीन दिन गति दाह कर्म न करें- किंतु उसके अच्छे होने की आशा नहीं है- परंतु परमेश्वर की कृपा से अच्छा होजाय तो क्या आश्चर्य है- और जो उसकी देह नीली होजाय तो उसका उपाय न करें ब्रह मुदी है- ॥

पाचवां पाठः संघात के बिषयमें

अतीविक्र

स्वभाव से अधिक अचेत होके सोना रोग है और इसी को संघात कहते हैं- कारण इसका यह है कि सिर में तरी अधिक होजाती है- चाहें अकेली तरी हो या उस्में बलगम और रुधिर कामबादमी मिला हो इस रोग में जैसा कारण हो वैसाही जुल्लाव दें- और सिस्का सुधार्ये- सुशकी लाने वाली वस्तु और इतरी फाल खिलाना बहुत लाभ दायक है- और इसका कारण

सेदाका बुखार होता चिन्ह इसका यह है- कि पिहिले वद हज्मी
हुई होगी- और भूख के समय कमती मालूम होती होगी- उ
पाय इसको यह है कि पेट को साफ़ करें- और इतरी फल का
प्रनीजी ग्विलाचें और सूखा धनियां कूट छानकर खाने के पी
छे फंकावे- ॥

× **छटापाठ** जंठ थोरी
सहर के विषय में अर्थ- ×

सहर उस रोगका नाम है जिस्में स्वभाव से विशेष मनुष्य जा
गे और नींद उसे कम आवे कारण इसका सिर में खुशकी- होना
ना है- चाहे वह अकेली हो या उसमें सौदा और पित्त और खारि
बलगम मिला हो जो यह रोग अकेली खुशकी से होता सिरको त
स्कवे और खाने पीने और सूंघने में तर वस्तुओं को काम में ला
वे और जो यह सवाद से होता उसीका जुल्लाबदे और सिरका
कभी न सुंघावे क्योंकि यह नींद को बहुत खाता है- निद्रा लाने
वाली औषधें यह हैं- हर सीया सिर हाने रखना औस्बलगमी
सहर में सिर पर सी लपेटना और नाजबू गुलाब में भिगो कर
सूंघना और लख लखा हरदम पास रखना अफीम और बनफ
शे के तेलको मिलाकर चंद या पर मलना- ॥

जब जागने का कारण तपहोतो पहिले उसका उपाय करें
और सिर पर तेल मलें और प्राशोया करके हाथ पांच मलें- ॥

अस्ती गुंठुले सातवा पाठ ७

(सिबातसूहरी और सहर सिबातीके विषयमें)

यह वह रोग है जो सहर और सवात के कारणों के इरंवहे हो जाने से होता है और बहुत से हकीम यह कहते हैं कि यह पित्त और बलुगम से दमाग में सूजन हो जाने से होजाता है चिन्ह इस रोगका यह है - कि कभी अचेत और घोर निद्रा बहुत काल तक रहती है और कभी रोगी बहुत देर तक जागा करता है और जो मनुष्य इसे भेजे की सूजन बताते हैं उनकी दलील यह है कि इस रोग में बकना और आंखें पथरा जाना अवश्य है जो निद्रा अधिक होता इसे सचात सहरी कहेंगे और जो जागना विशेष होतो सहर सुवाती कहेंगे और जागना और सोना बराबर बहुत कम देखा गया है जो ऐसा होतो कहने वाला जिस शब्द को चाहें पहिले, काहे सच्चतो यह है कि इस रोग में भेजे की सूजन जरूर नहीं परंतु सूजन में यह रोग हो सक्ता है - ऊपर के दो पाठों में जो उपाय लिखे गये हैं उन दोनों को मिला कर करें और जब बलुगम की अधिकता होती कम गर्म वस्तु सुंचावे और जिस समय पित्तों की अधिकता से होतो ठंडी वस्तु सुंचावे ऐसे ही और उपाय जानों - ॥
और जब यह रोग भेजे की सूजन से हेतो वह उपाय करेंगे बलुगम और पित्तके सरसाम में ऊपर लिखा गया है - ॥

आठवां पाठ

निद्रा में रुकी

रुकी

काबूसके वर्णनमें

यह वह रोग है कि मनुष्य
 कि कोई भारी चीज उसपर गिर पड़े
 वह घबरा कर वर्णन लगता है -
 फास्ट सराख करे - और पिंडलियों

कमदे- और जो बलगम या सौदा को अधिकता से होता उन्हीं का जुल्माव दें- और इसरोग का उपाय तुरंत करें नहीतो मृगी हो जायगी-॥

नवांपाठ मृगीके विषय में शुद्ध

यह वह रोग है जिस्मे मनुष्य अचेत होकर गिर पड़ता है और सुख और हाथ पांव टेटे और खिचे रहजाते हैं- और वह तडफा करता है- इस रोग में सिस्का चोफल होना और जीभ की रंगों का हरा होना अवश्य है- कभी यह रोग चारी से होता है- जो इसकी चारी बहुत होंतो बुरा है- परंतु बालकों को कभी २ रेसा देखा गया है- कि एक दिन में आठ २ बार आती है- और फिर सेसी चली जाती है कि कभी नहीं होती- उपाय इसका यह है- कि चारी के समय वह चिकित्सा करें जो सूखी में होती है- और कोई बस्तु या कपड़ा लपेट कर उसके सुखमें रख दें- कि वह अपनी जीभ चवाने डालें और हाथ पांव उसके जकड़ दें कि चोट न लगे और जब होश में आवेतो जैसा मवाद हो वैसाही जुल्माव दें- और तर सेवे और दूध दही न खिलवें- और- मदसलीव- को गले में लटकावें- और- नास- जो दूसरे खरड में खिलवाया है सुघावें-॥

बच्चों को जो पसली का रोग होता है- वह भी इसी प्रकार से है- उपाय उसका मवाद के अनुसार करना चाहिये- और विना कारण के जले अधिक गर्म और अधिक ठण्डी औषध न दें- और दूध पिलाने वाली की हुशियारी रखें- कि हानि कारक वस्तु न खावे- अससे भोग न करें- कि दूध बिगड जाता है- और बच्चे को काँझ होता शाफा करें ॥

दसवां पाठ १० मालीखोलिया के वर्णन में

यह वह रोग है कि मनुष्य को अच्छी बात नहीं सूझती और वह बातें सूझ पड़ती हैं जो केवल बुद्धि के विपरीत हों ॥

जुबुद्धि और अहंकार और घमंड और व्यभिचार भी इसी प्रकार के हैं-॥

जैसा मवाद हो उसके अनुसार जुत्लाव दें- और दिरकी खुशबारी वाली वस्तु और जोशदारू खिलायें- और भोजन में हल्की वस्तु खिलाना और थोड़े दिन पीछे कई बार जुत्लाव देना- अधिक लाभ दायक है- और जानना चाहिये कि ऐसे रोगों में उपाय का लाभ बहुत काल के पीछे प्रत्यक्ष होता है घबरारें नहीं ॥

ग्यारहवां पाठ ११

जुनून के विषय में

यह रोग कई प्रकार का है- जो इसमें लोभ और क्रोध पाया जाय तो सानिया कहलावेगा- और जो हंसी और खिल और सतान होती उदाउल काल्व कहेंगे ॥

और जो मनुष्यों से न मिले जुले तो कतरब कहते हैं यह रोग मालीखोलिया से बढ कर है- उपाय इसका वैसाही करें जो मालीखोलिया का है- और स्त्रियों का दूध सिर पर दुई- और नाक में डालें- और वनफाशे और वादाम का तेल सिर पर मलें और पेट पर गर्म पानी धारें- और मवाद पकजाने के पीछे माजून जुजाह- खिलायें- ॥

बारहवां पाठ १२ अंश ३३

सदर और दृव्यार के विषय में अंश ३३

जब मनुष्य खड़ा होया चले और आंखों के तले अंधेरा आजाय तो उसको सदर कहते हैं ॥

और जब यही बढ जाय और सिर घूमने लगे तो यह दृव्यार है जैसा मवाद हो वैसाही जुल्लाबदे- जो मवाद सिर में हीगा तो सिर में भी कोई रोग मालूम हीगा- और जो मवाद पेट में हीगा- तो जी मचलायगा- और पेट में कोई रोग हीगा- जैसा उचित हो वैसाही उपाय करें- और जो कमजोरी के कारण सिर घूमे तो भी जन में हल्की और दिल खुशक करने वाली वस्तु खिलावे- और मोतीयां को पीस कर- नीबू या चन्दन- या अनार के शरब त में मिलाके चटावे और जो सिर में सरदी यद्दुच ने से सिर घूमे तो सेके- और गर्म लेप लगावे और गर्म मसालह पड़ा हुआ गोजन खिलावे ॥

तेरहवां पाठ १३

निश्चयान अर्थात् मूल जाने के रोग के वर्णन में

बहुधा इस रोग में सिर में बलगम या सौदा अधिक होजाता है- या मिजाज में अकेली गरमी बहुत होजाती है- बलगम और सौदा के मवाद में मुन्जिरी देकर- हब्ब को काया- आदि खिलाकर सिर को साँफ़ करें- और मजून फिलासफ़ा और वज और सोठ का सुरवा- कुन्दर- और शक्कर- मिलाकर खिलावे और ठण्डे पानी से चचेते रहें- और सौदाही में- तेल सिर पर मले और जो यह रोग अकेली गरमी से होतो ठण्डी और तर वस्तु का प्रमेलते

चौदहवां पाठ १४

अरि द. वि.

फालिज के विषय में २१५२५

यह वह रोग है कि आधा बदन लम्बाई में हिलता गुलता नहीं है - बहुधा इसका कारण बलगम की अधिकता है - और कभी रूधिर समी हो जाता है - बलगमी में चार दिन तक पुष्ट औषधें न देयें - और खाना पीना बिल्कुल बन्द कर दें - और जो भूख न राक सके तो - जीरा - और दारचीनी - ओटाके दें - और पानी की जगह - साउल अस्ल - पिलावे - फिर चौथे दिन बलगम की मुन्जिश पिलावे - और ६ दिन या चौदह दिन के पीछे जबकि मवाद पका जाय तो जुल्लाव दें - और जुल्लाव के पीछे कूटका तेल मलें और - जवारिश विलादर - और तिरयाक काँचीर - और मंसरोदी तूस - खिलाना बहुत लाभदायक है - और जुल्लाव के पीछे - मुश्क - और कुन्दश - फिकफिक - त्रौशादर - पीसकर सुघावे - और गर्म पानी बदन पर न डालें - क्योंकि वह इस रोग के लिये उसके पानी से अधिक हानि कारक है - जो फालिज के साथ रूधिर की अधिकता होतो - फ्रस्ट भी खोल सकते हैं - और जो यह रोग गर्मी से होतो गर्म औषधें न देना चाहिये पहिले गर्मी जो दूर कर लें - फिर इसका उपाय करें - और जो फालिज रूधिर की सृजन से होतो पहिले फ्रस्ट खोलकर उसका उपाय करें ॥

और जो बदन में किसी एक जगह का हिलना गुलना बन्द हो गया होतो उसको इस्तिरखा कहते हैं ॥

इति चारुणी
ल. व. व.

पन्द्रहवां पाठ १५

खदर के विषय में ॥ २१॥ २१५

०६११५

०६११५

मनुष्यकी देह में कोई जगह सुन पड़जाय उसे खदर कहते हैं- जो यह रोग रुधिर की अधिकता से होता फ्रस्ट् रखाले- और भोजन कम दे- और जो बलगम की अधिकता से होता बलगम का जुल्लाव दें- और जो खुशकी से होता उसका चिन्ह और उपाय आगे लिखा जायगा और जो दवजानि और जोरसे बांधने के कारण से होता उस कारण को दूर करें ॥

सालहवापाट १६ लकड़के विषयमें

इस रोग में सुख टेदा होजाता है- और कारण इसका खिंचना या टीला होजाना मुंहकी रोक और का है- लाला होजाना बलगम से होता है- चिन्ह उसका सुस्त होना- और जीभ के स्वाद में फर्क पड़ जाना- और नीचे की पलक और तालूका लटक आना है- और खिंचजाने का चिन्ह थूक का कम होना और माथे का खिंच जाना है- टीले होजाने में फालिज का उपाय करें- और खिंचजाने का उपाय आगे लिखा जायगा- जब तक चार दिन या सात दिन न व्यतीत हो जायं- कुछ उपाय न करें- और भोजन बन्द कर दें- और जो होसके पानी भी न दें- और अंधेरी जगह में बिठावें और चीनी आड़ना चारे रखें- कि रोगी हरदम उसमें अपना मुख देखा करें- और जाय फल सुख में रखवामें और किन्न की जड़ की छाल जो- मीठे ल अस्के में ओटी हुई हो उसे कुल्ली करवावें- और जो रुधिरकी अधिकता से होता फ्रस्ट् भी खोल सके हैं- इस रोग के उपायमें देर करनी न चाहिये- जो तीन महीने व्यतीत होलायंगे तो सुहसीधान होगा ॥

चीनी आड़ना चांदी ताम्बे और पीतल का मिलाकर बनाते

हैं- इसमें मुख देखने से जोर पड़ता है- इस कारण सुंह सीधा हो जाता है ॥

५ जिज्जिजो सतरहवा पाठ १७
सी जिज्जु तशन्नुज के विषय में । ॥ ७२ ॥

तशन्नुज किसी जगह के खिंच जाने को कहते हैं- जो कारण उसका बलग्राम की अधिकता होती उसका नाम- तशन्नुज र्त्तब और इमतिलाई कहते हैं- चिन्ह उसका यह है कि अर्धानक उत्पन्न होजाय- और चिन्ह बलग्राम के दृष्टि पड़ें- और जो खुशकी के कारण पैदा हो उसको- तशन्नुज याचिस कहते हैं- चिन्ह उसका यह है कि धीरे धीरे पैदा होगा और उसके पहिले कैंया दस्त या रुधिर बहुत निकला होगा या तप आई होगी या रोगी बहुत जागा होगा या उसके क्लेश बहुत हुआ होगा- और उसका बदन दुबला होगा- तशन्नुज इमतिलाई का उपाय फालिज के अनुसार करना चाहिये- और तशन्नुज याचिस में बदन को बाहर से और भीतर से तरी पहुंचाना चाहिये- और मोम को बनफशे या चादान के तेल में मिलाकर मलें- और स्त्री का दूध नाक में डालें ॥

विच्छू के डंक मारने में और पेट पर घाव लगने में या कीड़े पड़ने में जो, तशन्नुज हो चाहिये- कि उस कारण को दूर करें और मृगी के समय जो तशन्नुज होता है वह मृगी के दूर होने से जात है- और जो नजाय तो रोगन गुल या काई और तेल गुन गुना करके मलें- और कभी २ आदमी या मुख जम्हाई लेने में खुल्ला रह जाता है- उसमें किसी तेल कामलना लाभ दापक है- और जो इसे अच्छा न होतो- तशन्नुज- इमति लाई का उपाय करें ॥

अठारहवां पाठ १८

विद्युत्की

तमहुद के विषयमें

अङ्ग-का कोई भाग लम्बाई में तनेकर रह जाता है- और समेटने से नहीं सिमरता कारण इसका यह है कि कोई पद्मा दोनों ओर से खिंच जाता है- उपाय इसका वही करें जो तशन्नुज में लिखा गया ॥

इन्तीसवां पाठ १९

विद्युत्की
पत्रे

कजाज के वर्णन में

२ गुण
२२२३

तशन्नुज जो गरदन में हो और गरदन इधर उधर नपिरसके उसे कजाज कहते हैं- जैसा कारण हो वैसा उपाय तशन्नुज को अनुसार करें- और यह रोग सब प्रकार के तशन्नुजों से बुरा है- इसका उपाय बहुत जल्दी करना चाहिये ॥

बौसवां पाठ २०

०५५१३३

राशे के वर्णन में

विद्युत्की

इस रोग में मनुष्य का शरीर कांपने लगता है- जो यह जलगमकी अधिकता से होता निसायान और बलगम के चिन्ह पाये जायेंगे- उपाय इसका यह है कि बलगम को निकालें- और जो विषय की अधिकता से होता- उसको छोड़ दें- और ताज़दूध पीना और देह पर तेल मलना अति लाभदायक है ॥

इक्कीसवां पाठ २१

३३३३

इसलज के विषय में

२
०२५२
२५२३

शरीरमें किसी जगह को फड़कने को इरखलाज कहते हैं ॥

नितप्रति मुख का फड़कना लकवा आने का चिन्ह है- और पेट का फड़कना भृगी होजाने का- और बगल का फड़कना छाती और बगल की सूजन का चिन्ह है- और सारे शरीर का जगह-र से फड़कना संकटा होजाने का चिन्ह है- पेट की रंगों का फड़कना माली खोलिया का चिन्ह है- उपाय इसका यह है- कि जमका को गर्म करके उस जगह सेके- और जो इस्से अच्छा नहोता बलगम को निकाले- और जो हेज़ के बन्द होजाने से यह रोग होतो- फ्रस्ट रबुलबाने से जल्दी जाता रहता है ॥

बाईसवां पाठ २२

लबीके विषयमें

स्वरिती

इस रोग में देह मारी होजाती है- और सुंह और आखें लाल होती हैं- और जम्हाई और अंगड़ाई बहुत आती हैं- और ऐसा मालूम होता है कि तप आने वाला है- और थोड़े कारक के पीछे यह बात जाती रहती है- या बार बार आती है- जो बार बार आये तो सूधिर और पित्त को कम करें- और भोजन थोड़ासा दें- और गर्म मिजाज वाले को ठण्डा पानी पीना और ठण्डे पानी से स्नान करना अति लाभदायक है- और धनिपां को कूट छान कर शक्कर के साथ फांकना- या उसको भिगोकर और मिठाई में मिलाकर पीना लाभदाता है ॥

तेईसवां पाठ २३

हिसुके चर्णन में

यह वह रोग है कि भेजे में खुजली बिना दर्द के होती है- उपा

य उसका यह है कि भेजे को ठण्ड और तरी पहुंचावे- क्योंकि यह रोग पित्त के बुखार के कारण से होता है- और जो इससे भी अच्छा न होतो- पित्तों का जुल्काब दें- और जो तधिर की अधिकता देखें तो फ़रसू भी खोल दें ॥

चौबीसवां पाठ २४

असोबा के वर्णन में

यह वह दर्द है जो भों अर्थात् सूकुटी में होता है- जो अकेली गरमी से होता उसका चिन्ह यह है कि सूरज के निकलने से उदर चढ़े- और जों जों दो पहर तक दिन चढ़ता जायगा त्यों रदई भी चढ़ेगा और दोपहर पीछे चढ़ता जायगा- यहां तक कि रात को बिलबुल न रहेगा- और फिर सवेरे योड़ी होगा- उपाय इसका यह है कि- कापूर को रोगन-मुल में घोलकर नाक में टपकाये और बाहर से देह को साफ़ स्वयं- और जो देह की गरमी अपर चढ़ने के कारण यह रोग होता चिन्ह उसका यह है कि रोगी आंधा पड़ा रहे- और भाये की खाल खिंची हुई होगी- उपाय इसका यह है कि नाक में कोई वस्तु काड़ी और खुरखुरी डाल कर- या नख और अंगुल चुभीकर नकासीर फाड़ें और जो इससे नकासीर नफूटती फ़रसू सरसू करें और कापूर सूंचावे और हाथ पांच मरें ॥

पच्चीसवां पाठ २५

जुकाम और नजले के विषय में

जानना चाहिये कि भेजे का मल जो नासिका के द्वारा चहे उसे जुकाम कहते हैं- और जो गले पर गिरे तो नजला होगा- गरमी का चिन्ह यह है कि यह मल पतला और जलता निकलेगा

और सरदी का चिन्ह इसका गाढा होना या वे जलन होना उपाय इसका यह है- कि मित्राज को बुरस्त करें और जैसा मवाद हो वैसे ही उसे निकालें- चाहिये कि जुकाम में मवाद को साफ करने से पहिले वह वस्तु न खाये पीवे जो मवाद को निकालने से रोके- और काज को दूर करें- और सिर को ठाकें रहें नजला धौं गरम हो या ठंडा बहुत सोने और चित्त छेदने और बहुत चलने फिरने और सिर सुकाने और खटी वस्तु और दूध दही खाने से बचते रहें- और जो जुकाम के साथ खासी भी होती उसका उपाय भी अति अर्धप्रयक है ॥

माशरा और खादशनाम सूजन हैं- जो मुख पर हो जाती है और जुल्लाब से जाती रहती है- उनका वर्णन इस पुस्तक के अंत में आवेगा ॥

दूसरा अध्याय

आंख के रोगों के वर्णन में

नेत्रों में सात परदे और तीन रतूवते और एक असवा है- जो रग के सदृश बीच में से खाली है- और इसी असवे में से दिखाई देता है- और आंख की पुतली भी इसे कहते हैं- बीचों बीच में आकर- रतूवत जली दीया तक पहुंचती है- इस रतूवत जली दीया में सब चीजें दिखाई देती हैं- और असवे में निकलकर दृष्टि की इन्द्री तक पहुंचती है- वह इनको पहिचान लेती है- और इसी रतूवत और असवे के बचाव के लिये और सब परदे और रतूवते आस पास हैं ॥

अब जानलो कि- आंख का परदा जो बाहर की ओर हवा से मिला हुआ है- और छुवा जाता है वह मुलतहिमा और करनियां हैं- अर्थात् सफेदी आंखकी जो दिखलाई देती है वह मुलत हिमा है- और गोल और काली वस्तु करनियां हैं- यह दोनों परदे आपस में मिले हैं- इनके पीछे परदा इनबीया है यह परदा रंगदार है- और करनिया में जो रंग है वह इसी का है इस परदे के बीचमें एक छिद्र है- रेशनी और चिचों के निकलने के लिये और आंख में पानी उतरने की जगह भी यही है इस परदे के पीछे रतूवत वैजिया है- इसका रंग अंडे की सुपेटी के समान है- इसके पीछे परदा गनकवृत्तिया है यह परदा मकरी के जाले का सा है- इसके पीछे रतूवत जली दीया है- और इसके पीछे रतूवत जजाजिया है जो पिघली हुई काच की सी है और इसके पीछे परदा शबकीया है जो जालके अनुसार है- और इन दोनों रतूवतों को धरे हुये है- और इसके पीछे परदा मशोगिया है- और उसके पीछे परदा सलविया है- जो आंख के देले से लम्बा हुआ है- हर २ परदों और रतूवतों में बलग रोग होते हैं- उनका वर्णन आगे करेंगे ॥

अरंभी विजे

उअथु

पहिला पाठ १

रमद अर्थात् आंख आने के विषयमें

मुलत हिमा पर सूजन आजाने का नाम रमद है- जो यह स्थिर में होतो चिन्ह उसका यह है- कि आंख लाल और भारी होजायगी और दर्द होगा और चीपड़ उससे बहुत निकलेगी- और जो पित्त से होतो- जलन और पीडा बहुत होगी परंतु चीपड़ बहुत न होगा- और जो बलगम से होतो रंग इसका सफेद होगा और आंखें फूल जायगी और चीपड़ आंसू बहुत बहेंगे- और

जो सौदा से होतो सूजन बहुत होगी और चौपड़ कुच्छभी न निकलेगी और पलके न चिपकेगी और आंख बोरल होगी और सिरमें दर्द रहेगा- और जो रीढ़ से होतो वोरन होगा न चौपड़ निकलेगा- उपाय इसका यह है कि मवाद के अनुसार उसे साफ करे और फ्रस्ट और जुल्लाव से पहिले कोई औषध आंखमें न डाले- परंतु जब यह रोग हलका होतो दो तीन दिन पीछे विना फ्रस्ट और जुल्लाव के दवा डालनी चाहिये- गर्म रसदमें रसोत का लडकी की सां के दूधमें चोलकर- आंखके अन्दर और ऊपर लगाना अति लाभदायक है- और जब पीड़ा बहुत होतो थोड़ी सी अफीम भी उसमें मिलाके और चाकसू पीसकर आंखमें डालाना सब प्रकार की रसद में अच्छा है- परंतु इसको थोड़े दिन पीछे डालें रोगके होते ही न डालना चाहिये और गर्म वस्तु न खावे ॥

चाकसू के पनानेकी रीति यह है- कि उसे छील कर पानी में फकावे और जब गल जाय तो सुखादे- उसके दो हिस्से लेकर एक एक हिस्सा मिसरी और चीनी मामीरां कामिलाके पीसके और आंखमें डालें- लडकी की आंखमें कभी २ यह रोग बहुत होजाता है- उसको बरदीनज- कहते हैं- उसका उपाय यह है- कि सिरके पीछे पछने लगावे और चुटकी चाकसू की आंखमें डालें ॥

दूसरा पाठ २

तुरफा के वर्णन में

इसमें मुलत हिमापरस्थिर की फुटकी पड़ जाती है- उपाय

इसका यह है कि- कपूतर या बतरका कच्चापर उखेड कर उसके राधिर की चूंद अकेली या गिले अरमनी के साथ आंखमें टपकायें- और कुन्दर को जलाकर उसकी धूनी आंखको दें- और जो उसका कारण अति पुष्ट होता पहिले फस्ट करें और पछने लगायें और जुल्लाव दें ॥

तीसरा पाठ ३

जुफ़रा अर्थात् नारवूनेके विषयमें

इसका उपाय यह है- कि लाहोरी नसक की सलाई बनाकर कई चार दिन में आंखमें लगायें- और जो मवाद बहुत होता फस्ट सरासू करें- और हव्व अयारिज खिलावें- और बलगम उत्पन्न करने वाली वस्तुसे वचें- और जो नारवूना बहुत उभरा होता- किसी अच्छे दस्तकार को बुलाके उमे उठवा लें ॥

चौथा पाठ ४

आंखमें जाला पड़ जानेके विषयमें

इसका कारण यह है कि- कारनिया पर कोई वस्तु उत्पन्न हुई होगी- उपाय इसका यह है- कि समंद फेन को पात्नी में घिसकर आंखमें लगायें- छोडे दिनों में अच्छा होजायगा- और जो मवाद पुष्ट होता भेजे को मवाद से साफ़ करें- और उस जाले को नहीर सुह जीम से चाटना अति लाभदायक है ॥

पांचवां पाठ ५

सबल के वर्णन में

इससेग में आंखकी रंगें लाल और मोटी होजाती हैं- और

खुजली होती है जो इसमें आंसू भी निकलें- और पलकों में पानी भर सके तो उसको सबल रतव कहेंगे और जो ऐसा न हो तो सबल या बिस कहेंगे- उपाय इसका यह है कि- फ़स्द सराखू करे ड सके पीछे माथे की रस और कोये की रस की फ़स्द खालें- और जो यह रोग कम होता- शियाफ़ दीनार- आंख में लगावें और जो भारी होता- शियाफ़ अहमर- और वासली कून लगावें और सबल या बिस- में सुरमा और औषधों के लगाने से पहिले और पीछे गर्म पानी से गर्म जगह में बैठवार स्नान करना अवश्यक है- जब रसद और सबल दोनों सिले हुई होती दोनों के चिन्ह पाये जायेंगे- ऐसे समय में न गर्म औषधें देना चाहिये न ठण्डी- परंतु मवाद को निकालें और अंडे की सफ़ेदी आंख पर लगावें- यह दोनों रोगों को लाभदायक है- जो इस उपाय से न जीवें तो दस्तकारी से उठालें ॥

अखीननी छठा पार ६
 अखाइ खुजी पते

सुलत हिमा के फूल जाने के बिषयमें

जो फूल जाना सुलत हिमा का रीह के कारण से होता चिन्ह उसका यह है कि- अचानक उत्पन्न होगा- और पहिले आंख के कोनों में- मक्खी या मच्छर के काटने की सी जकन होगी- और जो बलराम से होता होले होले उत्पन्न होगा और पीडा बहुत न होगी- और अंगुली के दवाने से चिन्ह रह जायगा- और जो मवाद बहुत और पतला होगा तो वह चिन्ह देर तक न रहेगा- उपाय इसका यह है कि जैसा मवाद हो वैसा ही जल्लाच दें- और ठंडी रसद की औषधें काम में लावें- और जो

यह रोग रीह से होता- तीन दिन तक कुछ उपाय न करें आप से आप जाता रहेगा ॥

सातवां पाठ ७

मुलतहिमाकीखुजलीकेवर्णनमें

इसमें बहुधापलक भी घायल या लाल होजाते हैं- उपाय इसका यह है- कि निमकीन और चरपेरा भोजन न खावें- और फ्रस्ट और जुल्लाव लें- और जस्त को नखुल पर रगड़ कर आंख में लगावें- और गर्म पानी से मुख धोया करें ॥

आठवां पाठ ८

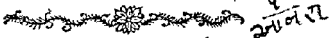
सौसंतुलमुलतहिमाकेवर्णनमें

इस रोगमें आंखकी सफेदी पर बड़े कोये की ओर नरस मांस उत्पन्न होजाता है- उपाय इसका यह है कि- कर्बू चार मवाद को साफ़ करें- और फिर दस्तकारी से काट्टुडालें ॥

नवां पाठ ९

दोकांतुलमुलतहिमाकेविषयमें

यह वह रोग है कि आंखमें बहुधा कोये की ओर कड़े और लाल और काले दाने पड जाते हैं- उपाय इस का यह है- कि जो मवाद अधिक हो तो उसे साफ़ करें- नहीं तो गुलाब में कापड़ा भिगो कर आंख पर रखना अच्छा है- और इस से अधिक उपाय की आवश्यकता नहीं ॥



दसवां पाठ १०

पण्णी

दमआ अर्थात् आंसू बहने के विषयमें

जो गरमी से होतो सुरमा लगावें- और सरदी से होतो चास ली
कून- और जो आंसू की कम ज़ोरि से होतो जली हुई पीली इड-
और नमक- और साजू- बराबर बराबर कूट छान कर आंसू में
सलाई से लगावें- और जो थोड़ी रदेर आंसू बहकर थमरहा क
रं तो उसको हिन्दी में मतना कहते हैं- उपाय उस्का यह है- कि
पहिले मवाद को निकालें- और इसके पीछे आंसू बहाने वा
ली दवा लगावें- जैसे चासली कून और शियाफ़ अहमर ॥

ग्यारहवां पाठ ११

अं २१२५१५५५
**हिरक़ातुल उैन अर्थात् आंसू में जलन होने
के विषयमें**

जो यह गर्म मवाद के कारण से होतो उस मवाद को निकालें
और जो कोई मवाद नहो तो- तूतियाको- कच्चे और खटे अणूर
के रसमें भिगो के सलाई से आंसू में लगावें- और डूरी कासनी
के पत्ते कूट कर पानी उसका तेल में मिलाकर लगायें- और जो
कापूर भी उसके साथ मिलायें तो अति लाभ दायक होगा ॥

बारहवां पाठ १२

१२६
**कुज़ा अर्थात् आंसू में किसी वस्तु के पड़ जाने के
विषयमें**

जब आंसू में कुछ पड़जाय तो आंसू को कमी नमकें- ऐसा
न हो कि कोई कड़ी वस्तु होतो- मलने से आंसू में बुभजाय-

आंख को गर्म पानी से धोवें और स्त्री का दूध आंख में डालें- और जो वह दिरवाई देती होती उसे रुई या नर्म कपड़े से उठा लें- और वह भीतर चिपटी हुई हो और छुट न सके तो- निशास्ते को पीसकर आंख में भर दें- और थोड़ी देर ठेरे रहें- इससे वह वस्तु निशास्ते में लिपट जायगी- फिर उसे अलग रुई से उठा लें- और जो कोई भुत्तगा या मच्छर आदि होता मुलतानी मिट्टी या गेरू आंख में पीसकर डालें- और थोड़ी देर आंख में बांध दें- वह उसे लिपट आवेगा- फिर उसको रुई से उठा लें और जो शीशे का चूरा आंख में जा पड़े उस समय वह भीचना जो ऐसे कामों के लिये बनाया गया है काम में लावें- या जिस प्रकार से बन सके निकाल डालें- और निकालने के पीछे स्त्री का दूध और अंडे की सपेदी मिलाकर आंख में डालें- इससे वन्द करने में आंख नहीं चिमटेगी ॥

तरहवांपाठ १३

आंख पर चोट लगने के विषय में

जो चोट लगने से आंख में लाली या सूजन होती उपाय इसका यह है कि- फास्ड खोलें- और मुलप्यन 'नुकूअ' फावाक:- का पिलायें और गुद्दीपर पछने लगायें- इसके पीछे अंडे की सपेदी रींग नगुल में मिलाके आंख पर लगायें और जो पीड़ा जाने के पीछे चोट का चिन्ह अर्थात् मिलाहट रह जाय तो- धनियां- पोदीना- और रकाला पत्थर जो मिरचों की थैली में निकलता है- और हरताल पीसकर लेप करें- इससे नीलाहट जाती रहैगी- और जो तलवार या पत्थर का घाव मुलतहिमा पर लगा हो- उसका उपाय यह है कि फास्ड और जुल्लाव काई चार दें- और अंडे की जर्दी का आंख पर लेप करें- इसके पीछे यही उपाय करें जो आंख के घाव

का उपाय आगे लिखा जायगा ॥

चौदहवां पाठ १४

आंख के घाव के विषयमें

✕

आंख के सब परदोंमें घाव होसता है- परंतु जो घाव केवल मुलतहिमा पर लगाहो- और २ परदों ववेहों- उसे सालिम कहते हैं- उसमें पीडा कम होती है- मुलतहिमा- करनियां- और अनचीया- का घाव आंखसे देख मक्ते हैं- परंतु प्रदों के घावमें केवल अधिक पीडा मालूम होती है- और जबतक पीप नहीं पडती कीड़े चिन्ह घावका नहीं मालूम होती- उपाय इसका यह है- कि फस्द सतह तुरंत करें- और सेसी औषधे देते रहें जिनसे कीड़े न होने पावें- और जब पीडा होतो स्त्री का दूध टपकावें और जो यह घाव तुरंत न पक्वोती धोई हुई मेथी का लुआवे टपकायें- अर्थात् मेथी के चीजों को दो पहर तक पानी में भिगोरकवें- फिर निकाल कर बीस गुने पानी में पकावें जब वह पानी आधारह जाय उसको हिलाकर निकाल लें- यही धोई होई मेथी का लुआव है- जब घाव पक्व कर वहने लो दूध और शहद मिला कर आंखसे डालें इससे घाव साफ होजायगा- इसके पीछे शियाफ कुन्दर काम से लावे- और जो असं घाव भराने पर भी रहजाय तो जो उपाय सीतला के दानों के घाव दूर करने का है- वही काम से लावें- और इसके लिये पुरानी हर्डडी गुलाब में घिसकर लगाना लाभ दायक है ॥



पंद्रहवां पाठ १५ कमना के बर्णन में

यह कई रोगों का नाम है - एक जब पलक रीह से भारी हो जाय और फूल जाय और जागने के पीछे ऐसा मालूम हो कि आंखों में धूल पड़ गई है ॥

दूसरे जब करनीया के पीछे पीपड़क हा हो जाय ॥
तीसरे मुलतहिमा पर लाली होतो इस से कम दिखई दे और सब चस्तु धुंधली मालूम हों ॥

वह जो केवल पलक का रोग है - उपाय उसका पलक के रोगों में लिखा जावेगा - और करनीया के रोग का उपाय यह है कि मेथी और अलसी का लुभाव आंख में डाले कर मवाद को पकावे - और कड़ुवार गर्म पानी से स्नान करें - इस के पीछे साफ करने के लिये रूपी मुरवी पीसकर आंख में लगावे - और जो इस से लाभ न होतो - दस्तकारी करें और नहीं तो इसे छेडे नहीं ऐसा न हो कि कोई और रोग अठखडा हो और जो मुलतहिमा का रोग है - इसका वही उपाय करें जो सीदावीर मद का है - और मेथी - चाबूना - और अकले ल उल्ल मुलक - को औरा के आंख को धो

सोलहवां पाठ १६

२५४

रतोदी के विषय में

उपाय इसका यह है कि शहद को सोंफ के पानी में घोलकर आंख में लगायें और पीपल को चकरी या बारह सिंगे को कले जी में चुभीकर आग पर रख दे उस से जो पानी निकले उसको आंख में लगायें - इस से तुरंत ही अच्छा हो जायगा - और जो मवाद

अधिकहोतो जुल्लावदें और फूँद खोलें ॥

सतरहवां पाठ १७

मां २५ ५१ २० दिनोंदीकेविषयमें २१.५१.२०

उपाय इसका यह है- कि लडकी की साकादूध खिरपरमैले
और नाकमें टपकायें- और उंड़े पानीमें गोता लगाकर उसेमें आं
सं खोलें और उन्नावका शरबत पीयें ॥ २५ ५१ २०

मां २५ ५२ अठारहवां पाठ १८

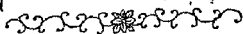
सुदाहृदकहः और शकीकः चश्मकेविषयमें

यह चहुरोग है कि आंखके अन्दर घसक होती है और तब
लैसे छिदते हैं- और ऐसा मालूम होता है- कि आंखकी कोई द
बोवता है- और कभी पीडाजाती रहती है- और फिर होजाती है
जैसे आंधासीसी और रमदका कोई चिन्ह नहीं होता जो उपाय
आधासीसी का है वही इसका करें- और कन्पटीकी रसकी
का लें- ऐसा नहो कि कोई रोग उत्पन्न होजाय ॥

उन्नीसवां पाठ १९

हज्ज उल अैनके विषयमें

इसमें विना सूजनके आंखवाहर निकाल आती है- उपाय
इसका यह है- कि जैसा मवाद हो वैसे ही उसे साफ करें -
और हड किस कर आंखमें लगायें- और भोजन कम
खाय ॥



बीसवां पाठ २०

७१२

करनिया के उभर आने के वर्णन में

उपाय इसका यह है - कि मवाद गाढा होतो उसे साफ करे - और जुस्तर अस्फारको सलाई से आंख में लगाये - और गर्म पानी से सुं ह धोया करे - और उसकी भाफ आंख को दे - करनिया के उभर आने का यह चिन्ह है - कि काडी होती है - और सलाई से नहीं दवती - और आंख नहीं होते और उसमें पीडा नहीं होती - और फुन्सियां जो करनिया में हो जाती हैं - वह नर्म होती हैं - और दवायें से दव जाती हैं और उनमें पीडा भी होती है ॥

इक्कीसवां पाठ २१

करनिया पर फुंसी हो जाने के विषय में

जानना चाहिये कि करनिया के चार परदे हैं - कभी सब में फुंसी होती है - और कभी एक में - परंतु फुन्सी पड़ने की जगह किसी में सफेद दिखाई देती है और किसी में नहीं - उपाय इसका यह है कि फ्रस्ट और जुल्लाब दे - और पहिले से सी ठंडी औषधें लगे - जो मवाद को इधर गिरने से रोकें और इसके पीछे - शियाफ्र अहसर लीन लगायें फिर शियाफ्र अब्रियज़ कुन्दुरी ॥६१॥

बाईसवां पाठ २२

शोरशुंर मोर सिरच के वर्णन में

यह बहुरोग है कि करनिया का परदा फट जाय और उस के

तले से अनवीया ऊपर को उभर आये - उपाय इसका उससे पहिले करें - जबकि किनारे करनिया के मोटे न पड़ जाय और ऐसा उपाय करें जो अधिक उभरने को रोकें और अनवीया को अन्दर दवा दें - वह इस प्रकार है कि धोया हुआ शीतला और चाँदी की इकली सीया जली हुई सीपी पीस के आंख में डालें और धोये हुये शङ्ख के सुरमा आंख में भरें और ऊपर से गद्दी रखकर बांध दें या सीसे का टुकड़ा आंख को बराबर बनाके या सीसे का चुरादा छोटी सी थैली में भरके आंख पर रख दें - और पट्टी से कस दें और जो पिसा हुआ सुरमा छोटी सी थैली में भरके आंख पर रखकर पट्टी से कस दें - तो अति लाभदायक है - और जब किनारे करनिया के मोटे हो जायगे तो फिर किसी प्रकार अच्छा न होगा - इस रोग का उपाय तुरंत करना चाहिये ॥

तेईसवां पाठ २३

भंगा होने के विषयमें टे छे

इसमें एक वस्तु की दो वस्तु दिखाई देती हैं - जो यह रोग जन्म से होता - अच्छा नहीं हो सकता - परंतु बच्चों को मृगी के रोग से और रसक कर बट सुलाने से या भयानक शब्द सुनकर भयानक चीं क पड़ने से भी यह रोग हो जाता है - उपाय इसका यह है कि कोई लाल या चमकदार वस्तु आंख के किनारे उस और रख दें जिधर कि आंख का फिराना चाहते हैं - बच्चा हरदम उसे देखेगा इससे आंख उसकी सीधी हो जायगी ॥

जो यह रोग जवानी में उत्पन्न होता कारण इसका तशानुज इस तिलोई या याविस होगा - पहिंचान तशानुज याविस की यह है कि इससे पहिले गर्म रोग हुं गहोंगे - उपाय इसका यह है कि

आंख को तरी पहुंचावे, " १७५ को।
 और पहिंचान इमविलार्ड की यह है कि पहिले सुगी आई होगी
 और तत्रन्तु इमविलार्ड के चिन्ह पाये जायंगे उपाय इसका स
 वाद को साफ़ करना और निकाळना है ॥

जो आंख के टीले हो जाने से यह रोग होता इसके चिन्ह और
 उपाय वही हैं जो इस्तिर्रस्वामे लिखे गये ॥

और जो रीह के कारण आंख का कोर्ड परदा पारतूवत जाती
 रही होती आंख फाड़ के गी उसका उपाय यह है कि भेजे से बलुगस
 को निकाळें - और हव्य अयारिज खिलावे और कदह जमी को
 दूर करें ॥

चौवीसवां पाठ २४

इततिसा और इन्तशार के वर्णन में ३४

असवे के चौड़ा हो जाने या अनवीया के छेद के बढ जाने को
 इततिसा कहते हैं और आंख में रोशनी फैल जाने को इन्तशार क
 हते हैं ॥

जानना चाहिये कि इततिसा असवे के साथ इन्तशार अवश्य
 होता है - परंतु ऐसा हीसक्ता है कि इततिसा अनवीया के साथ
 इन्तशार न हो - और कभी इततिसा अगवा और इततिसा अनवी
 या दोनों साथ होते हैं - इततिसा या असवे का अच्छा होना बहुत
 कठिन है - परंतु इततिसा अनवीया का उपाय कारण के अनु
 सार हीसक्ता है - कारण जान के उपाय करें जैसे चोट लग जान
 से हो तो फास्द सरारु करें और पिंडलियों पर पछने लगायें ॥

और जो किसी मवाद की बाधकता पारतूवत चोजिया की

अधिकता से ही - जैसा कि वच्चोंको हुआ करता है - या अनवीया
 को सृजन से होती फासद और हुकना करे और जो अनवीया की ख
 शकी से होती - चिन्ह और उपाय इसका जो फावसर पुवसीके पा
 तमें लिखा जायगा ॥

पच्चीसवां पाठ २५

अनवीयाके छेदकेसकड़ा होजानेकेबिषयमें

यह रोग जन्म से होतो बहुत अच्छा है - इससे दृष्टि तीव्र होजाती
 है - और जो किसी रोग से होतो दृष्टि कम होजाती है - पहिले देखें
 कि कारण इसका अनवीया की तरी है या खुशकी या रतूवत वैजिया
 की कमी खुशकी और तरीके चिन्ह सहज में मालूम होजाय गे
 और रतूवत वैजिया की कमीका चिन्ह यह है - कि आंख छोटी
 होजायगी और वस्तु भली भांति दिखलाई न देगी और केसूस अ
 नवीया के कड़े होजाने और विगड़ जानेसे भी यह रोग होता है -
 उसका चिन्ह यह है पुतलो न दिखई दे - जबकि अनवीया की
 खुशकी या रतूवत वैजिया की कमी के कारण से यह रोग होतो चा
 हिये कि आंखको तरी पहुंचावे - और जब रतूवत अनवीया की
 अधिकता से होतो उस तरीको दूर करे - और केसूस के विगड़ जा
 नेमें सवाद धो साफ करे और तरी भी पहुंचावे ॥

छब्बीसवां पाठ २६

स्वयालत के वर्णनमें

इसमें आंखके आगे पुंनगे से उडते मालूम होते हैं - या

अष्टाईसवां पाठ २८

२
१/२

असवे में सुहा पड जाने के विषयमें

जो यह बिना मोतिया बिन्द के होता बिन्द् उसका यह है कि पुतली पूरी अच्छी दिख लाई देगी और सूजन न होगी परंतु दिख लाई न देगा- उपाय इसका यह है कि भेजे से मवाद को निकालें और कोये की राखी फ्रस्टले और कानपटी की रग पर जोक लगावें और पिंडली पर पछने लगावें और पांव को मलें ॥ +

१२१ शंखलुत्तीसवां पाठ २८

आंख के कांजा होने के विषयमें

जो यह रोग जन्म से होता उपाय इसका नहीं होसक्ता और जो किसी रोग से होजाय तो चरसुल अंन कहते हैं- उसका उपाय कारण के अनुसार करें ॥

जो तरी की आंधकता से होता देहकी और आंखोंको मवाद से साफ करें और जो खुशकी से होता तरी पहंचावे ।

यह रोग जो खुशकी से होता है- उसमें सुभाई नही देता- उसमें और मोतिया बिन्द में यह अंतर है कि मोतिया बिन्द में पहिले खयालातका रोग अवश्य होगा और इसमें यह बात नही होती है- आंख दुबली होजायगी और दस्तकारी से लाभ नहोगा यह रोग जो बच्चोंकी आंखमें होता जवान होने पर जातारहता है ॥

पन्ना ६ तीसवां पाठ ३०

जो फवसर अर्थात् कमदृष्टी के विषयमें

जो कारण इसका रुधिरकी अधिकता होती फ़स्टु चोरें और
 रुधिर के बदल जाने का रोग कहते हैं और दूतिया को कच्चे और
 गूदे अंगूर के रस में भिगो कर आंख में लगावें- और जो यह बलग
 म के कारण से होता उसके पकाने के पीछे बलग रस का जुल्ला
 नदें- और चासली कून आंख में लगावें- और जो इसका कोई और
 कारण होती उपाय उसका करें- बुझापे में यह रोग बहुत होता है-
 उसका उपाय नहीं होसता- परंतु बचाव के लिये बलग रस का म
 बाद निकालें और जवाहरात का सुरमा लगायें ॥

इकतीसवां पाठ ३१

बतलान बसास्त के विषय में

अंधेरी जगह में बहुत बैठने से दृष्टि धुंधली हो जाती है- यार
 तबत वैजिया काली पड़ जाती है- उस्से यह रोग उत्पन्न हो
 जाता है ॥

आंख में चासली कून लगायें और हल्की हल्की औषधें
 और मोजन खांय और जो अचानक अंधेरे के बाहर निकल आ
 ने के कारण से यह रोग उत्पन्न होता नीला अस्मानी रंग का कप
 डा आंखों पर डालें- या आस्मानी रंग की औनक लगायें-
 और हल्का मोजन खांय और भूखे रहने और मैथुन से बचते
 रहें- और रात को कुछ न खांय ॥

बत्तीसवां पाठ ३२

चुन्धा होने के विषय में ॥

इमरोग में दिन को कम दिखाई देता है- यह जन्म से होता
 इसका उपाय नहीं होसता- परंतु परलकी और आंस के परदा

काला करने का उपाय करें- यह इस प्रकार से है कि- वनफ़री और चादाम के तेल से काजल बनाकर आंखों में लगाया करें- इससे दृष्टि पुष्ट होजायगी ॥

तेतीसवां पाठ ३३

^१ कुमूर अर्थात् दृष्टि के थकाने के वर्णन में

यह रोग सफ़ेद और चमकीली वस्तुओं पर जैसे सूर्य या वरफ़ा दिक्क है- दृष्टि जमाने के कारण से उत्पन्न होजाता है- उपाय इसका यह है कि काला कपड़ा आंखों पर लपटावे- और पहनने और विछाने के कपड़े भी सब काले रक्वें- और दूध में कापड़ा भिगोकर आंखों पर रखवें या स्त्री का दूध आंखों पर दुहे- और कड़वे चादाम पीसके या कुचल के आंखों पर बांधें ॥

चौतीसवां पाठ ३४

आंख के दुबला होने के विषय में

इस रोग में दृष्टि कम होजाती है- उपाय उसका यह है कि आंख को तरी पहुंचाये और जो कोई सुद्धा हो उसे निकालें ॥

पैंतीसवां पाठ ३५

^३ चुराजुल अंन के वर्णन में

इसमें धूप और रोशनी की ओर देखना चुरा लगता है- जो यह रोग गरमी से होता- ठंड और तरी पहुंचावे- और जो रमद आदि के कारण से होता पहिले उसे दूर करें ॥

आंख के मिजाज पहिंचाने की रीति ।

आंख का मित्राजर्ण और तर है - और जो इसके विपरीत हो तो जान लो कि कोई रोग होगा ॥

ऊपर से ऊपर में आंख गर्म मालूम हो और डार रंगी लो और आंख जल्दी र फड़के - तो यह चिन्ह गरमी का है और सरदी के चिन्ह इससे विपरीत हैं ॥

जो आंख से चीपड़ और आंसू बहुत निकले - और फूली हुई दिरवाई दे - तो यह चिन्ह तरीक है - और खुशकी के चिन्ह इससे विपरीत है ॥

काली आंख सयप्रवार की आंखों से अधिक गर्म और तर होती है - इसी लिये सेसी आंख में मोतिया बिन्द और र गरमी के रोग बहुत होते हैं - परंतु बहुत मनुष्य यह कहते हैं - कि काजी आंख में मोतिया बिन्द बहुत होता है ॥

तीसरा अध्याय

पपोटे और पलक के रोगों के विषय में

पहिला पाठ १

कमना के विषय में

कमना उसको कहते हैं - कि मनुष्य जब जागे तो आंख में खटका हो जै से रेत पड़ गई है और थोड़ी देर पीछे यह खटका जाती है - पहिले इसमें जुल्ला वटं और - शियाफ्र अहमर लीन - और शियाफ्र अहमर हीट लगावे और गरम पानी से स्नान करना भी लाभदायक है ॥

दूसरा पाठ २

पपोटे के ढीला हो जाने के विषय में

पहिले मवाद को निकालें इसके पीछे रखें ३॥ - अत्राकिया सु र संक्ती पीसकर पलक और साथे परलगावे - और जो इससे लाभ न होतो पलक काटनी पड़ेगी - इसकी रीति दस्तकार जानते हैं - और नाक के भीतर रग की फूस करना बहुत अच्छा है ॥

तीसरा पाठ ३

पलकों के आपस में चिपट जाने के विषय में

यह रसद के पीछे या पलक काटने के पीछे या सब लयाना खून में होता है - उपाय इसका यह है - कि सलाई से दोनों पलकों को छुटावे और फिर ज़ीरा और नमक चवाकर पानी उरवा आंख में डालें - और रुई रोशन गुल में भिगो के पलकों के बीच में रखें - और अंडे की ज़रदी में रोगन गुल सिलाकर आंख के अपर रूत्रि ॥

चौथा पाठ ४

पलक के छोटे हो जाने के विषय में

इस रोग में जपर की पलक सुकड जाती हैं और नीचे की पलक बाहर पलट आती है - और दोनों पलकें बराबर बन्द नहीं होती - इस रोग के कारण - पपोटे के ढीला हो जाने के कारणों से चिपरीति है - और अधिक मांस जो पपोटे में हो जाता है - उसे काटकर निकालने से भी यह रोग उत्पन्न होता है जो यह किसी मवाद में होतो - पहिले उस मवाद को निकालें फिर कारण के अनुसार इसका उपाय करें और जो दस्त कागे हो सके तो उसे भी करें ॥

पाँचवाँ पाठ ५

शिरसाककेविषयमें

२
५६५ (अंश)
२०१५

इसमें पलक पर नर्म मास हो जाने से पलक मोटी हो जाती है- और आंखों में यानी मगर रहता है उपाय इसका यह है कि पहिले सवाद को निकालें और फिर आंसू लाने वाली औषधें आंखमें डालें- और जो इससे लाभ न हो तो दस्तकारी करें और ये वस्तु न खावे जो हानिकारकी हैं ॥

छठा पाठ ६

पपोटेके ऊपर गांठ पड जानेके विषयमें

उपाय इसका यह है- पहिले नर्म होनेके लिये मोस रोग न ल गाये- और फिर मरहम दवा ली यू न लगावे- जो काटने के योग्य हो काटे और कोई सवाद निकालना होता उसे भी निकालें ॥

सातवाँ पाठ ७

शेर मुत्तक लिव और शेर ज्ञायदके विषयमें

जोवाल पलकके उठ्ठे होकर आंखमें जालगे और चुमाक करें उसे शेर मुत्तक लिव कहते हैं ॥

और जोवाल पलकके सिवाय अपनी जगह को भीतर की ओर निकालें और उनके चुमने से आंख खटका करें उसको शेर ज्ञायद कहते हैं ॥

उपाय इसका यह है- कि पहिले सवाद को साफ चारें

फिर वह बाल जो नये ग्रीहों सोचनेसे उखड़े और उस जगह पर जोशादूर रंगद दें - और चे टीके अंडे और इन्जीर का दूध और उस काली ली का रुधिर जो कुत्ते या जंतु के वदन पर होती है या हरे मेंडक का रुधिर या हृद्दु का सित्ता उस जगह पर मले - और समन्दर पान इमव गोक के कुआव गें पीस कर लगाना बाल के उत्पन्न होने की जगह को शून्य कर देता है ॥

और शेर मुन काल बका उपाय यह है कि - दिवक का काल गाकर सीधे बाल के साश्चि मटा दें फिर बाल न चुमें ॥

जब बाल को उखाड़े तो बागिक सलाई से उस अस्थान का दाग दें और जहां बाल हों उस जगह को काट डालना और सींच देना भी इसका एक बड़ा उपाय है ॥

आठवां पाठ ८

२
३२५५ पलकों के भीड़ जाने के विषय में

जो यह रोग बुरा भोजन स्थान से या पित्तों या सीदा के अधिक होने में होता उस मवाद को निकालें - और जो पलक की कस जोरी में होती जैसा - करानी तैस - और गर्म तपके पीछे होता है तो उम जगह को पुष्ट करना और तरी पहुंचाना चाहिये - और वासली कून और रोशनई सुरमा आंम्वमें लगावें - और जो यह रोग वनरुगम के अधिक होने से होता बलरुगम को निकालें और पुष्ट करने वाली वस्तु काममें लावें ॥

और जो कोई ऐसा कारण हो कि भोजन उस जगह तक न पहुंच सकें तो उस कारण को दूर करें ॥

नवांपाठ

॥ पलकोंके सफेद हो जानेके विषयमें
 उपाय इसका यह है - कि पहिले बलगम को इस्करे फिर ज
 गली लाले के पत्ते - जेत के तेल में मिलाकर मले - और सुरमा रोश
 नाई सज्जाई से आंखमें लगावे ॥

दसवांपाठ १०

पलकमें खुजली और फुन्सियां होनेके विषयमें
 जैसा मवाद हो उसके अनुसार उपाय करना चाहिये - और
 बरदा बनफानी - आंखमें सुरमे की जगह लगावे ॥

ग्यारहवांपाठ ११

बरदाके विषयमें

बरदा एक मवाद गाढा और सफेद ओंलकी सदृश्य पीटे के ऊ
 पर उत्पन्न होजाता है उपाय इसका यह है - कि सोमरोगान और
 दाखली यून लगाये - इससे नर्म होकर बैठ जायगा और नहीं तो
 काटकर निकाल ले ॥

बारहवांपाठ १२

पलकके मोटे और काडे हो जानेके विषयमें ॥

जब पलक मोटी और काडी होजाती है - तो आंख कन्द कला
 और खोलना कठिन होजाता है - और यह रोग सोदाके मवादसे
 होता है - इसलिये उपाय उसका यह है - कि पहिले सोदाको य
 कावे और मवाद निकाले - और उस जगह को नर्म करे - और

अकलील उल मलक-वाचूना-वनफ़शा-खतमीकेपत्ते-पानीमेंओटाकेआंखपरभपारदें ॥

औरजोबिनाकिसीमबादकेइसरोगमेंखुजलीहोतीउसकोयवूसतुलभेनवाहतेहैं ॥

तेरहवां पाठ १३

पलककेमोटेऔरलालहोजानेकेविषयमें

इसरोगमेंपलककेकिनारेबहुधामोटेहोजातेहैं-उपायइसकायहहैफि-पहिलेमेवोंकाचुकूआपीवेऔरसगाककोगुलाबमेंभिगोकरपानीउसकाटफकावे-औरफिटकरीऔरबुलफ़ाऔरवासनीकेपत्तोंकोरोशनगुलमेंमिलाकरलेपकरनालाभदायकहै ॥

जबयहरीगपुरानाहोजायतोपहिलेफ़स्दऔरबुल्लावदेफिरशियाफअहसरलीनआंखमेंलगायें ॥

चौदहवां पाठ १४

पलकोंमेंजूयेंपडनेकेविषयमें

यहरोगवरुगमसेहोताहै-पहिलेवल्लमका मवाद निकालें-फिरपलकमेंसेजूयेंचुने-औरजोछोटाहोनेकेकारणचुननाकाठिनहोतोफिटकरीऔरनमककोओटाकेपलककोधोवे-औरयोडीदेरसलाईकोपारेमेंस्क्रबकरहोलेसेहाथसेपोंछलेऔरआंखमेंफेरें-यहजूभेमरनेकीअतिलाभदायकहै ॥

पन्द्रहवाँ पाठ १५ गुहांजनी के विषयमें

यह एक सूजन है- जो जीके सदस पलक पर उत्पन्न होती है जो अवश्य होतो मवाद निकालें- वही तो रसोत और गल्ले और गिल्ले वरमैनी हरी कासनी के पानी में पीसकर आंख पर लगा लें- फिर दस्त लीयून् और मोम गरम करके लगावें- जो इससे लाभ न हो तो नारकून से कुरेद डालें या केची से काट डालें- और थोड़ी देर रुधिर वहने दें जलदी बंदन करें- फिर जूर अस्फर उसपर छिड़क दें ॥

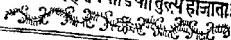


सौलहवाँ पाठ १६ तोसतुल अज्ञफान के विषयमें

शहतूत के सदस एक चस्तुनी चेकी पलक के अन्दर उत्पन्न होती है- उपाय उसका यह है- कि फ्रस्ट और जुल्लाव के पीछे दस्तकारी करें- और काट के जीरा और नमक चवाकर उसपर टपकावें ॥

सतरहवाँ पाठ १७ तहज्जुर जफान के विषयमें

इसमें पलक पलक के सदस का डी हो जाती है- और यह सो दा के गाढ़े मवाद के बम जाने से होता है- और इसमें बरदे से अधिक पलक मोटी हो जाती है- उपाय इसका यह है- कि पहिले मवाद को निकालें- और रोगन मोम को पिचका के लगावें- और कभी यह रोग फोड़ें की तुल्य हो जाता है ॥



अठारहवां पाठ १८

पलकमें घाव पडने के विषयमें

इसमें मसूर अनाूर और पिस्ते के छिलके सिरकेमें पकाकर लेप करें- और जव खुरद गिरने लगे तो अंडे की जरदी के सरमें मिलाकर लेप करें ॥

उन्नीसवां पाठ १९

पपोटोंके फूल जाने के विषयमें

जो यह जिगर और मेदे की कम जोरी के कारण से होतो पहिले उनको पुष्ट करें ॥

और जो बलराम के अधिक होने से होतो इतरी फाल रिकल येँ और फासू का फाल करें- और शियाफ सासीरा और चन्दन हरे धनिये के पानीमें पीसकर लेप करें ॥

बीसवां पाठ २०

पपोटोंमें मससे पड जाने के विषयमें

इसमें पहिले सौदा का संवाद निकालें और कालोनी और नसक को पीसकर सिरकेमें मिलाकर लगायें- जो इससे लाम न होय तो मोचने से दवा के- नाखून गौरी या नखतर से काट डालें- और रुधिर बहने दें- फिर घाव पर फिटकरी छिड़क दें कि रुधिर बन्द होजाय ॥

इक्कीसवां पाठ २१

पपोटोंपर पित्ती उच्छलने के विषयमें

इसमें खुजली और सूजन हो जाती है - जैसा कि भिंड के डंक से हो
 है - उपाय इसका यह है कि फास्ट करे और पित्तका जुल्काव दे
 और शौचने अदिसी - धोया हुआ भास्वमे लगावे ॥

॥ **बाईसवां पाठ २२**

निमलय पलक के विषयमें

इस रोगमें पलक पर फुन्सिया हो जाती है - और थोड़ी सी सूज
 और जलन भी होती है - और घाव पडके फैलता जाता है - पित्त
 मवाद निकाले - और रसोत और सलुआ घिस कर पलकमें
 ॥

॥ **तेईसवां पाठ २३**

पलक पर से भूसी उडने के विषयमें

कभी इससे घाव भी पड जाता है - जो रोग इस भूसी का मैला
 होता सोदा का जुल्काव दे - और जो सफेद होतो बलगम का फिर
 शियाफ्र अहमर लगावे - और जो यह रोग पुराना होना पती पकने
 शकर मले - और सुरमा रोशनाई भास्वमे लगावे ॥

॥ **चौबीसवां पाठ २४**

सुला के विषयमें

सहस्रक वस्तु चाम और सास में लुदी पलक पर बढ जाती
 है - उपाय इसका यह है - कि मवाद निकालने के पीछे वस
 को काट कर अलग करके ॥

॥ **पच्चीसवां पाठ २५**

चोटसे पपोटे का नीला या हरा होजानेके विषयमें
 जो घाव भी होजायतो फ्रस्ड और जुल्लाव दें- और चन्दन
 और सुग्दासंग को गुलाब में घिसकर मलें और जो घाव नहोतो
 कोरीठीकरी पानीमें घिसकर लगावें- यह सब जगह की नी
 लाइट को दूर कर देती है ॥

छब्बीसवां पाठ २६

**कोयेके पासनाक की ओर नासूर होजानेके वि
 षयमें ॥**

फ्रस्ड और जुल्लाव के पीछे शियाफ्रगर्बुत्पकायें- परंतु पीछे
 ले घाव को रुई से पोंछलें- और पीप को साफ कर डालें और औ
 षधके प्रभावके लिये सुदीर मास काट डालें- जो इससे ला
 भन होतो दाग दें- और मरहम अस्फेदाज लगावें ॥

यह नासूर बन्द होकर फूल जाता है- ऐसे समय में कनोचे
 के बीज स्त्रीके दूधमें या गधिया के दूधमें पकाके थोड़ीसी के
 सर मिलाकर लगायें- इससे फूटकर फिर बहेगा ॥

सत्ताईसवां पाठ २७

**कोये और पलकमें विना नलन और दानों के खु
 जली होनेके विषयमें**

जो यह रोग रुधिर से होतो फ्रस्ड करें- और और मवादों में
 उन्ही मवादों की निवालने वाली औषधी देकर कें करावें और
 कासनी को कूट के गुल रोगन में मिलाकर लेप करें- और जो
 कोयेको मवाद से साफ किया चाहै- तो वासकी कृन् और
 कुहल अजीजी लमायें ॥

अर्द्धसर्वापाठ

कोयमेनाककी ओर अधिक मांस हो जाने के विषयमें ॥

उपाय इसका यह है कि पहिले मवाद को निकालें - फिर थियाफ्र जंगार या सरहम जंगार लगायें - कि अधिक मांस कट जाय जो दुस से लाभ न होय तो दस्तकारी से काट डालें - और जस्टर अस्फर छिडकें और पीडांके दूर होने के लिये - अंडे की जर्दी रोजाना गुल में मिलाके मलें इसके पीछे भराव की सरहम लगावें ॥

चौथा अध्याय

कान के रोगों के विषयमें

सुनना चाहिये कि कान अष्ट इन्दी हैं - और सब इन्दीयों से अधिक है - इसके रोग जो मवाद से हों उनमें दवा कान में न डालनी चाहिये - और जो डालें भी तो सुन गुनी करके - क्योंकि ठसडी औषधें हानि देती हैं ॥

पहिला पाठ १

कान के दर्द के विषयमें

जो यह पीडा या सूजन घाव के कारण से होती उसका उपाय आगे लिखेंगे - और जो किसी मवाद से या केवल गरमी से हो तो - फ्रस्ट अर्दि से मवाद निकालें - और जो केवल टंड से होवे

उसका उपाय करे और मवाद की पीड़ा में मवाद निकालने के पीछे उसके अनुसार उपाय करे - और कान में पीड़ा कीड़े के घुस जाने या पानी की वृद्ध रह जाने से होती उसे निकालना चाहिये - और एक पाव पर खड़को कर कूदना उस कान पर हाथ धर कर जिस्से पानी है और सिरको उसी ओर मुकाना पानीको निकाल देता है और जो इस्फज (अर्थात् मरा हुआ वादल) की बत्ती बनाकर कान में रखे और उसी ओर देर तक लेटे रहे तो सब पानी निकल आवेगा ॥

जो कान में कीड़े उत्पन्न हो जाने के कारण से यह पीड़ा होती चिन्ह उसका यह है - कि कान में गुद गुदी मालूम होगी और कभी कीड़ा आपसे आप भी निकल आवेगा - इस्में शफा तालूके पत्तों को ओटाके या उसका रस निचोड़ कर कान में टपकावे - या एलूचा सिरका में घोळकर टपकाये - इस्से कीड़े मर जायगे - फिर सूफ की बत्ती बनाकर उस्में सरेश मल्लके कान में रखे - कि कीड़े उसपर चिमट के निकल आवें - फिर जब घाव साफ होजाय तो उस घावका उपाय करे ॥

दूसरा पाठ

कानकी सूजनके विषयमें

पहिले जुल्लूय दे इसके पीछे देखे - कि सूजन छिद्र के भीतर है या बाहर - भीतर होनेका चिन्ह यह है - सुनाई कम देगा - और पीड़ा अधिक होगी और तप भी होगी इस्में दूध की औषध हरे धानिये के पानी में घिसकर कान के ऊपर और भीतर लेप करे और लड़की की माता का दूध कान में दुहे और जो इस

सेभीनयंभे-तोमेथीया अलसीकालुआवटपकावे। किपकजा
य और पीपपड़े ॥

जोसूजनकानमेंवाहर होतोआंखसेदिखाई देगीनतप हो
गीनअधिक पीड़ा-इससमयरेसी ठंडी औषधेंजोमवाद निकालनेसे
सूजनकोपकावे औरविठादे- औरजोपीड़ाअधिकहोतो कपड़ा
गर्मपानीमेंभिगोकेयानमकगर्मकरकेसेके- औरदोदिनपी
छैकार्मकाल्लेकेपत्तेपुरानेघीमेंपकाकेसूजनपरवांधें-इससे
सूजनचैठजायगी ॥

२६

यहउपायगर्मसूजनकाथा-परतुजोबलगसीसूजनहो
छिड़केभीतर यावाहर उस्मेंकमसुनाई देगानतप होगी-औ
रनपीड़ाअधिक होगी-केवलबोभा औरखिंवावमालूमहां
गा-इसमेंमूलीयासोये कातेलमवाद निकालनेकेपीछेए
कानालाभदायकहै ॥

तीसरापाठ३

कानकेघावकेविषयमें

बिन्हउसका यहहै- किपहलेसूजनहोगी-फिरपककर
फूटेगी औरघावसेपीपवहेगी-शहदमेंअंजूरूतकोपीसके
वतीमेंलगाकरकानमेंरक्खें-फिरअंजूरूतदस्सुलआखवैन
कुन्दरपीसकरछिड़के-यारोगानगुलमेंमिलाकेवतीमेंल
गाकेकानमेंरक्खें- औरजोपीड़ाविषेशहोतोअफीमजला
केराखरसकीकुन्दवेदसतरमेंमिलकेकानमेंछिड़केयाकि
सीतेलमेंमिलाकरटपकावे ॥

चौथा पाठ ४

तरश और वक्र और समम के विषयमें

जो कम सुनाई दे उसका नाम तरश है - और जो कुछ भी न सुनाई दे तो वक्र और जो कान का छिद्र पूरा बन्द हो जाय तो समम है - और कभी इन शब्दों को एक दूसरे की जगह भी चोळते हैं - जैसा कारण है उसीके अनुसार होले होले मवाद को निकालें - और जो बहरान के दिन से सा होता उसका उपाय करना चाहिये और जो बुढ़ापे से या पैदायश के समय से होतो कभी अच्छा न होगा - परंतु दूध पीते वच्चे को यह रोग होतो सातर और नमक चबावे और एक बूंद उसकी कान में डालें ॥

पांचवां पाठ ५

किसी वस्तु के कान में पड़ जाने के विषयमें

जो कोई कंकार या दाना या पारा कान में पड़ जाय तो - रोगान गुल कान में डाल कर छींक लिवाने और छींक आने के समय मुख और नासिका बन्द कर लें तो और कान की ओर पड़ेगा और वह वस्तु निकल आवेगी - और जो पानी घुस गया हो तो वालि शत भर की सोफ की लकड़ी लेकर एक ओर उसके सड़े लपेटें - और तेल में भिगो कर जलावे और दूसरा छोर उसका कान में रक्वे - इससे जितना पानी भीतर होगा निकल आवेगा - और जो कोई छोटा कीड़ा कान में चला गया हो उसका उपाय वही है जो कीड़ों के निकालने का है ॥

छठा पाठ ६

तिनीन और दबी के विषयमें

जो आपसे आप कानमें तेज और वारीक आवाज ^{जिंठ} सक्की कीसी भिन-भिनाह टके अनुसार सुनाई देती है उसे तिनीन कहते हैं ॥

और जो नर्म और भारी आवाज होतो वह दबी कहखाती है- अर्थात् चक्की कीसी आवाज पहिले इसका कारण साक म करे और उसीके अनुसार उपाय करे- और जो श्रवणकी इच्छी तेज होनेके कारणसे यह रोग होतो भारी वस्तु खावे जैसे हरीसा ॥

सातवां पाठ ७

कानसे रुधिर निकलनेके विषयमें

जो कारण इसका रुधिरकी अधिकता होतो फ्रस्ट से बहुत सा रुधिर निकालें- और जो किसी चोट के लगाने से होतो फ्रस्ट से रुधिर कम निकालें- और फिर माजू को सिरके से भौटाके कानमें डालें- और जो बोटसन के दिन कानसे रुधिर निकले तो उसे बन्द न करे- जबतक कि रोगीको सूच्छी न आजाय ॥

जो जुर्साका सांपके काटनेसे रुधिर निकले उसका उपाय इस कित्तावके अन्तमें लिखा जायगा ॥

आठवां पाठ ८

कानके टट्टेजानेके विषयमें

पहिले फ्रस्ट करे- और नर्म करनेवाली औषधें पिलावे- और सेलुवा- सुर्गास- अकाकीया- रातीनज- और मेंहदीके सूखे

पत्ते पीसकर उस जगह लगावें ॥

नवांपाठ ८

जड़ से कान के उखड़ जाने के विषय में

पहिले फ्रास्ट करे फिर नर्म करने वाली औषधि पा दें- और कान को अपने स्थान पर जमाके गद्दी रखकर पट्टी से बांध दें- और जो पीडारह जाय तो- चतरख की चरबी पिचला के उसमें खतमी के पत्ते और धीये के छिलके मिलाके मलें ॥

दसवांपाठ १०

कान की ट्टी के विषय में

यह रोग बहुधा बच्चों को होता है ॥
कंधों के बीच में और कान के तले जड़ में पछने या जोके लगायें- और उस जगह को स्त्रीके दूध से धोवें- और सुर्दा संगारे र की भोला पीसकर छिड़कें ॥

ग्यारहवांपाठ ११

कान में खुजली होने के विषय में

इ प्रासन्तीन को सिरके में ओटाके और कड़वे वादास का तेल उसमें मिलाके कान के अन्दर डालें ॥

बारहवांपाठ १२

कान में चीख की सी आवाज मालूम होनी
सेसी औषधें और भोजन स्यावें और सूधें जो भोजन को पुष्ट

करें ॥

पाँचवाँ अध्याय ५

नाक के रोगों के विषय में ॥

नाक में दो रास्ते हैं एक भेजे की ओर दूसरा गले की ओर ॥

पहिला पाठ १ खुश्म के विषय में

यह वह रोग है कि सूंघने की इन्द्रि जाती रहती है - और किसी बस्तु की वास नहीं आती ॥

जो नाक में बुरे मांस के उत्पन्न हो जाने से यह रोग होता - उसका उपाय तीसरे पाठ में इसी अध्याय के लिखा जावेगा - और जो सूजन या सूँढ़े के कारण से होता - जानना चाहिये कि किस मवाद से है और जो केवल गरमी या ठंड से होता उसके चिन्ह स हज से मालूम हो जायेंगे - कारण के अनुसार इसका उपाय करना चाहिये - और जो यह रोग खुश्की और तशन्नुज के कारण सेता और गर्म रोगों के पीछे होता उपाय बहुत कम हो सकेगा ॥

दूसरा पाठ २

सूंघने की इन्द्रि विगड जाने के विषय में

इसमें कुछ २ वास मालूम होती है - यह रोग तीन प्रकार का है पहिली प्रकार सब वस्तुओं की वास एक सी मालूम हो - दूसरे

यह कि एक वस्तु से कई प्रकार की वास सूंघी जाय- तीसरे यह कि किसी वस्तु की वास आवे और किसी की न आवे अर्थात् सुगंध मालूम हो और चुरी वास न मालूम हो या चुरी वास मालूम हो और सुगंध न मालूम हो- उपाय इसका यह है- कि भेजे को सवाद से साफ़ करें- और जो नाक के भीतर घाव होती उसे अच्छा करें- और जब केवल सुगंध मालूम हो तो जुन्द वे दस्तर की नासलें और जब केवल चुरी वास आवे तो मुश्क की नाक में टपकावे- और जो यह रोग पुराना हो जावे तो सुगंध आने में मुश्क और चुरी वास मालूम होने में जुन्द वे दस्तर नाक में डालें।

तीसरा पाठ ३

नाक में चुरा मांस उत्पन्न होने के विषय में

पहिले फ्रास्द खोलें और जो क लगावे और भयारिज का जु ल्लाघ दे- फिर अशानान और जंगार और सुरिमक्की तीनों बर ले कर पीसके सरहम बनाके एक बत्ती में लगाके कान के भीतर उस मांस पर रखें कि बह गल जाय- और जो इससे लाभ न हो तो नशतर वा चाकू से काट डालें- या चौड़े की दुमके चालों को बटकर और गांठे लगाकर मांस को काटें और फिर सरहम सफेदे का लगावें ॥

चौथा पाठ ४

नाक के घाव के विषय में

जो यह तरीसे होतो पहिले मुरदा संग - रोगन गुल में मिलाकर लगायें- और जो खुश्की से होतो केवल मौसरोयन

ही से अच्छा होजायगा ॥

८९

प्रांचवां पाठ ५

नाक की फ्रान्सियों के विषयमें

इसमें पहिले फ्रस्ट और जुल्लाबदे- और जीवह काडी है
तो नर्म करने के लिये सोमरोगन लगाये- जो इससे भी लाभ
हो तो पकने लगावे और मरहम तेजाबी से उनको गलादे- फि
र घाव भर आने के लिये मरहम सफेदा लगावे ॥

छठा पाठ ६

नाक सिर के विषयमें

जुल्लाबदे
सफेदा

बाहे और जांघें और अंडकोश और कान और छातियां और

पिंडलियां कसकर चांधे और गुद्दी पर पकने लगावे और जिगर
पर सींगी लगाना भी लाभदायक है- जो रुधिर दहने नथने से
आवे और तिल्ली के ऊपर चाये नथने से निकालें- तो गंध की
लीद को निचोड़ कर उसके पानी की दो तीन चूदे नाकमें डालें
और मक्खी का जाला स्याही में मिलाकर और चक्की की गा
डन उसमें डाल कर नाकमें टपकावे- और सरेश मुलतानी म
ही में मिलाकर सिर पर छेपकरें ॥

और जो रुधिर की अधिकता से होता फ्रस्ट लें और रुधिर
जितना अवश्य हो निकालें- चहिसकवार में और चाहे कई
वार में- और रुधिर जो पतला पड़ गया है उसके गाढा करने के
लिये उन्नाव का शरबत आदि पिलावे और मसूर की दाल
और चावल नीचू निचोड़ कर खिलावे ॥

जोतपयाभेजे के रोगोंमें नकसीर फूटे तो देरवना चाहिये कि वोहरान से है या नहीं जो वोहरान से हो तो कभी बन्द न करे सेसान हो कि कोई कडा रोग उठ खडा हो- परंतु सूच्छी का डर हो तो बन्द कर दे और जो वोहरान से न हो तो उचित उपाय करें- जब भेजे के रोगोंमें नकसीर फोडने की आवश्यकता हो तो भीतर नाक की जुड़ में वह औजार चुभाएं जो इस काममें आता है- और जो कुंदेश - मवीजेज और फ़रफ़ियून को कूटकर और बत्ती में लगाकर नाक के भीतर रखें तो रुधिर निकलने लगेगा ॥

सातवां पाठ ७

नाकमें सुरी गंध आरना

जो फुन्सिया घाय के कारण से हो तो वही उपाय करें- जो जपर लिखा गया और जो भेजे के मवाद के सड़ जाने से हो तो पहिचान उसकी यह है कि सिरमें कोई विगाड होगा- और जो मेदे में मवाद के सड़ने से हो तो मेदे के विगाड से पहिचाना जायगा उपाय इसका यह है कि मेदे और भेजे को मवाद से साफ़ करें- और शिकंजबीन और रई के फेन से कुल्ली करें और कोई सुगंध नाक में डालें ॥

आठवां पाठ ८

नाक कुचल जाने के विषयमें

जो सूजन होने का डर हो तो जल्दी से फूट दें- और नाक को ठीक करें- परंतु इस प्रकार से कि सांस न रुके- इसका

उपाय यह है कि कूछी पर भरहम लगाके नथनों में रखें- जब चूड़ सीधी होजाय- सलूवा- अन्नाकीया- सुरसक्की- पीसकर बार तंगके पानी में मिलाके कागज पर लगाके ऊपर चिपका दें- और जब तक अच्छी न हो कूछी नाक से न निकालें ॥

नवांपाठ ८ बहुत सी छीकें आना

रोगन गुल सुगंधका नाक में डालें और गुन गुने मीठे पीनी से सिरको धारें और गुन गुना तेल कान में टपकावे- और हाथ पांव आंख कान और तालू मलें- और जो यह रोग छड़के को हो तो- चकरी का गुरदा भूनके उसका पसीना नाक में डालें- प्रभावके अनुसार छीकें आना बंद होने का चिन्ह है- और अधिक छीकें भेजेके बिगाड़ का चिन्ह है ॥

दसवांपाठ ९० नथनों का सूखा रहना

जोके कल गरमी से होतो ठंडी औषधें दें- और जो खुशकी से होतो- तरकारने वाली वस्तु- जैसे बादाम का तेल आदि नाक में डालें और दूखीका दूध नाक में डुहें- और जो किसी गाढ़े मवादके चिपट जाने से होतो नर्म कस्नेके लिये रोगन नाक में डालें ॥

ग्यारहवांपाठ ९१

नाक में भीतर खुजली होने विषय में

जो ठंडी हवा पहुंचने से होतो- भेजेको ठीक करे और दूखी

फाल खिलवावे- और जो सीतला या चुकामया नजले का चिन्ह
 दीख प्रड़े तो उनका उपाय करें- जो बाहर से कोई वस्तु जाकमे
 पड़ जाय और फंस रहे तो- तेल नाक में टपकाके जाकमले-
 और मुंह बन्द करके छाँक लिखावे- तो वह चीज निकल पड़ेगी
 और कभी सेसा करने से मुंह में होकर भी निकल आती है ॥

छठवां अध्याय

मुंह और जीभके रोगों के विषय में ॥

पहिला पाठ १

जीभके सूजनके वर्णनमें

कारणके अनुसार मद्यस को निकाके - और जो रूधिर या
 पित्तसे होता- तीन दिन के अन्दर काहू कासनी और मकोयके
 पानीसे कुल्ली करें- और तीन दिन पीछे करमकाल्ली और सको
 यके पानी में अलैसीके बीजोंका लुआवमिलाके कुल्ली करें-
 और जब सूजन घटने लगे तो- बाबूने नारबूने और वनफरी और
 अमलतास की कुल्ली करें- और बलगामी में शहद से कुल्ली
 करें या उसमें सातर और अयारिज और मिलाके - और सौदावी में
 इञ्जीर- मैथीके बीज और अमलतासको ओटाके वनफरीका
 तेल मिलाके कुल्ली करें- और कभी रहराधनियाँ और हरी का
 सनी चवाया करें कि सरतानकारोग नहो जाय- और जो चिपख
 नेसे सूजन होतो उसका उपाय आगे आवेगा ॥

दूसरा पाठ २

जीभका बोझ हल होना

इसमें ऐसा होता है कि शब्द-सुंहसे भली भाँति नहीं निकलते- और कभी ऐसा भी होता है कि रोगी बोल ही नहीं सकता है- कारण जानके उसका उपाय करें और फ्रस्ट और जुल्लूवाय आदि दें; और जो जीभ टीली होगई होतो देखें कि सिर में कोई बिगाड है या नहीं जो होतो भेजेको सवादसे साफ करे- और बज ओसरा ई आदि पीसके जीभ पर मलें कि रल्ले वहे- और जो सिरमें कोई बिगाड नहोतो फालिज का उपाय करें- और दुँडी का नीचे पछने लगावे- और जो मकी की रगत जाने से या सवाद बहुत सानिकालेके नशानुज होजाने से यह रोगा होतो उपाय नहीं हो सकता- और जो सरसाम के पीले हो या पुराना होजाय वह भी भब्लानहोगा- परंतु पुराना पडने से पहिले इन्द्रानी नमक और नौशादर मलें कि रल्ले वहे ॥

तीसरा पाठ ३

जीभका बढ़ जाना और निकल जाना

जो रुधिरकी अधिकता से होतो अरारू और जीभके नीचे फ्रस्टरबोलें और रक्टी वस्तु जैसे अनार मलें कि रल्ले वहे और जो बलगम से होतो अयारजे खिलके बलगम निकालें और नोन सिरके में मिलाके मलें ॥

चौथा पाठ ४

जीभके टीले होजानेके विषयमें

इसका उपाय इस अध्याय के दूसरे पाठ में लिख चुके हैं ॥

पांचवां पाठ ५

जीभ के फट जाने के विषय में

जो खुशकी की अधिकता से होतो तर औषधें काम में लावें- और सोमरोगन और बनफ़री का तेल मलें और भेजे को ठीक करें- और खीरे के काँच जीभ पर लगावें- और जो मँदे के धूयें से यह रोग होता पहिचान उसकी यह है- कि भेजे में खुशकी न होगी- इसमें मँदे का मवाद निकालें और लहसोडे मुख में रक्खें ॥

छठा पाठ ६

जीभ की खुशकी के विषय में

जो गरमी और खुशकी से होतो ठंडी और तर वस्तु दें- और बी दाने खालु आवनी लोफ़र के पानी में निकाल कर शक्कर मिला कर कुज्जी करें- और देर तक मुख में लिये रहें और जो लसदार काफ़ जीभ पर जम कर सूख गया होतो खेद की रुवाड़ी शि काँजवीन में भिगो कर जीभ पर मलें उससे वह काफ़ छूट जायगा इसकी पहिचान यह है कि थूक लसदार आया करेगा- और रजितनी ठंडी वस्तु देगे उतना लस अधिक होगा ॥

सातवां पाठ ७

जीभ की जलन के वर्णन में

ठंडी औषधें दें और जो किसो मवाद से होतो जुल्काव भी दें और कापूर मलें- और इस वगैरे आदि ठंडी औषधों का नुशा

मुंह में ले कर जल्दी जल्दी कुल्ली करें और जिस कारण से हांती
उसे दूर करें ॥

आठवां पाठ ८

अथ ३६५२८

जीभ में खुजली होने के विषय में

यदि चान इसकी यह है - कि जीभ लाल होगी और रोगी दांतों
से जीभ को खुजला पा करेगा उपाय इसका यह है - कि पहिले म
वाद निकालें - फिर गरम पानी से कुल्ली करें - फिर दूध और श
क्कर से कुल्ली करें - इसके पीछे सिस्के में कोई तेल मिला के
कुल्ली करें - और पीली हड़ चवा कर जीभ पर मलें ॥

नवां पाठ ९

जिफ़द उल लिसान के विषय में

इस रोग में गाढ़ा बलगम या रुधिर जीभ के नीचे जड़ में जम
कर कड़ा पड़ जाता है - उपाय इसका यह है - कि मवाद को नि
कालें - नौशादर - फिटकरी - जंगार - मुरमक्की - सिरके में
पीस कर मलें - और जो इससे न जाय तो काट कर निकाल लें - प
रंतु सार्वधानी से काटे से सा न हो कि जीभ के नीचे जो रोग है वह
कट जाय - कभी मवाद इस रोग का पथरी बन जाता है - जब
जपर की स्वाल चीरते हैं तो वह पथरी निकल आती है - और क
भी सूजन हो जाती है उसके छेदने से गाढ़ा पानी निकलता है -
और फिर इकट्ठा हो जाता है - उपाय उसका यह है - कि पहि
ले छेद के पानी निकालें - और फिर चमड़े का कंचा से कातर
डालें ॥

दसवां पाठ १०

फिसाद जोक के विषयमें ॥

इस रोगमें एक नया स्वाद स्वाभाव के विपरीति मालूम होता है- चाहे कुछ स्वादों या न स्वादों- जिस मवाद से होगा उसका चिन्ह उसको मजे से मालूम हो जायगा- वही मवाद को फ्रस्ट और जुल्लाव दे निकालें और शिकंजवीन से कुल्ली करें ॥

बाराहवां पाठ ११

बतलान जोक में

इस रोगमें जीभ को नेती स्वाद आता है- और नगरमी नठ्ठ मालूम होती है- इसका कारण यह है कि जीभ में तरी अधिक होती है- पहिले मवाद को पकाके मजे से निकालें- और अकारा-मुनचके- और राई को आटाके कुल्ली करें- और जो गरमी होती गुलाब के फूल और ससाव आटाके शिकंजवीन मिलाकर कुल्ली करें ॥

बाराहवां पाठ १२

तकशशूर जवानके विषयमें

इस रोगमें जीभ और मुख से छिलके उतरते हैं- और मलने में अधिक हो जाता है- इसमें पहिले फ्रस्ट और जुल्लाव से पित्त को निकालें- और आंस और गुलाबके फूल और गुलनार मिरके में आटाके कुल्ली करें ॥

तेरहवां पाठ १३

मुखके भीतर फुन्सियां होनेके विषयमें

फ्रास्ट्स्वोले और गुल्लाबदे- और धनियां-मसूर-मकोयके पत्तेसिरकेमें ओंटाके कुल्ली करें ॥

चौदहवां पाठ १४

मुंह आनेके विषयमें

यह रोग भीतरके मवाद से होता है- इसका कारण जानकर मवाद निकालें- इसके पीछे जो पित्त या रूधिर अधिक होता उन औषधोंसे कुल्ली करें जो तेरे हवें पाठमें लिख गये हैं- और वंसलोचन-गुलनार-मानू-कपूर-सबको पीसकर मुंहके भीतर छिड़कें- और जो घाव होजाय तो- सिरके और नमकसे कुल्ली करें- कि मवाद जपरका निकल जाय- और जो सिरके की सड़ा नहो तो- केसर को पानीमें ओंटाके- और जो यह रोग मकफ़ की अधिकता से हो तो- सामीरां- हड़- अकारकारा- सिरकेमें ओंटाके कुल्ली करें- और जो सोड़ासे हो तो- मेंहदी की पत्ती चवामें- और मानू- धनियां अनारके छिलके- सिरकेमें ओंटाके कुल्ली करें ॥

बच्चोंके मुंह आनेमें शीरखिशतको मकोयके पानीमें घोलकर कुल्ली करावे- और गावज़वांजलाके छिड़कें ॥

पन्द्रहवां पाठ १५

आकिलतुलफ़ामके विषयमें

यह रोग बहुत ही बुरा है- इसमें घाव सारे मुंहमें फैल जाता है- इसका उपाय यह है कि- जले हुये मवादको निकालें-

और उन औषधों से कुल्ली करें जो चौदहवें पाठ में वर्णन हो चुका है - और जब घाव फोलने से ठहर जाय तो - फिल्ट्र फिफून - या सुरती जान - घाव पर लगावे - और जो इनसे जलन होतो - लु आवों से या ताज़ह दूध में शक्कर मिलाकर कुल्ली करें ॥

21 म 11 21
on 6 21 21

सत्तरहवां पाठ १६

जागते और सोते में मुंह से बहुत सी राख बहना

इसका कारण यह है कि मेदे में गरमी और तरी होगी - या लू और तरी विशेष होगी - पहिचान गरमी और तरी की यह है - कि खाली पेट में राख बहुत बहेगी - और ठंड और तरी की पहिचान यह है - कि पेट भरे पर राख अधिक आवेगी - और मुख का स्वाद खटा होगा और भोजन न पचेगा - जो मवाद अधिक हो अंतिकालें - और गरमी में हरी कासनी को नमक के साथ चूटकर बनावें और रस उसका निगलें - और ठंड में कुन्दुर और मस्तंगी चवावें ॥

सत्तरहवां पाठ १७

मुख से दुर्गन्ध आने के विषय में

जो इसका कारण केवल मुख ही में होतो उस मवाद से साफ करें - और जो भेजे से मवाद गिरता हो या मेदे में गरमी होतो भेजे और मेदे से मवाद को निकालें - और ह्वैलु मिल्क मुख में रखें और दंत धन किया करें - और तिली का तेल या रोगन गुल की कुल्ली कभी २ नहार मुख कर लिया करें ॥

४
21/21

अठारहवां पाठ १८

तालूकी सूजन के विषय में

यह रोग या तो स्निग्ध की अधिकता से होता है या चलगम की अधिकता से - जो स्निग्ध की अधिकता से होता है - तालू में पोड़ा और लाली होगी - और जो चलगम से होगा तो - सफेदी होगी - पीड़ा न होगी - पहिले मवाद को निकालें और जो कुल्ली ऊपर के पाठ में लिखी गई हैं मवाद के अनुसार करें ॥

सातवां अध्याय

होठों के रोगों के विषय में

पहिला पाठ १

अं १ होठों पर सफेदी हो जाने के विषय में

यह रोग कोट से अलग है - इसमें चलगम निकालें और भारी वस्तु न खावें - और चमेली और खैरी का तेल नाक में डालें ॥

दूसरा पाठ २

होठ की खुश्की और फटने और छिलके उतरने के विषय में

यह उपाय करें जो मुख के रोगों में लिखा गया है - और होठ को हवा चलाने दें - और मानू - निशास्ता - कातीरा कूट छान कर लगावें - और जो दवा लगावें उसके ऊपर अंडे का पतला

छिलकानोभीतर होता है चिपकादे - कि हवासे फटे नहीं ॥

तीसरा पाठ ३

होठके फडकनेके विषयमें

जो रुधिर रगों से होठमें आकर रीह बन जाय और उससे होठ फडके तो सरासू फास्ट खोलें और भोजन कम खावें - और जो बह रीह बहुत दिनों होती सिरके फडकने का जो उपाय है करें और जो मेंदे का विगाड़ होतो जीम चलावेगा और हिचकियां आवेंगी और कै आने में नीचे का होठ फडकेगा - इसमें कै बहुत सी करी ही लें और जो मेंजे के विगाड़ से होतो - उसके पीछे लकवा और मिरगी होगी - उपाय इसका यह है - कि तरबस्तु न खावें और पानी थोड़ा पीवें - और ऐसा उपाय करें कि लकवा और मिरगी न होने पाये ॥

अथ ५। ५८। ६ (न ५। ६)

चौथा पाठ ४

होठके छोटा होजाने और सुकड़जानेके विषयमें

जो तश्चुन तरी से ही तो मवाद को निकालें और गरम तेल सलें - और जो खुशकी से होतो उसका उपाय कठिन है ॥

वर्चोंको जो यह रोग होजाता है - वह खंचने और बांधने से अच्छा होजाता है ॥

पांचवां पाठ ५

नीचेके होठपर अधिक मांस उत्पन्न होजानेके विषयमें

रुधिर और सौदाका मवाद निकालें - और मसूर या सरदासों का मसहम लगावें - और मवाद निकालनेके पीछे रंग इस

सांसका कालाहोती पछने लगावे और सिरका मले और जैर
गलाल होतो कुछ उपाय नकरें ॥ ॐ ऐं शुं लो ॥

छठा पाठ ६

होठकी सूजनके विषयमें

जो सूधिरकी अधिकता से होतो फ्रस्ट्द खोलें और लेप लगावे
और रसोत की हरी मकीय के रसमें चोलकर लगावे- यह उपा
य गर्म सूजन में बहुत लाभदायक होगा- परंतु यह लेप इससे
गके होते ही लगावे- और अंतमें बादाम के तेल वा सरहस
लाभदायक है ॥

सातवां पाठ ७

होठ पर फुन्सियां होजाने के विषयमें

मवादको निकालें- और जो घाव पडजाय तो लेप और सरह
म लगावे ॥

आठवां पाठ ८

होठमें घाव पडके पीपवहना

उसी प्रकार से सरहम लगावे ॥

नवां पाठ ९

होठमें घाव पडके फलने

इसका वह उपाय करें जो अपर के

करना चाहिये- इस प्रकार से कि गरमी से होतो नर्म कपडा हरे
धनियां के पानी में और हरे वातंग के पानी में और हरी कासनी
के पानी में और गुलाब में भिगोकर बर्फ से ठंडा कारके डोंठ पर
रखवें- और कपूर और चंदन को इस बगोल के लुआव और गुला
ब में पीसकर लगावें और सूखने न दें ॥

और जो ठंड से होती- सुशक- जुन्द वेदस्तर- अकारकरा- च
स्वेली और नरगिस का तेल लगावें ॥

और जो खुशकी से होतो रोगन वादास- लुआव इस बगोल
आशजीशककर मिलाकर पिलावें- और रोमान वनफशा- रोगन
काँचु अदि में सीस पिघलाकर लगाया करें ॥

और जो तरी से यह रोग हीतो- लकवे का उपाय करें और
जो मवाद न हो तीक्ष्ण फस्ट और जुलाव दें ॥

आठवां अध्याय

दाँतो और मसूदों के रोगों में

पहिला पाठ १

दाँतों की पीडा के बिषय में ॥

जो गरमी से होतो ठंडे पानी से थम जायगा- और जो सरदी से
होतो गरम पानी से और जो कोई चिगाड मिजाज में गरमी से चे
मन्नाद के होतो सिरके और गुलाब से कुल्ली करें और ठंडे विगा
ड में वाय यडंगफो अँटाके कुल्ली करें- और जो किसी मवाद
से होतो उसी के अनुसार उस मवाद को निवा लना चाहिये- इस
के पीछे उपाय करें और जो पेट भरे पर पीडा हुआ करे तो कारण

इसका मेदे का विगाड होगा- उस समय मेदे का मवाद निकाले और हजम करने वाली औषधें दें- और भोजन में धनियां बहुत डालें- इसमें कौं कारनाम नहीं चाहिये- और जो एक जगह से दूसरी जगह फैलता और फिरता होतो वायु से होगा- पहिले इसमें मवाद को निकालें फिर साफ़-अनीसून और जीरा को औटाके सुल्लीकरें ॥

और जो कीड़े पडने से दांत में पीडा होतो दांत में पहिले छेद पडा होगा- इसमें गन्दनी के बीज-खुरासानी अजवायन प्याज़ के बीज कूट छानकर मोम में मिलाके आग में जलावे और धूं आ उसका नरकुल की राह से दांत को पहुंचावे ॥

गन्धक चा अर्की पीडामें दांत पर डालना लाभदायक है परंतु और दांतों पर लगाने न पावे- वंड से जो मित्राज में विगाड हो जाय उसमें कल्ले को सेकना और सोने पालोड़े की सलाई से दाग देना अति लाभदायक है चाहिये कि कई बार इस उपाय को करें- परंतु ऐसा नही कि दाग और किसी दांत पर लग जाय

जो दांतों के हिलने से पीडा हो और दांत थोड़े हिलते हों तो उनको पुष्ट करें- और जो बहुत हिलते हों तो उनको निकलवा डालें- परंतु पहिले जड़ को ढीला कर लें- नहीं तो आंख को हा निवायक है- और पीडा के थमने के लिये अक्रकारा-अप्पीम कुन्दर को मडन पीस के स्त्री के दूध में मिलाके दांत पर लगाये

दूसरा पाठ
 दांतों के कुन्द हो जाने के विषय में

जो कारण इसका खड़ी या कमेंली चतुखाना होतो गर्भ

...गया वीज चवामें और गर्म रोटी दांतों में दा
 और जो केवल रूनी से होतो काडवा नादास और जो जाइन्द
 और जो कोई भी तरी कारण हो तो खटी डकारें आवेंगी -
 और थूक बहुत आवेगा - इसमें व
 लगम या सीदाका मवाद के से निकालें - क्योंकि मवाद कामें
 से के के साथ निकालना सइज है - और दर्द नहोने से कोई मवा
 द भी दांतों पर नहीं गिर सक्ता ॥

तीसरा पाठ ३

दांतों की आबजाते रहने के विषयमें

इस रोग में हर अकार वस्तु खाइ और चबाइ नहो जातो इसमें
 पहिले मवाद को निकालें - और वकरी की तिल्लो मूनकारगमें
 दांतों पर रखें - और जो मिजाजमें कोई विगाड गरभी से होतो रो
 गनगुल और काफूर की कुल्ली करें ॥

चौथा पाठ ४

दांतों के टूटने और खोखले हो जाने के विषयमें

इसमें मेजे का मवाद से साफ करे - और रसोत - साजू - अ
 रक़रा - मंजन बनाकर दांत पर मले ॥

और जो दांतों की तरीजाते रहने से होतो दांतों में खुजली होगी
 और घुलने लगे - इसका उपाय नहीं हो सक्ता - परंतु दांतों के
 थासभने के लिये तर औपधें दें ॥

पांचवां पाठ ५

हफर के विषयमें

इस रोग में दांत की जड़ में एक कंकड़ सा उत्पन्न होता है जो सवाद अधिक हो उसे निकालें - फिर लोहे की नहर नी से उसे काट डालें - और नसक - समुन्द्र फेन - दुरमना - जलाकार मलें - इससे रहा सहा जाता रहता है - और फिर उत्पन्न नहीं होता ॥

छठा पाठ ६

दांत के रंग बदल जाने के विषय में

जो दांत का रङ्ग पीला हो तो पित्त की अधिकता होगी और जो नीली हो तो सौदा की और जो चूने का सा रंग हो तो बलगम की अधिकता होगी - सवाद के अनुसार उसे निकालें और पीला होने में मसूर सिरके के साथ मिलाकर मलें - और काले रंग में किर्की जड़ रोशन गुलके साथ मिलाकर मलें और सफेदी में मसूरी का तेल मलें ॥

सातवां पाठ ७

दांतों के हिलने के विषय में

जो बच्चों और चूदों को हो तो उसका उपाय न करें - परंतु इस के सिवाय भी तरी या बाहरी कारण से हो तो उसका उपाय करना चाहिये ॥

दांत तरी की अधिकता और रुधिर के बिगाड से हिलने लगते हैं - के बिगाड में फसद सरारु और चार रंगों को खोलें - और खुड़ी पर पकने लगावें - और मसूदों पर नोंक लगाना अतिलाभदायक है - और फिर दांतों का पुष्ट करने वाला मंजन मलें - और जो इससे भी फायदा नहीं तो - दांतों को उखाड़ डालना

चाहिये-परंतु पहिले दांतकी जड़की इस प्रकार दीला करलें
कि नश्वर से चीर डालें- और उसपर इन्जीरके पत्ते उसी के दूध
में मिलाके दोतीन दिन मलें- दांतदीला होजायगा और उरव
डने में सुगमता होगी ॥

आठवाँ पाठ ८

दांतकाल्म्व्या और सौटा होजाना

जो रुधिरकी अधिकता होती पीडाभी होगी- इसमें पास्द
खोलें और मवाद को निकालें ॥

जो बलगम की अधिकता होगी तो पीडा न होगी- इसमें उ
सी मवाद को निकालें और उसी के अनुसार कोई उपाय
करें ॥

कभी रोगाभी होता है कि और दांत घिस कर छोटे होजा
ते हैं और केवल एक दांत लम्बा दिखवा डेता है- यह कोई
रोग नहीं है- जो इसका उपाय करना होतो उस बड़े दांत को भी
सोहन या आरी से रगडकर और दांतों के बराबर करलें ॥

नवाँ पाठ ९

दांतोंमें खुजली होनेके विषयमें

इसमें रोगीको दांत रगडने या कोई चस्तु चवापे बिना चैन
नहीं पडता- सारे बदन और विशेषकर भोजे का मवाद निकालें
और खट्टी और तेज और खारी बस्तु न खावें- और चूनेकी जड़
को तिरके में आटाके या शिकंजीन अन्तकी को पानी में
धोलकर चुल्की चारें ॥

दसवां पाठ १०

सोतेमें दांत रगडनेके विषयमें

जो तरी से होतो भेजे से मवाद निकालें - और कूटवा तेल गरदन पर मलें नहीं तो केवल सिजाज के करके से ही फायदा हो जाता है ॥

अच्छे कों वेदांत सुगमता से निकालने का उपाय यह है - कि घी कल्ले पर मलें और कड़ी वस्तु न चवाने दें - और हरी मकोप कारस रोगन गुल में मिलाकर गुन गुना करके मलें - और अंगुली से मसूदों पर लगावे इससे जो पीड़ा दांत निकालने में होती है नहीं गी ॥

ग्यारहवां पाठ ११

मसूदोंकी सूजनके विषयमें

जैसा मवाद हो उसीके अनुसार मवाद को निकालें - और वैसी ही औषधों से कुल्ली करें - ॥

बारहवां पाठ १२

मसूदोंसे राधिर वहनेके विषयमें

जो यह मसूदों के काम और होने के कारण से होतो मात्र और मसूर और वंसलोचन पीसकर मलें और जो राधिरकी अधिकतासे होतो फ्रास्ट खोलें और ठंडी औषधों से कुल्ली करें ॥

तेरहवां पाठ १३

ससूदों में घाव और नासूर हो जाने के विषय में
ससूदों से पीप निकले तो घाव होगा ॥ और जो ऐसे ही चालीस
दिन व्यतीत हो जाय तो नासूर कहलायगा - सुह्रु आने का जो उ
पाय है वही इसका थोर - और नासूर को सलाई से दाग दें ॥

चौदहवां पाठ १४

दांतों की जड़ में कामजोरी होने से दांत हिलने के -
विषय में

इस रोग में दांत की जड़ का मांस कम और सूखी हो जाता है -
गुलाब के फूल - चकत्त - गुलनार - हव्वेल आस - हर रंग की
दड़ चौदड़ माशो - स्वर चूर्ण निवती - सिमाक - शकरकुरा - हर
रक्त १७ ॥ माशो पीसकर ससूदों पर जमा दें ॥ ६८ ॥ ५ ॥

पन्द्रहवां पाठ १५

ससूदों पर बुरा मांस उत्पन्न होने के विषय में
कभी २ पिछली हाड के पास सूजन होके बुरा मांस उत्पन्न हो
जाता है - सुर मक्की - फिटकिरी हरी - पीसकर उस मांस पर
मले तो गल जावेगा ॥

नवां अध्याय

गले और कंठ और मरी और कुसवरे या के रोगों

मरी उस राइको कहते हैं जिससे खाना और पीना पेट में उतर
रतरे है ॥

कुसबैरेया वह राइ है जिससे मनुष्य दस केता है ॥

पहिला पाठ १

कव्येकी सृजनके विषयमें

जो मवाद अधिक हो उसी को निवाले - इसके पीछे संधिर
और पित्तकी अधिकता में सिरके और गुलाब और हरी मकोय
बादिसे कुल्ली करें और बलगमी में - कान्जी और शिकंजीन
और राई पानी में ओटाके कुल्ली करें - और सोदाकी अधिक
तामें अमलतासको ताजे दूधमें घोलकर कुल्ली करें ॥

दूसरा पाठ २

कव्येके लटक आनेके विषयमें

जो यह संधिरकी अधिकता से होतो फस्द खोले - और सिरके
और गुलाबसे कुल्ली करें - और गुलाबके फूल - चन्दन - गुल
नास - कापूरको पीसकर कव्ये पर मके ॥

और जो बलगमकी अधिकता से होतो बलगमको निवाले
और राइकी पानी में ओटाके कुल्ली करें - और जली हुई फिट
करी - और चारह सिगा - चौशादरके साथ पीसके किसी पत
ली वस्तु पर रखके कव्ये पर जमाके ऊपरको आवें - और
साजू सिरकेमें पीसके या मुलतानी मिट्टी जली हुई सिरकेमें
गुंदाके या सरेश सिरकेमें पिघलके और उसमें इसब गोल
मिलाके सिरके ऊपर तालूकी जगह लेप करें जब वह सूख-

जायगा तो तालूकी स्वाक जपरको रिकेगी- इससे कब्जा भी ऊपरको ठठ आयगा- जो इन उपायोंसे कुछ लाभ नहो- और गला बन्द हो जाने का डर होतो- दस्तकारी कस्ती पड़ेगी- अर्थात् बहुत सावधानी से जितना बचित हो काटले- परंतु इस के काटने और गलनेमें बहुत डर है- अधिक काट जाने से- शब्दों का उच्चारण अच्छी प्रकार नहीं होसता ॥

तीसरा पाठ ३

सूनाक के विषयमें

इस रोगमें गले के भीतर सूजन होजाती है और सांस रुकती है और खाना पीना बन्द होजाता है- जो रुधिर और पित्तकी अधिकता होतो- सरासू फासू खोलें- और जीभ के नीचे जो रम है उसकी फासू करें- और रुधिर बर्द्ध वार थोड़ा र निकालें- और जो रोमी कमजोर न होतो सब चार जितना चाहें रुधिर निकालें- और जो उसके पीछे फिर जहर पड़े तो थोड़ा थोड़ा रुधिर निकालें- और जो बर्द्ध होतो मवादको नर्म करे और निकालें फिर सिमाक और रंडी औषधोंसे कुछी करे और गमी निकालनेके लिए ठंडे शर्बत पिलावे और भोजनकी जगह भांग जो पिलावे और जो खंसीके बर्द्धो वस्तोसे कुछी करावे और पिलावे- जो सूजन बाहर गंभीर रूप पर हो आवे- तो उसपर पछने या नोकें लगावे- इससे भीतरका मवाद बाहर निकल आवेगा- और रुधिरकी अधिकतामें पिंडली पर पछने लगावे लाभदायक है- जब इस रोगको तीन दिन व्यतीत होजाय- तो भमलतास गायके दूधमें घोलकर कुछी करावे- जब रोगी बहुत कमजोर हो

कोहकीसकेपासआवेतोवेजररतफास्टनखोलनाचाहिये-
जवयहसूजनपकाजायऔरआपसेंआपनफूटेतोचूरोअस-
नी-औरहीराभवाबीलकीबीटदूधमेंघोलकारकुल्लीकरा
वेइससेफूटजायगा-फिरशहदऔरदूधकोमिलाकारकु-
ल्लीकरें-किपीपसाफहोजाय-औरभोजनकीजगहयह
हररोखिकायेगेंइकीभूसीपानीमेंभिगोकारछानलें-और
उसमेंरोगानचांदासडालकारऔटावे-औरथोडीसीशक्कर
मिलाकारहरीराबनालें ॥ २५२-२५३-५२१

गलेकीपीठामेंठंडीभीषधगलेपरजसलेपरंतुमवाद
निकालनेकेलियेपीछेचूरेअमनीजिंकुऔरराईपानीमें
पीसकारगलेपरलगावेमवादभीतरसेबाहरखिंचआवेगा
औरठंडीपरपकनेलगावे ॥

जोयहरोगबलग्रामकीअधिकतासेहोतोबुल्लाबपि-
लावेऔरसुलीकेपत्तेकेरसमेंशिकंजबीनघोलकारकु-
ल्लीकरेंऔरजोयहरोगबहुतकटजायतोजीभकेनोचे-
कारकीफास्टखोलेऔरगुहीकेअपरऔरठुंडीकेनीचे
पकनेलगावे ॥

औरजोसौदाकीअधिकतासेहोतोफास्टवासलीकखो-
लेंऔरनशतरगहरालगावेऔरबुल्लाबदेऔरदूधऔरअ-
मलतासकीकुल्लीकरेंऔरमेथीऔरकारसकालेकेपत्ते
कूटकेउसकेरसमेंरोगाननरगिसऔरबतखकीचरवीमि-
लाकेगलेकेचारेऔरलगावे ॥

खुन्नाककाल्पीबहुतबुरा रोग है इसमें रोगी अपना
मुख कुत्ते की प्रकार खोल देता है जीभ बाहर निकल आती
है यह गले के उर्जके की सूजन के कारण से होता है -

जायगा वो तालूकी खाल ऊपर को रिकिंगेगी - इससे कब्जा भी ज
 परको उठ आयगा - जो इन उपायों से कुछ लाभ नहो - और
 गला बन्द हो जाने का डर होतो - दस्तकारी कस्नी पड़ेगी - अ
 र्थित बहुत सावधानी से जितना उचित हो काटके - परंतु इस
 के काटने और गलने में बहुत डर है - अधिक काट जाने से -
 शब्दों का उच्चारण अच्छी प्रकार नहीं होसता ॥

तीसरा पाठ ३

खुन्नाक के विषय में

इस रोग में गले के भीतर सूजन हो जाती है और सांस रुक
 ती है और खाना पीना बन्द हो जाता है - जो रुधिर और पित्त की
 अधिकता होतो - सरसू फास्ट खोलें - और जीभ के नीचे जो
 रस है उसकी फास्ट करें - और रुधिर बर्तवार थोड़ा रनिका
 लें - और जो रोमी कमजोर न होतो एक चार जितना चाहें रु
 धिर निकालें - और जो उसके पीछे फिर नरुत पड़े तो थोड़ा
 थोड़ा रुधिर निकालें - और जो बिल्ल होतो मवाद को नर्म करे और नि
 लें फिर सिमाक और उंडी भीषधों से कुल्ली करे और गर्मी निकालने को
 पेठंडे शर्वत पिलावे और मोहन की नगड़ भाश जो पिलावे और जो खार
 र्दो वस्तो से कुल्ली करावे और पिलावे - जो सूजन बाहर ग
 रदन पर हो भावे - तो उसपर पछने या जोके लगावे - इससे
 भीतर का मवाद बाहर निकल आवेगा - और रुधिर की अधि
 कता में पिंडली पर पछने लगावे लाभदायक है - जब इस
 रोग को तीन दिन व्यतीत होजाय - तो अमलतास गाय के
 दूध में घोल कर कुल्ली करावे - जब रोगी बहुत कामजोर हो

केहकीमके पास आवितो वे जरूरत फास्ट न खोलना चाहिये-
 जब यह सूजन पक जाय और आपसे आप न फूटे तो चूरी बस
 नी- और हींग भर्वाबीलकी बीट दूधमें घोलकर कुल्ली करा
 वे इससे फूट जायगा- फिर शहद और दूधको मिलाकर कु-
 ल्ली करें- कि पीप साफ हो जाय- और भोजन की जगह यह
 इरोरी स्विकार्ये रोडूकी भूसी पानीमें भिगोकर छान लें- और
 उसमें रोगन वादाम डालकर औटावे- और थोड़ीसी शक्कर
 मिलाकर हरी राबना लें ॥ ३५२ - ३५३ - ५३८

गलेकी पीडासे उंडी भीषण गले पर न सलें परंतु मवाद
 निकालने के लिये पीछे चूरे आरमनी जिस्त और राई पानी में
 पीसकर गले पर लगावे मवाद भीतर से बाहर बिच आवेगा
 और उंडी पर पछने लगावे ॥

जो यह रोग बलगम की अधिकता से होतो बुल्काब पि
 लावे और सूली के पत्तोंके रसमें शिबंजबीन घोलकर कु
 ल्ली करें और जो यह रोग बहुत कट जाय तो जीभके नीचे-
 कारगकी फास्ट खोलें और गुद्दीके ऊपर और उंडीके नीचे
 पछने लगावे ॥

और जो सौदाकी अधिकता से होतो फास्ट वासलीक खो
 लें और जरूरत गहरा लगावे और बुल्काब दें और दूध और अ-
 मलतासकी कुल्ली करें और सैथी और कारमकल्लेके यत्ते
 कूटके उसके रसमें रोगन नरगिस और बतख की चरबी मि
 लाये गलेके चारों ओर लगावे ॥

खुन्नाक काल्बी बहुत बुरा रोग है इसमें रोगी अपना
 मुख कुत्ते की प्रकार खोल देता है जीभ बाहर निकल आती
 है यह गलेके उज्जलेकी सूजनके कारण से होता है -

उपाय इसका फासद और जुल्हाव से करें- और कभी गरदन के जोड़ों के हट जाने से भी ऐसा होता है- चाहिये कि जोड़ों जोड़ी का करें ॥

स्वाभकार खुजाकी और है जिसे जल्हा कहते हैं- यह सब से बुरी है इसमें रोगी के मुख से जात तक नहीं निकल सती- न कुछ निगल सकता है और जो कुछ पिलाते हैं तीगले में फंदा पडके नाक से निकल आता है- ऐसे समय में जो गले पर लाल रंग होनाय तो बहुत अच्छा है- उपाय इसका वह है जो ऊपर लिखा गया ॥

जब रोगी कोई वस्तु निगल नसके तो गरदन के दूसरे सीधे पर सींगी लगाकर चुसे उससे खाना उत्तरे की जगह कुछ खुल जायगी और पतली वस्तु उतरने लगेगी और जब दम रुक जाय तो गले में छेद करदे उसकी रीति बड़ी पुस्तको में लिखी है ॥

चौथा पाठ ४

गले और मरी और कुसवेरैया में फुन्सियां होना
नेके विषयमें

मरी में फुन्सियों का चिन्ह यह है कि निगलने के समय परा बहुत होगी और रक्छी और तेज और बड़ी वस्तु खाने से भी अधिक होगी और कुसवेरैया की फुन्सियों का चिन्ह यह है कि जात करने में और खाने में और धूबा और रेत पहुंचने में अधिक पीडा होगी और निगलने में कुछ न मालूम होगा- फार खोलें और हंडे मेवों का पानी पीवें और बहुत ठंडा पानी न पिए

करें और तेज़ और खुरक भोजन न खावें - और जब जानें कि दूध पक गये तो मवाद को मकायें और फुटनेके पीछे साफ वास्ते का उपाय करें - जैसा कि खुन्नाक में लिखा गया ॥

और गलेमें जो फुन्सियां पड़ें तो वही कुत्ली करें जो खुन्नाक में लिखी गई है ॥

पांचवां पार ५

गलेमें जो कि चिमट रहनेके बियेमें

बहुधा ऐसे पानी होते हैं जिनमें छोटी जोंक होती है - जब निना देखेकोई उस पानीको पीता है तो जोंक गले में या मरीया कुसवैरैया में चिमट जाती है - कभी तालूकी राहसे नाक की ओर चढ़कर चिमट रहती है ॥

जो जोंक गलेमें नीची हो और दिखाई न देती आपसे आप रुधिर कह निकलेगा और बेचेनी होगी ॥

और जो कुसवैरैया में चिमटे तो हस्तम खांसी आवेगी - और जो नाकके पास चिमटे तो नाकमें रुधिर बड़ेगा - और दमाग बन्द होजायगा - और कभी खरखार के साथ मुंहसे रुधिर निकलेगा ॥

जो गलेमें ऊपरको दिखलाई देतो पहिले मोचने से सिर उसका दबोचके थोड़ी देर ठे रहे वह मुंह खोल देगी फिर उसको निकाल लें - और जो दिखाई न देती होतो काली मिट्टी एक पोटलीमें बांधके मुंहमें गलेके पास लें जायें वह मिट्टीकी सुगंधसे पोटली में चिमट जायगी फिर उस पोटलीको निकाल लें ॥

और जो तालूमें चिमटी होतो कारेले का रस और कुट-

की सिरके में गोटाके नाकमें डालें- जोड़ससे जोंक पेट में जा
पड़े तो जल्दी से कों करावें- और जो कों से न निकले या कों न
आवे तो बुल्लाब दें ॥

पानी बहुत सावधानी के साथ देवके और छानके पीना
चाहिये ॥

छठा पाठ ६

सुई निगल जानेके विषयमें

चुम्बक पत्थर को गुलाब में पीसकर नहार सुख पिल
वें- और घड़ीके पीछे बुल्लाब दें- और फिर सेदे को ठीका
करें ॥

सातवां पाठ ७

सरीके भिंच जानेके विषयमें

इसमें पतली वस्तु तो गले से नीचे नहीं उतर सकती- और
काड़ी वस्तु उतर जाती है आयरिज खिलके बरुगामको निकालें-
और अनीसुन बुन्दर- सुम्बक- काल बहसन- और
सफेद बहसन- और टाके और छानके थोड़ा र पिलावें- और
रुड्डीके नीचे पकने लगके बुन्द वेदस्तर और शिकंजर्वान ग
लें या चारे लगावें ॥

आठवां पाठ ८

नरखरेके ढीले हो जानेके विषयमें

चिन्ह उसका यह है कि सांस नहीं ली जाती या बिलकुल
बन्द हो जाती है ॥

इसका उपाय वही है - जो ऊपरके पाठ में लिखा गया और जब सांस बिलकुल न ली जाय तो जल्दी से गले में छेद करके लेंहे या तांबे या पीतल की नली उसमें अदका दें - कि रोगी उसमें से सांस लेवे और फिर उसका उपाय करें ॥

नवां पाठ ८

मरी में खुजली होने के विषय में

कें कराचें और पुराने सिस्के से कुल्ली करें - और दूध और शक्कर रक्कर घुंटे करके पीवें ॥

धो २० धो २०

दसवां पाठ ९०

कुसवैरैया के फडकने और कांपने के विषय में

फडकने का चिन्ह यह कि बात करने में हर चडी रुक जाय कि हसा लूस होगी - और कांपने का चिन्ह यह है कि बात करने में कप कपी मालूस होगी - जैसा कि बूटों को होता है - इसका उपाय वही है जो शै - और इरल्लज का उपाय है - और इसमें कुल्ली करना भी लाभदायक है ॥

ग्यारहवां पाठ ९१

डूबे हुये के उपाय में

जब आदमी को पानी से निकालें और उसे होश न हो परंतु दम आता जाता हो उसको उल्टा लटका कर पेट उसका दबाव कि पानी निकल जाय और मिर्च और सोंठ सिस्के में ओटाके उस के मुंह में टपकावें कि होश में आवें इसके पीछे हरी रावेसन और दूध का दें कि फेफडा ठीक हो जाय और जब देखें कि सांस

आती जाती नहीं है तो जाने कि - यह मणया ॥

चारहवां पाठ

गला घोंटे हुये और फांसी दिये हुये का उपाय

जो दम आता जाता देखें तो जल्दी से फन्दे को काट दें - फिर देखें कि उसके मुख में कफ है या नहीं - जो नहीं तो सरारू फास्ट खोल दें - और तलबों में राई मले जब उसको होश आजाय तो रोगन दन फशा और गर्म पानी से कुल्ली करावे - और जो मुंह में कफ पाया जाय तो उसके नीने की आसनहीं ॥

तेरहवां पाठ १३

उसर उलवला के विषय में

इस रोग में कठिनाई से निगला जाता है - जो यह गले के तंग हो जाने से होता खुन्नाक और मरी के भिच जाने का उपाय करें जैसा ऊपर लिखा गया है - और जो मरी में कोई विगाड हो जाने से यह रोग होता - कारण के अनुसार इस विगाड को दूर करें और दोनों कंधों के बीच में लेप करें - इस लिये कि मरी पीठ की ओर है और वासवैरैया छाती की ओर ॥

चौदहवां पाठ १४

मरी की सूजन के विषय में

जैसा मवाद हो उसी के अनुसार उसे निकालें और वे से ही शरयत पिलावें ॥

फन्डहवांपाठ १५

मरीमेंघावपडजानेकेविषयमें

चिन्हइसकायहहै कि मरीकी जगह पीड़ा होगी और तेज और स्वद्वी वस्तुके खाने में दुःख होगा और चिकनी वस्तु भलीभांति निलगी जायगी और मरीकी सूजनके चिन्ह इस्ते विपरीत है और घाव कमीर फूट जानेके पीछे पड़ा करता है - और कभी बिना सूजनके गर्म सवाद के कारण पड़ जाता है - उपाय इसका यह है कि सफेद सोंस रोगन गुल में पिघलाकर एक एक घूंट करके पिलावे - परन्तु इसमें पहिले दो तीन दिन शहद और दूध और शक्कर मिलाकर पिलावे - कि घाव साफ हो जाय ॥

सौलहवांपाठ १६

आवाज वन्द हो जाने और पड़ जानेके विषयमें

इसमें पहिले यह देखें कि नजले से है या गले के किसी बिगाड से - जो नजले में होतो खशखशका शखत पिलावे - और पोस्त खशखश से कृच्छी करें इससे नजला रुक जायगा - और जो गले के बिगाड से होतो जैसा उचित हो वैसा उपाय करें ॥

- कवाचू चीनी चवाना - वाक़ला - मुन्नक्के - कुहारा - इन्जीर - चिलगोज़ा - वादाम - गन्ना - शहद - अलसोंके बीज - इनमें से हर एक आवाजको साफ करता है ॥

नजले के लिये रूसाल गले में लपेटें रहें - और सिरको ठंडा हवासे बचावे ॥

दसवां अध्याय

छाती और फेंफड़े के रोगों के बिये में

पहिला पाठ १ दम के वर्णन में

यह रोग कहीं कठिनार्द्र से जाता है और दूर होकर फिर हो जाता है - इसके उपाय में जितनी जल्दी होंसके करें - जो बलगम से होती खांसी के साथ बलगम निकलेगा - और छाती में खरखराहट पाई जायगी - इसमें पहिले बलगम की मुन्जिशें दें - फिर जुल्लाव देकर सवाद निकालें और बहुत गर्म दवान दें जिस से खुशकी रह जाय या सवाद गाटा पडके जम जाय - और सवाद निकालने के पीछे शरबत जूफा दो तीले गर्म पानी में घोळकर सवेरे और संध्या को सोने के समय पिलावें - और कभी कभी मूली के बीज शहद के साथ ओटाके कैं कराया करें और जिस समय बलगम की अधिकता होती - अलसी कुचली को पानी में ओटाकर शहद मिला कर पिलावें - इस से बहुत जल्दी चैन हो जायगा - और अलसी के तेल में मोम को पिघलाकर छाती पर सजाकरें ॥

और जो यह रोग दिलकी गरमी से होती चिन्ह उसका यह है कि नाडी और सांस जल्दी जल्दी और भारी चलेगी और प्यास बहुत होगी और उर उड़ी हवा अच्छी साकूम होगी - इसमें बाये हाथ से फास्द वासली करवैले और लुआव और नर्म करने वाली आपधें पिलावें और हाथ पांव मलें ॥ १ २५६

और जो यह रोग फेफड़े में अधिक गरसी हो जाने से होतो नाडी जल्दी जल्दी चलेगी परंतु भारी न होगी और प्यास बहुत होगी और ठंडी हवा अच्छी मालूम होगी इसमें ठण्डी औषधें पिलावे और लगावे ॥ ४

और जो यह रोग छाती के उज्जलों के टीला पड़ जाने से होतो नाडी धीमी होगी और सांस दुहरी आवेगी जैसी किराने में आती है और छाती को सीधा करे बिना पूरी सुवासन आवेगी इसमें पारिजका उपाय करे और मेथी के बीज-दारचीनी-शुद्ध में और टाके रुकर घुंटा पीवे और रोगजनन रोगिस मले ॥ ६१

और जो फेफड़े की खुश्की से होतो प्यास अधिक होगी और आवाज धीमी निकलेगी और तरबस्तुओं से लाभ होगा- इसमें फेफड़े को तरी पहुंचावे और तर औषधें भोटाके उसमें रोगी को खिलावे- और बकरी का दूध पीना अति लाभदायक है ॥

और जो फेफड़े की मरदी के कारण से होतो ठण्डी वस्तुओं से हानि होगी और गरसी के बिन्दन पाये जायंगे- इसमें फेफड़े को गरमी पहुंचावे और मेथी के बीज भोटाकर पिलावे- और गरम तेलों को मले ॥ ६२

और जो दमादम लेने की राहों में हवा भर रहने से होतो सूखी खांसी होगी- और बलरामन निकलेगा- और वादी वस्तु खाने से और बटेगा- और छाती भारी न मालूम होगी उपाय इसका यह है कि चाय को निकालें और जुल्लाव दें- और सोया और बाबुना छाती और ज्वालों में मले और माजून फिलासफा स्थिलावे ॥ २५

और जो यह फेफड़े की सूजन से या निगर आदि की परदों की सूजन से होतो इसका उपाय जन्हीं रोगों में लिखा जायगा ॥

और जो दगा खुन्नाक के कारण से होतो - इसका उपाय वह है जो खुन्नाक का है ॥

और जो सेदे की तरी से होतो पेट भरने पर दम चटने लगेगा - और खाली पेट में कमी होगी - इसमें सेदे से सवाद निकालें और भोजन कम दें और पचाव की औषधें खिलवायें ॥

एक प्रकार इस रोग की बहुत चुरी है - दूध, छाती को सीधा करे बिना दम नहीं लिया जाता - और कारखट से नहीं कटेता - कारण इसका या तो कोई गाढा सवाद है या सांस आने की राह में सूजन है या छाती के उजलों का दूला हो जाना - उपाय हर एक का अपर लिख चुके हैं ॥

दूसरा पाठ

खांसी के विषय में

जो यह फेंफड़े की गरमी उंड और तरी या खुशकी से होतो पहिचान उसकी लिख चुके हैं उस कारण को दूर करें ॥

और जो रुधिर की अधिकता से होतो नाडी भारी होगी और सांस की हवा गर्म होगी और मुख का रंग लाल होगा - इसमें वासली कफास्द खोलें - और ठण्डी औषधें पिलायें ॥

और जो जिगर की गरमी से होतो - ठण्डी औषधें दें और नुक्कू मुल्य्यन पिलायें ॥

और जो कोई पतलामवाट भेजे से गले में उत्तरे तो - गले में सरसराहट होगी और खांसी में कलमनन निकलेगा - और गतको सोते में अधिक होनायगी - इसमें नजले का रोक्कें - और पोस्त ग्वशरयागको गोटाके कुल्ली करे - और चबूल का गोद सुखसे रकवे ॥

और जो भेजे से फेंफड़े पर मवाद गिरके साटा हो जाय तो वडे जोरकी खांसीसे बलगम निकलेगा - और छातीभारी सालूरी होगी और पहिले इससे जुकाम हुआ होगा - इसमें जूफा - इन्जीर - सेथीके बीज - सुलहटी - पानी में ओटाके पीवें - और मुलेहटीका सत - चाली मिरचें - शक्कर - चरावर लेकर गोळियां बनावें और मुख में रखवें ॥

और जो फेंफड़े और छाती में अधिकतरी हो जाने से होतो खांसीमें लसदार बलगम निकलेगा और छातीके भीतर खर खरा हट होगी - यह बहुधा बूटो और तर भिजाऊवालों को होता है - इसका उपाय वही है जो बलगमीदमेका है ॥

और जो फेंफड़े में धूरें या गर्द पहुंचने या बहुत चिल्ला ने से होतो उसका उपाय दूर करे - और तर और नर्म वस्तु खावें और ओषधोंकी कुल्ली करे - और ठूंडी और पारवानेकी जगह घी लगावें ॥

और जो खांसी किसी और रोगके कारण से होतो उस रोगका उपाय करने से जाती रहेगी ॥

और जो फेंफड़े में फुन्सियां पड़ जाने से होतो नाडी जल्दी जल्दी चलेगी और पेशाबमें जलन होगी और ठसड़ी वस्तों से आराम मिलेगा - इसमें फस्ट खोले और छाती पर पछने लगावें और पितका जुल्लाव दें - फिर जो उपाय गलेकी फुन्सियोंका है वही इसका करे ॥

और जो मेदेकी तरी से होतो मेदे से मवाद निकाले - और भोजन कम डें ॥

और जो फेंफड़े में सौदाका मवाद आ जाने से होतो खांसी में बलगम काला और नीला निकलेगा और २ विन्ह सौदा

के पाये जायेंगे- इसमें गेहूं की भूसी का हरीरा शक्कर या शहद डालकर निकालें और सुन्निश देकर सीदा का जुल्ला बंदें ॥

और जो नरस्वर में पानीया और कौई वस्तु जा पड़े और उससे खांसी हो तो जब तक वह वस्तु वहां से दूर नहीं गी- खांसी न थमेगी- इसके उपाय की जरूरत नहीं है- परंतु कभी ऐसा होता है कि भारी वस्तु जा पहने से मसल जाकर होता है- ऐसे समय में छाती और गले को सुन्ने लीये और कौं करावें- इससे वह वस्तु निकल आवेगी ॥

तीसरा पाठ ३

मुखसे रुधिर निकलने के विषयमें

इसमें पहिले यह देखना चाहिये कि रुधिर मुख के भीतर से आता है या भेजे से या गले के अन्दर से- जो केवल मुख से आवेगा तो थुक के निकलेगा ॥

और जो भेजे से आवेगा तो खस्वार के साथ निकलेगा और उसके निकलने से सिर हलका हो जायगा ॥

और जो गले से आवे तो बिना खांसी के निकलेगा ॥

और कुसर्वैरिया का रुधिर कफ और खांसी के साथ निकलेगा और छाती में पीडा होगी ॥

और फेफड़े का रुधिर बहुत लाल होता है- और खांसी भी होती है- परंतु पीडा नहीं होती ॥

और छाती का रुधिर कम और फुटकी रसा निकलेगा- और खांसी बहुत होगी और घाव की जगह पीडा होगी- और निकलने में खांसी और पीडा अधिक होगी ॥

और जो मरीया मेदे या जिगर या तिल्ली से आता हो तो जिस जगह से आवेगा उस जगह कोई विगाड या या जविया और उसके साथ के भी होगी ॥

जो मुख से रुधिर निकले तो - आसके फत्तो - गुल्नार - मानू - फिरकरी - आदि से कुल्ली करें ॥

और जो जोक के चिपटे से आवे तो उसका उपाय लिख चुके हैं ॥

और जो भेजे से आवे तो फास्ट सराख करें - और गुद्दी पर पछने लगावे - और ऊपर लिखी हुई वस्तु से कुल्ली करें ॥

और जो गले और कुसवैरे या से आता हो तो चूड़ी कुल्ली करें - और कुर्सन फल उलदमं मुख में रखवे - परंतु कुसवैरे या का घाव कठिनाई से जाता है - और भीतर के परदे के घाव का उपाय ही सकता है ॥ ६५/५ नं ४२ ६ ३५ ८१

और जो फेंफड़े से रुधिर आता हो तो - फास्ट साफिन और चासलीक खोलें और पिंडली पर पछने लगावे - और जो आवश्यकता हो तो - अक्काक्रिया - कुन्दर - मानू - गुल्नार - चंचूल का गोंद - गिले अरमनी - अफीम - चरावर लेकर पीस के मलें - परंतु यह देख लेना चाहिये कि फेंफड़े में सूजन तो नहीं है ॥ ६५

और जो छाती से रुधिर आता हो तो फास्ट चासलीक खोलें - और कुर्सन फल उलदमं मुख में रखवे और रिवलावे - और छाती पर लगावे ॥

छाती का घाव जल्दी अच्छा हो जाता है और फेंफड़े का घाव बहुत बुरा है ॥

और जो रुधिर मरी और मेदे आदि से मात्ता होता उसका

उपाय आगे लिखा जायगा ॥

इस रोग के सब प्रकारों में धीया हुआ शब्दना ४॥ माशे

खुरफे - या वारं तंग के पत्तों के रस के साथ देना और कुलफे का साग पका कर खाना और साग इठल समेत कच्चा चवाना और अर्क उसका निगलना अतिलाभ दायक है ॥

नव रुधिर किसी जगह फेफड़े पर गिरे और उसको साथ खांसी न हो तो सिरके और गुलाब से कुल्ली बारावे - और थोड़ा सा पिलामी दे - और जो खांसी अधिक होती - सान्तर शहद में मिला के चटावे या इन्जीर की लकड़ी जला के पानी में धोल के दे - और हाशा एक प्रकार का पोदीना होता है उसे भी मिला के तो अतिलाभ दायक हो जायगा ॥

चौथा पाठ ४

मुख से पीप निकलने के विषय में

जो यह फेफड़े की सूजन के फूट जाने या सिल आदि से हो तो उपाय इसका आगे लिखा जायगा और जो गले और मुख के भीतर से आवे तो खुन्नाक का रोग पहिले हुआ हीगा और इन स्थानों में सूजन होगी - इसका उपाय हम लिख चुके हैं ॥

परंतु जो पीप छाती से आवे सूजन के फूटने के कारण से तो मवाद को उन औषधों से पतला करें जो बलगम की खांसी में लिखी गई है कि मवाद पतला हो के टपक जाय और मोम को रोग न बाधने में पिघला के मले और कोई ठण्डी वस्तु और कड़े -

होगा - और सूजन की ओर लेटने से मुख से पानी बहुत निकलेगा - जो रोगी कमजोर हो तो - तीन तीन दिन पीछे फ़ास्ट खोला करें - और उसके पीछे मवाद को नर्म करें और मवाद को बाहर खेंचने के लिये छाती पर पछने लगावें ॥

और रोग के गौदि से ठण्डा औषधें जो मवाद को फेंफड़े पर गिरने से रोकें मलें और इसके पीछे सूजन की पटकाने अर्थात् ठाने वाली औषधें मलें - और जिमाद शोया पीडा को जल्दी से भच्छा करता है ॥

सुश्रा

खबरदार जिन औषधों में काज्ज हो जैसे कासनी का रस वागाटा करने वाली औषधें जैसे शरवत खशखाश और ठंडा पानी इस रोग में कभी न देना चाहिये - परंतु जो सूजन पित्त से हो उसमें यह औषधें दे सकते हैं ॥

इस रोग में छाती को मवाद से साफ करने का उपाय करें और जो तपके लिये ठंडाई पिलानी हो तो माउल गस्कं - और शर्वत गुलाब और आश जो दे - और खीरे और लोकी और ताबूज का पानी भी दे सकते हैं - क्योंकि यह साफ करते हैं और इनमें काज्ज नहीं है - और शिकंजीबिन जो बहुत खटी नहीं अति लाभदायक है और जब सांस लेने में रोगी हांपने लगे तो लुआव इस गोल पतला करके चन्द और शरवत गुलाब के साथ एक एक घूंट पिलावें - और गुनगुने पानी से छाती और पसली को धारें - जब तक कि दम ठिकाने से होजाय और पीडा थम्मजाय ॥

जहां कहीं सूजन होती है या तो मवाद आप से आप पक के दूर होजाता है या पीप पड जाता है या बड़ स्थान कड़ा पड जाता है - सूजन पटकाने के चिन्ह यह है कि रोग में कमी सालूस होगी और बलगम गले से सुगमता से निकलेगा ॥

और पीप पड़ने के चिन्ह यह है कि रोग बढ़ता जायगा- और जिस दिन मवाद पकेगा उस दिन बहुत अधिकता होगी परंतु तप और पीडा ठहर जायगी और भारी पनाक्ट जायगा- और जिस दिन सूजन घूदेगी उस दिन जाड़े के साथ तप फिर जोर करेगी ॥

और कड़े हो जाने के चिन्ह यह है कि बहुधा रोगों में कमी मालूम होगी- परंतु दम रुकेगा और सूखी खांसी जोर करेगी और भारी पना भी रहेगा- और कभी यह सूजन कड़े पड़ने के पीछे भी पक के फूट जाती है- परन्तु बहुत कम- जिस समय सूजन फूट जाय और बलगम की जगह पीप निकले तो बहुत अच्छे हैं- नहीं तो वह औषधें दे जो चौथे पाठ में लिखी गई हैं और कभी ऐसा होता है कि सूजन भली भांति नहीं पकती- परन्तु किसी कारण से कच्ची फूट जाती है और केवल रुधिर निकलता है- ऐसे समय में शीघ्रता से फ्रस्ट रवोलें और वह उपाय करें- जो तीसरे पाठ में हैं ॥

और जो फंफड़े की सूजन ठगद से हो अर्थात् बलगम या मौदा से तो बलगम के चिन्ह यह हैं- कि मुख से थूक बहुत निकलेगा और भारी पना और दम का रुकना बहुत होगा और गर्म सूजन के चिन्ह कोई न होंगे- परन्तु हलकी तप रहेगी और गर्म सूजन में तप अधिक होगी ॥

और जो मौदा से हो तो सूखी खांसी होगी और सांस काठिनाई से ली जायगी- और जो पहिले गर्म सूजन ही फिर कड़ी हो जाय चिन्ह उमका यह है कि कड़े पड़ने से पहिले गर्म सूजन के चिन्ह पाये जायेंगे ॥

बलग्राम में पहिले मवाद को नर्म करें और ऐसी औषधें मलें जो ठण्डी हों - और मवाद को फेंफड़े पर गिरने से रोकें और थोड़े दिन पीछे जब तप कम हो जाय तो बलग्राम की मुंजिश पिलाने के जुल्लाव दें ॥

और जो सौदा से हो तो खतमी के बीज और अलसी के बीजों का लुआव रोगनं वादास में मिलाके एक र घूंट पिलावें और लडकी की माका दूध और नर्म करने वाली औषधें मलें - परंतु सौदा की उपाय बहुत कम हो सकता है ॥

फेंफड़े की सृजन में कभी पथरी पड़जाती है - फिर खांसी थम जाती है - और कभी इससे सिल का रोग ही जाता है ॥

छटापाठ

सिलके विषयमें

फेंफड़े में घाव पड़जाने का नाम सिल है - चिन्ह उसका यह है कि इसमें तपेदिक अवश्य होती है और खांसी में पीप निकलती है ॥

पीप और कच्चे बलग्राम के पहिचानने में धोका होता है - इसलिये उसकी पहिचान याद रखनी चाहिये - कि पीप पानी में बैठजाती है - और आग पर जलाने से गंधंनिकलती है - और बलग्राम पानी पर तैरता है - और आग पर रखने से गन्ध नहीं देता - इसरोग का उपाय नहीं हो सकता परंतु जो उचित उपायके साथ देवयोग्य से दूरभी होजाय तो क्या अच्छा है - जो साहकीम बूअली सीना ने लिखा है कि मेंने एक स्त्रीका उपाय

किया वह तैई सवरस जीती रही और हकीम जाली नूस कहता है कि मैंने इस रोग में जिसका उपाय आदिसे किया वह अच्छा होगा या इसमें शीघ्रतासे फस्ट वासलीक उस ओर खोलें जिधर पीड़ा नही और जो फस्ट न खोल सकें तो छाती पर पछने लगावे- और जो इसमें नजला भी हो तो फस्ट सरसू भी खोलें और आशजों में केकड़े पकाके खिळावे और तपेदिक का उपाय करें- और हकीम बूअलीने लिखा है कि इस रोग से जहां तक नया गुलकन्द रिलायजाय खिळावे- यहां तक की रोटीके साथ भी वही खिळाया जाय- परंतु यह बात मेरी समझ में नहीं आती- क्योंकि गुलकन्द से दस्त आने का डर है- और दस्त इस रोग में बहुत बुरा है- और सफूफ सरतान शरवते उन्नाव- या शरवत खशखाश के साथ चटाना लाभदायक है ॥

सफूफ सरतान यों बनाते हैं- कि केकड़े को जलाकर खिंकार लें और वह राख १० माशे लें और चबूक का गोंद और गिले भरमनौहर स्क ५ माशे- सफेद खशखाश- और काली खशखाश हर सेक २॥ माशे- कतीरा ३ माशे पीसके सफूफ बनावे और ७ माशे खाया करें ॥

सातवां पाठ ७

छातीके पंखों और फिल्लियों

और रूधनों और उजलों

और उसके आस पासके जोड़ोंकी सूजनेको विदस

इन सूजनों का नाम अलग अलग रक्वा गया है - जो सूजन आगे की पसलियों के भीतर फिल्ली में या उस परदे में जो मरी और मेदे और जिगर के बीच में बना हुआ है - पडे उसको ज्ञात उल्ल जनूब स्वालिस और ज्ञात उल्ल जनूब सही कहते हैं ॥

१ और जो सूजन भीतर के सब परदों में हो उसका नाम खानिका है ॥ २ २५१ - २५२ ॥ ५ ॥ २१ ॥

और जो सूजन पसलियों के बीच के उजलों में हो उसको - ज्ञात उल्ल जनूब और सही और और स्वालिस - कहते हैं ॥

और जो अपर की पसलियों की फिल्ली में हो तो उसको नाम इन्ही नामों से रक्व लिया जाता है - और जो पीठ की पसलियों के भीतर को फिल्ली में सूजन हो उसका नाम शो साहे ॥ ०

२१ जिगर और मेदे के बीच में जो परदा है उसकी सूजन को बरसाम कहते हैं ॥

जो फिल्ली छाती से मिली हुई है उसकी सूजन को ज्ञात उल्ल सदर कहते हैं ॥ ६१ ॥ ११ ॥

और इस फिल्ली के साम्हने पीठ से मिली हुई जो फिल्ली है उसकी सूजन का नाम ज्ञात उल्ल बर्ज है ॥

जो पहिचान मवाद की और उपाय फेफडे की सूजन में लिखा गया है वही इसका भी कारें और सूजन की जगह पीठ से मालूम हो जायगी - अर्थात् जिस स्थान पर पीड़ा होगी वही सूजन भी होगी और ज्ञात उल्ल सदर में लेप छाती पर लगावे - और ज्ञात उल्ल बर्ज में कन्धों के बीच में इन सूजनों और फेफडे की -

सूजनोमें यह अन्तर है कि फेंफड़े की सूजन में नडी लहराती हुई चलती है - और दम बहुत रुकता है और इन सूजनो में नडी सेमी नडी होती और दम भी कम रुकता है और सरसाम में होश और ज्ञान जात रहता है - इसी कारण से बहुत मनुष्योंको सरसामका धोखा होता है ॥

कभी ऐसा होता है कि जिगर की सूजन में दम रुकने लगता है - इस कारण से जात उलू जनव का धोखा होता है - परंतु जात उलू जनव और जिगर की सूजन में यह अन्तर है कि जिगर की सूजन में रंग पीला होजाता है और खांसी नहीं होती और जिगर की और बोर और पीडा होती है और पेशाब गाढा आता है ॥

जब मवाद इन सूजनो का पक जाय तो जो बल मनुष्य से निकलेगा उसमें पकने के चिह्न होंगे - उस समय को देख कर ऐसा उपाय करे जो पीप बनने से पहिले सब मवाद पक के निकल जाय इसलिये गर्म पानी और आशजो - शक्कर और इदगुन गुताकारके पिलाना चाहिये - इससे मवाद धुके बन कर निकल आवेगा - और रोगीको उसकारबट से मुलावे - जिघर सूजन है - इससे फेंफड़ा सूजनके पास आजायगा और पके हुए मवादको चूसके निकाल देगा ॥

जात उलू जनव दो प्रकार का है एक हकीकी - दूसरा गौर हकीकी - हकीकी तो वह है जो सूजन हो - और गौर हकीकी वह है कि गाढी रीह पसलियोंके आस पास और किल्लियों में रुक जाय और पीडा हो ॥

और जो रीह फंसनेके कारण आगे नही बढ़ सकती इसलिये जात उलू जनव हकीकी का धोखा होता है - अब अन्तर इन दोनोंमें यह है कि जात उलू जनव रीही में भारी पन और तप

नही होती - और ज्ञात उलजनव हकीकी में यह दोनों चाते पाई जाती है - उपाय इसका यह है कि रीही में पट्टे काने वाली औ पधें लगावे और कभी फस्ट और जुल्लाव भी देना पडता है - और सांझने के हाथ से फस्ट उसे कम खालना शीघ्रता से लाभ देती है ॥ २

शांति आठवां पाठ

छाती के आस पास पीप रुक रहने के विषय में

यह इस प्रकार होता है कि फेंफड़े आदि की सृजन पक के फूट जाती है और छाती के आस पास फेंफड़े से बाहर गिरती है और गाटे होने के कारण वहीं फंस रहती है - न फेंफड़ा उसे चूसके निकाल सकता है और न पेशाव और पारवानह से निकल सकता है - चिन्ह इसका यह है - कि इससे पहिले छाती में किसी स्थान पर सृजन हुई होगी और उसके पकाने के सहोगे और हल्की तप होगी - और पेशाव और दस्त और पीप न निकलेगी - इसमें - इन्जीर - सूखा जूफा - हरी - हंसराज - सुनक्के - यानी में औटा के रोगान वादांस और मिश्री मिलाके पिलावे कि वह पतला होकर निकालने के योग्य होजाय - और वह औषधें दें जो उसको निकालें - और पेशाव लाने वाली औषधें भी दें - और मसाने को धीवे - और जो दस्तों में निकले तो नर्म करने वाली औषधें दें और जो दोनों में निकले तो कभी वह दें और कभी वह परंतु ऐसा काम होता है ॥

शांति ५२ ५५ ५६

३३६

नवां पाठ

छाती का ठण्डा जाना और जकड़ जाना

यह रोग या तो बाहर से अधिक ठण्डा पहुंचने से होगा या भीतर से पहिले इस कारण को मालूम करें - और उसमें दम रुक कर आवेगा - उपाय इसका यह है कि सातर और हींग आदि के तेल में जुन्द वेदस्तर मिलाकर मुले और गर्म औषधें औटा के धार और लेप करें और हींगमाय उल अस्त्र में मिलाके एक एक घूट पिलावें और हरीरो और माउल अस्त्र मोजन की जगह दें ॥

कभी यह रोग अफीम पीने और सीसे के पिघलने के धूरे के पहुंचने से हो जाता है - इसमें वह गर्म औषधें जो खासी के लिये हैं - और गर्म घासों के जो शादे से सेकें ॥

जो अफीम पीने से हो उसमें केसर का तेल छाती पर मलें - और जो सीसे के धूरे से हो तो कुटका तेल मलना अति लाभदायक है ॥

सीस पिघलने के धूरे से बहुत बचना चाहिये ॥

ग्यारहवां अध्याय

दिल के रोगों के विषय में

पहिला पाठ १

दिल के मिजाज के विगाड में

जो अकेला हो तो ठीक करने ही से जाता रहेगा ॥ ...

सी मवाद से हो तो पड़िले उस मवाद को निकालें - और फिर मि
जाज की संभाल करें - और जो फास्ट की आवश्यकता हो और को
ईहाति भी न हो - तो दोनों कन्धों के बीच में पछने लगावे - और
मिजाज को ठीक करने और मवाद निकालने में कोई बातों का
ध्यान रखवना अति उचित है । एक तो यह देख लें कि कारण रोग
का कस है या अधिक दूसरे रोग एक कारण से है या कोई से - ती
सरे दिल को कम जोर न होने दें - चौथे जो तप हो तो उसका भी
ध्यान रखवें और उपाय करें - इस रोग का उपाय शीघ्रता से करे
नहीं तो पुराना पड़के कठिनता से जाता है ॥

दूसरा पाठ २

खफाकान अर्थात् दिल चक्कराने के विषय में

यह रोग जब बढ जाता है तो सूच्छा आने लगती है
और ये दो प्रकार से उत्पन्न होता है - अर्थात् या तो इसका
कारण केवल दिल में होता है - या चदन के और स्थान में जै
सा मेदा और भेजा और जिगर और आंते और फेफड़ा आदि या स
रे चदन में और जोड़क मारने या ज़हरीले जानवर के काटने से
हो वह भी इसी प्रकार में समझना चाहिये ॥

जो इसका कारण दिल के सिवाय किसी और स्थान
में हो तो उस स्थान को ठीक करें - परंतु दिल को पुष्ट रखवें -
और जो केवल दिल में हो तो मवाद के अनुसार उसे ठीक करें और
जुल्लाव दें ॥

और जो यह रोग दिल के तीव्र होने से हो तो हरी रा

खिलायें ॥

और जो बहुत सी उलटी आने या रुधिर निकलने या दस्त आने से दिल कमजोर होजाय और उससे यह रोग होतो विल की पुष्ट करने वाली औषधें और भोजन दें ॥

जिसे किसीको यह रोग गरमी से हो उसको चाहिये कि गरम स्थानों और गरम हवा में और गरम शहर में न रहे - नहीं तो अबस्त्र उसकी काम होजायगी ॥ या उल्टी बहुत हुआ करेगी इस रोग का कुछ वर्णन तीसरे पाठ में भी आवेगा ॥

तस्त्रीयशव की कौडी के स्थान पर लटकाना इस रोग में अतिक्रम दायक है ॥

तीसरा पाठ ३

सूच्छा के विषय में

जब स्वफ कान बंद जाता है तो सूच्छा आने लगती है और जब सूच्छा बंद हो जाती है तो मनुष्य मर जाता है - और सूच्छा तीन प्रकार की होती है ॥

पहले तो यह कि रुद्ध हैवानी जाती रहे ॥
दूसरे यह कि वह रुद्ध घुट जाय ॥

तीसरे यह कि उत्पन्न कम हो - और इन तीनों प्रकारों में रोगी कमजोर होजाता है ॥

और रुद्ध के जाते रहने के भी कई कारण हैं ॥
स्वक यह कि दस्त बहुत अथवा रुधिर अधिक निकल जावे ॥

दूसरे कोई खुशी अधिक और अचानक हो ॥

तीसरे चैन और स्वाद अधिक होने से भी जाती रहती है ॥

चौथे अधिक पीडा और बेचेनी से ॥

और रूह के घुट जाने के कारण यह है ॥

कि किसी मवाद के अधिक हो जाने से या अधिक म
दिरा पीने से और अधिक मोटा हो जाने से ॥

दूसरे अधिक दुख से ॥

तीसरे अचानक डर के होने से ॥

और रूह के कम उत्पन्न होने के भी कई कारण हैं-
अर्थात् दिल में विगाड होना या चुरे भोजन खाना या बहुत को
मार रहना और भूखा रहना ॥

जो मवाद रंगों से दिल में पहुंचता है वह या तो दि
ल की रंगों में समाता है या दिल के ऊपर रहता है उसका वर्णन
इसी अध्याय के चौथे पाठ में आवेगा ॥

चाहिये कि सूछा में कारण के विपरीति उपाय करें-
अर्थात् जो सूछा गरमी से होतो ठंडी औषधें दिल की पुष्ट कर
ने वाली सुंघावें- जैसे चन्दन - कपूर आदि और केवडे का
भरक गले में टपकावें- और जो ठंड से होतो- सुश्क और केसर
आदि सुंघावें- और गले में टपकावें और मित्राज के अनुसार
लेप करें- और गर्म मित्राज वाले को गुलाब और ठंडा पानी छती
और सुहपर छिडकना लाभदायक है- परंतु जो बहुत दस्त
आने से शरीर ठंडा पड गया हो और उसके कारण से सूछा हो
तो पानी और गुलाबन छिडकना चाहिये- इसमें गर्म रोटी सुंघावें
और माजल अस्तु सुंघ में टपकावें और गरम तेल टूंडी के नी
चे मलें ॥

और जो गरमी की अधिकता से बहुत सा पसीना आके मूच्छा होतो ठंडे पानी या गुलाब से हाथ पांव धुलावे और पसीना बन्द करने के लिये मूँद के सूखे फते या माजू पीसकर बदन पर मले ॥

और पीडा की अधिकता से मूच्छा होतो माजू न फलो नियां खिलावे - और कूलंज की पीडा में भी ऐसे ही करे और जो यह रोग जी मचलाने या हिचकी से होतो उलटी कराना लाभदायक है और बहुधा मूच्छा की बहुत सी प्रकारों में उलटी कराना अच्छा है - परंतु जो बहुत पसीना आवे तो न कराना चाहिये ॥

और जो जहरीले जानवर के कास्ने या डंक मारने से होतो तिरयाक और विषकी दूर करने वाली औषधें दें - और जो रहम के विगाड से होतो सुगंध न सुचावे - परंतु दुर्गंध सुघांता चाहिये - और रहम के बन्दैर सुगन्ध लगा दें - और हर प्रकार की मूच्छा में हाथ पांव मलना लाभदायक है - और जब रोगी चैतन्य होजाय तो कारण के अनुसार उपाय करें ॥

मूच्छा के चिन्ह यह हैं - रंग पीला होना - हाथ पांव ठंडे होना - और नाडी होले होले चलेगी - और जो मूच्छा अधिक होगी तो आस्त्रे भी बन्द होजावेगी - मूच्छा और सकते में अन्तर यह है कि मूच्छा बाल पुकारने से सुनता है - और सकते बाल नहीं सुनता - और जो चिन्ह मूच्छा के उपर लिखे गये हैं - वह सकते और मवात के रोग में नहीं होते ॥

मोतदिल ओषधें जो दिल को पुष्ट करती हैं यह हैं - याकृत - फीरोजा - सोने चांदी के वस्त्र - गाउजबा - ॥

और गर्म ओषधें यह हैं - जदवार - दखनज - सुरक्षा-
 अम्बर - जरम्बाद - कच्चारेशम - केसर - दीनो लहसुने - डों-
 ग - कच्चा उद - बालगू के बीज और पत्ते - छोटी और चडी
 इलायची - रैहंके फूल और बीज - कवावा - तुरंजके छिल के
 साजिज हिन्दी - रासन ॥

और ठण्डी ओषधें यह हैं - काहरुवा - विसद - कापूर
 चन्दन बंसलोचन - गिलो मखतूम - सेव - धनियां ॥

और याकूतियां - और दवा उल मिस्क - भी दिलको
 पुष्ट करती हैं - और जो खुशकी और तरी दोनों प्रकारकी ओषधें
 देना चाहें - तो उन्हींमें से ठण्डी और गर्म ओषधें समझकर
 मिलावें ॥

जब अधिक गर्मी दिल में हो या सूच्छा हो तो भी बहुत
 ठण्डी ओषधें न देना चाहिये - इसी लिये पहिले इक्वीम दिल
 के रोगों में कापूर के बुसीको बिना केसर नहीं देते थे ॥

चौथा पाठ ४

दिलके दोनों कानोंके सूजनके विषय में

दिलके ऊपर दो वस्तु उभरी हुई हैं जिनमें छिद्र भी हैं
 और उनमें से हवा दिलको पहुंचती है - उन्हें दिलके कान क
 हते हैं - जब कोई रोगदेर तक रहता है और रुह जाती रहती है
 तो भोजन दिलको नहीं लगता और इनमें सूजन होजाती है -
 ये सूजन बड़े मवाद से होती है - क्योंकि गर्मी काम होने से भोज
 न मली भांति नहीं पकता और वही इस सूजनका मवाद बन
 ५ - और सूजन गर्मी से हो या ठण्ड से दिलके लिये बहुत

बुरी है - और गर्मी की सृजन से तो मनुष्य मर ही जाता है और ठसडी सृजन में उपाय का (भवसर मिलता है - इसका जल्दी उपाय करना चाहिये - नहीं तो रोगी दुबला होके मरना पगा - ॥

ठसडी सृजन के चिन्ह यह हैं - छाती भीरी रहनी - बहुधा सूच्छा रहनी - और उदामी - आंखों पर भुरभुरा हट - और मुंह का रंग बहुत पीला होगा ॥

इसमें - वावूना - नावूना - हंसराज - गेहूं की भुसी - पानी में मोटाकर छाती को दूंडी तक धारें और पटवाने वाली आंघोरी कालेप करें और दिल को पुष्ट करते रहें - दिल के ऊपर की किल्ली में जो सृजन होती है उसमें इन वानों की सृजन से कम दुख और सूच्छा होती है ॥

पांचवां पाठ ५

दिल से घूंआ उठने के विषय में

यह किसी मज्ज के जल जाने से होता है - और जब पुराना होजाता है तो सूच्छा आने लगती है और बुरी बुरी बातों के ध्यान होते हैं - इससे सौदाका सवाद निकालें - और तरी फुं चारें - इस रोग में जो रंग रंग के काले दस्त आवें यानक सीर फूटें या ववासीर होजावे तो रोगी जल्दी अच्छा होजावेगा ॥

छठा पाठ ६

जगतल काल्य के विषय में

इस रोग में ऐसा मालूम होता है कि दिल को कोई दबो

रजव सेसा होता है तो सूच्छा आजाती है और मुं
तकलते हैं - और थोड़ी देर के पीछे रोगी अच्छा
हजाता है - इसमें दिलको ठीक करें और दिल और भेजे
को पुष्ट रक्खें - और मुफरह सगीर - तिरयाक कवीर खि
लावें ॥

सातवां पाठ ७

तकशशुरकाल्व के विषयमें

इसमें दिल छिलता है और पीडा भी होती है और जव
पीडा अधिक होती है तो सूच्छा भी आजाती है - और थोड़े स
मय पीछे होश आता है और सूच्छा के समय पीडाकी अधिक
ता से मुंह पर रुंरियां सी पडजाती हैं - और सारे वदनसे पंसीन
निकलता है ॥ इसमें पहिले कारण को मालूम करें कि मवा
द भेजे से आता है या किसी और स्थान से फिर वे सही उपाय
करें - और जो पित्त से होतो - पित्तको निकालें - और जो
नज़ला होतो मवाद निकालने के पीछे खश खाशका शरबत
चटावें - और नज़ले की रोकने वाली औषधें दें ॥

आठवां पाठ ८

काजाफुलकाल्व के विषयमें

इसमें ऐसा मालूम होता है कि दिल बाहर खिचा आ
ता है जैसे बलटी में - ये रुधिर या पित्तकी अधिकता संहोगा
जां रुधिरकी अधिकता होगी तो मुंह का रंग लाल होगा

और पित्त में पीला-इसमें दाहिने हाथ से फास्ट वासलीक खो
 लें और पित्तका जुल्लाव दें - और चन्दन का शरवत वेद सुश्रुत
 के अरक और गुलाब में घोलकर पिलाया करें- और भोजन
 अच्छा दें और दिलको खुश करने वाली औषधें पिलावे ॥

नवां पाठ ८

दिलके बैठनेके विषयमें

यह दिलमें रुधिर या पित्तकी अधिकाता होजाने से
 होता है - और कभी इसके साथ घीमी पीडा और सूच्छर्मी हो
 तो है - जो मुंहका रंग लाल होतो रुधिर की अधिकाता होगी -
 और पीला होय तो पित्तके मवाद के अनुसार फास्ट खोलें और
 जुल्लाव दें ॥

दसवां पाठ १०

दिलपर तरीछाजानेके विषयमें

इस रोगमें ऐसा जान पड़ता है कि दिल पानी में डुबा जा
 ता है और फाड़कता है - यह सेग दिल घबराने की प्रकार में से
 है - इसमें दिलके ऊपर की किल्लीमें काफ़ूकड़ा होजाता है
 इसमें अप्पारिन्न खिलावे - और गुलाब के फूल - वालगू - बाल
 छड - आदि का लेप छाती पर करे और रोगी से भिड़नत करावे -
 और क्रोध दिलावे इससे तरी दूर जाती है - कभी यह तरीलस
 दार होकर दिलमें धिसट जाती है -
 है और क्रोध आता है

खुशी नहीं होती - इसमें नर्म करने वाली ओषध और छाती पर खुशकी दूर करने के लिये भोजन मले फिर सवाद को निकालें और दिलको पुष्ट करें - इसमें दिल बहुत उत्तम वस्तु है - इसका रना चाहिये ॥

बारहवां अध्याय

स्त्रीकी छातीके रोगोंके वर्णनमें

ईश्वरने स्त्रीकी छातियोंको दूधके लिये उत्पन्न किया है और उसका मांसभी सफेद है जब रुधिर उनमें आता है तो दूध बनजाता है - नैसा कि मर्दका रुधिर पेल्लों में आकर वीर्य बनजाता है ॥

पहिला पाठ १

दूधकम होनेके विषयमें

इस रोगमें प्रभावके अनुसार दूधकम होजाता है - इसको तीन कारण हैं - एक वामी रुधिरकी उसके निकल जानेसे दूसरे किसी रोगके देर तक रहनेसे और कभी रुधिरकी अधिकतासे भी इसी प्रकारसे दूधकम होजाता है कि छातीमें बहुतसा रुधिर आकर दूध नहीं बनने पाता - तीसरे रुधिरके विना इसमें भी दूधकम होजाता है - चाहे वह

किसी मवाद से किन्हु उसका यह है कि उस मवाद के किन्हु पाये जायेंगे या किसी मवाद की अधिकता हो- जो रुधिर की कमी होती मिजाज के अनुसार वह वस्तु स्वयं जो दूध उत्पन्न करे वैसा दूध भादि- और जो रुधिर की अधिकता हो तो फास्ट खोलें और पछने लगावें और भोजन थोड़ा दें- और जो मिजाज में कोई बिगाड हो तो ऐसे भोजन और औषध दें जो रुधिर को ठीक करें और जो मवाद अधिक हो उसे निकालें ॥

जो दूध पतला और पीला और स्वाद और वास उसकी तीज्र हो तो पित्त की अधिकता होगी- और जो वह पानीसा पतला और सफेद और खड़ा हो तो कफ की अधिकता जानो- और जो मैला और गाढ़ा और थोड़ा हो तो- सौदा की अधिकता है- और जहां कफ और पित्त दोनों मिले हों तो दूध का स्वाद खरी और न मकीन होगा ॥

जो औषध वीर्य को बढ़ाती वह दूध को भी बढ़ाती है और जब खुश्की और बुबुले पन से दूध कम हो जाय तो चौपायों का दूध अनिलाभदायक है ॥

यह औषध दूध को उत्पन्न करती है- गाजर के बीज- प्याज के बीज- शलगुम के बीज- मूली के बीज- सोफ सब बराबर रकेकर उन सब के बराबर मुने हुसे चने मिलाके कूट छान लें और उससे से १७ ॥ साटे सत्रह माशे ताजे दूध के साथ सवरे पिनावे और जो रात को सफेद चने दूध में भिगो के सवरे छान के और शक्कर मिलाके पिनावे तो भी लाभ होगा ॥

यह लेप दूध को बढ़ाता है- वाकले का गाटा ३५ पेंतीस माशे- वाद रूज साटे १७ ॥ माशे कूट छान के बाद रुज के अस्क में वाकले छानियो फरलावे ॥

दूसरा पाठ २

दूधबटुजानेके विषयमें

स्नानेका उपाय करें और वह औषधें

दायक होंगी और लास और सुखा संग रोगन गुल में मिलाके छाती पर लगावे और मले-और जीरा लगाना और ईसव गोलके पत्तोंका लेप करना भी

जकालेप करें ॥

तीसरा पाठ ३

छातियोंके सूजने और तन्नेके विषयमें

जो किसी गर्म मवाद से होतो मिरकेको मिलाके फुकने में भरके सेके और हरी मकोय पीसकर लेप करें और तीन दिन पीछे वह औषधें लगावे जो गानेके माठ में लिखी गई हैं- और जो ठण्डे मवाद हो तो गजमोदको कूटकर लेप करें या चावूने को सांफके पानीमें पीसकर लगावे और कहीं उपाय करें जो और सूजनोंका है ॥

चौथापाठ

छातीमेंदूधजमजानेकेविषयमें

जब छातीके भीतर दूध जम जाता है तो सूजन उत्पन्न होती है- इसका कारण यह है कि या तो गर्मी से दूध गाढ़ा होता है- या ठण्ड से जम जाता है- और देर तक दूध के न निकलने से भी ऐसा होता है- कारण के अनुसार उपाय करें और जब देर तक दूध के न निकलने से या बच्चे के न पीने से या किसी और कारण से ऐसा हो तो गर्म पानी से छातियों को धारें और होंठे होंठे दूधको चुसवायें कि सारा दूध निकल जावे- और जो दूध के बन्द होने से छाती पका जाय और सूज जाय और दूध का रंग और स्वाद बिगड़ जाय तो सूजन को पकाने के लिये- चाबूना- अलसी के बीज- मेथी के बीज- खैरू के बीज बराबर लेकर चुकन्दर के पानी में भयवा केवल पानी में यीसके दिन में दो तीन बार छाती पर लगावें और जब सूजन आपसे आप पकाकर फूट जाय तो अच्छा है नहीं तो नशत्र लगावें- कभी ऐसा होता है कि नशत्र गहरा नहीं लगता और पीपकी जगह नहीं पहुंचता और उससे केवल ऊपरका अधिर निकलता है- ऐसे समय में दूसरी बार गहरा नशत्र लगावें जिससे पीप निकले फिर घाबका उपाय वही है- जो मुँह और जीभके घावों में लिखा गया- क्योंकि छाती में भी पतली और नर्म रंग और मांस है- जैसे जीभ और मुँह में- और जो छाती में गुठली हो जावे तो सोम रोगान चांघों।

पांचवां पाठ ५

छातीके पीसजानेके विषयमें

मूंगको सर्वके पत्तोंके पानीसें पीसकर लेपकरें औरने
सूजनहोजाय तो उसका उपाय करें ॥

फिटकरीको रोगजैत में मिलाके शीशेके वासनमें से
हे और लुगावे तो छातियां बढनेन पावेगी और जो उपाय पैलडों
के बढनेवा है वही इसका है ॥

तेरहवां अध्याय

मेदेके रोगोंके विषयमें

पहिला पाठ १

मेदेके मिजाज विगाडजानेके विषयमें

गरमी और ठण्ड और मवाद आदिके विन्द् आपसे आ
पमालूम होजावेगे - जो गरमी से मिजाज में विगाडहो और को
ई मवाद नहो तो - थोडा और हलका मौजज पेटमें जाकर विग
डजाता है - और बहुतसा और भारी नही विगडता और भलीभा
तिपचजाता है - स्वारी कफजत्र मेदेमें होता है तो - प्यास बढ
जाती है - और ठण्डे पानी से अधिकहोती है और गरम पानी
से कम - और जो मेदे में पित्तया गरमां होतोभी प्यास बढजाती है

और यह उरुडे पानी से कमती है और गर्म पानी से अधिक हो जाती है + जो मेदे में केवल गर्मी हो और कोई मवाद न हो तो मेदे को ठीक करें और जो कोई गर्म मवाद हो तो उसे निकालें - मेदे से मवाद उल्टी से भली भांति निकलता है और किसी स्थान से मेदे में मवाद आता हो तो उस स्थान से मवाद को निकालें - बहुधा भेजे और तिल्ली और जिगर से मेदे में मवाद गिराकर वा है - लक्षण प्रत्येक के यह है - जो भेजे से गिरे तो नजला होगा और जिगर और तिल्ली से गिरने में इन स्थानों में बिगाड़ पाया जायगा - जो भेजे के कारण से हो तो फास्ट सरास खोले - और जिगर में दाहिने हाथ से फास्ट वासलीक या असीलम खोले - कभी ऐसा होता है कि मेदा पुष्ट और साफ हो लेकिन देर में भोजन करने के कारण निर्बल हो जावे - और मवाद उसमें गिरे यह वात बहुधा गर्म मेदे की होती है - कि भोजन न मिलने से बेचैन हो जाता है - और कभी उनको भुरबकी बाधिलता से भुच्छा आ जाती है ऐसे मुनुष्यों को चाहिये कि जात काल ही कोई स्वदी दे स्तु खालिया करें और पेट खाली न रखें - और कभी मेदे की परत में मवाद के फंस जाने से यही रोग होता है उसमें अयारिज की वारा खिलाने उल्टी करावे और जो उसमें शरबत इफसंतोन या पीली इड मिलालें तो मवाद मेदे की तह से उखड़ कर निकाल आयेगा ॥

दूसरा पाठ २

पेट की पीड़ा के विषय में

जो यह मेदे के बिगाड़ से हो तो उसका वर्णन हो

वा- और मेदे में सूजन या घाव होतो उसका चर्णन आगे आवेगा-
 और जो वाय की अधिकता से होतो पीडा फिरती हुई मालूम हो
 गी और डकारें और हिचकियां आवेंगी और पेट बोलैगा- और फू
 ला हुआ होगा- और जब भोजन मेदे में नीचे उतरैगा तो चाई और
 पीडा होगी- इसमें पेट को सेकें और इलायची को गुलाब में औ
 टाके पिलावे और पौड़ीना चवावे कि डकार खुलकर आवें और
 कसूनी खिलावे और जो वाय गादी होतो काफ़ का गुल्लाव दें और
 पचाव कारने के लिये उपाय करें- और पेट पर बारे लगाने से
 पीडा जल्दी जाती रहती है- किसी कारण से पीडा हो उस में शिवा
 जीवन को गुलाब या पानी में मिलाकर पिलाना अति लाभदाय
 का है- कभी ऐसा होता है कि पीडा पतले या स्वारी काफ़ से हो और
 कोई वस्तु ठंडी दीजावे और काफ़ से वाय कुछ कम उठे और इस कारण से पीडा में कुछ
 कमी होतो जान पडता है कि गर्म मवाद है क्योंकि ठंडी वस्तु से कमी हुई- और इसी
 प्रकार कभी ऐसा होता है कि मवाद गर्म हो और कोई औषधि
 गर्म दीजावे और वह घूस को पचावे और वाय को तौड़े तो धो
 का होता है कि मवाद ठण्डा है क्योंकि ठण्डा दवा से लाभ हुआ
 इन दोनों धोकों से बड़ी हानि होती है इसी लिये चाहिये कि
 और लक्षणों पर भी ध्यान रखें ॥ ५१ - २१॥ ५१६

और अधिका भोजन या तीव्र वस्तु खाने से पीडा होतो
 उल्टी करके उसे निवाल हारें और कई दिन तक भोजन कम
 खांय और जो तीव्र भोजन खाने से हो तो ऐसी वस्तु खावे जो उस
 प्रकार की न हो ॥

और जो मेदे के कमजोर होने से यह रोग होतो लक्षण
 उसका यह है कि भोजन करने के पीछे पीडा की अधिकता होगी
 और जब तक वह उल्टी या दस्तों से निकल नै लगे पीडा नहीं

बढ़ेगी- इसमें वह जीवधेदे जो मेदे को पुष्ट करें और नौशदार को खिलाना अति लाभदायक है ॥

और जो मेदे में मवाद इकट्ठा हो जाने से मेदा कमजोर हो जाय लक्षण उसका यह है कि भूख बन्द हो जायगी और गर्म मवाद में प्यास और मतली अधिक होगी इसमें मेदे से मवाद निकालें और कुर्स कौकब और कुर्स अनीसून लाभकारक है ॥

जो मेदे की हिस्से बट जाने से पीडा हो पहिंचान उसकी यह है कि थोड़े कारण से पीडा उत्पन्न हो जाती है - जैसे भोजन के धुरे या बोरु से या सौदा के गिरने से जो मेदे के खाली होने के समय तिल्ली से गिरता है और उससे भूख बालू स होत है - और ठण्डे पानी पीने से और उसके सिवाय किसी प्रकार का बिगाड न पाया जावे ऐसे समय में भारी भोजन या ऐसे दवा खिलवावे जो मेदे को बन्द और सुन्न कर दे जैसे पौस्त खशखाश को पानी में भिगोकर और छानकर पिलावे ॥ ७१२

एक प्रकार की पीडा ऐसी है जो खाली पेट में नहार सुख होती है - और खाने के पीछे जाती रहती है - इसके तीन कारण हैं - एक यह कि तरी मेदे में इकट्ठी हो जाय और पेट के खाली होने के समय भूख की गर्मी से आंटे और उससे वायु उत्पन्न होके पीडा हो - दूसरे यह कि मेदे के खाली होने के समय निगर से पित्त मेदे में गिरे - और उससे पीडा हो - तीसरे यह कि तिल्ली से मेदे पर अभाव से अधिक सौदा गिरे या सौदा में तेजी हो जिससे पीडा हो जाय - वायु का लक्षण यह है कि डकार आने से पीडा हलकी हो जाती है और किसी मवाद का चिन्ह नहीं पाया जाता और पित्त और सौदा के लक्षण लिख चुके हैं ॥

परंतु सौदा के कारण मेदे में जलन होती है - वायु में तराबी मेदे से दूर करें और उसे पुष्ट रखें - और पित्त में सवाद को निकालें - और जो अवश्य होतो दाहिने हाथ से फास्ट असीलम खोलें और सौदा में जो सवाद की अधिकता होतो उसे निकालें और बायें हाथ से फास्ट असीलम खोलें - और जो सौदा की तेजी होतो उसे ठीक करें ॥

ॐ श्री

तीसरा पाठ ३

गैर २०१६

“जोफाह ज्म” और “सूयेह ज्म” और “तुग्बम” के विषय में ॥

कारण इन तीनों रोगों के एक है - जो कारण कमजोर होतो पहिला रोग होगा - और जो बहुत पुष्ट होतो तीसरा - और मध्यम में दूसरा रोग होता है - जो स्वभाव के विपरीति देर तक भोजन मेदे में रुहरा रहै और फिर फचकर निकल जाय तो वह जोफाह ज्म - है - और जो भोजन खली मांतिन पचे और उन्नत पतला आवे तो उसे (सूयेह ज्म) चाहते है ॥

और तुग्बमा वह है कि भोजन बिलकुल न पचे और वैसाही दस्तों में निकले - जैसा कारण देखें वैसा ही उपाय करें - चारह घण्टे से काम और चारह घण्टे से अधिक भोजन पेट में न रहना चाहिये - मेदे का जो रोग गुर्मी से न हो उसमें सेर भर शिकंजे वीन सफर जल्ले में तीन तोले सौंठ मिला देना अति लाभ कारक है ॥

— श्री ६ — श्री ६ २ ८

चौथा पाठ ४

हैजे के विषय में

यह वह रोग है जिसमें किना पचा हुआ और विगाड करने वाला मवाद शरीर से मूँदे में आकर दस्तों और उल्टी में बहुत जोर से निकलता है - और कभी ऐसा होता है कि उल्टी नहीं होती बस दस्त आते हैं - परंतु सर्वेच्छी अवश्य होती है - यह रोग बहुत इराबना है परंतु दस्त और प्यास और कामजोरी और नाडी का न चलना और हाथ पाँव का सेंटना देखकर बहुत डरना न चाहिये जो उपाय अच्छा किया जायगा तो दूर होजाने की आस है - उपाय करने वालों को धरना न चाहिये - खास करके जब कि बच्चों को यह रोग हो इसमें जहां तक बने विगाड करने वाले मवाद को दस्तों या उल्टी से बिलकुल निकाल डालें - और बन्द न करें - परंतु जो रुकाव देवे तो उल्टी और जुल्लाव से उसे निकालें और कामजोरी अधिक होजाय तो मित्राज के अनुसार बन्द करें - बंद करने के लिये नीबू के छिलके मुख में रखके उसका रस चूसे और जब प्यास और गरमी अधिक होतो गरम गौषर्धे और तिरपाक फारु का कभी नदे - और यह बातें याद रखें - एक यह कि रोगी को हिलने मुलने नदे और भोजन की प्रकार से कोई बस्तु न खिलवे परंतु जब अधिक आवश्यकता होतो कोई हल्की और पतली बस्तु खिलवे जैसे अनारया मिठे आदि का रस, और जहां तक बने रोगी के मुलने का उपाय करें - यद्यपि इस रोग में नौद आना बहुत कठिन है तथापि सब उपाय चुलाने के करने चाहिये - और जब मवाद निकल चुके तो जो ईहल का भोजन हालके अनुसार थोड़ा खिलवे ॥

यहां में एक घोखेका वर्णन करता हूं कि रूति के अंत
 सवेरा होनेपर कभी उल्टी होती है उससे डरके तिरयाक फारु
 क और लोंग आदि गरम औषधियां देते हैं- यह बात गच्छी नहीं है बिना
 मोगर्म औषध देने से तप हो जाती है- कभी मवाद के जलने से जंगीरी हो जाती है
 वह चुरी है उससे मूर्च्छा और कमजोरी और विषुय अवश्य होता है जीम तलसे
 रंडा पानी पिलाना जरूरी है- जब से सी उल्टी राति के
 अंत में हो मूर्च्छा आदि के साथ ती तिरयाक फारुक दे नही तो
 कुछ न दे- और तीन पहर तक भोजन न दे- और जब मूर्च्छा उत्प
 न्न होतो तिली के देल में नाय फाल पीसके और गुन गुना करके
 सारे बदन पर मले ॥

पांचवां पाठ

शूल के घट जाने या जाते रहने के विषय में

कारण इन दोनों का एक है- जब कारण कमजोर होते
 मुख घट जाती है और जब कारण पुष्ट होता जाती रहती है- परंतु
 कारण इन दोनों को बहुत है- एक केवल से देखा विगाड है पि
 ना मवाद को चाहे पड विगाड गरम हो या टंसडा दमरे मंद में
 मवाद को डकहा होना- तीसरे सारे जगिर में जिमा काचव मरा
 द की शथ्यता हो इस कारण से बदन को भोजन का चानना
 हो- चौथे शंर के छिद्रों का मंज होना और चामका बाडा हो
 ना कि इससे मवाद पयता नही है- पांचवें निगर का कमजोर हो
 ना या निगर और मामागिजा को बीचमें मुदा फजाना- छठे वम

अनुसार भेजे से मवाद निकालें - क्योंकि एक पेट भेजे से मे
 दे पर आया है - मेदे में हिस्स उसी के कारण से है इसलिए
 जेके उपाय से उसमें भी लाभ होगा ॥

शरीर से रुधिर के घटजाने और किसी प्रभाव के छो
 ड देने से या किसी दुख के होने से भूख बिगड़ जाय तो जो उ
 पाय अवश्य समझें करें - और जो आंतों में कैल्सियम उत्पन्न होने
 से भूख जाती रहै तो उनके निकालने का उपाय करें और इसी
 प्रकार से कारण को दूर करें ॥

भूख लगाने वाली औषधें यह हैं - शिवांगनीन सफा
 जली - और नीबू का शर्वत - और हरा पौदीना - सिरके में डाल
 कर खायें - और खैरा अचार - और पौदीने का शर्वत खाएं ॥

छठा पाठ ६ ॥

भूखके बिगड़ जानेके विषयमें

इस रोगमें मनुष्य वह वस्तु खाने लगता है जो खाने
 के योग्य नहीं - जैसे मिट्टी, कोयला, कागज, रुई आदि - और
 यह बहुधा पेटवाली स्त्रियों को होता है - इसमें बुरे मवाद मेदे
 में इकट्ठे होजाते हैं और उनके विपरीत खाने की चाहना होती है
 इसमें मेदे से मवाद निकालें - परंतु पेटवाली स्त्रियों का कुछ
 टयाय न करें - उनका ऐसा स्वाभाव तीन चार महीने पीछे आ
 पसे आपजाता रहता है - और अजवायन और जीरेवा चबाना
 और उड़का रस निगलना भी लाभकारवा है ॥

सातवां पाठ ७ पृष्ठ नं० २०२

भोजन का होना हो जाने के विषय में

इस रोग में ठण्ड से मेदे में विगाड हो जाता है और तरी से मेदा रेंगता है जैसे कि सौदा गिरने से भूख के समय होता है- लक्षण उसका यह है कि खाने का होना हो और प्यास बिलकुल न हो और पेट फूला रहै और नाडी धीमी चले इससे मेदे को गरमी पहुंचावे- और अनीसून-अजवायन-जीरा-मस्तगी-आदि गरम औषधें चवावे और मेदे पर बालछड-जायफल-आदि पीस कर मले- और जो कफ से विगाड होता उस मवाद को निकाले- और जो तिल्ली से मेदे पर सौदा अधिक गिरे और उस से यह रोग होता लक्षण उसका यह है कि जब तक पेट खाली रहै मेदे में जलन पाई जायगी- इसमें सौदा का मवाद निकालो और दाहिने हाथ से फ्रस्ट चासलीक और असीलम खोलें कि जिगर से सौदा निकल जाय और तिल्ली पर बारे लगावे- जो मेदे या सारे शरीर की अधिक गरमी से सोज्जन ब लड़ी पच जाया करे- जैसे कि रसायन या कुस्ता खाने से होता है- उपाय इसका समझ के अनुसार करें जिससे वह कारण दूर हो जाय- जो इस रोग का कारण भेजे से मेदे पर कफ का गिरना और रकबा हो जाना होता खड़ी हकार आविगी- और पबिले इससे नत्रका हुआ हो गा- इसमें नजले को रोके और जो मांता में केंचुसे पडने से यह रोग होता इस कारण से कि केंचुसे भोजन को खालें तो उसका वर्णन सोल्हवे अध्याय के नवें पाठ में किया जायगा ॥

आठवां पाठ ८

जू उल बकर के विषयमें

इस रोग में भूख बिलकुल जाती रहती है और भोजन में ऐसा दिल हड़जाता है कि एक दुकड़ा खाना वाठिन होता है - परंतु साग शरीर सूखा होता है - और दिन पै दिन दुबला होता है - और जोर घटता है - और देखने में कोई कारण और रोग नहीं पाया जाता - जब यह बढ़ जाता है तो मूर्च्छा उत्पन्न होती है - जब मूर्च्छा होती पहिले उसका उपाय करें और फिर कारण को पहिचान के उसे दूर करें - और जब रोगी कमजोर होता ज भी जुल्लाव न दें - उत्तम उपाय यह है कि भेदे को पुष्ट और ठीक करें ॥

नवां पाठ ९

सुरबकी सहारन होने के विषयमें

इसमें समय पर भोजन न मिलने से मूर्च्छा भी आजाती है - चाहिये कि हर समय भोजन बना रखें और भेदे को पुष्ट करें और खट मिठे अनार के रस और सेव के रस में रोटी भिगो कर खि लावें - इससे भेदा पुष्ट होता है ॥

दसवां पाठ १०

अधिक व्यास होने के विषयमें

यह दो प्रकार का है एक तो सच्ची प्यास होना और
 दूसरे गुंठी-सच्ची प्यास वह है कि जिसमें गरमी के बुझाने के
 लिये- और तरी घट जाने से पानी की चाहना हो- इसमें गरमी
 और खुशकी के लक्षण पाये जावेंगे और पानी से प्यास बुझेगी-
 और गुंठी प्यास वह है कि स्वारी या जिस्सी कफ या जला हुआ
 सौदा मेदे में चिमटे और उसके धोने के लिये पानी की चाहना
 हो- इसमें पहिले तो ठण्डे पानी से प्यास बुझ जाती है परंतु थो
 डी देर पीछे फिर लगती है और सुखका स्वाद सवाद के अनुसार
 होता है- और जो थोड़ी देर पानी न पिये तो प्यास धीमी हो जाती
 है- जब वह रोग गरमी से होता यह देखना चाहिये कि वह
 गरमी मेदे में है- या जिगर में- या छाती में- या फेंफड़े में- जिस
 स्थान पर गरमी हो ठंड पहुंचावे- और छाती और फेंफड़े में
 दिल्ली गरमी में ठण्डी हवा स्वाना और ठंडी वस्तु सूचना अति
 लाभ दायक है- और मेदे और जिगर की गरमी को ठंडा पानी ल
 मदेता है- इसी से पहिंचान सकते हैं कि गरमी किस स्थान पर
 है- और जब कोई ठण्डा सवाद होता गर्म पानी में सिवांज
 वीन घोळकर पिळावे- और उल्टी करावे और सौंफ का अर्क
 दे और चनों को गीटाकर उसका पानी पिळावे- परंतु स्वारी
 चलगम में सिवाय सौंफ के अर्क के और कोई वस्तु गरम नदे
 नी चाहिये- और जब खुशकी होती तरी पहुंचावे- और रोगन बा
 दांस और दूध पिळाना अति लाभ दायक है- और जो प्यास तप
 या जिगर की सृजन के कारण से होती तप और सृजन का उपा
 य करे- कभी ऐसा होता है कि बहुत सा रुधिर निकलने से
 पित की अधिवाता होकर खुशकी बढ जाती है- और उसके
 कारण से प्यास लगती है इसमें ठण्ड और तरी पहुंचावे- और

किसी लसदार भोजन के खाने से भी प्यास लगती है- क्यों कि वह मेदे में जाकर चिमट जाती है - और उसके धोने और छुराने की चाहना होती है- इसका वही उपाय करें- जो कफ की प्यास का है- और इसमें यानी कान पीना भी लाभदायक है और कभी बर्फ खाने से भी प्यास होती है इसलिये कुछ लोग बर्फ को गरम बताते हैं- इसमें नींबूका शर्वत पीये या थोड़ा रगर्म पानी ॥

ग्यारहवाँ पाठ ११

मेदे की सूजन के विषय में

यह सूजन चाहै जिस मवाद से हो उसमें पीडा और तप अवश्य होगी- परंतु गर्म मवाद में यह दोनों अधिक होंगे और ठंडे में कम- और चिन्ह प्रत्येक के पाये जायगो- जो गर्म मवाद हो तो फस्ट खोलें और उलटी न चरावे- और पुष्ट जुल्लाव भी नदे- जब कड़ होतो- अमलतास और इमली और गुलाब के फूल हरी मकोय के फटे हुए बर्क में पिळावे और पहिले चन्दन और मामीसा का लेप करें- और तीन दिन पीछे जौ का आटा जरबर्द खैरू के फूल गुलाब में पीसकर लेप करे और जब ठंडा मवाद कफ का होतो पहिले कफ की मुनि सूटे- अंगूर की लकड़ी जलाकर उसकी राख और मोथा गोम सरकंडे की जड और बालूहड सिरये में पीसकर गुनगुना लेप करें- फिर जुल्लाव की आवश्यकता होतो अमलतास को छोटे हुए जूफे में घोळकर और छानके पिळावे- और जो

सीढ़ी के मवाद से सूजन होती वह सूजन कड़ी होगी - जो उसमें गरमों का लगाव न हो तो रेंडी का तेल और अमलतास और स कोप का अर्क मिलाकर पिलावे - तीन दिन में वह कडापन जाता रहेगा - और जो यह सूजन पुरानी हो जाय तो कुर्स सम्बुद्ध देना चाहिये ॥

चारहवा पाठ १२

दुबैल तुल मेदा के विषय में

इस रोग में मेदे की सूजन फोडा बन जाती है - और पक्व के उसमें पीप पडती है - जो गरम सूजन होती उसे खुराज कहते हैं - इसके पकने और फूटने के बिन्दु वही हैं जो जातु प्लाव में बताये गये हैं - जब मवाद इकट्ठा होने पर होता है तो और कौनीचे के बीज और कडुये वादास कूट पीसकर रेंडी के तेल में मिलाकर छेप करे कि वह पक्कर फूट जावे - और जो भाप से न फूटे तो रोगी को गरम पानी पिलाकर सूजन को दवावे - कि वह फूट जावे और फिर साबुल असल और गुलाब का शर्वत दूध में मिलाकर पिलावे - कि मेदे से मवाद निकल जावे - और जब देखे कि मेदा साफ होगया तो कुन्दरु दम्बुल अरववेन - गुलनार - काहेरवा - गिले अर्मनी - पीसकर फ कावे - कि धाव पुरे और आंशजो या इरीरां भोजन की जगह स्थिरावे ॥

तेरहवां पाठ १३

मेदेके घाव और फुन्सियोंके विषयमें

इसमें पीडा और जलन खट्टी और तीव्र वस्तुओं के खाने से होगी - और जिस स्थान पर पीडा होगी उसी पर घाव और फुन्सियां होंगी - फास्ट खोलें और उसी के पीछे वह उपाय करें जो सूजन काहै और काली गाय के मूठसे ये । । । फूल और चुके के बीज और बंसलोक्न पीसकर देना लाभदायक है - और जब फुन्सियां फूट जाय तो पहिले वे औषधें दें जो घाव को साफ करें - फिर वह । । । । । जैसे ऊपर के पाठ में लिखी गई है - और नरम करने के लिये अमलतास को हरी कासनी के पीनी में घोल कर देना लाभदायक है ॥

चौदहवां पाठ १४

पेट फूलने के विषयमें

इसका कारण या तो बौई टरहा और सादा विगाड है या भोजन का विगाड या किसी मवाद का मेदे में इकांठा होना - इसके चिन्ह और उपाय जो पहिले नम और मेदे के विगाड में लिख चुके हैं - और छोटे बच्चों को पुष्पको गुलाब में पिलाना भी लाभदायक है ॥

पंद्रहवां पाठ १५

डकारजंभाई और अंगडाई अधिक आने के विषयमें ॥

यह तीनों रोग सारे शरीर में यामेदे में वायु के उत्पन्न होनेसे और उसमें से अधिक धुंआ उठने से होती हैं - इनमें मवाद को निकालें और पचाव को ठीक करें - और सौंफ को महीन पीसकर गुलकंद में मिलाकर खिजावें - और मुश्कयासुस्तगीरहदमें मिठाकार देना अति लाभदायक है - और सारे शरीर से वायु को खोता है ॥

सौलहवां पाठ १६

उल्टी उवाकी और मतली और तक्कल्लुवनफस के विषयमें -

उल्टी वह है कि कुछ मेदे से मुह की रस निकले - और उवाकी वह है कि कुछ न निकले परंतु ऐसा मालूम हो कि उल्टी होती है - और मतली उल्टी से पहिले होती है - और बराबर उल्टी होना तक्कल्लुवनफस कहलाता है - मवाद के अनुसार जुल्लाव दें - और गरम पानी में सिकंजीन घोळकार पिळावें - और जो कुछ हानि न होतो उल्टी कारना उत्तम है - और जो मवाद किसी और स्थान में मेदे में आकर मिरता होतो उस स्थान का जुल्लाव दें - और ठीक करें - और जो तपमें बुहरान के दिन उल्टी होतो उसे कभी नरोकें ॥ अ. १. ६५ - ६६

आमला-कड़ैरुवा-बंसलोचन-जौवासतू-चाइं
छादे या इकाहादे ॥

यह औषध कफ की उल्टी को दूर करती है ॥
मेदे को पुष्ट करती है ॥

जदगरकी-लिंग-मस्तगी-सूखापोदीना-
रकूटछानले-और उसमें से साठे तीन भाशेलेवार पैतीस भाशे
गुलकांद में मिलावार दे ॥

यह लेप सौदा की उल्टी को लाभदायक है

लादन-भाखूना-छडीला-सौरट के हरे पत्ते
वमें पीसकार मेदे और तिल्ली पर लगावे- और कुर्स
से अधिक कफ और सौदा की उल्टी में कोई
नहीं है- खाली सिंगी बिना पछने की दूंडी के पास और कंधी
के बीचमें लगाना और हाथ पांच मलना और सेगी के सुलाने
का उपाय करना अति लाभदायक है- और जब भोजन के वि
गाड से उल्टी आवे तो उस भोजन को बिलकुल निकाळना चा
हिये- इस लिये चाहे उल्टी करावे- चाहे बुल्लावदे और जो
मेदे के काम जोर होने से होतो उसे पुष्ट करें- और जो केंचुरे पड
जाँने से यह रोग होतो उन्हें निकालें ॥

सत्रहवां पाठ १७

उल्टी में रुधिर आनेके विषयमें

यह रोग दो प्रकार से होता है - एक यह कि कोई रग मरी या भेदे की टूट जाय या फट जाय या रग का मुंह खुल जाय - इस रोग में मरी या भेदे में कोई विगाड पाया जायगा - और दोनों के धों के बीच में पीड़ा होना मरी के घाव का लक्षण है - इसमें फास्ट वासलीक खोलें - और आवश्यकता के अनुसार रुधिर निकालें - और जब बहुत सा रुधिर उल्टी में आता होतो उसमें एक सेर तक रुधिर निकालना लिखा है - और हाथ पांव कासना और पिंडली पर पछने लगाय और रुधिर को बन्द करने वाली औषधें देना लाभदायक है - और रग के मुंह खुल जाने से जो रुधिर आता हो उसके बन्द करने के लिये मुन्के बीज समेत खाना अति लाभदायक है - और जो मरी में कोई विगाड होतो रुधिर को रोकने की जो औषधि पियें वह थोड़ी थोड़ी गले से नीचे उतारें कि देर तक दबा मरी में रहे - और रग के पाट जाने में कुछ कुईल लाभदायक है - और ऐसा ही इरे वारतण और इरे कुलफे का पानी लाभकारक है ॥

दूसरे यह कि निगर या तिल्ली या भेजे में कुछ विगाड हो और वहां से रुधिर भेदे में गिर कर उल्टी में निकले - लक्षण उसका यह है कि उन्हीं स्थानों में विगाड होगा - इसमें फास्ट खोलें और उस स्थान को टीक करें और ठहर ठहर कर थोड़ा रुधिर निकालें - परंतु जो मवाद बहुत होतो एक वासी बहुत निकाल सकते हैं - और जो छाती पर चोट लगने से यह

स्वले - फिर मुगास -
 - एलुआ - भास के पत्तों के पानी
 सकार चोटकी जगह लगावें ॥

अठारहवां पाठ १८

मेदे में रुधिर या दूध के जम जाने के विषय के
 वर्णन में

जब रुधिर कहीं से आकर मेदे में रह जाय और उसमें
 गरमी न रहै और वह जम जाय या दूध पीवै - बड़ उंड से या कि
 सी जमाने वाली वस्तु से जैसे पनीर मेदे में जम जाय - लक्षण दे
 नों का यह है कि सूच्छा और ठंडा पसीना आवे ॥ और कभी नह
 भी आता है कि इसमें सोया और पोदीना औराके और सिंकज
 न सिंकाके गरम गरम फिलवें - सब जानवरों का पनीर नसे
 हुये दूध और रुधिर को पिघ लाता है - परंतु स्वर गोश का
 पनीर इस के लिये बहुत अच्छा है - वह पतले रुधिर और दूध
 को जमा देता है - और जसे हुये को पिघला देता है ॥

कभी ऐसा होता है कि दूध पीने वाले बच्चों के मेदे में
 दूध जम जाता है - कारण इसका दूध पिलाने वाली के दूध का
 विगाड़ है - या मेदे की कमजोरी - महिला दूध को पिघलावे और
 दाई से बच्चे को अलग करलें - और अंटनी या गौ या बकरी का
 दूध पिलावे - और उत्तम यह है कि किसी और दाई का दूध
 पिलावे - जिस का दूध अच्छा हो - और जिस जानवर का दूध दे
 उसको मुद्दाब या कौसम खिलावे - और जो दाई को दूर न कर

सर्वे तो भोजन उसको ठीक दे - और कभी २ थोड़ा थोड़ा सा तिरिया
 काफ़ा रुक उसको खिलाने - और बच्चे को भी थोड़ा सा खिलाने -
 और जब तक दीर्घ को भोजन न पचे दूध न पिलाने दे - और बच्चे
 के पेट को कपड़े से ढाँके रखें - कि गरम रहे और सूखा हुआ
 पोदीना सादे सत्रह १७॥ साशेजवीन को खिलाना जमे हुए दूध
 को पिघलाता है ॥

उन्नीसवां पाठ १८

अधिक हिचकी आने के विषय में

जो बहुत खाने से आवें तो खाने के पीछे ऐसा होगा
 जल्दी से उठती काराके भोजन को निकाल डालें और पचाव की
 औषधियां दें - और कभी इलायची पोदीना चवाने से थम जाती
 हैं - और कभी आपसे आप - और जो उनका कारण चाय होती -
 चाय उत्पन्न करने वाली वस्तु के खाने से ऐसा होगा - और पचाव
 न होगा जैसे बच्चों को बहुत होती है वह वस्तु जो चाय को दूर
 करे दे - और जो किसी तीव्र मवाद या औषधि के खाने से होता है
 हल्ले सिक्कजवीन और गरम पानी पिलाकर उठती कारावे - और
 ठंडे और तर लुआव और शीरे दे - और गरम पानी में रीशन वादा
 म मिठाकार एक घूंट पीना और भोजन में मक्खन डाल के खाना
 अति लाभदायक है - और जो मैदे में काफ़ के बिमट रहने से स्पष्ट
 होता लक्षण उसका यह है कि मुंह से पानी निकले और पचाव
 न हो और खट्टी डकारें आवें - अयारिज का बुल्लाव देके उस
 मवाद को निकालें - और जो यह किसी सादे विगाड से होता ल
 क्षण उस विगाड के पाये आवेंगे - इसमें गरम औषधें पीवें - या

इस प्रकार में और वायु में और कोफ में उत्तम उपाय दूना
और चिल्लाना है - और जो कारण इसका जिन

। भी लाभ दायक है - और अर्कनांना और खट्टे अना
र का रस मिलाके पीना और बहुत साठंडा पानी पीना और रोटे
को गले में लटवाना और डराना और मस्तंगी और दार चीनी में
टाके पिलाना लाभ दायक है ॥

बीसवां पाठ २०

इकिलव मेदे के विषय में

इस रोग में भोजन उदर के उल्टी में निकल जाता है -
कारण इसका छिल जाना उस आंत का है जो मेदे के पास है जब
भोजन पचके उस आंत तक पहुंचता है तो उल्टी हो जाती है - और
जो उपाय मरोड़ का है वही इसकी भी करें ॥

इक्कीसवां पाठ २१

कालकुल मेदे के विषय में

यह वह रोग है जिसमें रोगी को यह जान पड़ता है -
कि मैं गरम राख पर लोट रहा हूँ - इसके दो कारण हैं - एक
तो मेदे में पित्त इकाटे हो जाय या जोई ठसडा मवाद बिगड़
जाय इसमें मवाद और भिजान के अनुसार जुल्लाय दें - और
ठीक करें ॥

बाईसवां पाठ २२

मेदेके फाड़कने के विषयमें

इस रोगमें दिल घबराने की सी हालत मेदे में मालूम होती है - मवाद के अनुसार जुल्हाव दे और जो केंचुसे पडगये होंतों उन्हें निकालें ॥

तेईसवां पाठ २३

वज्रुल फावाद के विषयमें

मह एक पीडा है जो मेदे में होती है - इसमें हाथ पांव बड़े होजाते हैं - और सूच्छा होजाती है - और दिल तक इसका बुख पहुंचता है - और जो यह रोग देर तक रहे तो रोगी मर भी जाता है - जो उपाय मेदे की पीडा का है वही इसका है ॥

चौबीसवां पाठ २४

पेटमें जलन होने के विषयमें

जो यह रोग कच्ची रोटी या कच्चे फलों के खाने से या मेदे में कच्ची सरी के इकट्ठा होजाने से होता लक्षण उसका यह है कि पहिले भारी वस्तु खाई होगी - और भुख के समय जलन में कमी होगी और जो सौदा के गिरने से होता भुख के समय जलन होगी और चिकननाई खाने से नलन जाता रहेगी - जो भारी और तर भोजन के खाने से होता उसमें उल्टी कारवे - और हल्का

भोजन दें और मेदे को पुष्ट करें- और जो सौदा से होतो वायें हाथ से फास्ट असीलम या वासलीका खोलें- और हड़का सुख्या और सिकांजवीन वजूरी दें ॥

छब्बीसवां पाठ २५

५१ २१ ७२ २५ ५१

मेदेके टीला होजानेके विषयमें

यह दो प्रकार से होता है - सेकती मेदा टीला होजाय और दूसरे उसको बंधन जिनसे कि वह बंधा हुआ है- टीले होजाय- पहिले का लक्षण यह है कि पचाव नहीं और छाती उभर आवे- दूसरे का लक्षण यह है कि मेदा मुका पडे और निस और कुकेगा उसी गोर चोग होगा- इसमें- इसतिरखां- और फाल्ज का उपाय करें- और हल्का भोजन दें- और सुगंधि वाली और कड़वा करने वाली औषधें दें- और वह उपाय करें जो छब्बीसवें पाठमें लिखा जायगा ॥

छब्बीसवां पाठ २६

७६ ८१ ८१ ८१ ८१

मेदेकी कुनावटके टीला होजानेके विषयमें

५८ ७ - २१ ५० ७ ५ २० -

यह रोग बहुत बुरा है इसमें भोजन कभी नहीं पचता और भोजन और बिगाड़के लक्षण नहीं पाये जाते- नवारिश अद सि लावें और मस्तगी का तेल मेदे पर मलें- और चरेचू, सुगंधि का संगदान सुखाकर और योमकर सवा दो माशे इतरी फल या शीवंत हव्युल गीस के साथ चटावें- और हरा यशत्र पीसके पौने दो माशे देना लाभदायक है ॥

सतईसवांपाठ२७

मेदेके खिंचजानेके विषयमें

७१ शा तु ५१+५१ ७५१

जो यह रोग मेदे में ही पचाव नहीं रहेगा - और जो पीठ के बंधन में होतो स्वाते ही भोजन आंत में उतर जावेगा और न पचेगा - और जो दहने या वायें बंधन में होतो रोगी उसी और सुकार हैगा - और जो इंसली के बंधन में होतो रोगी आगे की सुका रहेगा और पीठ सीधी नहो सकेगी - इसमें वही उपाय करें जो तशब्बु नका है ॥

अट्टाईसवांपाठ२८

मेदेके काड़ाहोजानेके विषयमें

७१ शा तु ५१+५१ ७५१

यह काड़ापन हाथलगाने से साल्मस होता है - और जब बढ़जाता है तो दिस्वाइ भी देता है - इसमें मेदेका विगाह भक्ष्य होगा - जो गरमी से होतो फ्रस्द वासलीक या असीलम खाले - और कच्चा मोम रोगन वनफशे या रोसन गुल में पका के छगावे - और जो सर्दी से होतो - वावूना - बालछड - सरकांडे की जड़ - मेथी के बीज - गूगल - काड़ये वादाम कूट छन के लेप करें - कभी ऐसा होता है कि तिल्ली के पाडे होजाने से उसी और मेदा भी काड़ा होजाता है - इसमें तिल्ली का उपाय करें ॥

उत्तीसवां पाठ २२

२३.

५६

१०३ - ७३ शो नो ७ ६ ६ १ ७

फहचान उसकी यह है कि वह बढ़ाफन सेक और
से पतला और दूसरी ओर से मोटा होगा - और मेदे में कीर्त्त बिगाड
नहीं पाया जायगा - इसका वही उपाय करें जो अपर के पाठ में।
लिखा गया है ॥

तीसवां पाठ ३०.

पेट चलने के विषय में

६२ ७ २ ० १ २ २ २ २ - ७ ६ ६ ६ -

जो कोई सादा बिगाड या मबाद होतो लक्षण और उ
य उसका अपर लिख चुके हैं - और जो फुंसियों और घाव से हो
ती उसका वर्णन कर चुके हैं - और जो जिगर में कमजोरी न होतो
सफूप्र चारतुखम और सफूप्र हब्बुलरमा लाभ कारवा है - और
र जो नजले के गिस्ते से हो उसमें सोने के पीछे दस्त आवेंगे -
इसमें नजले का उपाय करें - और दस्तोंको चरोकों - परंतु संवा
दकी निकालें और भेजे को पुष्ट करें - और जो भोजन से दस्त
आवें तो पचाव और भोजन को ठीक करें - और जो रोगों के मबाद
से ऐसा होतो लक्षण उसका यह है कि शरीर मोटा होगा और
दस्त चढ़े आवेंगे - इसमें फ्रस्ट् स्कोलें और चदन मलें और प
सीना निकालें और भूखे रहें - और जो जिगर के वासजोर होने
से होतो दस्त सफेद या हरे आवेंगे - इसमें जिगर और मेदे
को पुष्ट करें और नवारिश मस्तगी रवावे - और जो दस्त चारी

2112
 बांधकर आवे - तौ मवाद के रंग से लक्षण साहस होगा - फ्रास और जुल्लाव से उस मवाद को निकालें ॥

और जो मासारीका में सुद्धा पडने से ऐसा होतो वर्णन इसका निगर के सुद्धे में होगा - और जो मेदे के खदाने के मित्त जाने से ऐसा होतो कोई गलाने वाला मवाद गिरा होगा - या मेदे में गर्म सूजन हुई होगी - या विष खाया होगा - कारण के दूर करने के पीछे - सिमाक - जरबर्द - वंसलोचन - छालिया - चंदन - अनारके छिलके - रसौत - पीसकर - विही यंगूर के पानी से मिलाकर मेदे पर लेप करें - और सत्तू और सेब और विही रोगन वादाम मिलाकर खिलवें - और खाने के पीछे देर तक दाहिनी कार बट लेटे रहें - और कहते हैं कि दूध और मेदे का हरीग मेदे के खदानों को उत्पन्न करता है - और जो जुल्लाव के पीने से अधिक दस्त आवें तौ खदा मठो ठंडा कम्बे पिलावें ॥

इकतीसवां पाठ ३१

मेदे के छोटा होने के विषय में

१५१ ३१ ३१ ३१

जो यह जन्म से होतो अधिक भोजन चाहे हलका हो दुख देगा - इसका उपाय सिवाय इसके और कुछ नहीं है कि नित ऐसा भोजन खावें जो थोडा हो परंतु जोर उसमें अधिक हो - और जो खिचोव या सूजन आदि से होतो उसका वह उपाय करें जो उचित हो ॥

चौथवां अध्याय

—३६—

नगरके रोगोंके वर्णनमें

पहिला पाठ १

नगरके विगाड़ के विषयमें

चाहे यह रोग मवाद से हो या विना मवाद के इसमें निगरमें कोई विगाड़ होगा- और इसके साथ हर प्रकार के लक्षण पाये जायगे- इसमें कारण को दूर करें- निगरके विगाड़ को कामनी अति लाम कारक है- और अमलतास के साथ हर प्रकार के विगाड़को लाम देती है- परंतु अमलतास इस समय परदे जब कि मवाद को नर्म करना चाहें- अब यहां वह औषधें लिखते हैं जो केवल निगरको लाम देती है- इन्हें समरु के दें और काजू का ध्यान रख ठंडी औषधें- हरी कामनी कारस- अनार कारस जूरि शक का शीरा- अस्पगोल्ल जत लुआव- चन्दन का शर्वत- और सिकंजीबीन- और मठा चाहें इनको अवेलादे या मिलाके, और जो वाक्ज न होतो कुर्म तथा शौर कायिज विही, या नेव के सत्तमें मिलाके या शर्वत हुस्माज के साथ दें- और जो वाक्ज हांतो हड और अमलतास ओटाके दें- और जब रुधिरकी अधिकता हो और कोई रोक न हो तो फास्ट स्पोले- और जो पित्तों से हांतो ठ डाई अधिक दें- और जो अवश्य होतो फास्ट भी ग्याले और ठसडी औषधोंका निगर पर रखना निगरकी गरमी को बुका

ताहै - परंतु जब तक निगर से मवाद न निकाल लें - उसडी औषधें न लगावें ॥

और गर्म औषधें यह है - सौफ - करफू के बीज - शहद का गुलकन्द - अस्मानासिया - दवा उल कारकम - और कफ के निकालने के लिये - माउल उमूल - और इव्वुल सिन्न लाभदायक है - और सूखे जूफे को पानी में ओटाके साठे चार माशे दवा उल कारकम के साथ देना निगर को गर्म और पुष्ट करता है - और माजून फालसफा और धनिया का इतरी फल भी निगर को गर्म करता है - और मवाद अधिक न निकाले - कि इससे कमजोरी और दुबला पन होता है - और जो इस रोगमें दूस्त भी आते होंतो कुलफा - रेह्ना के बीज बबूलका गोद प्रत्येक साठे दश माशे मूनकर और गुलाब में भिगोकर दें - और जो सौदाकी अधिकता होंतो तरी पहुंचावे - और सौदा के निकालने के लिये इफती मून ओटाके या इफती मून की गोलियां सालजोबेन के साथ दें - और कौरुती सुरतब निगर पर लगावे - इससे खुश्की और बाड़ा पन जाता है - परंतु कि तरी अधिक न पहुंचावे नहीं तो जिलंधर होजाने का डर है - और जो भोजन हर प्रकार के विगडके अनुसार हो दें - और इसके साथ कोई और रोग भी होतो उसका भी उपाय करें ॥ ५३०

दूसरा पाठ २

निगरके कमजोर होजानेके विषयमें

चाहे जिस कारणसे होलक्षण उसका यह है कि दस्त होगा - और बदन दुबला होगा -

और मुख बिलकुल न होगी - और दाहिनी और बगल में अपर से नीचे की पसली तक लस्वार्ड में पीडा होगी - परंतु खाने के पीछे जब भोजन जिगर में जाने लगेगा - तो अधिक पीडा होगी और रोगी का रंग सफ़ेद और हरा होगा - और कभी पीला और काला जानना चाहिये कि वदन के प्रत्येक स्थान में चार शक्ति हैं - पचाव दूर करने वाली शक्ति - खैच लेने वाली शक्ति - और जानने वाली शक्ति - जिगर की चारों शक्तियों में से जो कमजोर हो जायगी उसे जिगर की कमजोरी कहेंगे - और लक्षण इन चारों की कमजोरी के अलग अलग हैं - जिगर के पचाव की कमजोरी के लक्षण यह हैं कि दस्त और मूत्र धोवन कासा होगा और सूजन और उदासी आदि पाई जायगी - और दूसरी शक्ति के लक्षण यह हैं कि दस्त और मूत्र थोड़े २ होंगे और उनमें रंग भी थोड़ा होगा और भूख न लगेगी - और तीसरी शक्ति के लक्षण यह हैं कि दस्त बड़े और सफ़ेद और पतले आवेंगे - और वदन दुबला होगा - और चौथी शक्ति के लक्षण यह हैं कि दस्त और मूत्र मास के धोवन से होंगे - और रुधिर के पतला होने से वदन दीला हो जायगा - और मूंह पर सूजन और उदासी होगी - यह रोग जो जिगर के बिगाड से हो उसका उपाय लिख चुके हैं - और जो सुदे या सूजन या जिगर के पाट जाने से या किसी और कारण से हो उसका उपाय आगे आवेगा - और जो किसी और स्थान में हो तो उस स्थानका उपाय करें - और जिगर और रूहको घुष्टवार तेरहें - और फ़स्त असीलम भी लाभ दायक है ॥

तीसरा पाठ ३.

जिगरके सुद्देके विषयमें

इस रोग में जिगरके अन्दर या उसकी रसों में कोई ग़ादा सवाद फंस रहता है चिन्ह उसका यह है कि शरीर में रुधिर कम उत्पन्न हो और रंग पीला हो - और टस्त धोवन से गाँवे - और जिगर भारी हो - और जो सुद्दा जिगर के ऊपर होगा तो बोर अधिक होगा - और सूत्र थोड़ा और पतला आवेगा - और जो सुद्दा भीतर हो तो दस्त बड़े और पतले गाँवेंगे - इस रोग में और जिगरकी सूजन में यह अंतर है कि सूजन में तप होतो है - और अधिक पीडा होतो और सुद्दे में बोर अधिक होगा जो सुद्दा जिगरके ऊपर होतो सिज़ाज के अनुसार सूत्र लगने वाली औषधें पिलवें और जो जिगर के भीतर हो तो जर्म करने वाली औषधें और नुल्लाव दें - और उपायों में सिज़ाज का ध्यान रक्खें - और जो कबज करने वाली वस्तु खाने से सुद्दा पडे तो रोगान वादाम और वृध और शक्कर का हरीरा पिलवें - और अनार का रस भी लाभदायक है - और जो जिगरकी रगों के संकड़ा होजाने से सुद्दा होतो यह रोग जनम से ही होगा - इसका उपाय कुछ नहीं है - सिवाय इसके कि भारी भोजन खाने से बचते रहें - और कभी सूत्र लगने वाली औषधें पियाकरें ॥

चौथा पाठ ४

मासारीकाके सुद्देके विषयमें

लक्षण उसका यह है कि जिगर और मेदे के बीच में

अंदर को खिचाव और बोर सालूस हो और मेदा और जिगर दोनों बंगे हों - और दस्त वाचचे आवें - और शरीर दुबला हो जावे - इसका ठीक उपाय वही है जो जिगर के भीतर के सुदेका है - और वह औषधें दें जो सुदेको दूर करें ॥

पाँचवाँ पार ५

जिगरके फूलनेके विषयमें

लक्षण उसका यह है कि दाहिनी पसली के तले पीड़ा और खिचाव हो और बोर न हो और तप और पचाव के पीछे पेट अधिक फूल जाय - इसमें बामूनी खिळावे - और शर्वत दीनार पिळावे - और गर्म पात्ती से नहार मुंह नहावे - परंतु हवा न लगे - और नमक और वज्ररे और राख से सेकें - और जो आवश्यकता होतो जुल्लाव दें - और मूत्रलासे वाली औषधें पिळावे और हल्का भोजन जिसमें वायु दूर करने वाली औषधें पडी हों खिळावे ॥

छठा पार ६

जिगरकी पीड़ाके विषयमें

जो इसका कारण कोई विगाड़ या सुद्धा आदि हो उसका उपाय लिख चुके हैं - और जो शिरका या सूजन या जिगरके पार्श्व या पयरी सारत पडने से होतो उसका उपाय आगे लिखेंगे ॥

सातवां पाठ ७

शिरका के विषय में

जब नद्वार सुह या महत्त करने के पीछे या ^{ना ठाने} जलदी से ठसड़ा पानी पीले उसकी ठंड जिगर को लगे और पीडा डेतो गरम पानी में कपड़ा भिगोके गरम गरम जिगर पर रखे और चाल छड़ और मस्तगी गुलाब और सौंफ के अर्क में पीस कर गर्म करके जिगर पर छेप करे और गरम पानी से धारे - और जो इसमें हकीम से कोई मूल हो जायगी तौ जलंधर या जिगर की सूजन हो जावेगी ॥

आठवां पाठ ८

जिगरकी सूजन के विषयमें

जो यह रुधिर या पित्तों की अधिकता से होतो लक्षण उसका यह है कि तप और म्यास होगी और जिगर में बोक और पीडा और नलन होगी और सिचाय उसके और लक्षण रुधिर और पित्तों की अधिकता के पाये जायगे - और जिगरकी सूजन के भी तर या बाहर होने के लक्षण तीसरे पाठ में लिख चुके हैं - और सिचाय उसके जिगर की भीतर की सूजन में उल्टी और सूच्छी और हाथ पाव ठडे होंगे और बाहर की सूजन में स्वामी और दगला रुकाव होगा और इसकी नीचे को खिचेगी और सूत्र थोड़ा होगा - और सूजन दती दिरबाई देगी जब सूजन रुधिर की अधिकता

लगावें और देर न करें- बाहीं रेंसानहो कि कोई रोग उत्पन्न हो जावे ॥ ६ और

दसवां पाठ १०

जिगरके फोड़े के विषयमें

जो उपाय मेदे को फोड़े का और पोंफड़े की सृजन का है वही इसका है - जो सवाद आंतों की ओर गिरने लगे तो हलका सा जुल्माव दे- और जो गुरदे की ओर गिरे तो सूत्र लाने वाली औषधें पिलावे- और जो फूटके पेट में जावे तो जलंधर का इरहै उसमें जिबेकी जलंधर का उपाय करें- और जो सवाद आप से आप तक कर पचजावे तो रोगों में कमी होगी- और दस्तों और सूत्र में पीप न निकलेगी ॥

४
भृ३५

ग्यारहवां पाठ ११

जिगरकी फुंसियोंके विषयमें

लक्षण उसका यह है कि जिगरमें कोई गरमीसे बिगाड़ हो और जिगर के स्थान पर जलन हो और कभी रोंगटे भी स्वदे हों और जाड़ा आवे- इसका वह उपाय करें जां गरसु सवादके बिगाड़ से पहिले पाठ में लिखा गया है ॥

बारहवां पाठ १२

जिगरके फाड़कने के विषयमें

इसमें ऐसा मालूम होता है कि कोई फुंकता है- और यह घात थोड़ी देर रहकर बंद हो जाती है- कारण इसका जिगर का सुद्धा है- और वायु का फिरना और रह जाना- इसमें वह औषधें दें जो सुद्धे को दूर करें और दाहिने हाथ से फास्ट असीलम खोलें ॥

तेरहवां पाठ १३

जिगरकी पथरी के विषयमें

लक्षण उसका यह है कि मोजन पचने के पीछे उलटी आवें और कोई वस्तु चुभे और जिगरमें पीड़ा हो और कभी-हाथ लगाने से जिगर पर सूजन और कड़ापन मालूम हो- और देरबने में भी आवे ॥ और जब दाहिने हाथ से फास्ट बासलीक खोले और नशतर गहरा लगे तो रुधिर के नीचे रेत हो- इसका उपाय वही है जो अठारह वें अध्याय के दस वें पाठ में लिखा गया है ॥

चौदहवां पाठ १४

जिगरके छोटा होनेके विषयमें

इसका लक्षण और उपाय वही है जो सैबानेके छोटा होने में लिखा गया- परंतु इसमें जिगर से मवाद निकालना चाहिये चाहे तरस करने वाली औषधें दें चाहे सूत्र लगाने वाली ॥

जिगर से दस्त आनेके विषयमें

यह रोग छः प्रकार का है- पहिला कीही जिसमे दस्तों में पीप आती है- कारण इसका जिगरके फोड़े का फूटना है- उपाय इसका लिख चुके हैं ॥

दूसरा गससाली जिसमें मांस के थोवन केसे दस्त आते हैं इसका कारण जिगर की कमजोरी है उपाय इसका भी लिख चुके हैं और मुनवके बीज समेत खाना अति लाभदायक है ॥

तीसरा दमवी जिसमें रुधिर के दस्त आते हैं- चारण इसका जो केवल रुधिर की अधिकता ही और घाव नहो तो लक्षण उसका यह है कि बहुत सा रुधिर निकालके ठहर जावे और फिर निकले और चिन्ह रुधिर की अधिकता के उत्पन्न हों- और जो जिगर पर घाव या चोट लगने से होतो मेदे और आंतों के खाली होने पर थोडा रुधिर बराबर चला आवेगा और चिन्ह घाव के उत्पन्न होंगे- जो यह रोग रुधिर की अधिकता से होतो जन नका कमजोरी न बढने लगे दस्तों को न बंद करें- और शादि में पास्द खोलें और मवाद को दूसरे और गिरावें- उपाय इसका यह है कि डाय पांच और छतियों आदि को कासकर बांधें और पसद में थोडा थोडा रुधिर ठहरके निकालें- और जो वाक्त्त की आवश्यकता होतो कुर्सकड रुवा- कुलफ के बीजोका शीरा- और वारतंग का पानी मिलाके दे और भोजन थोडा खावें- और जो घाव के कारण से हो उसका उपाय यही है- और जो यह रोग रुधिर की अधिकता से नहो तो कारण को दूर करें और कुर्स नफ मुद्म

में जराबंद बटाकर देना कबज और घाब के भरने के लिये अति लाभदायक है ॥

चौथा सफ़रखी इसमें जिगर पर गरमी होगी - इसका उपाय भी जिगर के विगाड में लिख चुके हैं - परंतु मवाद निकालने और ठीका करने में पहिले दस्तों को न रोके ॥

पाँचवां सदीदी कारण इसका जिगर में रुधिर या किसी और मवाद का जलजाना है - लक्षण और उपाय भी वही है जो चौथी प्रकार में लिखा गया है - और चन्दन को गुलाब में घिस कर जिगर पर लगावे - और दाहिने हाथ से फास्ट असोले मसोलें ॥

छठा स्वासरी इसमें दस्त गाढ़े कीचड़ से आते हैं - इसका कारण भी जिगर के प्रोडे का फूटना है या जिगर के सुदे का खुल जाना और बुरे मवाद का बहना या जिगर में मवाद का जल जाना इसमें लक्षण और कारण जानके उचित उपाय करें - और जब तक कामजोरी न बढने लगे दस्तों को कामी न रोके - इन दस्तों और मेदे के दस्तों का अंतर जिगर और मेदे के लक्षण से जाना जाता है - और जिगर के दस्तों में बुरी गंध होगी - और दस्त वारी करके आवेंगे - और खाली पेट में दस्त क्रम होंगे और पीडा न होगी, और दिन ब दिन होगी दुबला होता जायगा - और मेदे के दस्तों में यह बातें न होंगी - परंतु जब जिगर के दस्त देर तक रहेंगे तो मेदे से भी दस्त आने लगते हैं - उस समय मरोड और जिगर के चिन्ह इकादे हो जावेंगे - ऐसे समय पर दोनों के अनुमार उपाय करें ॥

सोलहवां पाठ १६

सूडल किनीआके विषयमें

यह रोग भी जिगर का बिगाड़ है और जलंधर से पहिले होता है - और लक्षण उसका यह है कि मुंह और हाथ पांव पर भुर भुराहट होती है और जिगर की कमजोरी के लक्षण उत्पन्न होते हैं - उपाय इसका जलंधर में लिखा जायगा - जो यह रोग पुष्ट नहीं होता है - इसलिये कमजोर औपधेंदें और सफर बरें और पैदल चलें - और यह रोग बट जावे और जलंधर होता हुआ जान पड़े तो स्वा रत्ती जंठनी के दूध ताना में दो रती सिक्कजीन मिलावे देना लाभ दायक है - और अनार का रस पिलाना भी लाभ दायक है और ठंडा पानी बिल कुलन पीवे - और पानी के बदले कासनी और सौंफ और मकोय का अर्क पी लावे - और जो हो सके तो भूख रहे नहीं तो मूंग या चनों को ओटा के उसका पानी दें और जो यह रोग बयासीर या हेज के रुकाने से होतो मूत्र लाने वाली औपधेंदेकर और लेप लगाकर उन्हें जारी करे और जो इससे लाभ न होतो फास्ट साफिन खोलें और रुधिर थोड़ा निकालें और फास्ट से पहिले गुल्लावपिलाना उत्तम है ॥

सत्रहवां पाठ १७

जलंधर के विषयमें

यह रोग तीन प्रकार का होता है - पहिला लहमी इसमें सारे शरीर पर भुर भुराहट होती है - और सवाद सांस के भीतर

होता है ॥

दूसरा जिन्की इसमें पेट मशक सा होजाता है - और हाथ पांव पर कभी सृज्ज होती है और कभी नहीं होती - और पेट के परदों में तरी समाजातो है ॥

तीसरा तबली इसमें गाटी चाय पेट के परदों में समा जाती है और पेट पर हाथ सारने से तबले कीसी आवाज निकलती है इसमें पहिले कारण को दूर करें - और फिर जिगर को ठीक करें - और गरमी पहुंचावे और जो गरमी होती उसे चुभावे फिर इस रोग का उपाय करें अर्थात् स्तु और सूत्र और पसीना छानने वाली औषधें दे जैसे शरीर का बालू से गाड़ देना - और खुश्क औषधें मलना जैसे नरकचूर और राख और खूब कला और महुये का गाटा जादि और खुश्क करने वाली औषधों का लेप करना अति लाभदायक है ॥

—३०६—

और उंडा पानी न पीवे और गर्म औषधें भी अधिक न दे - और जो बिना उंडे पानी पिये चेन न पडे तो छोटी बंधनी जिसकी टोटी सक्ड़ी हो उससे एक एक चंद पानी गले में टपकावे - और वह पानी भी पक्का हुआ और उंडा किया हुआ हो और थोड़ा सिरका भी उसमें मिलावे - और जो पानी के चंदले कासनी और सौंफ का अर्क दे तो उत्तम है और वह भी थोड़ा हो चाहिये कि दिन भर में भोजन से तिगुने पानी पिलावे - और चंगेरहने के दिनों में जितना भोजन खाते हों उसका छटा हिस्सा इस रोग में खावे अनार अतिलामदायक है जितना खा सकें खावे और जहां तक होसके नैन न दे और रोटी में सौंफ अनीसुन मिलावे और सूखी रोटी खिलवे और भरबी ऊटनी का दूध अति लाभदायक है - भोजन

और पानी के बदल पिलावे - इस दूध पिलाने की रीति यह है कि
 पहिले दिन १४० माशे पिलावे - फिर हर रोज १४० माशे बढ़ा दि
 याकरे - परंतु इसका ध्यान रखे कि मेदे में दूध जमने न पावे -
 इसके लिये पोदीना और हल्व सिक्की नज का मीर दिया करे - तो
 दूध न जमेगा और लहमी में हल्व राबंद का जुल्काव दे - और जो
 गरमी होतो हड़ को आंटाके शर्बत बुर्द मुकरर के साथ दे और
 जिक्की में जो गरमी न होतो काल कल नज हर दे - और जो गरमी
 होतो काल कलानज वा मिद और पीली हड़ अति लाभ दायक है
 और तबली में मित्राज के अनुसार जुल्काव दे - और सब प्रकारों में
 मूवाद निवालने के पीछे निगर के पुष्ट करने के लिये कुरस अ
 स्धर चारीस आदि खिलावे और सूत्र लाने वाली चिंतन दे उसे
 बदलते रहे और जो औषध दे उसे भली भांति पीस लिया करे
 कि वह जिगर में तुरंत पहुंचे और पसीना लाना भी अति लाभ
 दायक है रीति उसकी यह है कि नमकी और मनी को रोगान वावृ
 ने में मिलाकर शरीर पर मले और पसीने को पोंछते जावे और
 दूसरी रीति यह है कि गरम रेत में रोगी को बिठावे या लिटावे
 और उसके चारों ओर शरीर को रेत से तोप हें केवल मुंह खुला रहे
 जब रेत ठंडी हो जावे तो और गरम रेत डाले इससे सृजन कल्प प्रद
 जाती है और जो सृजन किसी एक स्थान पर हो जैसे छात्र में
 या पांव में तो उसी को रेत में गाडे और ऐसे ही धूप में बिठावे और
 गरम नदियों में और समुद्र के पानी से नहाना लाभ दायक है -
 और जो तसक को पानी में घोल कर बाई दिन तक धूप में रखे तो
 वह भी समुद्र के पानी के समान हो जाता है और यह कपूतरो को
 सुरवाता है और दहलंचा - जंगली चाचूतर की घांटे डल कुल चवन
 सुंजी चर्ची इन सबको मिलाकर भरहम बनाले - लहमी में

सारे शरीर पर लेप करें और तबली में हाथ पांव पर और जिबकी में केवल पेट पर - और चाहिये कि तबली में सवाद निकालने के पीछे कस्य के तोड़ने का उपाय करें - उन भौषधों से जो मंदे के फूलने में लिस्वी गर्डे हैं और सुखा सुदाव और इसमेंध और सौफ और अजमू और नमक अर्मनी और लाल शक्कर पीसकर सुदाव के पानी में शाफा बनाकर पैवाने की जाह स्ववे और जिबकी में छेवा देते हैं उससे पीला पानी निकलता है परंतु इसमें डर है - इस रोग में जो पानी रोगी को पिलाते हैं उसके यकाने की यह रीति है कि सौ हिस्से पानी और एक हिस्से सिरका मिलाकर औटावे और जब तिहाई रह जाय तो ठंडा करके पानी के बड़े पिलाया करें - इससे जलंधर की प्यास बहुत बुझती है - प्यास के बुझने और जिगर के सुदा खोलने के लिये सिरका अति लाभदायक है और इसके लिये तरिप्रकभी अच्छा है - जो रवांसी होतो खडी नस्तु कोई नदे - जो इस रोग के साथ कोई और रोग होतो उसका भी ध्यान रखें और जिबकी में पेट पर यह लेप करें - नमक अर्मनी - सुलैठी - कर्दमाना - मुनबके - अत्येक साठे दस माशे - करंध्य के बीज २४॥ साठे चौबीस माशे - बकरी की मंगनी १७५ माशे - जौका भाटा और गौका गौवर अत्येक २९० माशे - स्व को पीसकर सौफ या कासनी के पानी में मिलाके पेट पर लगावे ॥

तबली जलंधर में जब बहुत दिन हो जावे और पेट कडा हो जावे तो उस समय पेट के बड़ा होने के सिवाय और कुछ डर नहीं है और उपाय उसका यह है कि उन भौषधों का लेप करें - जिनसे पेट नर्म हो उसके पीछे वावूना - नैरबूना - दीनागरवा - सात रसुदाव के बीज - जुन्दवेदस्त - कागकी राख - नतहन - कूट छानवे और सुदाव के पानी में पीसकर पेट पर लेप करें और जलंधर में के

औपचलामदायक नहोती पांच स्थान पर दाग दें एक मेदे पर दू
 सरा जिगर पर- तीसरा तिल्ली पर- और चौथा मेदे पर- नीचेको
 पांचवां दूडी पर- जो रोगी पुष्ट होतो सबदाग इवादा दें नहीं तो यम
 यम कर ॥

पंद्रहवां अध्याय

॥१५॥

—३०६—

य^२रकान और तिल्ली और पित्तेके रोगोंके विष
 यमें ॥

पहिला पाठ १

यरकानके विषय में

इस रोग में शरीरका और आंखोंका रंग पीला या
 काला होजाता है- पीला यरकान पित्तोंके फैलने और काला
 यरकान सौदाके फैलने से होता है ॥

पीला यरकान बहुत ज्यादा होता है- रूचा बड़
 जो बुहरानके दिन पित्तोंके चमड़ेकी गोर आजाने से होता है-
 इसमें जो रोगी पुष्ट होतो कुछ उपाय नकरें और जो कामजोर हो
 तो उसे गर्म पानीमें विठावें कि शरीरके छिद्र खुलें- और मचक

भली भांति चास में आजाय और केवल सिक्कज्वीन या कासनी के शीरे के साथ पिलावे जो पीलापन आप से आप जाता रहै तो अच्छा है नहीं तो खोलने वाली और जलविने वाली औषधें पिलावे ॥

दूसरी प्रकार कहै कि निगर में गरमी से कोई विगाड उत्पन्न होने के कारण हो यह बहुधा रुधिर की तप में होता है- इसकी पहचान निगर के विगाड से होगी- इसमें वही उपाय करें जो निगर के विगाड में लिखा गया है ॥

तीसरी प्रकार कहै कि पित्त के गरम विगाड से उत्पन्न हो लक्षण उसके यह है कि अचानक उत्पन्न होगा और उससे पहिले सफेद मूत्र आवेगा- फिर पीला होकर गाढा और काला हो जायगा- और न कोई विगाड और सुहा निगर में होगा- और भूख जैसी की तेसी रहेगी इसमें सिक्कज्वीन कासनी के शीरे के साथ पिलावे- और जो उपाय निगर की गरमी का है वही इसका है ॥

चौथी प्रकार कहै कि पित्त में गरम सूजन उत्पन्न हो और उससे पित्त जोंटकर फैले- लक्षण उसका यह है कि तप रहेगी- और जीभ में बांटे पड़ेंगे और उबकाई और उल्टी होगी- जो उपाय निगर की गरम सूजन का है वही इसका है ॥

पांचवी प्रकार कहै जो सारे शरीर और रंगों की गरमी से उत्पन्न हों- लक्षण उसका यह है कि बदन जलेगा और कबज रहेगा और सारे अंग में खुजली और फुंसियां होंगी- और सब लक्षण गरमी के पाये जावेंगे- जो कोई सादा विगाड होतो ठंडाई पिलावे और जो मबाद होतो उसे निकालें और सारे शरीर को

ठीक करें- और तरी पहुंचाने वाले रोगन मलें- और उसी प्रकार के आवजन में विद्यते ॥

छठी प्रकार वह है जो शरीर के छिद्र बंद होने से उत्पन्न होता है- इसका कारण यह है कि गरमी की शक्त में बहुत चलने से रेत शरीर पर जम जाती है और छिद्र बंद हो जाते हैं- इससे पित्त और तैल फैलते हैं इसमें खैरु के फूल और गेहूं की भूसी मोंटाकर उसके गर्म पानी से न्हावें ॥

सातवां प्रकार वह है जो जिगर की गर्म सूजन से हो- लक्षण और उपाय उसका उसी सूजन में लिखा गया है ॥

आठवां प्रकार वह है जो जिगर के सुदे से हो इसका उपाय भी जिगर के सुदे में मिलेगा ॥

नवी प्रकार वह है जो विषैले जलनर के काटने और विष खाने से उत्पन्न हो- इसमें विष का औगुण दूर करें- और वह औषधें दें जो उचित हों और जो गरम विष खाया हो तो- कुर्स का फूर और ठंडी औषधें दें- और जो ठंडा विष हो तो तिरयाक प्राखा खा लें ॥

दसवां प्रकार यह है कि पित्त कमजोर हो जावे और पित्तों को जिगर से न खेंचे- और वह सारे बदन में फैल जावे- लक्षण उसका जो मत जाना है- और पित्तों की उच्छृंखला होना और कबज रहना और दस्त बिना रंग के होना- इसका उपाय वही है जो जिगर की कमजोरी का है ॥

ग्यारहवां प्रकार वह है कि जिगर और पित्त के बीच में जो रास्ता है उसमें सुदा पड़े- लक्षण उसका वही है जो पित्त की कमजोरी में लिखा गया है- और दस्त भी होले छोले सफेद आने लगे- इसमें जिगर के सुदे को खोलें ॥

चारहवीं प्रकार यह है कि पित्त और आंतों के बीच में जो रास्ता है उसमें सुद्धा पड़े - इसमें अचानक दस्त सफेद आवेंगे - और काबज होगा - इसमें भी सुद्धे को खोले और इन दोनों प्रकारों में भमलतास को करम कल्ले के पानी में घोळ कर कड़ुये बादाम का रोगन मिलाकर फिलाना अति लाभ दायक है ॥

तेरहवीं प्रकार यह है कि इन दोनों रास्तों में बुरा मांस या मस्ता उत्पन्न हो - लक्षण उसका वही है जो अपर के प्रकारों में लिखा गया है - परंतु उपाय इसका नहीं हो सकता है ॥

चौदहवीं प्रकार यह है जो कफ की कूलज से उत्पन्न हो - इसका कारण यह है कि लेसदार कफ रस रग के मुंह पर चिमट जावे जिससे पित्त गिरते हैं - उपाय इसका वही है जो कूलज का है ॥

इस रोग में कारण दूर करने के पीछे जो पीलापन आंख में रह जाय तो गरम स्थान में बैठकर पुराना सिस्का नाक में डालें और सिस्का और गुलाब मिलाकर भांख में टपकावें और इफ संतीन को भोंटाकर कुल्ली करें ॥

काळायरवान भी कई प्रकार का होता है - पहिले प्रकार वही है जो बुहरान के दिन हो - तिल्ली के रोगों में इसके पीछे तिल्ली का बह रोग घट जावेगा - इसका उपाय वही है जो पित्त की प्रकार में लिखा गया है - और जाबूने और सोये का तेल मलना अति लाभ दायक है ॥

दूसरी प्रकार यह है कि जिगर और तिल्ली के बीच में रास्ता है उसमें सुद्धा पड़े - लक्षण उसके यह है कि मुख्य

हौले हौले बढेगी- और निगर में बोक होगा- और :
 भी हौले हौले बढेगा- इसमें सुदे को खोले - और जुल्हा
 बढें- और बायें हाथ से फ़ास्ट चासलीक अथवा बसीलम
 खोले ॥

तीसरी प्रकार वह है कि मेदे और तिल्ली के बीच
 में जो रास्ता है उसमें सुदा पडे- इसमें भूसव बचानक जाती रहै
 गी और तिल्ली में बोक होगा- इसका उपाय भी :
 रवासा करें ॥

चौथी प्रकार वह है जो रुधिर के नल जाने से उत्पन्न
 हो- यह निगर की गरमी के कारण से होता है- इसका :
 उपाय निगर के बिगाड में देखो ॥

पांचवी प्रकार वह है जो तिल्ली की कामजोरी से उत्पन्न
 हो- इसका उपाय आगे लिखा जायगा ॥

छठी प्रकार वह है जो तिल्ली की सूजन से उत्पन्न हो
 इसका वर्णन भी आगे करेंगे ॥

सातवीं प्रकार वह है कि निगर में बाधिकांड से बि
 गाड हो और उससे यह रोग उत्पन्न हो- उपाय इसका निगर के रोग
 में लिखा गया है ॥

जब यस्कान पीले और काले दोनों साथ हों तो दोनों
 हाथ से फ़ास्ट खोले - तीन दिन बोक देकर और ऐसी औषधें आ
 टाकर पिलविं जो सौदा और पित्तों को निकालें- और जो सब
 द अधिक हो उसके अनुसार उपाय करें- और निगर और ति
 ल्ली को ठीक करें ॥

दूसरा पाठ २

तिल्लीके विगाड़ के विषयमें

गर्मीका लक्षण तिल्ली का जलना और सूज और दस्तों का रंग लाल और काला होना और गर्मी के लक्षण पाये जाने ॥

और बंड का लक्षण यह है कि तिल्ली के स्थान पर गड़ बड़ होनी और भूख का घटना और दूसरे लक्षण उसड़ के पाये जावेंगे ॥

और खुशकी के लक्षण यह है कि तिल्ली पर काड़ा पन होगा और रुधिर गाढ़ा होगा और शरीर दुबला होगा ॥

तरीके लक्षण यह है कि तिल्ली में बोरु होगा और शरीर का रंग सीसे का सा होगा ॥

जो कोई सादा विगाड़ होतो मिजाज को ठीक करे और जो मवाद होतो उस मवाद को निकाले और फिर ठीक करे जैसा कि निगर के रोगों में लिखा गया है - और बांये हाथ से फास्ट वासलीक सोले - और जो गर्मी से विगाड़ होतो यह औषधेला मदायक है - वेद के पत्तों और कुशुस के पानी में सिक्जर्वीन १ मिळाकर दे - और जर्म करने के वास्ते काली छड़ पानी में भोंट के भषलवास के साथ पिळावे - और जो गर्मी अधिक होतो कुर्सका फूर इस कुलू कंद्रीपून मिळाकर दे - और जो उसड़ से विगाड़ होतो गजमूद का पानी और सिक्जर्वीन बुजुरी नदारे मुंह पिळावे - और सुली का पानी और तिरियाक भवी और गुळकंद - और कित्र की जड़ की छाल - सिक्जर्वीन वुनुरी के साथ

दे और जो खुशकी से विगाड़ होतो शर्वत वन फ़शा और सालजो
 न भादि तरी पहुंचाने वाली औषधें पिलावे या लगावे - और
 जो किसी मवाद से विगाड़ होतो पहिले फ़स्द और जुल्लावसे
 सौदाको निकालें - और जो तरी से विगाड़ होतो - गुलाबके फूल
 ल - विज्र की जड़ - बालकड़ - रेवद - धुलीहुई लाख - गोरजी
 श्व सब को पीसकर कुर्स बनाके दें - और सुरवाने वाली औष
 धोंकालेप करें - और नर्म करनेके लिये हुव्व अयारिज़ दें - और
 जो कई मवाद मिले हुये होतो उसका उपाय भी वैसाही करें - और
 रतिल्ली से ठंडा मवाद निकालनेके लिये विज्र की जड़की छि
 ल और इफ़ती सून दोनों बराबर कूट छान कर शहद में मिला
 के ७ सात माशे देना चाहिये - और जो ठंड और खुशकी दोनों हो
 तो उनका चर्णन भागे किया जायगा ॥

तीसरा पाठ ३

तिल्लीकी सूजनके विषयमें

जो सूजन गरम हो तप नित्य रहेगी - और जो कारण
 इसका रुधिर होतो तप चौथे दिना अधिक होगी - और जो पित्त
 होतो सब दिन बीच करके तप अधिक होगी - और चाकी और
 लक्षण रुधिर और पित्तोंकी अधिकताके पायेजावेंगे - और जो
 कफ़की सूजन हो उसको 'तहब्बुन तिलाह' कहते हैं - और जो
 सौदासे हो उसको 'नसावत्त' या 'सल्लोवत्त' कहते हैं - लक्षण तरी
 और खुशकीके दूसरे पाठमें लिखे गये हैं - मवादके अनुसार
 उसमवादको निकालें और ठीक करें - और जो गरम सूजन

होतो जो का भाटा- हरी मकोप- मूत्र के फलोंके पानी में पीसकर
 तिल्ली पर लेप करें- और कफ की सूजन में अंगूरकी लकड़ी की रा
 ख- रेगुन, गुलमें मिलाकर लेप करें- या ककरीकी मँगिनियां जल
 कर उसकी राख तीन हिस्से और किन्नकी लकड़ी की राख एक हि
 स्से सिरके में मिलाकर लगावे- और जो सौदासे होतो अशक
 सिरके में पकाकर या सुदावगौरपोदीना सिरके में पीसकर या
 गेहूंकी भूसी सिरके में ओटाके अशक मिलाकर तिल्लीपर लेप
 करें- और कहते हैं कि जो कोई प्याला राज की लकड़ी का बनाकर
 खाना पानी उसमें खिलाया पिलाया करें तो चालीस दिनमें ति
 ल्लीकी सूजन घुलजावेगी- और इंसान- सूखाजूफा- संभालूके
 बीज- बराबर लेकर कूट छान के शहद में मिलाके सात माशे खि
 लानाभी सूजन को घुला देता है और बंजीर और किन्नका भवार जो
 सिरका में बना हो अति लाभदायक है- और मरहमों से सूजन को
 नरम करके बायें हाथ से फ्रस्ट मासीलम खोलना लाभदेता है-

चौथा पाठ ४

तिल्ली की सूजनके पकलानेके विषयमें

लक्षण पीप पडने का यह है कि पीडा होती है- जैसे कोई
 वस्तु चुभती हो और सूत्रमें तल्लुट निकलती है और गुर्गीध जाती
 है और कभी ऐसा होता है कि यह सूजन अंदर को फुटती है- और
 उलटी और दस्तोंमें निकलती है- उपाय इसका वह है जो जिगर
 के फोड़े का है- परंतु सूत्र लाने वाली गोषधें मिजाज के अनुतारवे
 और जो पीप निकल जाने के पीछे भी कडापन रहे तो

और बचक करने वाली औषधों से बचें- और जब सूजन काड़ी होके पुरानी होजाय और कोई औषध लाभकारक नहो तो दागदें- इसकी रीति यह है कि चाम को तिल्लीकी जगह से मोचने से पकड़ के अलग उठालें- और लोहेके औजार से जिसकी दोनोंके होमली भांति गरम करके दागदें- और उसी दाग के इधर उधर दो दाग और दें कि तीन बार में छः दाग होजायें और जो वह औजार छः पहल का होतो और भी अच्छा है- उससे एकही बार में छः दाग होजावेंगे ॥

पांचवां पाठ ५

तिल्लीकी कामजोरीके विषयमें

१५६/१५६

जो तिल्लीकी खेंचने वाली शक्ति में कामजोरी होतो लक्षण वसका यह है कि भ्रूख विलकुल जाती रहैगी- और सौदाके रोग उत्पन्न होंगे- और जो उसकी मांसका शक्ति में कामजोरी होतो सौदाकी उलटी और दस्त होंगे- और जो उसके पचाव में कामजोरी होगीनी भ्रूख बहुत होगी- या सौदाके दस्त होंगे- और जो दूर करने वाली शक्ति में होतो तिल्ली चढ़ जावेगी- और भ्रूख जाती रहैगी- तिल्लीके पुष्ट करने के लिये इफसुंतीन रुमी और चालछ और भाजका फल और कर्दमाना- और सरबंडे की जड़को कुत्लीकरें- और विज्रकी जड़ और गुलावके फल- गुगल सबको कूटकर गाज के पत्तोंके पानीसे या सुहाव के पानीसे निलाके सिरके के साथ तिल्लीपर लेप करें- और तिल्ली यां खुरखुरे कपड़े से लें- और उसपर खाली सींगी लगावें ॥

छठा पाठ ६

तिल्लीके सुदेके विषय में

इसमें तिल्ली में बंध होगा - और सूजन के लक्षण वि
लकुल न होंगे - जिगरके सुदेमें जो पुष्ट करने वाली औषधें लिखी
गई हैं वे - और सिंजोन चीन चुजूरी और कुर्स क्विज अति काम
दायक हैं ॥

सातवां पाठ ७

०८. ६२

तिल्लीकी उस सूजनके विषय में जो वायु से हो

यह तिल्लीके पचाव और दूर करने वाली शक्ति को क
मजोरी सेहोती है - इसमें तिल्ली को पुष्ट करें - और गेंहूं की मू
सी और बज्रस और नमक कूट कर सेके और नमक भर्मनी और
पोदीना और मुद्दाय सिरके और शब्द में पीसकर लेप करें - और
बारे लगावे - और सुफूफू तरातेजक खिलावे ॥

आठवां पाठ ८

तिल्लीमें पथरीपड़नेके विषयमें

इसमें रेत सूत्रमें आती है और तिल्लीमें चुभती है और इ
सके सिवाय और कोई रोग नहीं होता - इन्हींको सिरके में भिजे
कर खिलावे और उसीका लेप करें - और सूत्र लाने वाली ...

औषधें दें जो गुरदे और मसाने की पथरी को तोड़ती हैं ॥

सोलहवाँ अध्याय

१६

— ३०६ —

आंतों के रोगों के विषय में

पहिला पाठ १

(ता. २३-०१-२६)

जलकुल अमआ के विषय में

इस रोग में भोजन बिना पचे हुये दस्त होकर निकल जाता है- जो आंतों में फूसियां होती जलन और पीडा होगी- और पतला और पीला पानी निकलेगा- पित्तों का मुल्लाव दें- और फास्द खोले- और ठंडी औषधें पिलावे- और सुफूपनलकुल अमआ खिलवावे ॥

और जो

मना भीतर होगा- पीडा

और कमी आसा

ठंडी के नीचे ल

और

जलटी करावे- और

और चु

और कमी नीचे की

औषधें

और

सुस्वानेवाली औषधें दें ॥

और जो तरी से बिगाड़ होतो सुस्वानेवाली सुफूफ़ खिल
वें और रोगन गुल पेट पर मलें ॥

और जो पित्तों की अधिकता होतो पित्तों को निकालें
और पीली हंड दें ॥ *औषध २२२ गुल ३*

और जो कफ़ और पित्त दोनों होतो दोनों को निकालें
और पीली हंड सात माशे - हब्बुल भास - गाल प्रत्येक पौने सात माशे
सबको कूट छान कर उसमें इलाय पौने सात माशे मिलाके यह सुफू
फ़ सात माशे फंकावें ॥

और जो फ़ाल्जिज से यह रोग होतो उसीका उपाय
करें ॥

और जो जुल्लाव से यह रोग होतो चार तुम्ब भुन
कर रोगन गुलमें चिकनी करके फंकावें - और जो इलायों को मूठसे
इतना गौरावें कि वह जमजावे - तो उसका खिलाना अति लाभ
दायक है ॥

दूसरा पाठ २

आंतों से दस्तों में रुधिर आने के विषय में ॥

यह रोग दो प्रकार का है एक तो यह कि आंतें छिलजाने
दूसरे यह कि रुधिर की अधिकता से आंतों को रगका सुंड़ खुल
जावे ॥

किसी

पहिची प्रकार अर्थात् आंतों के छिलजाने के जो कारण
इसके पित्त होतो पित्तके दस्त आवेंगे और फिर दस्तों में छिलके निक
सेंगे - और फिर रुधिर छिलकों समेत और आंतें निकलेगी - और

गर्मी के लक्षण पाये जावेंगे- आदि में कच्चे अंगूरों का सत और अनर का सत और जो औषधें खट्टी और कड़क करने वाली हों खिलाने- और जब मवाद अधिक हो जावे तो उसे निवाले- और लुआव अस्पगोल और लुआव बीदाना- और लसदार औषधें जो घाव को बंद करे पिलावे- और कुलफ्रेका शीरा- गिले अरुनी के साथ पिलाना और सुफूफ मिक्कलियासा अतिलाभ दायक हैं- और जब तुरंत दस्तों को रोकना हो तो बीजों को मूत्र डालें और केवल वारतंगला भदायक है- और नव पीड़ा अधिक हो तो चार तुलसी का लुआव रोग नगुल में मिलाकर पिलावे ॥

और जो कफ से होतो पहिले कफ के दस्त आवेंगे- और बहुधा जुकाम नगुले के पीछे ऐसा होता है- पहिले कारण को रोके और वह औषधें जो घाव पर चुपके- जैसे रैहा के बीज और चारतंग और जंगली तुलसी आदि- और काली इड़ बीसे थिकना के मूत्र कार और बूटछानकर तीन माशेले- और उसके बराबर सफेद कंद मिलाके खिलाने ॥

और जो यह रोग सौदा से होतो हर समय मरोड रहे और दस्तों में सौदा और साधर और छिलके निकालेंगे- इसमें पहिले कारण को दूर करे- फिर तिब्ली को पुष्ट करे और मवाद को न बनाने वाले बीज और सुफूफ तीन खिलाने ॥

और जो तिब्ली के कड़ेपन और मवाद की खुशकी से होतो पहिले कड़क होगा- और वैसी ही वस्तु खाई होगी- और मवाद भी कड़ा निकलेगा- इसमें तर और नरम करने वाली औषधों को दें जैसे बीदाने- अस्पगोल का लुआव- और शर्वत वनफुशा और रोग नवादा म आदि- और जब आंतां से मवाद निकल जावे और मरोड है तो कड़क करने वाली औषधें जो उचित हों दें- परंतु नव

तक मवादको न निकाल लें- और आंतों से सूखामवाद न निकाल लें
के कमी बचन करनेवाली औषधें न दें ॥

और जो बिषली वस्तु खाने से मरोड़ हो जैसे हरताल और
नौसादर और चूना आदि- उसमें उलटी करावें और ताजा दूध और
हरीरे पिलावें ॥

और जो जुल्हाव पीने से मरोड़ हो तो ठंडी औषधें दें और
सुष्ण फ़तीन और वीज खिलवावे- और भठे में लोहा बुझाकर अकेला
पिलावे या चांबल के साथ खिलवावे ॥

जब आंतों की रग खुल जाने से रुधिर के दस्त आवें तो
लक्षण उसका यह है कि मरोड़ और ववासीर और जिगर के दस्तों
के लक्षण न होंगे और पीडा भी न होगी- परंतु पेट में पीडा भ
व्य होती है- जो रुधिर अधिक निकल जाय और रंगी में जोर रहें तो
फ़स्द बासलीक खोलें- फिर बंद करने के लिये कुर्सी कह रुवा और
ऐसी ही औषधें दें- और गिले अरमनी पीने दो माशे- शर्वत हव्वु
ल आस या शर्वत अंजवार के साथ देना अतिलाभ दाय कहें और अ
नार के छिलके और राज और गिले अरमनी बराबर लेके बूट छ
नकार गोलियां बनावें- उसमें से सात माशे खाना अतिलाभ दाय
कहें- और पेट पर वारे लगाना भी अच्छा है ॥

जब तवाही सके इस रोग में अफ़ीम के प्रकार की औष
धें न खिलवावे- और जो अवश्य क़ता हो तो शाफ़े में दें या उनके सा
थ उनकी टीका करने वाली औषधें खिलावे ॥

तीसरा पाठ ३

आंतोंसे पीप आनेके विषयमें

कारण इसका या ती मरोड़ से घाव पड़ जाना है- या पक्कर सूजन का फूटना- इसमें पहिले पेचिश होगी या सूजन होगी ॥

पहिले उन औषधों से हुकना करें जो घावको साफ करें और फिर उनसे जो घावको भरलावे- हुकना करें ॥

साफ करनेवाली औषधें यह हैं- अनारके छिलके- मिसाक- आस- चावल- जौ- सबको कुचलके पानी में भोटावे- और मलकर थोड़ा सा विना बुझा चूना मिला कर हुकना करें ॥

और भरलानेवाली औषधें यह हैं- वचूलका गोंद- गिले अरसनी- दूग्मूल अखवैन- वरगंदके रेणुकारस- जलाहुआ कागज सबको पीसकर हरे वारतंगके पानी में और कच्चे शहतूतके रसमें मिलाके हुकना करें ॥

जब मरोड़से पीप आवेतौ पहिले कारणको दूर करें- और फिर घावके भरनेका उपाय करें ॥

चौथा पाठ ४

कृथके रदस्त आनेके विषयमें

इसमें आंव निकलती है और कभी उसके साथ रुधिर भी होता है- यह सूखिमवादके आंतों में फंस रहने से होता है और . . . में आंव निकलती है इसको नहीर . . .

उपरोक्त यह है कि अस्पगोल आदिके पिलाने से आंव नहीं आती- इसमें मवाद की चर्म कोरें और वैसाही हुकना काम में लावे और कभी केवल गरम पानी लाभ देता है और इसमें काकज करने वाली औषधें कभी न दें - कि उससे मरने का डर है ॥

और जो कफ़ या पित्त या सौदा से हो गई हो तो उपाय उसका मरोड में लिखवा गया है ॥

इस रोग में हुकना और शाफ़ा अति लाभदायक है ॥

और जो नीचे की आंत में गरम सूजन होने से यह रोग होतो उस स्थान पर चोभा होगा- और कभी तप और सूत्र कठिनता से होगा- इसमें फ़ास्ट स्त्रोले और कमर के नीचे पछने लगावे - और भोजन थोड़ा दे और ठंडी औषधें जो रुधिर की गरमी दूर करें पिलावे - और जब मवाद का गिरना रुक जावे तो - खैरू - मेथी - बनफ़शा - बावूना - करम कल्ले के पत्ते - गौय के पेटको और पैरवाने की जगह को धारें - और जो ठुल्टी हो सकती हो तो बहुत अच्छा है ॥

और जो पैरवाने की जगह अधिक ठण्ड पहुंचने से यह रोग होतो - सेकें और गरम पानी से धारें - और कूटका तेल आदि गरम कस्के मलें - और ईंट गरम करके उस पर बैठें - और सात मासे हल्लो भून के नहामुं हपांके ॥

जो सवारी या किसी कड़ी वस्तु पर बैठने से होतो मो मरोशन मलें ॥

खाली पेटमें खटाई स्थाने से भी ऐसा रोग होजाता

हैं उसमें मिश्रीका शर्वत पिलावें ॥

पांचवां पाठ ५ सरोड के विषय में

इसका उपाय कारण के अनुसार करें जो ऊपर लिखा गया है - और कूलंज में और कैंचुये पडने के रोग में लिखा जायगा ॥

और जो जुल्लाव के पीने के पीछे यह रोग होती थोडा थोडा गरम पानी पिलावें - और रोगन गुल मलें ॥

छठा पाठ ६ आंतों के फूलने और बोलने के विषय में

यह रोग वायु उत्पन्न करने वाली वस्तुओं के खाने से या बुरा भोजन खाने से होता है - इसमें अच्छा भोजन खावें - और गुल कंद और गुल्लाव पीवें और जो कारण कम जोर हो और उससे आंत को ठंड पहुंचे तो आंतें बोलेंगी - इसमें भोजन थोडा खावें और माजून फूलाफली और कसूनी खावें - और जो इसके साथ दस्त भी आते हों तो ज्वारिश खावें अतिलाभदायक है ॥

सातवां पाठ ७

कूलंज के विषयमें

यह पीडा है जो कूलंज नाम एक आंत में होती है - और इसके साथ बिलकुल कब्ज हो जाता है - और जो कुछ निकलता भी है तो बड़ी कठिनता से - कारण इसका गाढ़ काफ़ का आंतमें अटक रहना होता भोजन बुरा खाया होगा और कब्ज अधिक होगी - और खटा और नमकीन वस्तु भक्ष्य लगेगी पहिले शाफ़ और हुकनों से सवाद को नरम करे फिर जुल्लाव पिलावे - और वह जुल्लाव ऐसा हो कि मनली को दूर करे - और सेदे को पुष्ट करे - जैसे सफ़रजली और जवाम शहरियारा का जुल्लाव दे ॥

जुल्लाव देने से पहिले आवंजन, और सेक, और लेपन करे ॥

और कब्ज दूर हो जाने के पीछे एक सत दिन बिलकुल भोजन न दे - और चनों को गोटा कर उनका पानी गरम मसाला डाल दे - और पानी थोड़ा पिलावे - और जो पानी के बदले गुलाव या सौंफ़ का अरक या माउल अरक दे तो अच्छा है ॥

जो गादी वाय के कारण से पीडा होती तब लेसे चुभे में और पेट फूलने वाली वस्तु खाई होगी - और पेट बोलेंगा - और पीडा एक स्थान पर न रहें इसका उपाय भी वैसा ही करे और जुल्लाव देने से पहिले इसमें छेप आदि कर सकते हैं और सोये का तेल मले और कामूनी खिलावे - और वह उपाय

करें- जो मेदे के फूलने में लिखा गया है - उरद के आटे की रोटी रक्क और से पका के कचची और से गरम गरम पेट पर बांधना और चारे लगाना अति लाभदायक है ॥

पेट पर सोदाके गिरने से भी कुछ मनुष्यों को ऐसी पीडा होती है - चिन्ह उसका यह है कि अचानक पीडा हो- और पेट फूल जावे और रक्कीडकारें आवें - परंतु पीडा अधिक न हो इसमें सोदाका सवाद निकालें और फस्द असीलम खोले और तेलसले - और जो आंतोंकी सूजन के कारण से पीडा होतो सवादके अनुसार जुल्लावें - और फस्द खोले - और वह उपाय करें जो मेदे की सूजनमें लिखा गया है - टीली और कफकी सूजन बहुत कम होती है - और सोदा की सूजनमें उन औषधोंसे इकनाकरें जो वाय को तोड़ें - और उन में रोगन मिले ॥

और जो आंतके टल जाने से यह पीडा होतो कूदने उछलने से ऐसा हुआ होगा - इसमें पेट मलबावे इसीकोली गनाफ टलना कहते हैं ॥

और जो आंत अपनी जगह से उतर आवे और सवाद आंत में फंसा हुआ होतो उस सवाद को निकालें - और पित्त सलाने वाली औषधें - और ऐसा उपाय करें कि पित्त हरोग न हो ॥

और जो आंतोंके भीतर पित्त इकट्ठा होके तोकेवल सवाद ही निकाल लेने से लाभ होजायगा - ऐसा बहुत कम होता है क्योंकि पित्त पतले होते हैं और उनमें उत्पन्न भी कम होते हैं ॥

और जो मसाने और गुरदे और जिगर और तिल्ली
और रहम की सूजन से ही तो उनका उपाय करें ॥

एक प्रकार कूल्ज की बहुत चुरी है - उसको
एला कस कहते हैं - और उबकाई और उल्टी भी इसमें
होती है ॥ $\frac{1}{2}$ अम्ल $\frac{1}{2}$ अम्ल $\frac{1}{2}$ अम्ल $\frac{1}{2}$ अम्ल + ३ एला

और जब यह रोग बढ़ जाता है तो पैखाना मुंह
से निकलता है - इसका उपाय वही है जो ऊपर लिखा
गया है ॥

इस रोग के आदिमें फ्रास अति लाभदायक है - जब
आंतों में सूजन होया उसका डर हो ॥

हर प्रकार की कूल्ज में यह औषधें अति लाभदायक
हैं - हुदर कासास - मुवाये हुए केचुरे - मुनाहुगा विच्छू -
जलामाहुआ - वारइसिया - और यही औषधें मरोड़ के रोगको
एकदम से खोदेती है ॥

आठवां पाठ ८

बिना पीड़ा के कब्ज होने के वि

षयमें

इसमें कूल्ज का उपाय करें - और शर्वत बनफशा रोगान
बादस के साथ पिलावें ॥ $\frac{1}{2}$ अम्ल

नवां पाठ ९

घेर में केचुरा पडने के विषयमें

यह चार प्रकार के होते हैं - एक लंबे वालिश्त-²¹क-^क या गज भस्के उनको केंचुस कहते हैं ॥

दूसरे चौड़े जैसे कडूके बीज होते हैं उनको कडूदाने कहते हैं ॥

तीसरे गोल होते हैं ॥

चौथे पतले और छोटे इनको चिंचिने कहते हैं ॥

लक्षण इनका यह है कि दिनको होंट सूखे रहें - और रात को राल बहाकरे - और भेदे के मुंह पर कुरेद साल मडो और भूखके समय केंचुस जपर चटते हों और जपर हीकी आंतमें पडते हों और कडूदानोंसे और तीसरी प्रकार से भूख अधिक होजाती है - और जो कभी कभी दस्तों में भी निकला करते हैं - और - कूलून - और - अजर - नामवाओं में उत्पन्न होते हैं - और चिंचिने बचचों के बहुत पडते हैं और नीचेकी आंतों में होते हैं - उनमें पैराने की जगह खुजली होती है ॥

इन्हें मारके निकालें - इस प्रकार से कि तीन दिन बराबर ताजा दूध सीठा डालके पिलावें - और चौथे दिन दूधके साथ यह औषधें दें छिलाहुआ विरंग - कावलीस रेखस - तुरबुद - कामीला प्रत्येक १७ ॥ माशें - वाकला - मिश्री - कडुवा कूट प्रत्येक २४ ॥ माशें - शीह ३५ माशें - नसक ३ ॥ माशें कूट छान के १० ॥ माशें दें और पीने के समय नाक बन्द करलें - नहीतो कीड़ोंको इनकी वास पहुंच जावेगी ॥

गरम निजाज वालेको गरम औषध कभी नदेऊ

केलिये यह औषध है स्वहे अन्तारके पेड़की छाल और उ
सीकी जड़पानी में शीतलके और छानके पिलावे - इससेकी
डेसर जाते हैं - और दस्तोंके साथ निकल आते हैं - और जो
दवा पीना कुरा मालूम होतो हुकना या शाफू करे - और ये
भी न हो सकेतो सिमावा अकाकिया गिले सखेतूम शरावमें
पीसकर पेट पर लेप करे - या कडुये वादास और कमीला
और तुरमेंस और किज्र और करसू को सिरके में पीसकर
लेप करे ॥

और वचर्चों के लिये यह उपाय अतिलामदायक है
कि संहदी और सोम मिलाके बत्ती बनावे और उसका शाफू
करे फिर थोड़ी देर पीछे दियेसे देखके जो की डा बिनारे हो
उसे मोचने से पकड़के खेंचले - जैतून का कचचातेल भी स
व प्रकारके कीड़ोंको लामदायक है - चाहे गिल्लावे या पा
खानेकी जगह लगावे ॥

६५-१-५२-१-१६
अर ६५-१-५२-१-१६

सत्रहवां अध्याय

॥१७॥

३४

उन रोगोंके विषयमें जो पैखाने की जगह
होते हैं ॥

पहिला पार १

बवासीरके विषयमें

इसमें पैखाने के स्थान पर मससे फूल आते हैं- जो उनसे रुधिर और पीला पानी बहते तो उसे खूनी बवासीर कहते हैं और जो कुछ न बहे तो बौदी बवासीर कहलाती है इस रोगमें सौदाके मिलने से रुधिर गाढ़ा होजाता है या वह जलजाता है और कभी पित्तों के मिलने से भी होता है - रुधिर के गाढ़ा होनेके लक्षण यह है शरीर भारी होगा और पीडा और खैरक अधिक होगी - और पित्तों के मिलनेके चिन्ह यह है कि मससों में जलन और पीडा होगी - फसद खोले और जो न हो सके तो पछने लगावे और कक्कड़ को दूर करें और रुधिरको ठीक करें और जो वह अधिक निकलता होतो कुसुम का हारुवा खिळावे - और जब काला रुधिर निकलने लगे और कामजोरी का डर न होतो कभी बंदन करे क्योंकि इससे और रोग नहीं होने पाते और जो मससे फूले हों और पीडा हों परंतु उनमें रुधिर न बहता होतो खैरमी और सोये से सेके - और रोगान शफतालू मले - और मरहम सफेदे का अतिलेपन दायवा है - परंतु मससोंके काटने में डर है - जो काटे तो सब मससा रुद्धने दें और गूगल और सुर और बकायनके छिड़के और कांचली सांपकी और दुंडनी वैरानकी - चाहे सबको वहेसक २ को जलाकर धूनी लेना मससोंको सुखादेता है - और रगिरा देता है ॥

१
२०८ ५ न ३२

दूसरा पाठ २

बादी बवासीरके विषयमें

इस रोगमें गाढ़ी वायु आंतोंमें उत्पन्न होती है - वह कभी नीचेको उतरती है और कभी पीठकी ओर जाती है और कभी हाथ पावोंमें आजाती है - और कभी खून बहता है और कभी पेट बोलता है और कभी पीडाभी होती है - इसमें सोदाका मवाद निकालें और वायुकी तोड़ने वाली औषधें दें - और किरकी जड़की छाल सब हिस्से और सातर फारसी उससे आधी पीस कर सात माशे फंकावे और बदनका मलना और घोंडेकी सवारी और सहनत करना और फ्रासद चासक्रीक अति लाभ दायक है ॥

तीसरी पाठ ३

पैखाने के स्थान पर नासूर हो जाने के विषयमें

उससे पीलाफन बहा करता है और बड़ी कठिनाई से अच्छा होता है - इस रोगमें शियाफु गर्व पानीमें घिसके सवेरे और शामको दोतीन बूंदें इसकी चिंत लिराके रुपकाया करें - और जब तक दवा सूखन जाय वैसेही पड़े रहें - और जो नासूरमें बत्तीजा सके तो बत्ती उसी शियाफुकी गोषधों के गोद का पानी लगाके रक्खें - और सलाई में रुई लपेटके बत्तीकी जगह रक्खना उत्तम है ॥

और जब नासूर आंतके पार होजाता है तो अच्छा नहीं

होसकता ॥

चौथा पाठ ४

पैखाने की जगह सूजन होजाने के विषयमें

जो गरमी से होतो पीडा और जलन होगी - फंस्द खोलें और पछने लगावें और उलटी करावें - और जब सूजन पकने पर आवे तो तुरंत चीर दें क्योंकि देर में नासूर पडने का डर है - और जो सूजन ठण्ड और कफ की अधिकता से होतो सूजन नरम होगी और गरमी के लक्षण बिलकुल न होंगे उसमें उलटी करावें और यकाने वाली सरहस लगावें ॥

पांचवाँ पाठ ५

पैखाने की जगह फट जाने के विषय में

इसका उपाय वही है जो हीठों के फटने में लिखा गया और बहुत ठण्डे पानी से बचे - और खटी वस्तु न खावें - और कक्क न होने दें - इसके लिये सवेरे शर्बत बनफाशा और रोगान बादाम और लूआव चीदाना मिलाकर देते हैं - और नरम सोज्ज खिछाते हैं ॥

छठा पाठ ६

शिरज के ढीला हो जाने के विषयमें

शिरज एक पदु है जो दस्त और वाय को रोकाता है जब वह ढीला हो जाता है तो दस्त और वाय नहीं रुक सकती अचानक निकल जाती है - यह वात तरी और ठंड पहुंचने से होती है - इस रोग में उस मवाद को निकालें - जिससे पदु ढीला होगया हो और उस उपाय से मिजाज को ठीक करें - जो फाल्जि में लिखा गया हो - और जो सूजन हो तो उसका उपाय करें - और जो चोट लगाने या बवासीर के मस्से काटने से यह रोग हो तो उपाय उसका कठिन है ॥

सातवां पाठ ७

काँच निकलने के विषयमें

जो कारण इसका सूजन हो तो उसका उपाय करें - खतमी और वनफशा ओटा के रोसी को उसमें बिठलावें - और मोम रोगन सलें तो वह अन्दर बैठ जाती है - और जो तरी से पदु ढीला हो जाय तो उससे यह रोग हो तो जरा से काँचने में निकल आया करेंगी - और सहजसे अंदर को चली जावेगी - उपाय उसका यह है कि रोगान गुल्ल सलके अक्षर सफेदा - गुल्लनार - माजू - फिटकारी - सुरमा - अजार के छिलके - पीस अर्धदान के छिड़के और गद्दी रखकर कस दें ॥

आठवां पाठ ८

पैरवाने की जगह गहरा घाव हो जाने के विषय में

इसमें काला ससहस्र लगावे और सुखाने वाली ओषधें
छिड़के - और जो पीडा की अधिकता होतो अफीम सले और व
ही उपाय करें जो और घावों का है ॥

नवां पाठ ९

पैरवाने की जगह खुजली होने के विषय में

जो कीड़े उत्पन्न होने से खुजली होतो लक्षण और
उपाय उसका लिख चुके हैं - और जो कोई मवाद होतो उसी
के अनुसार उसे निकालें - और हर मवाद में बुईडी पर पकने
लगाना और सिरका और रोगान गुळ सलना अति लाभदा
यक है ॥

अठारहवां अध्याय

गुरदों के रोगों के विषय में

पहिला पाठ १

गुरदेके विगाडके विषय में ॥५॥

लक्षण गरमी और उरुद्ध और मवाद के बीसेही पायेजा
यों जैसे कि जिगरके विगाडमें लिखेगये हैं- और उपाय भी
उसी प्रकार का करें- और जब गरमी से विगाड होतो काफूर
मलना लाभदायक है- परंतु अधिक न मले कि इससे पथ
रोपडजाने का डर है- और विषयकी चाहनाभी घटजाती है

दूसरा पाठ २

गुरदे के दुबलाहजानेके विषयमें

लक्षण इस रोगका यह है कि सूत्र अधिक और सफे
द आवेगा- और शरीर दुबला होगा और विषयकी चाहना
भी कम होगी- और पीठ और सिरमें पीछेकी ओर हलकी पी
डावरावर रहेगी- जिस कारण सेहो उस कारण को दूर करें-
और फिर गुरदेको मोटा करनेके लिये- पिस्ते- वादान- बुदे
क. नारियल- शक्करके साथ और दवाउत तुरजवीन- और
विषयकी चाहना उत्पन्न करने वाली औषध खिलावे ॥

तीसरा पाठ ३

गुरदेकी कामजोरीके विषय में

लक्षण इसका यह है कि रेटा और सूआ होनेसे और काबट बढ़ाने के समय कामरमें पीडा होगी- और विषयकी चाहना और सूत्र घटजायगा- और सांसके धोक्न कासा सूत्र आवेगा- जो चौई सादा विगाड होती उसी के अनुसार उसे ठीक करें ॥

और जो गुरदे के दुबला होने से ऐसा रोगहोतो उसका उपाय करें ॥

और जो गुरदेके खाल दीला होजाने से- और उसके रास्तोंके खुलजाने से यह रोग होतो कारण उसका विषय की अधिकता या चोट लगना या सूत्र लानेवाली औषधोंकी अधिका पीना होगा- इसमें कारण को दूर करें- और जो औषधें जिगरको पुष्ट करती हैं वह गुरदेकोभी पुष्ट करती हैं- और साजून लंबूब और विषय की चाहना उत्पन्न करनेवाली औषधें अति लाभदायक हैं ॥

चौथापार ४

गुरदे में वायकी पीडा होनेके विषयमें

इस रोगमें कामरके आसपास पीडा और खिचाक्हे गा और वास्तु नहोगा- और पथरीके लक्षण भी न पाये जावेगे- और मुखके समय पीडा घट जाया करेगी- इसमें जीरा- सोया- सुहावके बीज- वावूना सबको पीसकर गुरदेके स्थान

पर लेप करें- और शर्वत कुचूर पिल्लवेँ और वाय की तोड़ने वाली औषधें स्वाना और शरीर को मलना और पचाव को ठीक करना अति लाभदायक है ॥

पांचवाँ पार ५

गुरदे की पीड़ा के विषय में

इसका कारण गुरदे की वाय या कमजोरी या सूजन या पथरी या धाव होगा - उस कारण को दूर करें - और वावूना और सोया और स्वतसी और कर्मव के पत्ते और दाके बाब जन कारना हर प्रकार की पीड़ा को लाभदायक है ॥

छठा पार ६

गुरदे की सूजन के विषय में

लक्षण और उपाय उसका सवाद के अनुसार वह है जो जिगर की सूजन में लिखा गया - परन्तु कमर में पीड़ा होगी - जो दाहिने गुरदे में सूजन होती कुछ ऊपर की जिगर के पास पीड़ा होगी - और जो वायें गुरदे में होती नीचे की मसाले के पास पीड़ा होगी - यह इस लिये है कि दाहिना गुरदा वायें गुरदे से कुछ ऊंचा है ॥

और जो पीड़ा अधिक होती परदे के पास गरम सवाद से होगी ॥

और जो सूजन गुरदे के रस्तों में होती सूत्र रोगों-
और जो आंतों के पास होती पीडा भीतर की ओर होगी-और
अचम्भा नहीं कि कुलंज का रोग भी उत्पन्न हो जावे-और
जब गुरदे की सूजन पुरानी हो जावे तो फ्रस्ट माविज लाभ
दायक होगी ॥

सातवां पाठ ७

गुरदे के घाव के विषय में

लक्षण उसका यह है कि सूत्र में पीप और सधिराओं
रछिलके निकलेंगे-और गुरदे के स्थान पर पीडा होगी इस
में मवाद को ठीक करें-और जिस ओरके गुरदे में घाव हो
सी ओर फ्रस्ट वासलीक खोलें-और पुष्ट जुलाव कमीन
परंतु हलका जुल्लाव दे सकते हैं-इसके पीछे रासी और म
डके अनुसार सूत्र लाने वाली औषधें पिलावें-और फिर या
व भरने वाली औषधें दें-जैसे गिले गरमनी-दुस्सुल अल
वैन-जलाहूआ कागज-कुदर आदि और कुर्स को वानज
और वनाइ कुल कुसूर खिलाना लाभदायक है ॥

आठवां पाठ ८

गुरदे में खुजली होने के विषय में

सात दिन में दोवार मवाद को निकालें-और उलटी
करें-और शर्वत चनफशा पिलावें-और शियाफा विषय

को रोगान् वा दाम्भे घिसके सूत्रके छिद्रमें रपकावे- और वन
दकाल कुचूर खिळावे ॥

नवां पाठ ८

जिया वितुसके विषयमें

यह वह रोग है कि पानी जैसा पीवे जैसा ही तुरंत
सूत्रमें निकल आवे- इसका उपाय गर्मी और ठसड देसव
के कारना चाहिये- गरममें कुर्सका फूर और खुसी तवाशोर और
रकुर्स जिया वितुस दे- और ठसडमें मसरोदी तूस और माजून
मासिकुल बोल खिळावे ॥

दसवां पाठ ९०

गुरदेमें पथरी पड़ने और सूत्रमें रत आनेके

॥ विषयमें ॥

इस रोगकी वारिया होती है- कसी स्क महीनेके पीछे
कभी वर्ष दिनमें और कभी कमबूट में जोर करता है ॥
इसका लक्षण यह है कि दुइडीकी जगह खिचाव और
रजोरहागा और सूत्र पीला और लाल आवेगा- और कभी २
उसमें पथरीभी निकलेगी- और जब भाते भरेगी तो पीडा अ
धिक होगी ॥

और जो सूजन गुरदे के रस्तों में होती सूत्र रुकेगा-
और जो आंतों के पास होती पीडा भीतर की ओर होगी-और
अचम्भा नहीं कि कुलंज का रोग भी उत्पन्न हो जावे-और
जब गुरदे की सूजन पुरानी हो जावे तो फ्रस्ट भाविज्ञ लाभ
दायक होगी ॥

सातवां पाठ ७

गुरदे के घाव के विषय में

लक्षण उसका यह है कि सूत्र में पीप और रुधिर और
रक्तिलके निकलेंगे-और गुरदे के स्थान पर पीडा होगी-इस
में मवाद को ठीक करें-और जिस ओरके गुरदे में घाव हो उ-
सी ओर फ्रस्ट वासलीक खोलें-और पुष्ट जुलाव का भी न-
परंतु हलका जुलाव दे सकते हैं-इसके पीछे रासी और म-
डके अनुसार सूत्र लाने वाली औषधें पिलावे-और फिस्स-
ज सरने वाली औषधें दें-जैसे गिले अरमनी-इससुल अस्व-
चैन-जलाइआ कागज-कुदर आदि और कुसकोकनज
और वनाद कुल चुचूर खिलाना लाभदायक है ॥

आठवां पाठ ८

गुरदे में खुजली होने के विषय में

सात दिन में दोवार मवाद को निवाले-और उल्टी
करें-और शर्वत वनफशा पिलावे-और नियाफा विषय

को रोगान् वादस्ये धिसके सूत्रके छिद्रमें टपकावे- और वना
दकुल बुझ खिलावे ॥

नवांपार २

जिया वितुसके विषयमें

यह वह रोग है कि पानी जैसा पीवे जैसा ही तुरंत
सूत्रमें निकल आवे- इसका उपाय गर्मी और ठण्ड देख
के कारना चाहिये- गरम में बुर्सका फूर और कुसीतवाश और
रकुर्सु जिया वितुस दें- और ठण्ड में मसरोदीतूस और माझून
सासिकुल बोल खिलावे ॥

दसवांपार १०

गुरदेमें पथरी पड़ने और सूत्रमें रेत आनेके
॥ विषयमें ॥

इस रोगकी चारिया होती है- कभी सूत्र सहीनेके पीछे
कभी वर्ष दिनमें और कभी कमबूट में जोर करता है ॥
इसका लक्षण यह है कि दुइडीकी जगह
रबोरुहोगा और सूत्र पीला और लाल आवेगा और कभी र
उसमें पथरीभी निकलेगी- और जब भाते भरेगी तो
धिक होगी ॥

दूसरा पार २

ससाले के घावके विषयमें

चिन्ह उसका यह है कि सूत्रमें छिद्रके और गौरजलन होगी और रुकके आवेगा - उपाय इसका वही है जो गुरदेके घावका है - और जब पीडा अधिक होती अविद्यज्ञ स्त्रीके दूधमें घोलके सूत्रके छिद्रमें टपकावे - और जब पीप अधिक आती होती केवल साजल अस्लरूप कावे वह घावके साफ करने में अति लाभदायक है - और ससालेके रोगोंमें सूत्रके छिद्रसे दवाका पहुंचाना तुरंत लाभदायक है - और स्त्रियोंको पिचकारी से दवा पहुंचा सकते हैं ॥

तीसरा पार ३

ससालेकी खुजलीके विषयमें

पेड़में खुजली और जलन और पीडा होगी - और सूत्रमें दुर्गन्धि होगी - और कभी कभी वसके साथ रुधिर भी निकालेगा - इसमें सवादको निकालें और टीककरें - और लुआव दाना और स्त्रीका दूध और रोगनका दान सूत्रके छिद्रमें टपकावे - और इन्ही गोषधोंसे हुकना करे - और भोजनकी आशना और दूध और चावल खाना लाभदायक है ॥

चौथा पार ४

मसाने में रुधिर जमजानेके विषयमें

यह रोग सूत्रमें रुधिर निकलने से या मसाने में चोर प
 डनेसे और किसी रोग के फटजाने या मुंह खुलजाने से उत्प
 इस रोग में हाथ पांव उमड़े होंगे- और कभीजाड़ा
 गा और सूज्हा होगी- अकली सिक्जवीन अनैसिली
 तमें थोड़ी अंगूरकी लकड़ी की राख सिलाके पानीमें घो
 लकर पिलावे और खरगोशका पनीर अंगूरकी लकड़ी की राख
 के पानीके साथ खिलावे- और पेड़की उसपानी से धारें और
 सूत्रके छिद्रमें टपकावे- और इस उपाय से जमाहुआ रुधिर
 न पिघले तो वह औषधें जो पथरी को तोड़े और सूत्र लानेवा
 ली औषधें और पुराने चनोंको सुहावके पानीमें औराके पिला
 वे- और जबकोई औषध लाभदायक नहोतो जमेहुस रुधिर
 को चीस्कर निकाले- और भोजनकी जगह पुराने चनोंको गो
 राकर इसका पानी दारचीनीदारके पिलावे ॥

पांचवां पार ५

मसानेकी पीडाके विषयमें

यह सूजनके कारणहोगा- या घ्रावके या खुजलीके
 या पथरी फड़नेके या मसाने में बाय उत्पन्न होने से इन्सव

का उपाय लिख चुके हैं - एक प्रकार इस पीडाकी यह जो सराने के बिगाड से होती है - जो यह गरमी सहीगी और सूत्रमें जलन होगी - और पहिले इससे स्तुरबाई होगी - इसमें ठण्डाई पिलावे और ठंडी वनाद कुल चुचूर सूत्र सफेद आवेगा - और इससे पहिले ठंडा लाये होंगे जैसे कपूर आदि - और ठंडा हुआ लगाने डाहो जाती है गरम भोजन और औषधें देनी से पेडूको धारें ॥

और दूसरी प्रकार इस पीडाकी वह है कि नके दिन सवाद मसाने में आवे और सूत्र जोर से और उससे यह पीडाही इसमें अधिक सूत्र पाय करें ॥

छायापार ६

मसानेके रलजानेके विषयमें

पीठपर चोट लगने से ऐसा होता है पधोंका लेप पेडू पर करें - और जो चोट पडने से पड़ा गया होतो सूत्र रुक रहता है - अचानक सूत्र जाने लगता है - इन दोनों में फस्द खोलें - और कभी इसरोगके साथ और रोगभी होता है - ले उतरोगका उपाय करें और फिर इसका ॥

सातवां पार ७

मसानेके फूलनेके विषयमें

मसाने में वाय भरजाती है - और पेड़पर खिचाव रह
 सा है - और वाय एक स्थान पर नहीं रहती और न बोक हो
 सा है - और जो बोक और खिचाव एक स्थान पर रहै तो जा
 नां कि वायके साथ तरीभी है - इस रोगमें कुछ दिनों तक मा
 उल उसूल गरम पिलावे या उसमें थोडा रोगन वेद इंजीर
 मिलाकर पीवे - और रोगन गरम जो वाय को तोड़े मले - और
 सूत्रके छिद्रमें टपकावे - और रोगन के सर का खिचावे - औ
 र कड़े और जव सूत्र निकलने में कठिनता होतो खर्वूनेके
 सूत्रके छिद्रके कुचलके कंद के साथदे - और आवजन
 में खिचावे - और जब इसके साथ तरीभी होतो चारवार उल्टी
 कसवे - और तिरियाक और मसरदीतूस और इंजीर खिचावे

आठवां पार ८

मसानेमें पथरीफडनेके विषयमें

लक्षण उसका यह है कि लिंग कीजडमें खुजली होगी
 और थोड़ी रवेर पीछे सूत्र आवेगा और विषयकी चाहना प
 हलेतो सकवार अधिक होगी - और फिर तुरंतही जमी छै
 ती - इस रोगमें सूत्रका रुकके गाना - या बिलकुल न गाना
 और मसानेमें पीडा होना कुछ नहीं होता - परन्तु मिसर

समय पथरी मसाने के सुह पर आनकर अड़जाता है-
तो सेना होता है और इस पथरी का उत्पन्न होना
रसे जान सकते हैं कि गुरदे की जगह और १।
पीड़ा हो ॥

वह उपाय करें जो गुरदे की पथरी में
है और अधिक पुष्ट औषध दें- और विच्छे
कातेल आदि पेड़ पर मले और सूत्र के छिद्र में टपकावे-
और जो अवश्य होतो चीरकर निकालें- और जो रोगीकी अ
वस्था सतरह या १९ वर्ष से कम होतो कभी संसाधन करें- कि
मरने का डर है- और जब पथरी सूत्र के रास्ते में आकर फा
रहे और सूत्र रुक जावे और उससे पीड़ा होतो रोगीको चि
लिटावे और दानों पांच डटाके गरम पानी से पेड़को धा
और नीचे से ऊपर तक मले- इससे पथरी नहासे हटके मसा
के अंदर चली जावेगी- और सूत्रका रास्ता खुल जावेगा और
जसल यह हृद अस्तील पथरीको तोड़ने में लाभदायक है ॥

चौथा पार ५

सूत्र में जलन होनेके विषयमें

यह गुरदे या मसाने की खुजली या इनही स्थानों
के घाव की पीप से होता है- खुजली और घावका उपाय
रें- और जो लिंगके भीतर घाव होतो उपाय उसका
गे लिखा जायगा- और जो जिगरकी गरमी और पित्तकी
अधिकता से होता उनके लक्षण पाये जावेगे- इसमें वह

औषधें दें- जो जिगर के विगाह में लिख चुके हैं- और जो मवादकी अधिकता के कारण उनसे लाभ न होता मवादको निकालें- और श्याफ़ अवियज्ञ स्त्रीके दूधमें घोलकर रोगान गुल और रोगान वादाम मिलाके सूत्रके छिद्र में टपकावे- और लिंगको अस्फिगोलके लुआवमें रक्के ॥

लिंगके छिद्रमें एकतरी चिमरी है उसके छिद्रजानेसे भी यह रोग होता है- लक्षण उसका यह है कि उससे पहिले गस्म औषधें सूत्रलाने वाली खाई होगी- और विषयकी अधिकता होगी- इसमें पहिले कारणको दूर करें- श्याफ़ अवियज्ञ की स्त्रीके दूधमें घोलकर सूत्रके छिद्रमें टपकावे- और लुआवों और बीजोंको चाहे पीवे चाहे टपकावे ॥

इसका पार १०

सूत्र बंद हो जाने के विषय में

जो यह रोग गुरदे या मसाने की सूजन से या उनमें पथरी पडने से या मसानेमें रुधिरके जमने या पीप अटकने से या वायुके फैलने से होता उसका उपाय ऊपर लिख चुके हैं ॥

और जो सूत्रके स्थानपर मांस वृत्त्यन्त होनेसे यह रोग गहोते और किसी रोग के लक्षण नहीं होंगे- और इसका उपचार नहीं हो सकता- परंतु थोड़ा सा लाभ होनेके लिये- डीला और नरम करने वाली औषधोंका भावजन करें- कि बिलकुल रुक वन रहे ॥

मसाले की रार्दन पर एक यह है जो सूत्र को नि-
 चोडता है - उसके दीला होने से भी यह रोग होजाता है -
 लक्षण उसका यह है कि मसाले के दवाने से सूत्र खुलके
 कलता है - इसमें गरमी पहुंचावे चाहे पीने की
 से या लगाने की से और वह तेल मले जो फ्रांजि में
 गये हैं ॥

और जो मसाले और लिंग में लेसदार मवाद
 है और उससे सूत्र रुके तो पेड़ बोझल होगा - और
 लगाटा करने वाली वस्तु खाई जागी - और किसी दूसरे रोगके
 लक्षण नहोंगे - इसमें पुष्ट औषधें सूत्र लाने
 और आवजन करे और रिवसक और विच्छूका तेल उसी
 में टपकावे ॥

और जो मसाले की दूर करने वाली शक्ति के जाते
 रहने से यह रोग होता उससे पहिले रोगीने देर तक सूत्र
 को रोका होगा - इसमें आवजन करे - और पेड़को हाथ से
 दबावे - और रोगान विलसान और रोगान वस्तु पेड़ पर म
 ले - और जो इससे लाभ नहो तो एक पोली सलाई चांदी
 शोणे या रांगे की लेकर छिद्र में डाले - गीति ३
 कि थोडासा फूसडा रेशम काले कर तागे में बांधे - और
 सिरा उस धागे का उस सलाई में डालकर निवाले - और
 जिस ओर वह फूसडा हो उसी ओर से सलाई उस छिद्र में
 डाले - जब वह सलाई मसाले के सूत्र तक पहुंच जावे तो
 गे को जोर से खींच लें तो सूत्र का रास्ता विल कुल खुल
 जावेगा ॥

और जो सूत्र के रास्ते में घाव या फुंसी होने से सूत्र रुके तो उनके लक्षण पाये जावेंगे - इसका उपाय सोजना काम देसना चाहिये ॥

और जब पीठ या पेट पर चोट लगने से यह रोग हो तो देसना चाहिये कि सूजन है या मसाना टीला और खिंचाव है - जो सूजन होतो उसका उपाय करें - और जो खिंचाव आदि होतो फस्द वासलीक खोलें - और रोगन सुल मछें ॥

और जो सूत्र के रास्ते में खुशकी और कब्ज होतो गरमी के लक्षण पाये जावेंगे - और तर औषधों से लाभ होगा - और मसाने से थोडासा सूत्र निकल सकेगा - और जब बहुत साइका हो जायगा तो भली भांति निकला करेगा - इसमें तरी और ठंड पहुंचावे ॥

और जो पेटो और वधनों पर कफ के गिरने से मसाने और सूत्र के रास्ते में खिंचाव हो जावे तो लक्षण उसका यह है कि सूत्र थोडा सा उखल कर निकल पडता है - और रेले से नहीं आता - इसमें खिंचाव का उपाय करें - जैसा हम लिख चुके हैं ॥

और जो पेट पर प्रेल्डे चर जाने से सूत्र रुके तो उनके उपायने का उपाय करें ॥

और जो सूत्र की सर सराहर नजान पडने से यह रोग होतो के सर और बिलसान का तेल छिद्र में टपकावें - और पोकीने और सोये आदि का लेप करें - और साउल वसूल और रोगन वेद इत्रौर पिलावें - और तिरियाक का चीर खिलावे ॥

और जो तरी से यह रोग होतो सब से पहिले उलटी करवे ॥

और जो मसाने के टलजाने से होतो उसका उपाय लिख चुके हैं ॥

और जो मसाने के आस पास किसी और स्थान में सूजन बिगाड़ होतो उस स्थान का उपाय करे ॥

और जो मसाने के बराबर गुरियों के अतने से मूत्र रुके ती उन्गुरियों को अपने स्थान पर बिटावे जैसा कि चारहवें पाठ में लिखा जायगा ॥

ग्यारहवां पाठ ११

मूत्र खुलके न होने के विषय में

इस रोग में मूत्र रुक रुक बूद करके आता है - इसके लक्षण और उपाय दसवें पाठ के अनुसार हैं ॥

चारहवां पाठ १२

अचानक मूत्र निकला करने के विषय में ॥

मसाने के टीला होने या उस में कोई गरम बिगाड़ होने पर उस की आस पास की सूजन से या मसाने के टलजाने से यह रोग होतो उसका उपाय दसवें पाठ में लिख चुके हैं ॥

और जो शराव या स्वरबूजों आदि के खाने से होते उसकारण को दूर करें- और जो मसाने के बराबर की गुरियों के टलजाने से होते देखें कि वह भीतर को घस गई हैं या बाहर उभर आई हैं- जो भीतर घस गईं हों तो खाली सीमियां उसजगह पर रखकर चूंसे या जिपित्त का लेप करें और जो बाहर उभरी हों तो हाथ से मलें- और जो मसाने के बंधन टूट गये हों तो उनका उपाय नहीं हो सकता ॥

तेरहवां पाठ १३

सोते में मूत्र निकलजाने के विषय में

यह रोग लडकों को बहुत होता है- इसमें गरमी पड़ जावे और इसवे पाठ में जो उपाय मसाने के पट्टे की सुस्ती दूर करने का है- वही करें- और रातको कई बार उठके पेशाब करा लें- और रातको खाने पीने न दें- और कुन्दर का जीरा हबबुल आस प्रत्येक साठे चाई स २२ ॥ माशे पीस कर १०० माशे शहद में मिला रखें- और सोने के समय सात माशे खिला दिया करें ॥

चौदहवां पाठ १४

मूत्र में रुधिर निकलने के विषय में

जो गुरवे की रग फट गई हो या खुल गई हो तो चिन्ह

12/11/11

रुधिर साफ़ निवा तलछट के निकलेगा
 पीप विलकुल न होगी जो थोड़ा थोड़ा आता होतो रग का
 हल खुल गया होगा - और जब बहुत सा भावे तो जानो रा
 फट गई है - फ्रस्ट वासलीक या साफिन स्कोले - और बुस
 कह रुवा और कुर्स वौलुद्म रिवलावे और पेडु पर और पैस
 ने की जगह पछने लगावे - और जब रुधिर में तेजी होतो रंग
 पानी से पेडु को धारे और रंडी औषधों का लेप करें और ध्या
 न रखवे कि रुधिर मसले में न जमने पावे - और शर्कत उ
 न्नाव धनिये के चुकू में देना रुधिरको बन्द करता है और रा
 भीको बुझाता है ॥

और जब जिगर या गुरदे की कामजोरी से होतो रुधिर
 से सूत्र अलग न हो सकेगा - इसलिये उसके साथ नि
 कलेगा - लक्षण उसका यह है कि सूत्र सांसके धोवनक
 साहोगा ॥

जब गुरदा कामजोर होगा तो सूत्र सफेद और गा
 होगा ॥

और जब जिगर कामजोर होगा तो सूत्र लाल और प
 तलाहोगा ॥

इसमें जिगर और गुरदे को पुष्ट करें ॥

और जो सूत्रकी रगो में घाव होतो पीप आदि से जा
 न पड़ेगा - इसका उपाय लिख चुके है और कुर्स का कामज
 लाभदायक है ॥

2
 1/11/11

बीसवाँ अध्याय

॥२०॥

उत्तरोरोगोंके विषयमें जोकेवल पुरुषों
कोहोते हैं॥

पहिला पाठ १

विषयकी चाहना घटजानेके विषयमें

विषयकी चाहना शरीरके बड़े बड़े स्थानोंके चंगा होनेसे पूरी होती है और विषयकी चाहना जो प्रकारसे घट जाती है ॥

एकतो यह है वह आपही चरजावे-दूसरे लिंगके डीला होजानेसे इन दोनों प्रकारोंका वर्णन अल्पा अल्पा किया जाता है ॥

पहिली प्रकारके कई कारण हैं ॥

एकतो यह कि शरीर भोजनकी कमीसे कमजोर होजावे और उससे रूह और वाय और रुधिर जो विषयके मवाद हैं कम उत्पन्न हों अर्थात् उसका यह है कि कम जोरी जुबला पन होगा- और पहिले से भूखे रहे होंगे-

उपाय इसका यह है कि अच्छे अच्छे भोजनों से और पुष्ट
 औषधों से शरीर को पुष्ट करें और खेल वृद्ध और नाच रंगमें
 लगे रहें ॥

दूसरे यह है कि वीर्य थोड़ा उत्पन्न हो चा-
 हे भोजन भली भांति खावे- लक्षण उसका यह है कि
 वीर्य थोड़ा निकलेगा - कारण यह है कि कोई विगाड़
 वीर्य उत्पन्न होने की जगह पड़ जायगा - और उन च-
 स्तुओं से हानि होगी - जो उस विगाड़ के अनुसार हों -
 और उनके विपरीत से आराम होगा - इसीसे उस विगाड़
 की प्रकार जान पड़ेगी - कि गर्म है या ठंडी आदि - इसमें मि-
 त्ताज को दीव्य करें ॥

तीसरे यह कि वीर्य अधिक हो परंतु उसकी कृती
 और गुद गुदा छूट जाती रहे लक्षण उसका यह है कि वीर्य
 अधिक निकले और गाढ़ा हो और विषय करने के समय
 आदि में जोर कम हो और फिर अधिक हो जाय - इसमें साजून
 जर भौनी, अ- ल- र साजून कुजूर आदि खिलो
 के गरमी पद

या
 वा
 रअ
 फरल

कि विषयकी
 मलाप-
 लिंगादि

वातका

छटे यह कि दिल या मेदे या जिगर या भेजे या गुर
दे पे किसी विगाड़ के होने से ऐसा होता पहिले उस विगा
ड़का उपाय करें ॥

दूसरी प्रकार यह है कि शरीरमें कमजोरी होनेसे या
बहुत दिनों तक विषयके छोड़ देने से लिंग सुस्त होजाय उपा
य इसका ऊपर लिख चुके हैं और गर्म पानीसे धारें- फिर भेडी
का दूध मलें- और जिक्र लगावें ॥

जो नीचे के धड़में वायु होतो देखें कि ठंड से है या गर्मी
से या खुश्कीसे उसीके अनुसार काम करें ॥

जो पट्टों पर कफ के गिरने या ठसड पहुंचने से हो
ले लक्षण उसका यह है कि पहिले ये सव बातें पाई जावेंगी
और वीर्य पतला होगा- और बिना जोर करने के निकला करे
गा- इसमें वही उपाय करें जो फालिज का है और गरम शाफे
और हुकने करें और गरम औषधें मलें- और लिंगको बहुत
गर्म पानीसे धारें- जो वह उसकी ठसड से न सिमटे तो उस
रोगका उपाय नहीं हो सकता ॥

अब ऐसी औषधें लिखी जाती हैं जो लिंगको बड़ा
करें ॥

पहिले उसे खुरखुरे और कड़े कपड़े से इतना मलें कि
छाल होजावें फिर रोगन मोर्चा और इसी प्रकार की और औ
षधें मलें और उसपर जिक्र कालेप करें ॥
दूसरे कफ के पानीसे कई बार धोवें ॥
बकरी के घीसे कई बार चिकना करें ॥
चौथे के बुरे या जोंक सुखाके रोगन सोशन से मि
लके मलें ॥

दूसरा पाठ २

वीर्यजल्दी निकलनेके विषय में

उंड या तरी से होतो लक्षण उसका यह है कि बहुत सफेद और पतला होगा - और गर्मी न होगी - गरमजुल्लावों से सवाद को निकालें - और जलटी करावें और माजून खुब सुल हदीद खिलावे और उसकी शराब पिलावे और शहदाने को ओटाके शहद मिलाके पिलावे ॥

और जो यह रोग वीर्य और रुधिर की अधिकता से होतो फ्रस्ट्द खोलें - और विषय थोडाकरें और भोजन कम खावें और वह वस्तु खावें जिनसे वीर्य और रुधिर कम उत्पन्न हो ॥

और जो वीर्य में तेजी आगई होतो लक्षण उसका यह है कि वह पतला और पोला निकलेगा - और उसमें जलन होगी - इसमें उंडाई और काहू के बीज ओटा के पिलावे ॥

और जो चामजोर होने के कारण से यह रोग होतो उस कारणको दूर करे ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय २ ६५॥

तीसरा पाठ ३

विषय की चाहना अधिक होजाने के विषय में

यह रोग भी रुधिर और वीर्य की अधिकता से होता है उन्हें कम करें- परंतु ऐसा न चाहिये कि कोई हानि हो और जो बहुत ही अवश्य होतो फस्ट और जुल्लाव दें- और वह वस्तु खावे, जो वीर्य की कम करें- और भोजन भी कम खावे ॥

और जो वीर्य में तेजी होतो टंडाई दें- और टंडे पानी से न्हावे ॥

और जो कमजोरी हो और रुधिर कम होजावे- और इस पर भी वीर्य की अधिकता होतो वह पतला और सफेद होगा- इससे कलेंजी और मुद्दीव और सभालू के बीज देना चाहिये- और नवारिश कसूनी अति लाभदायक है ॥

और जो वीर्य के स्थान पुष्ट हों- परंतु शरीर में और स्थानों पर कमजोरी होतो उसके लक्षण पाये जावेंगे- उपाय इसका यह है कि वीर्य के स्थानों की कमजोरी कर दें- और दूसरे स्थानों को पुष्ट करें ॥

और जो वीर्य के रास्ते में फुन्सियां या घाव या खुजली उत्पन्न होने से यह रोग होतो लक्षण उसका यह है कि विषय करने के समय वीर्य मजे से निकले- परंतु घाव में पीडा होगी- और पीप भी निकलेगी- इसका उपाय वही है जो समाने के घाव का है- फस्ट और जुल्लाव आदि दें ॥

और जो शरीर के फूलने में यह रोग होतो गर्मी की अधिकता में टंडी भीषण दें- और जो तरो अधिक होतो वह भीषण दें जो वायु को तोड़े और सुरकी करें- और जो

सौदा की अधिकता होती फ़रसद वासलीक खोलें-और सौदा का जुल्लाव दें ॥

चौथा पाठ ४

वीर्य निकाला करनेके

मंजी २७

विषयमें

जो यह रोग वीर्य की अधिकता या तेजी या उसके स्थान के ढीला होने से होता लक्षण उसका यह है कि रंत ही विषय की चाहना उत्पन्न होजाया करेगी- और हर बार से वीर्य निकलेगा- इसका उपाय दूसरे पाठ में लिखा गया है ॥

और जो यह रोग उस पट्टे के सिंच जाने से होजा वीर्य के स्थान पर है तो सिंचाव का उपाय करें-और पेड़ आदि पर रोगन मलें ॥

- और जो गुरदे की कम जोरी हो और उसकी चर्बी पिघल के निकला करे तो लक्षण उसका यह है कि विषय करने के पीछे मूत्र में कोई वस्तु सफ़ेद और गाढ़ी निकले और गुरदे की कमजोरी के और लक्षण पाये जावेंगे और कभी विषय की बातें सुनने से भी वीर्य निकल आता है- उसकारण को भी दूर करें ॥

यह रोग स्त्रीयों को भी होता है- और उसके यही कारण होते हैं जो ऊपर लिखे गये हैं- और कभी हिंस

के मुंह दीला होजाने से भी होता है- उपाय इसका यह है कि उलटी करावे- और कब्ज करने वाली औषधों को औषध के आवृत्त करें ॥

यह औषध वीर्य या मज्जी या नदी निकलने में लाभदायक है- सुहाव के बीज साठे दस माशे- सेंभालू के बीज और सौसेन की जड़ प्रत्येक सात माशे- पीस छानके मरे या कचवे अंगूर के रसमें मिलाके दे ॥

यह दवा मज्जी और नदी को लाभ देती है- भंगको मूतकर पीसके शहद में मिलाके दे ॥

जानना चाहिये कि मज्जी और नदी लसहारवस्तु है और मूत्र के साथ या उसके पीछे निकला करती है ॥

पांचवां पाठ ५

वीर्य के बदले रुधिर निकलने के विषयमें

इसका कारण खुसियों या गुरदे की कमजोरी है- जो गरमी का डर नहो तो खुसियों को रोगान मस्तगी में भिगोवे और गुरदों को पुष्ट करें ॥

छठा पाठ ६

सोते में वीर्य निकाल जाने के विषयमें

इसका ज्याय और लक्षण वही है जो चौथे पाठ में लिख चुके हैं - और सीसे का टुकड़ा पीछे कमरे पर गुरदों की जगह बाधें ॥

सातवां पाठ ७

लिंगके हर समय जोर करने के विषयमें

जो रुधिर की अधिकता होती फुस्द खोलें और भोजन थोड़ा दें - और रंडी औषधें काम में लावें - और जो रंड और खुशकी से होता उल्टी करावें - जिससे कफ निकले और वह औषधें जो वाय को तोड़े चाहे लगावें या खिलानें और सुदान का तेल पीठ और पेट पर मलें ॥

आठवां पाठ ८

वीर्य निकालने के समय अचान
का पैर खाना हो जाने
के विषयमें

शरीरके बड़े र स्थानों की कमजोरी से और तारी की अधिकता से होता है - इसमें उन स्थानों को पुष्ट करें - और रक्तक्रिया और रसक और गुल्जार और वबूल का गोद और कुंदर से शाफा करें और विषय के समय भी यही कारना चाहिये - और नारदीन का तेल पैखानो के स्थान पर मले और विषय के समय पेट खाली रखें ॥

नवां पाठ २ ॥

पुरुष को विषय कारने की चाहना
उत्पन्न होने के विषय

॥ में ॥

इस रोग में आंतों में खजली होजाती है - जो कोई मवाद पाया जावे तो उसे निकालें - और इस रोग का मवाद बहुत करके खारी कफ होता है और जो सुभावमें स्त्रियो की सी जाते होजावे तो मार पीट से दूर करें ॥

दसवां पाठ १०

खुसियों की सूजन के विषय में

जो सूजन अधिक और बोगल हो और गर्मी पाई जावे

तो रुधिर की अधिकता होगी- और पित्तों की अधिकता में अत्यंत गर्मी होगी- पहिले पोट और पिंडली पर पछने लगावे और फस्द खोलें- फिर उन रंडी औषधों का लेप करें जो मवाद को इधर गिरने से रोकें- और इसके पीछे उसलेप में पर काने वाली औषधें भी मिला लें और फिर केवल पर काने वाली औषधों का लेप करें- जैसाकि सूजन के उपाय में लिखा गया है ॥

और जो सूजन में नमी और सफेदी होते कफ की अधिकता होगी- इसमें उल्टी करावे और कफ की मुंजिश और जुल्लाव दें- और वाकलें के बीज पीसके वेसन और शहद में मिलाके लेप करें ॥

और जो सूजन में कड़ा पन और काला पन होता सौदा की अधिकता होगी- इसमें नरम करने वाली औषधें वाकूने और नारंगूने के साथ लेप करें- और फिर सौदा का जुल्लाव और मुंजिश दें ॥

और जो किसी मवाद के लक्षण नहीं और सूजन फूली हुई होतो वायु से होगी- इसमें पर काने वाली औषधों से सेक करें- और कसूनी खावे और जो इससे लाभ नहीं तो उल्टी करावे और जुल्लाव दें- जो रोग नीचे के अङ्गों में होत है- उनमें उल्टी कराना अति लाभ दायक है- और उसमें डर भी नहीं है ॥

जो सूजन केवल थैली अर्थात् अपर की खाल में होतो दुख कम होगा- और सूजन दिखवाई देगी- और अङ्गों की सूजन में दुख और तप और प्यास अधिक होती है ॥

ग्यारहवां पाठ ११

खुसियों के बढ़ने के विषय में

यह रोग सूजन की प्रकार से नहीं है - इसमें सोटा फन आजाता है - इसमें खुसानी अजवायन और शूकुरान और तफाह और पीसत खशखाश और सान के पत्थर की रेत हरे धनिये के पानी में पीसकर लेप करें - और जो गिह्वे अर्जनी और सिरका भी मिला लें तो अति लाभदायक होगा - और इसी लेपको स्त्री की छाती पर लगाने से छातियों बढ़ने नहीं पाती - परंतु इस रोग में भोजन भी थोड़ा खाना अवश्य है ॥

बारहवां पाठ १२

लिंग में रहम के मुंह के फड़कने के विषय में

मवाद को निकालें और रुधिर को ठंडा करें और फिर उसी जगह पर जोंकें लगाना अति लाभदायक है और भोजन भी अच्छा खावें ॥

तेरहवां पार १३

खुसियों की पीडाके विषयमें

जो सूजन के कारण से होता उसका वर्णन कर चुके हैं और जो वायु होता पीडा एक जगह नठहरेगी - इसमें सेब और गरम तेल मले - और जो गर्मी, उडसे विगाड होता उसका उपाय भी लिख चुके हैं - और जो चोट पडने से पीडा होता फास्ट खोलें और जनफशा. खैरू. मकोय. कद्दू. नीलोफर का लेप करें ॥

चौदहवां पार १४

खुसियों के छोटा हो जाने के विषयमें ॥

यह उड के पहुंचने से होता है - इसमें गरम पानी से न्हावें और गरम दवाये लगावे ॥

पंद्रहवां पार १५

खुसियों के चढ़ जाने के विषय

॥ यमें ॥

कभी ऐसा होता है कि बिलकुल ऊपर चढ़ आते हैं नीचे कुछ भी नहीं रहता उस समय सूज रुक के और एक टपक के निकलता है- और चलाफिरा नहीं जाता- और जो थोड़ा चढ़े तो थोड़ी र पीड़ा होती है और कुछ हानि नहीं होती- और कभी पीड़ा भी नहीं होती- परंतु जो देर तक यह रोग रहते अच्छा नहीं है- इसमें गरम पानी से स्नान करें और फारफियून का तेल मलें- और भावजन करें और उसी जगह सींगिया लगावें ॥ *आप*

इसी प्रकार से कभी छिंग भी चढ़ता है- उसका उपाय भी यही है ॥

सौल्हवाँ पार १६

रों उभर आने के विषय में

इसका उपाय वही है जो पैर की रों उभरने का लिखा जावेगा- और जो कड़ापन भी आजावे तो उसका वह उपाय करें जो सूजन का है ॥

सत्रहवां पाठ १७

अपर की खाल टीली हो जाने के वि

षयमें ॥

१॥ १॥ मज्जू-आस-गुलान के फूल-गुलनार-बलूतके फल आदि क्वचन करने वाली औषधों का लेप करें- और उन्ही को औराके घारे ॥

अठारहवां पाठ १८

लिंग आदि के घाव के विषयमें

जो यह घाव ताजे होते मुर्दा संग और तृतिया छिडके और लगावे- चाहे सूखा पीसके या मरहम बना के- और जो रुंधिर की अधिकता होतो पहिले सवाद को निकालें ॥

और जो घाव पुराने होंतो यह मरहम लगावे दम्मुलु बरबवेनु- और सुरप्रत्येक नौ मागे- रलुजा-मुर्दा संग- इंजस्त प्रत्येक सात मागे पीसके रोगन गुल मिलाके लगावे ॥

जो घाव लिंग के अंदर होतो सूत्र आने में जलन होगी- उसका उपाय मसाने के घाव से करें ॥

उत्तीसवां पाठ १८

लिंग के सृजजाने के विषयमें

इसका उपाय वही है जो दसवें पाठ में लिखा
या है ॥

वीसवां पाठ २०

लिंग आदि की खुजली के विषयमें

इसमें फास्द खोलें- और रांन और जांघ पर प
हने लगावें और पित्तों का जुल्लाव दें- फिर गरम पानी वी
र सिरके से धारें- और रोगान गुल मलें- और अंडे की सफेदी
कालेप करें ॥

इक्कीसवां पाठ

लिंग के फरजाने के विषयमें

इसका उपाय वही है जो पैखाने की नंगह के पाठ
में का है ॥

मेधे ७७
२५७
३२५१५३

चाईसवांपाठ २२

लिंग पर और उसके आस पास काड़ी फुंसी
सियां और मस्से होजाने के
विषयमें

काला दाना सिस्ले में मिलाकर लगावे- और व
ही उपाय करें जो मस्सोंका है ॥ २४६

तेईसवांपाठ २३

मूत्रके छिद्र बंद होजानेके विषयमें

जो फुंसी निकली होंतो मूत्र कठिनता से नलन
के साथ होगा- इसमें फ्रसद खोलें- और कुलफे और खरबू
जोंके बीजोंका शीरा निकालके शर्वत रवश खाश के साथ
दे- और अस्पगोल रोगान बनफशे और वादाम में मिलाके
लिंग पर रक्वे- जब वह पक्के फूटे और पीप निकलेतो
श्याफ त्रिवियज रोगान गुल और स्त्रीके दूधमें घोलके छि
द्रमें रपकावे- और जो पीडा अधिक होतो थोड़ीसी शर्फ
सभी मिलाळें ॥

२४६ और जो कोई लेसदार मवाद छिद्रमें फंसा

होतो मूत्र कर्मिनी से निकलेगा- और जलन न होगी-
 और मूत्र में उस मन्त्रका लक्षण पाया जावेगा- इसमें
 मूत्र लाने वाली औषधें दें- और पिघलाने वाली औषधों
 को गोटाके धारें- और वसीं गोट्टे हुये पानी में थोड़ा सारे में
 नवावून मिलाके पिचकारी लें ॥

और जो मस्सा होतो मूत्र कर्मिनी रहोगा- और
 रज जलन होगी न कफ निकलेगा- जो वह मस्सा सिर पर
 होतो स्लुमा और सफ़ेदारोगन गुल में पीसकर टपवावे
 और जो पीडा अधिक होतो फस्द साफिन खोले- और पि
 डली पर पढ़ने लगावे ॥

घोवीसवां पाठ

लिंगके टेदा होजानेके विषयमें

इसका कारण पहेका खिचाव या सूजन है- पढ़ि
 ले उस कारणको दूर करें- और रोगन भादि मलके उस
 स्थान को नसकरें- और फिर हाथ से भली भांति उसे सी
 धाकर लें ॥

इक्कीसवां अध्याय

॥२१॥

मिराक सिफाक और सर्व के विषयमें

जानना चाहिये कि पेटके चमड़ेको मिराक कहते हैं- और जो गिल्ली उसके नीचे है वह सिफाक कहलाता है- और एक परदा मोटा चिकना जो सिफाक के तले है- सर्व कहलाता है ॥

पहिला पाठ १

कील के विषयमें

सिंह वह रोग है कि सिफाक की राह जो चदरो की ओर है खुसियों के पास से खुल जावे- या सिफाक आपही यहां से खुल जावे और सर्व आंत या वाय या तैरी खुसियों की थैली में उतर जावे- इसको फित कभी कहते हैं ॥

और जब कोई गाढा सवाद उतरे तो उसे कार डुल लहमी कहते हैं- इन पांचोंका वर्णन अलग अलग करते हैं ॥

पहिले आंतके उतरने का लक्षण यह है कि थोड़ी थोड़ी उतरे- और कठिनाई से ऊपर को चढ़े और चढ़नेके समय गड बड हो- और कभी कुलंजकी पीडा भी इसमें होती है- उपाय इसका यह है कि १

हौले हौले मलके जपर-चढ़ावे- और जो तुरंत न चढ़े तो गरम पानी से धारें- और आचजन में बिटावे- और जब चढ़ जावे तो यह लेप पेड़ और चट्टों और खुसियों पर लगावे- मस्तगी-इंजूर- कुन्दुर- सरो के फल और पत्ते- कका- क्रिया- गुलनार- सुर- इस्मुल अखवेन- फिटकारी- रसौत- जमल- सलुआ- सबको बराबर लेके कूट छान के सरेश मही को हरी मकोय के पानी में पिघलाके यह औषध उसमें मिलाके एक कपड़े पर सरहस की तरह लगाके खुसियों पर बिमटा दे- और जपर से पट्टी खेंचवार बांध दे- और तीन दिन तक बंधा रक्वे- और रोगी को चाहिये कि तीन दिन तक चित पढा रहे- और तीन दिन पीछे बहुत होले से बदे और चले फिरे और जो वस्तु हानि दायक हो उसने खवे पीवे और हिलने कुलने से बचे- और नित्त जवारिश कसू नी खवे और आंकाड़ा जो इस कासके लिये बनाया गया है बांधे रहे ॥

दूसरे सर्ब के उतरने का लक्षण भी कठिनता से चढ़ना है- परंतु उसमें गडबड नहीं होती- और यही इसमें और आत के उतरने में अंतर है- इसका उपाय भी वही है जो जपर लिरबा गया ॥

तीसरे वाय के उतरने का लक्षण यह है कि सड़क जपर को चढ़े और गडबड अधिक हो- इसमें वाय की तोड़ वाली औषधें काम में लावे- और वाय उत्पन्न करने वाली वस्तु से बचे और पट्टी बांधे रहे ॥

चौथे पानी उतरने का लक्षण यह है कि खुसियों की स्वाल भारी और पानी से भरी मालूम हो और किसी उपाय

है दूसरी ओर दाढ़ें ॥

तीसरी पाठ ३

दूडीके उभरनेके विषयमें

जो अत्यन्त के दिन बुरी तरह से काल्ने से या कि सीचोट से उभर आवे तो उसी समय तुरंत ही उसे दीक करें नहीं तो पुराना होने पर कुछ लाभ नहीं होगा-उसी समय पद आदि से दीक करें ॥

जो यह रोग सिफाक के फटने या काफके इकट्टा होने से होतो जैसा कि जिक्की जलंधर में होता है या चायके इकट्टा होने से जैसा कि तबली जलंधर में होता है या दूडीकी खालके नीचे-मांसवटजाने से या किसी रंगके फटजाने से और रुधिर इकट्टा होने से हो ॥

इनमें से जो रोग फितक की प्रकार का है उ समें दवाने से दूडी नीचे होजाती है- चाहे गड़बड हो या न हो ॥

और काफमें बोझ जान पड़ेगा ॥

और वाय में नरमी होगी- और चायकी उत्पन्न करने वाली वस्तु खाने से उभर अधिक होगा और उनकी विपरीत से घटेगा ॥

मांस उत्पन्न में दूडी कडी होगी- और दवाने से नहीं दवेगी ॥

और रुधिर के इकट्टा होने में जपर का रंगनील

या काल ही होगा ॥

जो यह रोग फितर की प्रकार से हो उसका उपाय लिख चुके हैं ॥

और जो कफ या वायु से होता उसका उपाय जलघटके वर्णन में देख लें ॥

और सांस उत्पन्न हो जाने में कुछ उपाय न करें - वह अच्छान हीगा ॥

और जो रुधिर इकट्ठा हो जावे तो जो कलगाके कवज करने वाली गोपधोंका लेप करें - जो नकसीरके वर्णन में लिखी गई हैं - किरगोंका सुंह जिससे रुधिर निकलता है वन्द हो जावे ॥

बाईसवाँ अध्याय

॥२२॥

उन रोगोंके विषयसे जो केवल स्त्रियों
को होते हैं

पहिला पाठ १

वांभा होने के विषय में

सं ७ - ५१ ७५२

जो रहम में कोई विगाह गर्मी या संड या खुशकी या तरी और सादा या सवाद से हो उसका कारण जानके उपाय करना चाहिये ॥

गर्मी की पहिंचान यह है कि हैज का रुधिर काला और गादा होगा- और उसमें गर्मी भी पाई जावेगी ॥

संडकी पहिंचान यह है कि हैज का रुधिर देरकर के और बिना जलन के निकलेगा ॥ १७२१ ७२१-१-१

और खुशकी की पहिंचान यह है कि पेशाब की जगह सूखी रहेगी और हैज कम होगा ॥ १७२१-२-१

तरीकी पहिंचान यह है कि रहम से तरी निकला करेगी- और ऐसी स्त्रीको तीन महीने से अधिक पेट न रहेगा ॥

और जो विगाह किसी सवाद से होतो पहिंचान उम सवाद की उस तरी के रंगसे जानी जावेगी- जोकि रहम से चहै ॥ १७२२ ५२

जो मुटापे के कारण गर्भ न रहै तो डुबला होनेका उपाय करें ॥

और जो अधिक डुबला होने से हो यहाँ तक कि इतना रुधिर न चचे कि वैद्य को बदावे तो सोटा होने का उपाय करें जो इस पुस्तक के अंत में लिखा गया है ॥

और जो हैज के बन्द होजाने से होतो ऐसी औषधें काम में लावें जो हैज को निकालें ॥

और जो रहम की सूजन या चवासीर या घाव या कडेपन से होतो उस कारण को दूर करें और इनका वर्णन अलग अलग किया जावेगा ॥

और जो रहम में गादी वाय इकट्ठा होने से होतो लक्षण उसका यह है कि पेट में फूला हुआ होगा - और विषय के समय पेशाब की जगह से वायु आवाज के साथ निकलेगी - इसमें बाह्य औषधें काम में लावें जो वायु को तोड़ें - और पेट पर चारे लगावें - और रोगन वेद इंजोर सादे दशमाशे माउल उसूल में मिलाकर पिलावें ॥

और जो रहम के मुंह में कोई बिगाड होजैसे सूजन या सांस या मस्सा आदि जिस से मुंह बन्द होजावे तो उस कारण को दूर करें - उसका वर्णन आगे किया जावेगा ॥

और जो रहम का मुंह सामने से हट गया हो तो उससे वीर्य भीतर नजासके तो विषय करने के समय पीडा होगी - और उसका उपाय २० वें पार में लिखा जावेगा ॥

और जो विषय के पीछे स्त्री तुरंत हटा उठ खडी हो या कोई और बात इसी प्रकार की हो जिससे वीर्य फिसलकर निकाल जावे तो उस कारण को रोके ॥

कभी पुरुष भी बर्भ होता है जैसे कि वीर्य वेदि गडजाने से होतो पुरुष का उपाय करना चाहिये - और वीर्य को रोककरे -

और कभी ऐसा होता है कि मनुष्य के जन्म में यह हो
गइतो उसका उपाय नहीं हो सकता ॥

अब इस बात का जानना कि स्त्री या मर्द या पुरुष
इस प्रकार से हो सकता है कि दोनों के वीर्य अलग-अलग - और
उन्हें गरम पानी में डालें जो ऊपर तैरता रहे जानों कि कब ही
बारा है ॥

जो औषधें कि गर्भ रहने के लिये लाभदायक हैं -
यह हैं - हाथी दांत का बुरादा ४॥ सादे चार भांशे खिलाने या
पनीर नगावे ॥

दूसरा पार २

५१२-१५/१५५१०००००००

बहुधा गर्भ धरने के विषय में

जो इसका कारण चोट, या जोध, या दुख आदि या
उठरी या भूक या कोई रोग होतो इस कारण को रोकें - बंद
होने के कारण और इसके स्वाहैं - इस लिये ऊपर के पत्र में
देखना चाहिये ॥

५०००००००००००००००

तीसरा पार ३

५१२-००००००००००००

जन्म से कठिनाई होने के विषय में

इसका उपाय ठंडी और गरम हवा और समय
के अनुसार करना चाहिये - और जो स्त्री कठिनाई से जना

करे- उसे भाठवें महीने से दूध पिलाया करें जितना उसे पच
 सके- और जब वह जन्मे को होता उसे गरम जगहमें लेजायें-
 और गरम पानी बदन पर धारें और भावजन में बिठावें- और
 तेल मले और टङ्गलावे- और ठंडे पानी और ठंडी वस्तुओं और
 खटाई से बचें - और स्त्री को चाहिये कि अपने दमको रोकें
 और पाँव पर जोर करें और कूथे और दाई रोगन वादाम या ग
 लसीका तेल और गलसीका लुआव मिलाके गुनगुनाकर
 केरड़नके मुहपर बहुतसा मले- इससे बचचा सुगमता से
 उत्पन्न होता है ॥ ३१ मले १

यह औषधें इस रोग को बति लाभदायक हैं- च
 म्वक पत्थर का कड़ा कड़ा वायें हाथ में बांधें और सुगेकी
 जड़ दाहिनी रान पर बांधें- और दार चीनी रिकलावे- और जोतु
 दवेदस्ताया हींग भी मिला लें तो तुरंत लाभ होगा- परंतु
 गरसी नहो और अमलतास के छिलके डंड तोला कुचलके
 ओटावे- और शर्वत वनपाशा या चनों का पानी मिलाके पि
 लावे- इसमें तुरंत ही बचचा हो सकता है- और मशीमा भी
 निकल आती है- और गर्भवती स्त्रीको सुगंधि न सुंघना
 चाहिये- और जन्मे के समय तो कभी नहीं सुंघावे ॥

चौथा पाठ ४

अष्टम ११ - मशीमा

मशीमाके रुकने और पेटमें बचा भरजाने
 के विषयमें ॥

पेट में वचचा सरजाने का लक्षण यह है कि फि
रना उसका बंद होजाता है- और स्त्री के हाथ पांव टंडे होजा
ते हैं- और हांपने लगती हैं- और सांस पेट में नहीं समाती-
इसमें तुरंत ही वचचे या मशीमा को निकालें- चाहिये किय
हाड़ी पोदीना- हंसराज- अबहल- प्रत्येक सादे १०॥ दशमा
गो-तुरसूस और पोदीना प्रत्येक सात माशे ओटाके और
तीन तोले मिन्त्री मिलाके पिलावें - और नक छिकनी
या पिसी हुई कलोंजी या तमाकू की नास सुंघाके छींक
लिवावें- और नव छीक जाने लगे तो सुंघ और नाक
बंद करालें- कि जोर छींका अन्दर को पड़े और वचचा
सरा हुआ निकल पड़े- और सांपकी कंचली और कबूत
रकी जीद जलाके रहस में धुनी दें तो तुरंत लाभ होता है-
और जो इनसे कुछ लाभन होता वचचे को कादके निकालें।

पांचवां पार ५

जो रुधिर जनने के पीछे निकलता है उसके
रुकर रहने के विषयमें

इसका उपाय वही है जो हेंज के बंद होने का है
कुछ स्त्रियों को जनने के पीछे पीडा होती है उसकी औष
धें यह हैं- अलसी के बीज ओटाके रहस को भपारा दें-
और गधी का दूध गुनगुना करके सूत्र की जगह को धोवें
और गधे या रिक्चर का सुम जलाकर धुनी लें- और

सातर का पानी पिलावे- और खुब्जाजी आंटाके पिलावे- और रहस में भी पहुँचावे- और जो कोई दवा लाभदायक न होतो पोस्त को पानी में भिगोकर उसका पानी थोड़ा सा पिलावे ॥ ५१३ ॥ ५१४ ॥

कभी गर्भ गिराना पड़ता है- यह अत्यंत महा निषेधकाम है- और जो अत्यंत आवश्यकता होतो उसका उपाय यह है कि कागज की कती बनाके रहस के मुंह में रखवे और जो उसको कुतरान में अथवा इन्द्रायन के पानी में या उसके जुशादे में भिगोलें तो अधिक पुष्ट हो जावेगा- और हींग दो माशे, सूखा हुआ सुहाव दश माशे- सुरसूक्की तीन माशे कूट छान के खिलावे- और ऊपर से अवहेल आंटाके पिलावे- संध्या और सबेरे यह सब सब खुराक है और भोजन के बदले चनों का पानी दे- और तिरियाक शर्बी भी लाभदायक है- और जो गोपध मरे हुसे बच्चे और मशीमा को पेट से निकालती है वह पेट के गिरने में भी काम जाती है ॥ ५१५ ॥ ५१६ ॥

गर्भ गिराने के समय पहिले गरम स्थान में बैठकर रोगान वेद इंजोर मूले और चिकनाई पिलावे- और जब गिजा वेती मूगल और राई जलाके रहस को घृनीदे कि रुधिर गादन होने पावे और निकलता रहे ॥

जब चाहे कि गर्भ न रहने पावे तो उपाय उसका यह है कि विषय करने के पीछे सात बार या नौ बार कूदे- और वीर्य निकलने के पीछे तुरंत ही ज्व खड़ी हो और लें- और पुरुष विषय के समय लिंग पर तिली तेल मलाकरे- उसकी चिकनाई से वीर्य फिस

सातवा पाठ ७

हैज की अधिकता के विषय में

५ स २८ - ७ २१

२५२ जो रुधिर की अधिकता से होतो फ्रस्ड से उसे कम करे छातियों को पीछे से कसके बांध दे- और उनके नीचे झुलने लगावे- और फ्रस्ड के पीछे कुर्स काहरुवा रुधिर बंद करने के लिये खिलावे- और शाफा सुमसिक रहम में रखवे ॥

और जो रुधिर पितों की अधिकता से पतला और तेज डोगया होतो पित्त के लक्षण पाये जायेंगे- इसमें पित्त को निकालें और बड़ी अपर वाले कुर्स और शाफा दे और बंदन पेडू पर लगावे ॥

जो रुधिर में तरी बंद जावे तो कफ के लक्षण पाये जावेगे- इसमें तरी को सुखावे और निकालें ॥ २१ २४ २७

जो सोदा के मिलने से रुधिर में तेजी आ गई हो तो रुधिर काला या नीला या हरा होगा- उसमें सोदा को फ्रस्ड और जुल्लाव से निकालें ॥

और जो इसका कारण रहम की बवासीर या घाव होतो उसका उपाय आगे आयेगा ॥

और जो जन्ने की कठिनता से रहम की रंग फट गई होतो- उसका उपाय आठवें और नवें पाठ में लिखवा गया है ॥

और जो कचेचो पृष्णे में वह रोग होतो ९

शराब में विसावे और कक्ज करने वाली औषधों जैसे
सल्लू और गुल्जार और गुलाब के फूल औराके आगे से धाँवे
और उस स्थान को चिकना रक्खें- और अंगूर की लकड़ी
और पत्तों की राख कापडे पर रखके गद्दी बाँधें- और जहर
सुहरा मते में विसकर पिलावे- और जो उषाय घावका है
वही सरहम लगावे ॥

आरवा पार च

रहमके घावके विषयमें

३२५-३२५

लक्षण उसका यह है कि पीडा कनी रहेगी-
और पीय या रुधिर अकेले यादोंनो मिले दुरे निकलेगे-
जबतक घावमें पीय पडे और कोई हानि नहोतो फस्त
रपोले- और भोजन ठीक दे- और कुर्स कहरुवा खिलावे
और कक्ज करने वाले हुकने और गद्दी काममें लावे- और
जब घावमें पीय पडे या सूजन पकके फूटे तो रोगान गुल
और शक्कर और रोगान बनफशा पानी में धोलके रहममें
हुकला करें- और जब सवाद साफ होजाय तो सरहम वास
लीकून रोगान गुल में मिलाकर रहम में हुकना करें किंध
वगच्छा होमाय ॥

और जो रहम की गर्दन में घाव होतो इन्ही
औषधों की गद्दी रक्खें- कुछ हुकने की आवश्यकतानही
है- और अकेला शहद या गोता हुआ उध रुई में भिगीके
घाव में रक्खें- और रहम से सवाद निकालना बात काम

दायक है ॥

और जब पीड़ा अधिक होतो - अफ्रीस और केसर
रस्त्री के दूध में घोलके उसमें रुई भिगोके रहम के भीतर
रक्खे ॥

नवां पाठ

रहमके फटजानेके विषयमें

४५-२४५

इसमें विषय के समय पीड़ा अधिक होगी- और
र लिंग रुधिर में भरा हुआ निकलेगा- जो सरहम पैखाने
की जगह के लिये लिखे हैं वही लगावे- और सरहम
वासलीकून और रोगान बनफशा लगाना अति लाभदायक
है- कभी पैखाने और पैशाब के स्थान के बीच में जो पर्दा
है वह जन्ने की कठिनता आदि से फटजाता है - इसमें न
लीको चूदा और सफेद मोम और चकरी के गुरदे की चर्बी
लेकर बहुत सी संग निरहत मिलाके सरहम बनावे- और
उसको गद्दी पर लगाकर इस प्रकार से बांधे कि घाव की न
राह जमजावे - और हानि कारक वस्तुओं से बचे ॥

दसवां पाठ

४६-२४५

रहम की खुजलीके विषयमें

यह रोग पित्त खारी बल्लाम या सौदा यावी

में तेजी आजाने से होता है- लक्षण इसका यह है कि हैज का रुधिर पीला या सफ़ेद या काला होगा- पहिले मवाद को निकालें- फिर पोदीना, अनार के छिलके - और दुली हुई मसूर कूट छान के सुसल्लस या शरब या सिरके में चोलके रुई उसमें भिगोके अन्दर रक्वे - और रोस्तान गुल और रोस्तान कफ़शा सलें - और जो मूत्र के स्थान पर खुजली होतो उसका भी यही उपाय है ॥

ग्यारहवां पार ११

रहम की चवासीर के विषयमें

इसका उपाय भी वही है जो चवासीर का सत्रहवां अध्यायमें लिख चुके हैं ॥

बारहवां पार १२

रहम की फुंसियों के विषयमें

यह रुधिर के विगाड़ या पित्त से होता है- फुंसियां कूने में भाती हैं और खुजली होती है- फस्ट से मवाद को निकालें और सिकुंलवीन फिलाने और सफ़ेदे का मरहम लगावे और जो रहम की गर्दन की में फुंसियां हो- और जो भीतर की होतो हुकना करें ॥

तेरहवां पार १३

रहमके मसमेंके विषयमें

५२२ यह भी खूने से मालूम होते हैं फ़स्द खोले- और सें
 दाका जुल्लाव दें- और वाकूना नाखूना और मेथी और
 अलसी के बीज आंदाके वाकज़न करें- और पेशाब करनेके
 छे उसी से धोवें ॥

चौदहवां पार १४

५२२ रहमके नासूरके विषयमें

जब छाव चालीस दिनका होजाता है तो उसेना
 सूर काइते हैं- लक्षण उसका यह है कि पीलापानी बहाकरे
 और उघाय उसका कही है जो आठवें पारमें लिखा गया है ॥

पंद्रहवां पार १५

५२४ रहमसे पानी बहनेके विषयमें

इसमें फ़स्द और जुल्लाव से सवाद को निकालें- और
 मित्रान की रुंड और गर्मी के अनुसार सुखाने का उपाय करें ॥

सौहार्दापाठ १६

रहस्य से वीर्य बहने के विषय में

श्री ६१४ न - अथ १६५

इसमें पानी बहने में यह अंतर है कि पानी में दुर्गंध अधिक होगी - और वीर्य में गाढ़ापन और सफ़ेदी अधिक होगी - इसका उपाय वही है - जो पुरुषों के वीर्य बहने का है ॥

सत्रहवाँ पाठ १७

हेज बन्द हो जाने के विषय में

अथ १६६ - अथ १६६

जो रुधिर की कमी से होता शरीर दुबला होगा और रुधिर की न्यूनता के लक्षण पाये जावेंगे - पुष्ट भोजन खि
६१५

लके रुधिर घटाने का उपाय करें ॥
और जो ठंड पहुंचने से या किसी गाढ़े मवाद के लि
जने से रुधिर भी गाढ़ा हो गया होता पहिले उनके कारण पाये
जावेंगे - और ठंड के लक्षण होंगे - उस गाढ़े मवाद को निकालें -
और वह ओषधें जिन से रुधिर पतला हो चाहे पिलावे या
भपारा दें ॥

और जो रहस्य की रोगों के मुह बन्द हो गये हों तो
देखना चाहिये कि कारण उनका गर्मी है या ठंड या बुखार
की - फिर वैसा उपाय करें - जो कि पहिले पाठ में लिखा

गया है ॥

जो रहस का घाव मंस्ने से रुधिर रुक रहा होतो उसका उपाय नहीं हो सकता - परंतु अधिक हालि से बचनेके लिये कभी कभी फस्द खोला करें- और सिहनत अधिक करें- और भोजन कम खावें ॥

और जो रतक के कारण से होतो उसका उपाय आगे आता है ॥

और जो अधिक मुटापेसे रुधिर निकलने के रसे बंद हो गये होतो दुबला करने का उपाय करें ॥

और जो रहस का मुंह चिरजाने से होतो उपाय उसका बीसवें प्ठाठ में आवेगा ॥

अंतरहवा पाठश्च

रतक के विषय में ॥

यह वह रोग है कि भग के मुंह पर या उस के और रहस के मुंह के बीचमें या रहस के मुंह पर कोई विस्तु बंदी हुई उत्पन्न हो- पहिले में लिंग बंदर न जासके- और दूसरे में पूरा जावेगा- और तीसरे में जासकेगा- परंतु हैजका रुधिर निकलने न पावेगा- चाहिये कि इसकी कि सीसे काट डालें ॥

उन्नीसवांपार १८

रहमके उभरनेके विषयमें

१८५८ - २८५८

इसका लक्षण यह है कि पेड़ और कसर और पै
 खाने के स्थान पर अधिक पीडा मालूम होगी - और कुज्ज
 और राशे के रोग उत्पन्न होंगे - और भीतर कोई वस्तु नरम
 पाईजबिगी - आंतों को हुकाने से और मसाने को मूत्र लाने
 वाली औषधों से साफ करे - चमेली का तेल या रोगनगुल
 लेकर उसमें थोड़ा सा केसरका तेल और अरगजा मिलावे -
 और गुनगुना करके रहम में टपकावे - और ऊपर मले
 और दाई से कहें कि स्त्रीको चित छिटाकर दोनों राने
 उठावे - इस प्रकार से कि आपसमें मिलने न पावे अलग
 लग रहे - और भेडके नरम बालजो खालके पास बालोंकी
 जड़ में होते हैं लेकर उस शराव में जिसमें कि कबज करने
 वाली औषधें ओंटाई गई हों भिगोके अकाकिया और सुक
 और रामक कूट छान के उसमें उन बालों को छथेड़े और
 पोटलीसी कनाके रहम को उससे उठाकर भीतर करें - औ
 रस पोटली को उसी जगह रहने दें और दूसरी गद्दी से भा
 गको भरें और कसके पही बांधे और पेड़पर उसके भास
 पास काविज औषधों का लेपकरे और तीन दिन तक इसी
 प्रकार से रहे - और हानि कारक वस्तुओं और हिलने गुल
 ने से बचे - तीसरे दिन पही खोलके उस औषधि को नि
 काले और नई दवा रखें - और जब तक भली भांति

आराम नहो चलने फिरने में पही बांधें रहें और बराबर सु
रधि सुंघावें ॥

बीसवां पाठ २०

रहस के भूक पड़ने के विषय में

मे ६१० - २१४५

यह दाईं को हाथ लगाने से मालूम हो सकता
है और इसमें विषय के समय पीडा होती है - और कभी
कभी पैचिंग भी होती है - और सूत्र और पैरवाना बंद हो
जाता है ॥

गोरुधिर की अधिकता से सों तन रई हो
तो जिधर को जुकाओ हो उसी ओर फ़रुद साफ़िन खो
लें ॥

+ २५१५२ २११

+ और जो टंड पड़ने से होतो तर आवज़न में वि
रुवे - और रोगन बाधने में बतरव की चर्वा पिघला करके
मलें ॥ २५१५२

और जो कफ़ गिरने से हो तो अयारिजें खिला
के मवाद को निकालें ॥

ले २२ और जो कारण दूर करने के पीछे भी यह रोग
न आवे तो उंगली में मोम रोगन लगाके दाईं सीधा
कारदें ॥

इक्कीसवां पाठ २१

रहम की सूजन के विषय में

धर २५/२५ - २०५

जो रास से होता लक्षण उसका यह है कि रास तप
होगी और नाड़ी और सांस जल्दी जल्दी चलेगी। और मेदे में
रभे में बिगाड़ होगा- और जो आगे की रहम में सूजन होती-
पिंड में पीडा होगी- और जो पीछे होता कमर की ओर- और
जो दोनों जगह होते दोनों को ख में पीडा होगी- इसका उ
पाय वही है जो मसाने की सूजन का है ॥

और जब सूजन पक जावे और पूटे तो रहम के घा
वका उपाय करें ॥

और जो कफ की सूजन होती पेड़ के आस पास यी
डा होगी और बोकभी होगा- उल्टी और मसाने की दंडी सू
जनका उपाय करें ॥

और जो सौदा से होता कड़ापन होगा और रह
म किसी ओर रुका होगा- और पीडा कम और बोक अधिक
होगा- फरद और जुल्लठाव से सौदा को निकालें- और सरह
म और चर्बी और रोगानों से चाहे पिचकारी लें या गद्दी रखें
या लेप लगावे - और सोये और खैरू को भोटाके रात
दिन से दो चार जावजन करें ॥

बाईसवाँ पाठ २२

रहमके दुवैलें के विषयमें

धं मील - २१४५

जब सूजन पकजावे और न फूटे उसको दुवैला कहतै है ॥

जो यह रहमके मुंहमें होतो छेवा देकर पीपको निकाल डालें ॥

जो रहम के भीतर तह में होतो सूत्र लान वाली औषधें पिलावें - और नरम करने वाली औषधों का लेपकरे कि आपसे फूटजावे - और जो फूटने में देर होतो - इंजीर और राई ओंटाके रहममें हुकना करें - और फोके उनका कूट के सूजन की जगह पेड़ पर लेप करें - और जब फूटे तो पीप को साफ़ करें - और घाव को भरें ॥

तेईसवाँ पाठ २३

सरतान रहम के विषयमें

यह रोग बहुधा गरम सूजन के पीछे होजाता है इसमें कडाफ्त और गरमी और तपक होगी - पीडा छाती तक होगी - और पांव पर सूजन होगी - इसका उपाय नहीं हो सकता - परंतु थामने के लिये ऐसे भरहम लगाया करें जिनसे पीडा धीसी हो - और वाक्जन और हुकनागारि

किया करें- और मरहम रसूल अति लाभ दायक है- और सौ
 दाके निकालने के लिये कभी कभी फस्द और जुल्ठाव
 दें- परंतु तैरी पहुंचने का ध्यान बहुत रखें ॥ ५/२१६

चौबीसवां पाठ २६

इ स्वतिनाकरहमके विषयमें ३५२

इस रोग में सृगी और सूच्छा कासा हाल होता
 है- परंतु कफ मुंह से नहीं निकलता- और तड़पन नहीं होती
 और सूच्छा ऐसी अधिक होती है कि पुकारने से भी कुछ खं
 वर नहीं होती- सूच्छा में वह उपाय करें जो सूच्छा और सृगी
 का है- परंतु इसमें सुगंधि कभी न सुंघावे- दुर्गंध सुंघानी
 लाभ दायक है- और गंधक और गूगल आदि जिसमें दुर्ग
 न्धि हो नाक के आगे जलावे- और सुगंधि रहम के भीतर मले
 और मुश्क और अस्वर की धूनी रहम में पहुंचावे- और जब
 विषय के छूट जाने या वीर्य की अधिकता से यह रोग होत
 हो सके विषय करें ॥

और जब हैज के रुधिर रुकने से होतो- फ़र
 फ़ियून और काली मिरचें गद्दी में भीतर रखें- और जब
 रोगी चैतन्य होतो सूत्र लाने वाली औषधें पिलावे- और फ़
 स्द खोलें और सवाद निकालें और रहम को पुष्ट करें ॥

पच्चीसवां पाठ २५

५/२१५
 २१५
 २१५

रहममें पानी भर जाने के विषयमें

१०८२ - ११३१ - ११४१ - ११५१

इस रोगमें जिक्की जलंधर की भांति पेट फूल जाता और कभी पानी ऊपर बह आता है - इसमें रहम और सारे शरीर का मवाद निकालें - और सूत्र लाने वाली औषधें पिलावें और बह उपाय करें जो जलंधर और पंद्रहवें पाठमें लिखा गया है - और भूका रहना और महनत करना लाभदायक है - और चाहते हैं कि सफेद कुटकी भीतर लाना अच्छा है ॥

छब्बीसवां पाठ २६

रहममें वायु भर जाने के विषयमें

११६१ - ११७१

इसमें पेड़ फूल जाता है और पीडा भी होती है - और कजाने से तबके की सी आवाज निकलती है - अथवा बिनाके सारे शरीर का मवाद निकालें - और वायु तोड़ने वाली औषधों से हुत्राना - लेप - सेक - वा बजन आदि करें - और जो उपाय तबकी जलंधर का है वही इसका है ॥

जो रोग बीसवें अध्याय के बाठवें और नवें और बरहवें पाठमें लिखे गये हैं वह रोगों को भी होते हैं - उन उपाय नहीं हैं जो पुरुषों के लिये हैं ॥

तेईसवां अध्याय

॥२३॥

पीर और हाय और पाँवके रोगोंके वि

षयमें

पहिला पाठ १

कुभनिकल आनेके विषयमें

इसमें पीर की गुरियाँ अपनी जगह से आगे पीछे रहने चायेँ बिनाक जायेँ ॥

इस रोगके कारण पाँचहैं- रक्त उस पद्वेकी सूजन जो गुरियोंके आस पास है ॥

दूसरे गुरियोंके नीचे गाढ़ी वायुका रुकना ॥

तीसरे यहकि पतली तरी गुरियोंकी नसोंमें आवे और उसे दीलाकरदे ॥

चौथे नसोंका बिंचना ॥ मं टपु

पाँचवें यहकि गुरियोंपर चोट पड़े ॥

४४ पहिली प्रकार का लक्षण यह है कि पहिले पीठ में पीड़ा होती है - और नाडी भारी होती है - और तप अधिक होती है ॥

और दूसरी प्रकार का लक्षण यह है कि पीड़ा अधिक होती है बिना तपके ॥

तीसरी में मूत्र सफेद निकलता है - और इससे पहिले तर वस्तु खार्द होंगी ॥ ५५ - २४१

और खिचाव और चोट पड़ने का लक्षण तो सब जानते हैं ॥

पहिली प्रकार में फस्द खोले और मुलायम करने वाली औषधें दें - और लेप लगावें - और सूजन का उपाय करें ॥

दूसरी और तीसरी प्रकार में बड़ उपाय करें जो गुर्दे की वायव्य है ॥

और खिचाव में तशान्जुन का उपाय करें ॥

और चोट लगने में पीठके मुहरो की ठिकाने से विनावे जो भीतर को घुस गये हैं - ऊपर खिंचे सींगियों से या चारे लगाकर या जिफ्त और गुगल थोड़ा सा अक्रकस मिलाके लेप करें कि सूखने से तनाव पड़े और ऊपर खिंचें ॥

जो मुद्दे बाहर उभर आये हों तो हाथ से मलके भीतर अपने ठिकाने पर फेर दें - फिर काविज औषधों का लेप करें कि फिर न उभरें ॥

दूसरा पाठ २

पीठकी पीड़ाके विषयमें

८१०४ ४ - ०३६२

जो कारण इसका केवल कोई विगाड़ बिना मवाद के हीतो ठंड लगेगी - और पीड़ा बिना बोरके हीगी - और गरमी से आराम मिलेगा इसमें पिलज्जे और लगाने से गरमी पहुंचावे ॥

और जो कफ उत्पन्न होने या गिरने से होतो कफ उत्पन्न होने में पीड़ा बोरके साथ हीगी - और पहिले से कफ उत्पन्न करने वाली वस्तु खाईं होंगी ॥

और कफ गिरने के लक्षण इन्हें, सिवाय - ज्वाब, दौड़ - धूप - और मिहन्त आदि हैं ॥

मवाद को निकाले और शाफ करे ॥

और कफ गिरने में पचाने वाली औषधोंका लेप भी लाभदायक है बिना मवाद निकाले हुंसे ॥

और जो पीठ में काय फूसी होतो लक्षण उसका वही है जो कफ के गिरने का है - परंतु इसमें बोर न हो गा या हलका होगा - और पीड़ा इधर उधर फिरैगी - इस का उपाय भी लिख चुके हैं - क्योंकि जह इसकी भी कफ है ॥

और जो विषय की अधिकता होतो विषयकस्ना छोड़ दे - और रोगन गुले और रोगन सुरजान पीठ पर मले और जो इससे लाभ न होतो कफका मवाद निकाल ॥

और जो गुर्दे की कसजोरी हो तो लक्षण और उपाय उसके वही हैं- जो गुर्दे के रोगों में लिखे गये हैं ॥

जो पीठ में बड़ी रग है उसमें रुधिर की अधिकता से हो तो पीठ के सहरो में गुर्दे के पास से-कमर तक का कुरलुखाई में पीड़ा और तपक हो- इसमें फुसद वासली का और साविज खोले और ठंडाई पिलावे- और ठंडी औषधें लगावे ॥

जो यह रोग रहस के विगाड़ से हो जैसे किस्त्रियों को हैज आने के समय हुआ करता है- जबकि मली माति खुलके न आवे इसमें हैज लगने वाली औषधें दें- और उसके निकालने का उपाय करें- और रोगान गुल पीठ पर मले ॥ + नर्धधो धुधो +

तीसरा पाठ ३ (२७७)

कोरवकी पीड़ाके विषय में

५०२० - २५१२
इसके कारण और लक्षण और उपाय पीठकी पीड़ा में देखें ॥

चौथा पाठ ४

५०२० - २५१२ - २५१३ - २५१४
मरिया के विषय में

यह पीडा शरीर के जोड़ों में होती है- इसमें कभी सूजन होती है और कभी नहीं होती ॥

जो घूतड़ों के जोड़ में पीडा हो उसे ²⁴ कंज उलवकी कहते हैं- और जो कूले से नीचे को उतरे पाँव तक तो अर्कूनि सा कहलाता है ॥ - ५७२ ॥ -

और जो टखने के जोड़ से ऊपर को चढ़े या पाँव की उँगलियों में होतो उसका नाम नुकसु है- बहुधा यह पाँव के अंगूठे में होता है ॥ *

और जो हाथ पाँव के सब जोड़ों में होतो वंजय मुफ़ मिल है ॥

सब प्रकारों के कारण और उपाय एक से हैं- इस वास्ते एक उपाय लिखा जाता है- और जो वस्तु केवल एक ही प्रकार के लिये है वह भी चलाई जाती है ॥

जो केवल गरमी ठंड या खुशकी से होतो हौले हौले उत्पन्न होगा- और जोर और पीडा न होगी- और इन विगाड़ों के लक्षण पाये जावेंगे- पीने और नुगाने की औषधों से मिज़ाज को ठीक करें- और तरी से यह रोग नही होता ॥

जो रुधिर की अधिकता से होतो उस स्थान पर छाछी और तपक और तर्नोच होगा- जो पीडा एक ओर होतो दूसरी ओर फ़स्ट स्वेले- और जो दोनो ओर होतो दोनो ओर से स्वेले- जो हाथ के जोड़ों में होतो फ़स्ट हफ़्त अंदाज स्वेले- और पाँव के जोड़ों में होतो वासलीक परंतु रुधिर अधिक निकाल- और जो मवाद के नरम करने की

४-
 आवश्यकताहो तो वैसी औषधें दें - और मित्राङ्ग के ठीक करने के लिये शर्वित पिलावें - और रोग के आदि और वर तीसरे फ़स्द के पीछे उन ठंडी औषधों का लेप करें - जो मवाद को इधर गिरने से रोके - और पीडी की अधिकता में सुन करने वाली औषधें भी मिलावें - और रोग के अंत में वनफ़शा और स्वेद आदि फिर पंचनि वाली औषधें से नाखूना और वाकूने के फ़ाल काममें लावें - चाहते हैं तो करे या लेप ॥

और जो पित्त के मिलने से रुधिर विग्रह जावे तो पित्त के लक्षण पाये जावेंगे - अर्थात् पीडा की अधिकता और जलन आदि फ़स्द खोले - और मवाद को नरम करें परंतु रुधिर अधिक न निकालें - फिर सूत्र लगने वाली औषधें जो ठंडी हों अति लाभदायक हैं - और वचाने वाली औषधों का लेप कभी न चाहिये - और इन दोनों प्रकारों से सिकंज बीज जो बहुत तेज न हो लाभ करती हैं ॥

और जो पित्त से पीडा होतो केवल उन्हीं के लक्षण पाये जावेंगे - इसमें मवाद को नरम करें - और मित्राङ्ग को ठीक करें - और उलटी अति लाभ कारक है - और फ़स्द न खोले - यह रोग केवल पित्त से बहुत कम होता है ॥ - अं २१०५

जो वाफ़ से होतो जोड़ बोभल होंगे और मसंड के लक्षण पाये जावेंगे - इसमें उलटी करावे - और मुंजिश दे के कई बार जुल्लाव दें - जब मवाद निकल चुके तो सूत्र लगने वाली गरम औषधें पिलावें -

और इसमें भूले से भी केवल वह ठंडी औषधें जो सवाद को इधर गिरने से रोकें - या केवल पचाने वाली औषधें भी न लगावें ॥ ३१ ॥

और जो सौदा से होते रंग काला होगा - और पीडा कम होगी - और सूजन में कड़ापन और तनाव होगा फ्रस्ट खोले और जब सवाद भली भांति पकजावे तो सौदा के जुल्लाव दें - और ऐसे मरहम लगावें जो कड़ेपन को नरम करें ॥ ३२ ॥

फ्रस्ट में नशतर चौड़ा लगावें - जो रुधिरगाटा काला निकले तो बहुत सा निकालें - और बंदन करें - और जो लाल और साफ निकले तो तुरंत बंद कर दें - और पहिले सवाद को सौदा की सुंजिशों से पतला कर लें - फिर फ्रस्ट खोलें ॥

जो वायु से हो तो पीडा फिरैगी और तनाव रहेगा - इसमें गुलकंद और गुलाव और सोंफ का बर्क और शर्बत बजूर पिलावें - और गोगन गुलमेल और कफ को निकालें और पचाव को रोक करें ॥ ३३ ॥

२५ ॥ २५ ॥ प्रकार वायु की पीडा की ऐसी है कि कड़ापन और तेजी इसकी हड्डियों तक पहुंचती है - और उसे तोड़ती है और बिगाड़ती है - इसमें रुधिर और पित्त को निकालें ॥

जो पीडा मिले इस सवाद से हो उसका उपाय भी वैसा ही करें - और सुरजान सब प्रकारों में लाभकारक है स्वाने में भी और लगाने में भी परंतु कफ के सवाद को अतिलाम दायक है - और इसमें जीरा सौदा मिला लेना चाहि

यै फिर मेदे को हानि न करेगी - और जब इसे खावे तौ जे
हों पर रोगन गुल मिलते रहें - और इसकी खुशकी से फिर हानि
निन होगी ॥

यह औषधें इस रोग में लाभ कारक हैं - सुरंजन
और मिश्री मिलाके कूट छान के सादे दश माशे उडे पानी
के साथ फंकावे ॥

सुरवा धनियाँ और चरावर शक्कर मिलाके
सादे दस माशे बिल्लावे ॥

सफेद खशखश पीसके चरावर शक्कर मिलाके
सात माशे फंकावे ॥

अस्पगोल गरम पानी में घोलके और रोगन गुल
मिलाके लेप करे ॥

मेथी के बीजों का लुआव और सिरका मिलाके
लेप करे ॥

जुकाम गादि में सुन्न करने वाली औषधों और
बड़ी औषधों में जब भजे में कोई बिगाड उत्पन्न होतो औषध
को तुरंत ही छुडाले - और चावूना और खैरू को जोटाके सि
खों धारे कि सवाद भजे से उतर आवे ॥

जब वजउलवर्क और अरकुनिसा में औषधि
से लाभ न होतो पहिले रोग में कूलेपर दागदें और दूसरे में
दखने पर ॥

अरकुनिसा जो रोग है - उसकी फ़रद भी लाभ
कारक है - वह रोग गंदी होती है - चाहिये कि लोहेकी
सीख भली भाँति गरम करके दरवने से आठ अंगुलकपर
दागदें चौडाई में और एक दाग पाँचकी छुगालियाँ और

दूसरी उंगली पर जो उसके पास है जड़ में जपर को मला
इं गरम करके लगावे कि एक लकीर सी पड़ जावे चोब
चोनी साविधानी के साथ जोड़ों की सब पीड़ाओं को
तिलाभ दायक है ॥ २- ५१० प १५

पांचवां पाठ ५

पिंडली की रंगें बड़ी और मोटी होकर ज्म
रजावे ॥ ५११ प १५

इसमें सौदा और काफ़ का मवाद निकालें-
और फ़स्द वासलीक और शुल्लाव और उल्टी के पीछे
हीं रंगों की फ़स्द खोलें कि उनके भीतर का मवाद निकल जावे
और जब रोग में कमी हो जावे तो भली भांति नमी से उन्हें बांधे
कि मवाद उलट न आवे ॥

छठा पाठ ६

पाँव सूजकर हाथी के से हो जाने के विषय में

इसका उपाय वही है जो ऊपर के पाठ में लिखा गया
है- और जो अधिक हो जावे तो अच्छा हो नहीं सकता ॥

सातवां पाठ ७

गंडीकी पीडाके विषयमें

८०७८९-७५१५

जो घाव से होतो सरहम लगावे ॥

जो चोर लगी होतो - मामीसा - गिलै अर्मनी - पानीया

गुलाब में पीसकर लगावे - और ठंडे पानी से धारें और पछने भी लगा सकते हैं ॥

और जो जूते के दवाने से होतो भी वही उपाय है ॥

और जो मवाद के गिरने से होतो रुधिर के मवाद में फ्रस्ड खोलें ॥

और जो कोई और मवाद होतो उलटी करावे - और तुल्लाब दें ॥

और गरम पीडा में रोगन गुल और ठंडी में चावुने और फराफियून और कूटका तेल मलें ॥

आठवां पाठ ८

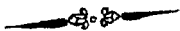
तलुयेकी पीडाके विषयमें

८०८९०-५३८१२०८५

इस पीडा में धरती पर पैर नहीं रक्खा जाता - मसूर को सिरके में पकाकर लेप करें - और जो रुधिर का मवाद अधिक होती सब से पहिले फ्रस्ड खोलें ॥

चौबीसवां अध्याय

॥२४॥



{ तपके वर्णनमें }

ध- ६५१ २५८८ २

तप तीन प्रकार की होती है - हुम्मायौसी - हु

म्मारिवल्ली - हुम्मादिवकी

पहिला पाठः

हुम्मायौसी के विषयमें

यह वह तप है कि इसका संबंध रूह से होता है और एक दिन में बहुधा जाती रहती हैं - इसके कारण बहु तप हैं जैसे दुःख - क्रोध - भूक - प्यास - धूप - भाग - भी जन आदि - जब कोई कारण इन कारणों में बर जाता है तो रूह गर्म हो जाती है और तप हो आती है - और रूहें - तीन हैं - नफसानी - हैबानी - तबई - इन तीनों में से जिस रूह के कामों में हानि हो जानी कि उसी रूह में

तप है ॥ ७॥८॥२८॥

हुम्मायौमी का लक्षण यह है कि गर्मी बिना जलन के बराबर रहेगी - जैसे कि बहुत मिहनत करने में ही ती है - और सड़ी तप और दिक् के लक्षण न होंगे - और वह धा एक रात दिन रहके उतर जाती है - जब कि दूसरी प्रकार की तप न हो जावे - इसमें कारण को दूर करे - जैसे उचित तपों ॥

इस तप में भोजन बंद न करें सिवाय उस तप के जो तुस्वमे से हो - और उल्टी भी न करावे - और न फ्रस्ट आदि परंतु जो तप सुदे से हो और कारण उसका सवादकी अधिकता ही और जब मेदे में पचाव न हो और गरम नी जूले में फ्रस्ट आदि कर सकते हैं - और इसतह साफ़ी तप में भी ॥

इसतह साफ़ी और सुदे की तप में शरीर काम लना और सहनत करना और गरम पानी से नहाना गति लाभदायक है ॥

इसतह साफ़ी वह तप है जिसमें शरीर के छिड़ बंद हो जाते हैं - और स्वाल, मैली और मोली हो जाती है - जैसे कि ठण्ड की अधिकता से स्वाल सुकड़ जाती है ॥

और सुदे की वह है कि पतली रगों में गाढ़ा सवाद फंस जावे ॥

६६ पुकरफ़ी तप उसको कहते हैं कि सहनत या नहान छोड़ देने से गर्मी रुके - और उससे रुह गर्मी हो जावे - चाहे सुहा पड़े या न पड़े ॥

और ज़हीरी तप वह है कि पेचिश की अधिकता
भादि से तप होजावे ॥

दूसरा पाठ २

हुम्मारिक्लीके विषयमें

शरीर में चार सवाद हैं - कफ़ - रुधिर - पित्त
सौदा - इसलिये इस तप में भी चार प्रकार लिखी जा
ती हैं ॥

पहिली प्रकार रुधिर की तप सक तो यह है कि
रुधिर केवल गरम होकर तप उत्पन्न करे और सडे नहीं दू
सरे यह कि सडे जावे - पहिले तप को सूना स्वस और दूसरी
को सुतविका कहते हैं - पहिली के लक्षण यह है कि रुधि
र की अधिकता होगी - और शरीर स्वसा गरम रहेगा - और
पसीना न आवेगा - और सुतविका में सूत्र और पेरवाने में
दुरगंध होगी और जितने लक्षण रुधिर के ओटने के हैं -
इसमें सोनास्वस से अधिक होंगे - जैसे होसके और सुग
मता से रुधिर को निकालें - आवश्यकता के अनुसार रुधि
र की गरमी को बुनावें - और रुधिर को साफ करे - पर
तु बड़त ठंडाई देना इसमें बुरा है कि इस से कफ़ का
सरसास होजाता है - सोनास्वस में जितना अधिक रु
धिर निकालें अच्छा है - और सुतविका में आवश्यकता
के अनुसार ॥
जब रुधिर पतला होजावे तो शर्वत उन्नाव

पिल्लके उसे गाढ़ा करें - और जो गांदा हो तो सिरके की सिकंजवीन देने से पतला होजावेगा और ऐसी औषधें दें- जो मवाद को नरम करें - और जब मवाद बुहरान के पीछे रगों में रहजावे तो हरी कासनी का अर्क ७० माशे फाड़के और साफ़ करके ५२ ॥ माशे सिकंजवीन मिलाके दें - जो खांसी का लगाव हो तो खड़ी वस्तु कसी न दें - बीदाने और अस्पगोल का लुभाव पिलावे - और शर्वत वनफ़शा चटावे और जो खटाई के बदले कोई और ऐसी औषधि दें- कि खांसी को भी लाभदायक हो और तप को भी तो बहुत अच्छा है - इस तप में ऊन्नाव भिगोके या औंटाके पास नी उसका कई दिन तक पिलाना अच्छा है - विशेषकरके जब कि रुधिर को गाढ़ा करना हो - और केवल अस्पगोल रुधिर को साफ़ करने को अच्छा है - और शाल्वुस्यारे का पानी भी लाभदायक है - और खांसी को भी हानि नहीं करता ॥

✽ दूसरी प्रकार पित्तों की तप है - चाहे अकेली हो या कोई और मवाद मिला हो लक्षण पित्त आदिका सिरपर इस पुस्तक के लिखा गया है - यहां इतना जानना चाहिये कि जो पित्त का मवाद रगों के भीतर सड़गया होतो तप बराबर रहेगी - और एक दिन बीच करके अधिक होगी इसका नाम मिर्चि लज्जिम है ॥ २ - मु० - २५ २६ २७ २८ २९

और जो यह मवाद दिल और मेदे के पासकी रगों में सड़जावे तो रोगीकी अधिकता होगी - इसका नाम तपे मुहरिका है ॥ ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९

और जो मवाद पित्तों चारगोसे बाहर कही सड़े

तो गिब्वे दायरु कहते हैं ॥ २० ७३२ ॥
 फिर यह मवाद जो निरे पित्तों के बिना किसी और

मवाद के तो गिब्वे खालिस बहेंगे ॥

और जो कफ मिला हो और ऐसा मिले कि दो
 नों मिलकर एक हो जावे तो गिब्वे गैर खालिस नाम
 होगा ॥

२० और जो कफ और पित्त का भली भांति मेलन हो
 हुआ हो - और अलग अलग हों तो शतुरुल गिब्व क
 हेंगे ॥

२० गिब्वे खालिस में तप एक दिन आवेगी - और एक
 दिन नहीं - परंतु जो दो गिब्वे इकट्ठा हों इस प्रकार से कि
 एक दिन आवे और दूसरी दूसरे दिन आवे तो वारी से अ
 नामालूम न होगा ॥

और गैर खालिस में एक दिन अधिकता
 होगी - और दूसरे दिन कुछ थोड़ा सा अन्तर हो जा
 वेगा ॥

शतुरुल गिब्व में पित्त और कफ रगों से बाहर
 सड़े होते लक्षण यह है कि एक दिन केवल कफ के लक्ष
 ण पाये जावेंगे - और दूसरे दिन दोनों के - क्योंकि कफ
 की तप रोज वारी करती है - और पित्त की एक दिन बीच
 करके तो जिस दिन पित्त की वारी न होगी उस दिन केवल
 कफ के लक्षण पाये जावेंगे - और पित्त की वारी के साथ
 दोनों के ॥

जो दोनों मवाद रगों के भीतर होते दोनों के
 लक्षण बराबर रहेंगे परंतु एक दिन बीच करके अधिक अंतर

होगायगा ॥ १५।१८८

२ और जो पित्त रोगों के भीतर हो और कफ बाहर
हो तो पित्त की तप बराबर रहेगी - और कफ की भी अपने
समय पर रोज आवेगी ॥ और एक दिन बीच बरके न
धिकता होगी - इन तीनों का नाम शतुरुल गिब्बे
खालिस है ॥ १२

२ और जो पित्त रोगों से बाहर हो और कफ भीतर
तो कफ की तप बराबर रहेगी - और पित्त की एक दिन बीच
बरके आवेगी जिस दिन पित्त की तप की चारी होगी उस दि-
न रोगों की बहुत अधिकता होगी - इसको शतुरुल गिब्बे खा-
लिस कहते हैं ॥

गिब्बे खालिस जो बराबर रहे सात दिन से अधि-
क और गिब्बे खालिस दायरा चौदह दिन से अधिक नहीं रखी
परंतु उपाय में भूलन हो ॥ + १५।१८८

पित्त को ठंडाई और तरी पहुंचाना चाहिये - और
र जो वाजज हो तो मवाद निकालें - और जब मवाद रोगों के
भीतर हो तो बहुत ठंडाई न दें - परंतु मवाद के पकाने
का ध्यान रखें ॥ और तपे सुहरा में ठंडाई अधिक
चाहिये - जिससे दिक् न होने पावे ॥ परंतु वह तपे सुहर
का जिसमें मवाद गरमी से अधिक हो उसमें पहले
मवाद की पकाना और निकालना चाहिये ॥ और ठंडाई
का ध्यान रखें ॥ और मवाद निकालने के पीछे ठंडाई
अधिक करें ॥ और इस पित्त की गिब्बे में जो रुधिर की
अधिकता हो - और सूत्र लाल और गाढ़ निकले तो
फ्रस्ट खोल सकते हैं - बहुत बरके नव कि मवाद रोगों

के अंदर हो परंतु जैसा कि रुधिर की तप में वे ध्रुव फ्र
 स्त खोल सकते हैं - वैसा पित्त की तप में नहीं कर
 सकते - और जो खोलें भी तो रुधिर बहुत थोड़ा निकाले
 और वह भी पकाने के पीछे और जब केवल पित्त हों और
 रुधिर की अधिकता बिल कुल न हों तो कभी फ्रस्ट
 न खोलें ॥

तपे दाइरी में जो हो सके तो बारी के दिन
 भोजन न दें - और जब जाड़ा और कंप कपी आने को हो
 तो सिंकज वीन गरम पानी के साथ पिलावे कि इस से
 उल्टी होजावे - और निकल जावे - और जो उल्टी नमी -
 होतो उब काई ही से पचजावे - और जाड़ा उठर जावे - और
 जब तप उतरने पर होतो पांशोया करें - और पाव गरम पानी
 में रक्वे और मले कि रही सही गर्मी सिरसे उतर जावे और
 उस समय सिंकज वीन भी पिलाना अच्छा है - जो मतली
 हो और कुछ ज्ञानि न होतो उल्टी करावे - और जो आंतों में
 गड़बड़ होतो जुल्लाव दें - और जो सूत्र खुलके नहीं आता हो
 तो सूत्र लाने वाली औषधें पिलावे - और जो शरीर पर तरी
 पाई जावे और पसीना खुलके न आवे तो पसीना लाने का
 उपाय करें - और जो इनमें से कोई बात न होतो जुल्लाव दें
 ना अच्छा है ॥

और गरम तपो में तुरंज वीन न दें - परंतु आलू और
 इमली के साथ और जब तक मेंवों के पानी से काम निक
 ले - कोई और पुष्ट वस्तु दस्त लाने वाली न दें - सिवाय मु
 लय्यन मुवारिक के ॥

और जब पित्त भकेले न हो तो विनाः

सुजिज्ञ दिये जुल्लाव और सुलय्यन न दें - परंतु
सवाद का औंत्ना कम करने के लिये दे सकते हैं ॥

जितना कफ अधिक हो उंडाई कम दें - परंतु ख
री क्लृप्तम में उंडाई देना चाहिये ॥

तप में जब तक इन सब बातों को भलीभां
ति न जान लें - उपाय न करें और कुर्सगुल और सिक्ज
वीन गुलकंद के साथ मिली हुई तप में अति लाभ दा
यक है ॥

तपे मुहरिका में बहुत पसीना और
नींद और सूक का होना और छींको की अधिकता
और सूच्छा आदि होती है - और नकसीर फूटती है -
और दम रुकता है - इन का उपाय भी तप के अनु
सार करें ॥

पित्तों के तप की एक प्रकार ऐसी है - जिस
में बराबर तप रहती है - और एक दिन बीच कारके अ
धिक हो जाती है - और पित्तों के लक्षण पाये जाते हैं - औ
र भीतर गरमी और बाहर ठण्ड होती है - उपाय इस
का वह है - जो गैर खालिसा का है - और सिक्ज वीन
और गुलकन्द लाभ दायक है - इस तप को लैफूरिया
कहते हैं ॥

इसी तप की एक प्रकार और है - इसमें वरि
के समय सूच्छा आजाती है - उसकी हुम्मागशिया कहत
है - इसका उपाय वही है - जो उस हुम्मायौमी का है - जो
कि सूच्छा सी हो जाती है - और वरि के समय रोटी नीचू के

भक्तिमें भिगोकर थोड़ी सी खिलावे ॥ +

तीसरी प्रकार कफकी तप है- जो इसमें कफ का स्वाद रगों के भीतर सड़ जावे तो उसको लसका कहते हैं ॥

यह स्वाद जो स्वारी कफ हो और दिल और बेदे के पास रगों के अन्दर सड़ जावे तो मुहरिका कहलावे गा इसमें और पित्त की मुहरिका में अंतर इनके लक्षणों से मालूम होजावेगा ॥

और जो कफ रगों के बाहर सड़ती नाइवा और पुआजिवा नाम होगा- परंतु लसका बराबर रहती है बिनाज डे और कभी कभी थोड़ी देर के लिये कुछ कभी कभी भी छोजाती है ॥

और नाइवा प्रति दिन में एक दो बार उतरजा ती है ॥

कफ की तप में कफ के लक्षण पाये जा वेगे- परंतु स्वारी कफ में वह लक्षण नहीं होते- क्योंकि इसमें गर्मी अधिक होती है- इसपर भी स्वारी कफकी गर्मीपि तो कभी गर्मीको नहीं पहुंच सकती ॥

स्वारी कफका लक्षण यह है कि रोंगटे शरीर पर रक डेहों- और ठंड और कपकपी थोड़ी हो ॥

२०६ ६ और जजली कफ में कपकपी अधिक होती है और स्वारी कफमें ठंड बहुत मालूम होती है- सीठे में वास और चहुवा कई वारियों तक रोंगटे खड़े होना + और ठंड और कपकपी कुछ नहीं होती- सात दिन तक शहद की सिक ज्वीन और शहद का पानी जिसमें थोड़ा सा जूफा गारा हुआ

हो और आशजौ जिसमें थोड़ी सौफ और चने रहें- और सिक्कंज वीन और गुलकन्द ३ च्छाहै- इसके पीछे सिक्कंज वीन और गरम पानी से वे- बहुत करके उस समय जब कि वारी आने को हो और बहुत सी पिल्लोवे- और जितनी उलटी सुगमता से आवे अच्छी है- और कभी कभी गुलकन्द के साथ अनीसून दें- और पोदीना और मस्तगी बराबर चवाया करें- जब मवाद मली भंति पक आवे तो जुल्लाव दें ॥

जो कवज हो तो रात को दवाय तुर बुद्ध जितनी उचित हो खिलाया करें- और सुबेरे गुलकन्द १९ माशे खिलके ऊपर से शहद की सिक्कंज वीन पिलाया करें- जब कि कवज दूर करना हो- और जो सूत्र गाढ़ा और रंगीन हो तो फ्रस्ट खोल सकावे हैं- और जब भेजा कम जोर हो तो सिक्कंज वीन न दें- और मवाद निकलने के पीछे कुरस गुल अति लाभ दायक है ॥ २३२५।

जो कफ की तप पुरानी हो और कपकपी अधिक आती हो- और शरीर देर में गरम होतो अजवायन कूट छान के शहद में मिलाके १०॥ माशे खिलवे- और गारी कून ३॥ माशे शहद ४॥ माशे में मिलाके खिलाना भी ऐसा हो है- ॥ २३०॥

और लसका में पकाने वाली और पतली करने वाली औषधें देने में इतनी जल्दी न करना चाहिये जैसी कि नायवा में कर सकते हैं- कहीं ऐसा न हो कि मवाद पिघल के सिर में चढ़ जावे- और सर साम हो जावे-

और सिरकी पीड़ा और भेजे की कमजोरी में तो ऐसा कभी न चाहिये ॥

एक प्रकार काफ़ की तप की ऐसी है- जिसमें भी तसंड और बाहर गर्मी होती है- उसको इनक्या बूस बोलते हैं- और एक और प्रकार है जिसमें भीतर गर्मी और बाहर ठंड होती है- उसका नाम लैफूरिया है- उसका वर्णन और उपाय पर हो चुका ॥

काफ़ की तप की एक प्रकार ऐसी है जिसमें गर्मी और ठंड इकट्ठा भीतर और बाहर होती है- और एक प्रकार में भीतर ठंड होती है- और बाहर असली हालत- और कफ़की कई चार बिना गर्मी के आवे- इन दोनों का कुछ नाम नहीं है ॥

एक प्रकार दिन को आती है- और रात को उतर जाती है- उसको निहारी कहते हैं- और एक प्रकार रात को आती है- और दिन को उतर जाती है- उसको लैली कहते हैं- इन सब में मवाद को पतलकरें ॥

चौथी प्रकार सौदा की तप है- इसका मवाद भी रोगों के भीतर होता लंबालाजिम कहते हैं- और लक्षण उसका यह है कि तप बराबर रहेगी- और दो दिन बीच करके अधिकता होगी ॥

जो मवाद रोगों के बाहर सड़ जावे उसको रुव दायक कहते हैं- और यह दो दिन पीछे दौरा करती है- और इस तप के आने का दिन उतर जाने के दिन समेत चौथा दिन होता है- इस लिये इसका नाम रुवा रंकरा गया

है इसी प्रकार से पाँचवें दिन वाली तप और छठे दिन वाली आदि जानों- परंतु चौथे दिन वाली बहुत आया करती है यह तपें या तो तबई सौदा के सड़ने से होंगी- लक्षण उनका यह है कि पहिले वह वस्तु खार्द होगी जो सौदाको उत्पन्न करे- और नाडी हल्की होगी- दूसरे यह कि रौरतबई सौदासे हो- और यह बात हम पहिले लिख चुके हैं कि जो मवाद जलता है वह रौरतबई सौदा होजाता है तो मालूम हुआ कि यह तपें रुधिर या पित्त या कफ या सौदा से होंगी- और लक्षण हर मवाद के पाये जावेंगे- परन्तु पित्तों की तप में गरमी और तपों से अधिक होगी- और जलदी जाती रहेगी ॥

तपें रुवा देखकर रहती है- और कभी पाँच छैः बारी होके जाती रहती है- और फिर जाने लगती है- इसमें नागीके दिन बहुत चारके इस रोग के आदि में स्वान्ता पीना बन्द करदे- और ठण्डा पानी और मेवे और वायें उत्पन्न करने वाली वस्तु और गरम खुश्क और जलदी सड़ने वाली वस्तु से बचें- और तर औषधों और भोजनों से गह्रां तक हो सके- मवाद को पकावें- फिर मवादको निकालें कई चार करके- और रुधिर की रुवा में फ्रस खोलें- परन्तु दो तीन चारियों के पीछे और २ प्रकारों में भी फ्रस खोलें- परन्तु मवाद के भली भाँति पकजाने के पीछे- और पित्तों की तप में पकाना अवश्य नहीं है- और जब फ्रस से रुधिर लाल और साँफ़ निकालें तो रोका दें- और जो यह तप देर तक रहे तो रोगी में जोर रहनेका ध्यान रखें और कड़ा परहेज न करावें- और हर महीने के सिरे पर

फ्रास्ट उसैलम खोलना और थोडासा रुधिर निकालना अच्छा है
और बारीके दिन ३ घडी पहिले खाली सीगियां लगाके बहुत
देर तक चूसना लाभ कारक है ॥

मिली हुई तपों की कई प्रकारें हैं - नाम उन
के अलग २ नहीं हैं - सिवाय शतुरुल गिब्व - और गिब्वेगे
र खालिसा के - और जिसकी इनमें से बारीका ठीक नहो
उसको 'सुख्त' लिता कहते हैं - और तपों के मिलने की तीन
प्रकारें हैं ॥

एक यह कि एक तप अभी उतरी नहीं कि दूसरी
चढ़े - उसको 'सुदाखिला' कहते हैं ॥

दूसरी यह कि एक उतरे और दूसरी चढ़े उस
को 'सुवादिला' कहते हैं ॥

तीसरी यह कि इकट्ठा दो तपें चढ़ें - चाहे सा
य उतरे या नहीं - उसको 'सुशादिका' और 'सुशाविका' कहते हैं
उपाय इसका सोच समझ के करें - जो अधिक हो उसका दूर
करने की अधिक आवश्यकता जानें ॥

तीसरा पाठ ३

दिक के विषय में

यह वह तप है जिसमें बुरी गर्मी शरिर के
बड़े बड़े स्थानों और दिल में बैठ जाती है - और अच्छी
तरी पहिले जाने लगती है - और आदि में उसको दिल

कहते हैं ॥

१ और जब दूसरा दर्जा होता है तो शरीर पिघलने लगता है- उसको जबूल कहते हैं ॥

२ और जब इससे भी बढ़ जावे और बाल गिरने लगे उसको मुफ्रतित कहते हैं- उस समय उपाय कारिन होजाता है ॥

बाकेली दिक् की पहिंचान यह है कि हलकी तप बराबर रहती है- और भोजन करने के पीछे गर्मी अधिक हो जाती है- और नाडी कमजोर होती है- परंतु खाने के पीछे नाडी में जोरपाया जाता है सूत्र में छिड़के से निकलते हैं- इसमें शरीर को तरी और ठंड पहुंचावे- और भोजन और मकान और हवा ठीक करे- और ठंडी औषधें और गधे का दूध और मठा पिलावे- जो सड़ी हुई तप नही तो इसके देने की क्रिया बड़े ग्रन्थों में लिखी गई है- इस तप में जहां तक हो सके शरीर के बड़े बड़े स्थानों को पुष्ट करवे और तरी पहुंचावे- और दस्त न आने दें- और जब कम जोरी बढ़ने लगती मात्र लहसं पिलावे ॥

सक और रोग है जो दिक् से मिलता हुआ है उसको दिक् शैखुखत और दिक्कुल हरस कहते हैं- वह यह है कि ज्वानं सूखकर बुढ़ों कासा होजाता है- और बुढ़े को होता वह और भी बुरा होजाता है- बिना गरमी के और बहुधा बुढ़ों को यह रोग होता है- और जवानों को कम और बच्चों को बहुत कम- तपों में ठंडी वस्तु अधिक खाने से दिलमें ठंड से बिगाड़ हो जाता है- या सहनत करने के पीछे ठंडा पानी पीलेने से या किसी और ऐसे ही कारण

से यह रोग होता है- इसमें मित्राज को गरम और तरबस्तु
 ओं से दीक करें- परन्तु बहुत न दें- और कभी कभी शहद
 चर्ते- और जब यह रोग 'जगह' पकड़ लेता है तो अच्छा होना
 बहुत कठिन है- परन्तु उपाय से हाथ नरोके कि जलदी म
 रने से बचें- और सोने का बर्क शहद में या गुलाब शर्बत
 में मिलाके खिलाना और मावळ लहस और अंडेकी ज़रदी देना अ
 तिलाभकारक है ॥

चौथा पाठ ४

सीतला के विषयमें

इस रोग में जो तप होती है उसमें वैचेनी और पीठ
 में पीड़ा होती है- और नाक खुजलाती है- और आंसू बहते हैं-
 और सोने में चौंक पड़ता है ॥

हृस्त्रसरा में मोतिया से वैचेनी अधिक और कमर की
 पीड़ा कम होती है ॥

सीतला निकालने से पहिले रुधिर कमकों-जवानों
 के फसद खोलें और बड़कों के जोकें लगावें- और चरम कर
 ने वाली ओपधें पिलावें- और शरबत उन्नाव बराबर पि
 लाया करें ॥

औग्वनिकलुआवे तो कभी मत्राद न निकालें प
 रन्तु भली भानि निकालने का उपाय करें- इस प्रकारसे
 कि शरीर को नरम कपड़े से टांके रक्वें- और ठण्डा

पानी स्कार घुंट देते रहें- और खूबकाला विछोने पर विछा
हैं- और ओंटाके भपाराहें ॥

पांचवां पाठ

हुम्माबबाईके विषयमें

यह तप बहुत बुरीहै बवा के दिनोंमें होतीहै
ताजिन स्कार रोगहै उसके निकलने में ॥

जब तक बर्हान निकले सवादको निकालें- और
रगरमीको बुरावे- और दिल और भेजेको पुष्टकरते रहें- और
संजव ताजिन निकल आवे तो उसका उपाय करें- जैसाकि
आगे लिखा जावेगा ॥

पच्चीसवां अध्याय

॥२५॥

सूजनों और फुन्सियों और उनरोगों

के विषयमें जो शरीरके ऊपर हो
ते हैं ॥

पहिला पाठ १

सूजनों आदिके विषयमें

छोटी सूजन को फुंसी कहते हैं- और सूजन
कई प्रकार की होती है- और उनका नाम भी बहुत ही
जैसा कि आगे लिखा जाता है ॥

फलांगमूनी- एक सूजन गांठी है- बहुत बड़ी
इधर के सवाद से उसमें पीड़ा और तपक अधिक हो
ती है ॥

फ्रस्ट् स्त्रोले और आदि में वह ठंडो भोषधें-
जो सवाद को इधर गिरने से रोकें लगावे- जैसे चंदनछा
लिया- गिले अरमनी- मामीसा- गक्राक्रिया- गुलाबके फु
लकासनी आदि और बढ़ने के समय दीला करने वाली
भोषधें मिलावे- जैसे जौका आटा- हराधनिया- खैरु-
खुब्बाजी आदि और अंत में दीला करने वाली और पका
ने और पटकाने वाली भोषधें मिलाके लगावे- जैसे बाकले
का आटा- और खैरु- खुब्बाजी- बाबूना- कनौवा आदि
और जब सूजन बढ़ने से रुकजाय तो अकेली पटकाने
वाली भोषधें लगावे- जैसे बाबूना और नाखुना गलसी

और मेथी के बीज आदि ॥

और जब मवाद न पचे और पकने पर बाजावें तो पकाने वाली औषधों का लेप करें- जैसे कनौचे औस्क तांके बीज और इंजीर आदि कि जल्दी पकजावे- फिर जो बायफूटजावे तो अच्छा है- नहीं तो फूटने वाली औषधें लगावें- जैसे कबूतर की बीट और श्योक या नशतर से चीर दें- और फ्रन्दके पीछे जो कवज हों तो मतवृख फ्रवा कहें या मुल ग्यन सुवारिक पिलावें ॥

यह जो रीत लेप की लिखी गई सब सूजनमें इसी प्रकार से करें- सिवाय उस सूजन के जो कानके पीछे और बगल के नीचे और रानके कोने में ही बड़े स्थानोंके मवाद दूर होनेसे हो वहां ऐसी ठंडी औषधें जो मवाद को इधर गिरनेसे रोकें लगाना न चाहिये ॥

सक्राक्रिलूस यह बहुत चुरी सूजन है- जि स स्थान पर होती है- उसको काला कर देती है और विगाड देती है- काला होने से पहिले गहरे पछने लगावें- और उसी जगह का रुधिर निकालें- फिर मटर का आटा सिकं जरीन में मिलाके लगावें- जब वह जगह बिलकुल काली होजावे ॥

सिवाय काट डालने के कोई उपाय नहीं है- उसी समय काट डालें- कि विगाड आगेको न बदे- और इसमें फ्रन्द कभी न खोलें- जो बड़े काटने के योग्य नहो तो आसपास उसके दाग दें ॥ - ५०२-१२५०५ (१-७५)

हुमरा- पित्त की सूजन है- जो केवल पित्त से होती जलन और चर्मक अधिक होती है- और फैलता है

गाचला जाता है- और पीला होता है- और जो पित और रुधिर के मेल से होता लाल होता है- और जलन नहीं होती- और न जलदी फैलता है- केवल पित में उन्हें निकालें- और रुंडी और तर औषधें लगावें- हर समय औसोमेन्ट से- जो तो पहिले फ्रस्ड खोलें- और फिर पित को निकालें- और दवा उसी रीति से लगावें- जो फ्रलगभूनी में लिखी गई हैं ॥

“जमुरा” यह दाने होते हैं फैले हुए और बहुत लाल पीला और जलन के साथ जैसा अंगारा होता है- इस में पित को निकालें- और जो रुधिर अधिक हो तो फ्रस्ड भी खोलें- और कुछ लोग यह कहते हैं कि रुधिर इतना निकालें कि सूखा आजावे और यह लेप लगावें- सिरके की तलछट गरम जमीन पर डालें- जब खोलने लगें तो उसे उताके कपूर में लाके लगावें- और जो गिले अर्मनी या सिर घोने की मिट्टी भी मिलालें तो अच्छा है ॥

चमट्टा- एक दाना या बहुत से दाने होते हैं- जलन और खुजली उसमें बहुत होती है- और अपनी जगह से बढ़ती नहीं- जो केवल पित होता खाल के ऊपर होता है या और जो रुधिर भी मिला होता खाल के ऊपर और मांसक भीतर पैदा हुआ होता है- कारण के अनुसार उपाय करें- और जमेरा चाला छेप लाभदायक है- और दवायें नरद आस पाम लगावें- और घाव का उपाय सफेद के मरहम से करें ॥

जाबरसिया- छोटे र दाने खाल पर नाजरी- कैसे होजाते हैं- नोक उनकी सफेद और जड लाल होती है

और अलग अलग निकालते हैं - इसमें पित्त और कफ का मवाद निकले - अनार के छिलके थोड़े से सिरके और गुलाब में पीसकर मले - और जो आवश्यकता हो तो फ्रस्ट भी खोले ॥

नार फारसी दाना है उसके भीतर पतला पानी भरा होता है और जलन और खुजली अधिक होती है - और रजव निकलता है - जलदी खुरंड हो जाता है - निकलने से पहिले उस जगह लाल और मोर के रंग की लकीरें पड़ जाती हैं - फ्रस्ट खोले और पित्त का मवाद निकाले - और मुरदासंग गुलाब में या मात्र सिरके में पीसकर लगावे ॥

निफातात छोले पड़ने को कहते हैं - इसके भीतर बहुधा पतला पानी भरा होता है - और कभी पतला रुधिर और कभी केवल गादी वाय होती है - और कुछ नहीं होता - फ्रस्ट खोले और रुधिर को गादा करें - और जब छाला बड़ा होकर फूल जावे तो सोने की सुई से फोड़ दे - जिससे पानी सब बह जावे - और ठंडी शीघ्रें मले ॥

पिनी दरोड़े होते हैं - लाल और चपटे छोटे हों या बड़े - और बहुधा अचानक हो जाते हैं - और खुजली और बेचैनी होती है - जो उससे पानी बहे तो ड्रुम कहते हैं - मवाद इसका बहुत कम्बे रुधिर या कफ होता है - और लक्षण हर एक के पाये जावेगे रुधिर में फ्रस्ट खोले - और कबज दूर करें - और सिरका और गुलाब और रोगन गुले मले - और कफ में मवादको

निकालें ॥

मांशरस यह सृजन पित और रुधिर से मुहप
रहोजाती है- इसमें मुंह लाल और पीडा और तपक होती
है- और सिर और कान और नाक और गाल और माथा सू
जजाते हैं- बहुत सा रुधिर निकालें- फिर मित्राज को चरमकर
और उस समय गले और छाती पर उंडी औषधें लगावे- किंम
बाद मुह से उतर कर छाती पर न गिरें और ३० दाने उन्नाव
के पानी में औंटाके सिंकांजीन मिलाके पिलाना अति ला
भ्दायक है ॥

ताजन सृजन है- जो बहुधा बवा के
देनों में होती है- इसमें जलन बराबर रहती है- और रंग
सका लाल या पीला या नीला या हरा या काला होता है-
न रंगों में हर दूसरा रंग पहिले से बुरा होता है- इसमें
दिल और भेजे को ठसड और जोर अधिक पहुंचावे- औ
र सृजन के आस पास उंडी औषधें लगावे- और उस
पर गहरे पछने लगावे- और गरम पानी से धो डालें-
कि रुधिरभली भांति वह जावे- और जो रुधिर की अधि
कता होती फ्रस्ट भी खोलें- परन्तु पहिले सृजन पर पछ
लगावें ॥

औराम मगाविन यह वह सृजन है

चगल में या कान के पीछे या चट्टों में उत्पन्न हो किना
पके और जो किसी और जगह के घावके या गुठली के का
रण से ही तो केवल 'जिद्वार' घिस कर लगावे- मवाद निका
लने की आवश्यकता नहीं- और जो शरीर के बड़े बड़े
स्थानों के मवाद दूर होने से होता दीन्ना कसने वाली औषधें

लगाने - और रुंडी औषधें जो सवाद को इधर गिराने के - नलगाने - और सवाद को पकाके चीरने का यकें ॥

आकिलो - सवाद इसका आंस में चारों ओर जल्दी जल्दी फैलता है - और सबरे से सांभ तक असलता स के बीज के बराबर हो जाता है - इसमें दागदें - और गिले गर्मनी सिरके में पीसकर आंस पास लगाने - और बदन से सवाद भली भांति निकालें - और घाव को सिरके और पानी से धोवें - जो इसमें लाभ न हो तो दागदें - इस प्रकार से कि तेल काड़काड़ा के आंस पास आकिले के आटे से घेरा बनाकर वह तेल इसके बीच में छाड़ दें कि जितनी जगह भुलस जावें ॥

दुम्मल - इस सूजन को सब जानते हैं - इसमें रुधिर को फारद आदि से निकालें - और सवादों को सुल्लावों से निकालें - और सवादों को तीन दिन तक रुंडी औषधें लगाने - और आदिसे अंडेकी सफेदी में मिलाके लेप करें - और चौथे दिन अस्पगोल पकाने चौरि - और पीप आदि से साफ करें - घावके भस्मे उपाय करें ॥

पकाने वाली औषधें यह हैं - इंजीर - इलुक - कर मले - रोहंका आटा गूंध के थोड़ा सा नमक और थोड़ा तेल - और शहद मिलाके सूजन पर बांधें ॥

फोड़ने वाली औषधें यह हैं - खट्टी - खमीर - के बीज - कबूतर की बीट - बिना बुझा चुना - अंडेकी शहद में मिलाके लेप करें - और नष्टर से बीरदंता

सब से उत्तम है ॥

डुबैला यह सूजन कुम्भल से बड़ी बिना पीड़ के शरीर के ऊपर या भीतर होती है। इसका मवाद भी कई रंगका होता है - जैसे काली मिट्टी और ठीकरी और चारबून ह ताल और चूने का सा - पहिले मवाद को निकालें - और भोज तथोडावे - और सरहस दारवलियून लेप करें - जब मवाद फकजावे तो चीर दें - चाहिये कि मवाद को कई बार करके निकालें - क्योंकि एक बारगी निकालने से इसमें सूच्छा आ जाती है - और जब सब मवाद निकल चुके तो पुरानी रुई घाव में भर दें - कि सारी पीप को चूस लें - फिर घावके भरने का उपाय करें - जो डुबैला भीतर होता है - उसका वर्णन अपनी अपनी जगह लिख चुके हैं - जब तक सूजन भली भांति न फकले उसे चीरें नहीं - और चीरने का स्थान उभरी हुई जगह है - जो पिले पिली हो और चाहिये कि छेवे को जीचेकी ओर सुका रक्के जिसे मवाद रेलसे निकल जावे ॥

ऊजीमा सूजन है सफेद बिना गरमी और पीड़ के इसमें मिजाज को ठीक करें - और कफका मवाद निकालें - और नंतरुत की रवारमें जो अंगूर के पेड़ की राख से बनाई गई हो और थोड़े सिरके में मिलाकर लेप करें - और रलुगा सिर के और गुलाबमें घोलकर लगाना लाभदायक है ॥

नफसा वायु की सूजन को कहते हैं - वह हल्की और उंगली से दवाने के पीछे फिर वैसीही हो जाती है - जैसे मशक में हवा भरी हो - चाय उत्पन्न करनेवाली वस्तुओं से बचें - और वायुकी तोड़नेवाली वस्तु खावें - और वाजरे के आटे से सेकें और नमक और अंगूर की राख और गौका गोबर

और फिरकरी और एलुआं सव को पीसके सिरके में मिलावे
लेपकरें ॥

सलजा - सूजन है मोटी चिना कडेपन के वि
नीचे खाल के हिलाने से हिलती है - अपनी जगह पर - इसमें
कफका मवाद निकालें - और मरहम दाखिलियून नित्य ल
गायें रहें - और जो इससे लाभ नहीतो वह औषधें लगावें जो
गला सडाकर फोड़ें - या चश्तर से चीरके भीतर से सावधा
नीके साथ उस गुठल को निकाल डालें ॥

गड्ढे - और गांरें - शरीरके ऊपर होती है
इससे और सलजा में यह अन्तर है कि यह बडे नहीं होते -
और बडे होते हैं - और जो मवाद अधिक होतो एकके पास
दूसरा भी निकल आता है - इसमें मरहम दाखिलियून लगावे
और भारी टुकडा सीसे का उसपर बांधें ॥

फुजिशला - उस सूजन को कहते हैं जो रा
दूद के स्थानों में उत्पन्न हो - परन्तु यह ताऊन की प्रकार
में नहीं है - उपाय इसका नहीं है जो औराम मुगाविन
का है ॥

खुनाजीर - चुरी सूजन है - और सलजे की
प्रकार उभरी हुई होती है और दब जाती है - और बहुधा नरम
मांस में उत्पन्न होती है - बहुत करके गर्दन और बराल में बला
मको निकालें - और दाखिलियून लगावें - और मवाद निकाल
नेके लिये हब्बे खीज्रान और हब्बे वासली और इतरी फल गुद
दी सव से उत्तम है ॥

सुकैरूस - कड़ी सूजन को कहते हैं - बहुधा
सोव के मवाद से होता है - सोदा को निकालें - और दाखि

लगावे- और कभी कफ से या कफ और सौदा से
मिलकर होता है- परन्तु इसमें कड़ापन कम होता है- मवाद
के अनुसार उसे निकालें- यह सूजन दो प्रकार की होती है
पीडी होती है और दूसरी में नहीं होती-

उपाय ही सकता है और दूसरी कानहीं ॥

सरतान - यह सौदा की सूजन है- अधि
कड़ी कालापन लिये हुये चुरे रंगकी- और बीच में
और भीतर को वैठी हुई और उसके किनारे लाल,
हरी रंग होती है- सब मिलाके कंकड़े कासा होना
॥

इसमें हौले हौले कई बार करके सौदाका
निकालें- और जिगर के मिजाजको ठीक करें-
उंडी औषधें लगावे जो मवाद को इधर गिरने से रोकें
तक कि पीप यडे- इसके पीछे घाव भरने वाली और उंड
वाली और बढ़ने से रोकने वाली औषधोंका
- जैसे कलईका सफेदा घोया हुआ तूतिया, भादि
मिलाके ॥

नहरुआ - सक दाना होता है -

- जिसमें से एक वस्तु रग कीसी निकलती है लाल
कालापन लिये हुस और बढ़ते २ सक सक बालिशत या
अधिक होजाती है और कभी स्वालके नीचे कीडे
रंगा करती है - आदि में फुसद खोलें फिर जोके लगावे- और
मवाद निकालें तरी पहुंचाने के साथ और रलुआ
और हरी कासनी के पत्ती में पीस के लगावे- और
इस रोग से लाभ कारक है - चाहिये पाहेले दिन ॥

मांशे रलुआ हरी कासनी के पानी में रात को भिगो दें- और सबेरे अकेला या कंद के साथ मिलाकर पिलावे- और दूसरे दिन ३। मांशे रलुआ लें- और तीसरे दिन ५। मांशे- और जब ब्रह्म बाहर निकलने लगें तो सीसे के टुकड़े पर लपेटे कि बोझ से बाहर निकलता आवे- और आसपास सूजन के रोग न सलें- और गरम पानी फुंकने में भरकर सेंके और ध्यान रखें कि नहरुवा रूदने न पावे- और जो दूध भी जावे तो लुस्वाई में चीर दें- कि सारा सवाद निकल जावे- फिर घाव को भर दें- और कसीले की माचून इस रोग को नहीं हाने देती ॥

जुजाम - इसमें शरीर का रूप बिगड़ जाता है और नाक चपटी हो जाती है - और भावाज वैठ जाती है - और मुंह फूलके गेर कासा हो जाता है - इसमें फ्रस्द और जुल्लों से शरीर का सवाद निवाले - और नित्य गरम पानी से स्नान करें - और खाने पीने और नाक में डालने और शरीर पर मलने से तरी महुंचावे - और चकरी का दूध अकेला या रोटी भिगो कर खाना अति लाभ कारक है - और जो बस्तु सौदा उत्पन्न करें - उससे बचें - और इसके उपाय से घ. नरावे नहीं - यह देर में अच्छा होता है ॥

साफ़ा - वाव को कहते हैं - जो सिर और मुंह पर होते हैं - जो तरी के साथ ही तो फ्रस्द खोलें - और हड़ और शाहूतरे को भोंटाके - पिलावे - इससे सवाद निकलेगा - और रुधिर को ठीक करें - और हलदी अनार के छिलके - मुर्दासंग - और महुँदी पीसके सिरका और रोगान गुल मिलाके लेप करें - और जो सूरवाहो और संपेद छिलके

खाल परसे उतरे, तो तरीपहुंचावे - एक प्रकार इसकी ऐसी है - जिसमें शहद का सा स्वाद निकलता है - और एक से दाने पड़ते हैं जिनकी नोकें सुई की सी होती हैं - और दूसरी ऐसी है जिसमें कड़ा दुस्वल हो जाता है और पीप नहीं पड़ती और एक इंजीर कासा होता है - और एक में हजामत कंनवा ने से सिरकी खाल लाल हो जाती है - इन सब प्रकारों में मक्खन को निकालें और मिर्जात को रीक करें ॥

खुजली जो सूखी हो तो तर बस्तु लगावे - फिर कई बार करके मक्खन निकालें - और गरम पानी से स्नान कर के रोगान गुल और सिरका मिलाके मले - और जो तरहो और पीला पानी उसमें से बहे, तो पहिले फ्रसद खोलें और जो स्वाद अधिक हो उसका जुल्काव दें - और गरम दवा कभी न लगावें ॥

हिक्का - उस खुजली को कहते हैं जिससे दाने न पड़े - इसका उपाय भी वही है जो ऊपर लिखा गया है - और जो खुजली पेशाब और पारवाने की जगह हो उसमें मेथी और बलसाम के बीज शहद के साथ औराके कपड़ा उसमें भिगोके साफाव नाके रखें ॥

खुजली - और "पिती" जो बच्चों को होती है - उसमें पड़ने याजोंके लमाके - गुलाब के फूल और कन्फुशा और नीलोफर और छिले हुए जो औराके शरीर को धोवे और ऊपर से रोगान मले और दूध पिलाने वाली अर्थात् वचने की माको औषधि फिर्मावे ॥

हसफ - छोटे छोटे दाने लाल शरीर पर निकलते हैं - उनमें खुजली अधिक होती है - फ्रसद और जुल्काव से पित

का सवाद निकालें- और नसक और मंहदी सिरके में मिलाकर मलें ॥

दाद ५ खुर खुराइट फैली हुई खुजली के साथ होती है- आदि में जबकि मांसके भीतर तक नहोतो रसौत सिरके में घोळकर या हड़ सिरके में पीसकर मलें- और जो कुछ मांसके भीतर पहुंच चुका होतो उस जगह पर जोके लगावे और उश्क या मुर सिरके में पीस के ऊपरसे मलें- और जो भलीभांति मांस के भीतर बैठ गया हो और खाल मोटी पड गई होतो पहिले फ्रस्ट और सौदा के जुल्लाव से सवाद को निकालें- और गरम पानी से स्नान करें- फिर उस जगहका सूँधिर निकालें- और तीव्र औषधें जैसे हरताल-उश्क और राई-गूगल-फिटकरी गेहूं के तेलमें और सिरके में मिलाकर लगावे- जबदाद जाता रहै तो उंडी औषधि कई दिन तक लगावे- कि फिर नहोने पावे- और बच्चों के दाद में वासी यूक लगावे- और जब दाद औषधि से गच्छानहो और संभव होतो चीर दें- फिर तीव्र औषधें लगावे कि बुरा मांस गल जावे- फिर वह औषधें लगावे जो घावको भरें ॥

लिखनी खुदासे ५ सफेद फुंसियां होती हैं नाक और मांसके ऊपर निकलती हैं- इनमें शरीर से कफका सवाद निकालें- और अंगूर की लकड़ी की राख सिरके में मिलाकर लेप लगावे ॥

चनातुल लैल ५ छोटी २ फुंसियां रातको उंडके समय निकलती हैं- और इनमें खुजली भी होती है- फ्रस्ट और जुल्लाव से सवाद को निकालें- और गरम पानी से स्नान करने और मलने से शरीर के छिद्र खोलें जैसाकि

खुजली में लिखा गया है- और कफ़स के पानीमें सिरकेकी तलछट मिलाकर मलना लाभकारक है ॥

मससे ॥ अधिक कड़ी फुंसियां कड़े प्रकारकी होती हैं- पहिले मवाद को निकालें- और नमक और सिरकास लें- और रोगान् गुल्ल से चिकना रकवें ॥

वल्खीया ॥ इन फुंसियों मेंसे फूर के पानी वहता है और ऊपर खुंरुंड जमजाता है- और इनके साथ बहुधा दिल् घब रता है- और सूँछी आती है- पहिले मवाद निकालें- और गिल्ले भर्मनी, सिरके में पीस कर नित्य लगाया करें- जब तक कि घाव सूख के नया मांस न जमे ॥

वतम ॥ यह काली फुंसियां होती हैं- जो पिंडली पर निकलती हैं- इनमेंसे काला पानी वहता है पहिले फसद वासलीक खोलें- और कड़े वार उल्टी करावें फिर नों को या पल्लों से उसे जगह का रुधिर निकालें- और जलीहु ई महं दी मासीरा पीसके सिरके और रोगान् जैत मिलाके लगाया करें ॥

तौसा ॥ फुंसो है घाव वाली कि मांसके भीतर शहदत कीसी होती है- मवाद निकाल के सरहम जंगार लगावें- कि दुरा मांस गलजावें- फिर भरने वाली सरहम लगावें ॥

लोथर ॥ गरम सूजन है- जो नारखुनों कीजड में होती है- इसमें पीडा और तपक और रिवंचाव अधिक होता है- और कभी तप भी होजाती है- फसद और जुब्लाबके पीछे मिजाज को दीक करें- और आदि में अस्पगोल सिरके

में घोंलकें और बर्फ में ठंडा करके लगावे - और जो पीडा अधिक होती खुरासानी अजवायन और अफ्रीम सिरके में पीसके लगावे - और जो इससे अच्छा नहोतो रोगन जैत गरम करके उंगली वससे रक्खवे कि मवाद पक्कजावे - और जो इससे भी लाभ नहोतो अलसी और कनोचे के बीज मले - और जब सूजन पक्कजावे तो चीरदे - जब पीप साफ होजावे तो भर लानेका उपाय करें ॥

अबूरसमा - चोट लगने या कुंचल जाने से खाल के नीचे रग फटजाती है - और रुधिर और वायु उसकी खाल के नीचे अटक रहती है - लक्षण उसका यह है कि रगके खुलने पर सूजन दबजावेगी - और खुलने पर उभर आवेगी - क्योंकि खुलने में रुधिर रगके अन्दर खिंचजावेगा - और बन्द होने में फिर बाहर निकलेगा - और रंग उतनी खालका बैगनी और नीलाइट लिये होगा - काबज करने वाली औषधें लगावे - जैसे शाहबुलूत और साजू आदि और जो औषधें रुधिर को हिलावे उनसे बचें ॥

कई प्रकार की फुंसियां और दाने होते हैं - एक यह कि छोटे २ दाने जिनकी जड़ें सफेद और कड़ी हों - और देर में पके - और सिरों से उनके थोड़ी २ पीप बहे तो उनको ज़ातुल बस्तु - कहते हैं ॥

दूसरी वह कि कड़ी हों और मुंह पर निकले - और गाल पास लाली हो उनकी - शैलम - कहते हैं ॥

तीसरी वह जो कानपटी पर कानकी जड़में होती है और चीरने से गादा रुधिर निकलता है ॥

चौथी प्रकार ऐसी ही होती है - जो सिर और गर्दन

के नीचे निकलती हैं - वह बहुत सी निकलती हैं - और थोड़ा जन्म में अधिक होती है ॥

पांचवीं प्रकार वह है - जो छोटी गौर कड़ी और पीड़ा रहित हो और देर तक रहें - और एक जगह से जाके दूसरी जगह निकल आवें ॥

इन सब में मवाद के अनुसार मवाद को निका लें - और लेप लगावें - और सिर और गदन की फुंसियों में रोग नवन प्रशा स्त्रीके दूधमें मिलाके नाक में टपकावें - और सिर पर मले ॥

आकृष्ट फारंग यह रंग चरंग के दाने होते हैं - जिस मवाद की अधिकता हो उसी को निकालें ॥

दूसरा पार २

खालके रोगोंके विषयमें

— ८ ५ —

सफेद दाग यह गाढ़ी सफेदी होती है जो खाल पर होती है - और सम्पूर्ण शरीर पर भी हो जाती है ॥

छीप यह खालकी सफेदी खाल पर होती है - अंतर इन दोनों में यह है कि पहिली में चमक होती है - और दिन प्रति दिन खालके भीतर फैलती जाती है - और सुई चुभाने से रुधिर नहीं निकलता और छीप बहुधा गोल होती है - और अचानक उत्पन्न हो जाती है - और सुईसे रुधिर निकलता है ॥

काठी छीप और दाग से खाल उठती है -

परंतु छीप की पतली होती है - और दागों की मोटी - जैसे मछली के छिलके - सफ़ेद छीप और दाग में कफ़ का सवाद निकालें - और काले में सौदा का फिर तुरुमुस और मूली के बीज सिरके में पीसकर सफ़ेद छीप में लगावें ॥

और काली छीप और दाग में काली कुटकी सिरके में पीसकर लगावें ॥

सफ़ेद दाग ॥ अर्थात् कोढ़ में काले सांप का रुधिर लगाता लाभ कारक है ॥

ॐ लई मांई ॥ जो मुंह पर पड़ती है इसमें और काली छीप में यह भेद है कि छीप खुद डी होती है - और यह साफ़ होती है ॥

तलमश ॥ मुंह पर और शरीर पर लाल बूंदें हो जाती हैं ॥

वरग ॥ वैसी ही काली बूंदें हैं ॥

इनमें रेवंद चीनी शहद में पीसके लेप करें - और पीला हरताल हरे धनिये के पानी में पीसके लगावें - जो इससे भी लाभ न हो तो सब शरीर का सवाद निकालें - फिर लेप लगावें - और औषधि लगाने से पहिली उस स्थान को गरम पानी से सेकें - और औषधि भी गरम कारक ही लगावें ॥

तिल ॥ काले और नीले होते हैं - इनका वह रूपाय है जो मांई का है ॥

चोत पड़ने या दबने से रग फट जावे और खालके नीचे रंडा हांके नीला हो जाता है - जब पीडा जाती रहे तो कारम्ब के पतों या पोदीने का लेप करें ॥

नीला गोदा ॥ जो स्त्रियों के होता है उस के ॥

मिटाने का उपाय यह है - कि नतरून और गरम पानी से उस जगह को मलें - और फिर इलकुल वतम शहद में पीसके कड़े वार लगावें - जो इससे नमिरे तो अस्तु बलादर लगाके सुई की नाक से कोचें कि घाव पड़े नीलाहट वह जावे ॥

³ वादशनाम - सुरस्वी हाय पांव और मुंह पर पड़ ती है - और विशेष करके रंडमें - इसमें फस्द खोलें और हड़के और के जुल्लाव दें - और जो घाव होतो लाल मरहस लगावें और उसी जगह का रुधिर निकालें - और सावन लगावें - जब वह सूख जावे तो गरम पानी से धोकर फिर लगावें - और इसी प्रकार कई बार करें ॥

घूप में फिरने या कमजोरी या गरम औषधें खाने या किसी मवाद की अधिकता से शरीर का रंग बदल जावे तो कारण को रोके और मवाद निकालें - और ठीक और पुष्ट करें और वाकलेके आटे से मुंह धो डालें ॥

सिरसे भूसी भड़े तो रोगन मलें - और चु कन्दर के पानी में नमक डालके सिर धोवें - जो इस से लाभ न होतो कफ और रुधिर और सौदा का मवाद निकालें ॥

हाय पांव आदि जो हवा की गरमी या रंह से फटें तो सोमरोगन मलें - और जो भीतर के विगाड से होते तर औषधें काम में लावें जैसे दूध आदि - और मवाद को निकालें ॥

जो खाल कड़ी हो जावे या उतरने लगे तो मवाद को निकालें - और तररोगन मलें ॥

जो खाल छिलजावे तौ मुर्दासिंग गुलाबमें घिस
 कर मलें- जो सूजन का डर होतो फेंसु खोलें- और कपडाप
 नीमें भिगोकर रक्खें- परन्तु जो पेटके किनारे परहोतो भीग
 कपडान रक्खें ॥

बाल सुखंठ मंथ!

तीसरा पार ३

बालोंके रोगों के विषयमें

कभी बाल झड़जाते हैं और खाल नहीं उतरती और
 कभी दोनों बातें होती हैं- यह खालका विगाड़ है- इसमें मवा
 दको निकालें ॥

जो बिना विगाड़ के बाल रुड़े और टूटें तौ कारण
 के अनुसार उपाय करें ॥

जो सिरके बाल झड़के खाल नरम होजावे तौ ज
 लदी नलदी सिर मुड़ाया करें- और आस और आमलेका तेल
 नित्य सिर पर मला करें ॥

जो चंदियाके बाल उतर आवें तौ उसका भी यही
 उपाय है- परन्तु जो चुंदापे से होतो अच्छा कदापि नहीं होस
 कता है ॥

जो बाल खुश्की से फरने लगे तौ तर औ पधें वों
 रोगन लगावें ॥

जो मिरकी खाल चिकनी होजावे तौ इतरी फल
 से मवाद को निकालें ॥

जो बुढ़ापे से पहिले वाल सफ़ैद होजावेतो सवेरे
नित्य एक हडका मुरब्बा खावे- और महीने में सात दिन इ
तरीफल सगौर खायाकरे- और दो महीने पीछे कफ़का
गुल्लाव लियाकरे- और खड़ी वस्तुओं और फ़ास्द और विषय
की अधिकता से बचे ॥

जो चाहैकि वाल काले रहे- तो लाइन और आ
सका तेल मलाकरे- और वालों को लम्बा करने के लिये ग
मलेको पानी में भिगीके आस और गुलाब के फूल छानके उ
स पानी में मिलाके सिर धोले ॥

वालें तपन् करने के लिये पुराना रोगन जैतले
कर उसमें कैसूम की राख और समन्दर फ़ैन मिलाकर मले-
और जो उपाय वाल मडने काहे वहीकरे ॥

और वालों को उतारना चाहें तो चूना और हर
ताल लगावे- इसको चूरा कहते हैं- परंतु पैड़के वाल उत्तरे
से मुंडना अच्छा है- इससे विषय की चाहना अधिक होती
है- और वहां चूरा लगाने से हानि है ॥

और जो चाहैकि वाल न निकले तो बन्त जर्जी
र अफ़ीम और शूकरान सिरके में पीसकर मले- और साजू
र कलुयेका रुधिर और चेंटी के अंडे मलना भी यही लाभ
देता है ॥

और घुघर वाले और घने वाल होने के लिये वेरी
के पते और साजू और मैथीके बीज पानी में डालके उस पानी से
सिरको धोवे ॥

और वालों को पतला करने के लिये डलदी
की राख चूरे में मिलाके गोली बनावे- सूखे वालों पर दिन

भरमें कई चार सूखी गोली फेरा करें- परंतु एक जगह पर रहें-
वे नहीं तो बाल रुड़ जावेंगे ॥

बालों के सीधा करने के लिये कि उलरुं नहीते
को पानी में मिलाके मुन गुना मलें ॥

खिजाव के लिये सुर्दा संग- बुझाहु भा चूना- और
र मुलतानी सिद्धी- तीनों चरावर लेकर पानी में पीसकरे बालों
पर लगावे- और अरंड का पत्ता अपर बांधें- पहर भर पीठ
खोलकर पानी से धोडालें- और लगाने से पहिले सीधो
लें कि मैल न रहै- और न कोई रोगन सिवाय रोगन गुल
के लगावें ॥

और बालों को लाल पीला पन लिये हुरे कर
ने के लिये महुंदी शराब की तलछट, रातीनज मिलाके पानी में
पीसें- और फिरकरी और हरताल मिलाके मलें ॥

और बालों के लाल करने के लिये- सींद और कुं
दुशको ओटाके धोवें ॥

बनूमाश को पीसके सिरके में मिलाके लगाना
बालोंको सफेद करता है ॥

चौथा पाठ ४

— ८ * ८ —
चार बूनों के रोगों के विष
यमें

नारखून सफ़ैद होजावे तौ मेथी और अलसीके बीज कूटके शहद में मिलाके छेपकरें - और जो इससे लाभ नहो तो मवाद निकालें ॥

जो पीले पड़ जावे तौ जरजीर के बीज सिरके में पीसके लगावे और पित्त का मवाद निकालें ॥

जो उनमें पीडा होतो आसके पत्ते और सरोके पत्ते कूटके मलें ॥

जो नारखूनो की जड़े सोटी और कुरूप होजावे तो सौदा का मवाद निकालें - और भरहम दारवलियून और सोमरोगन लगावे ॥

जो नारखून फटते होतो तरी पहंचाना चाहिये और सौदा का मवाद निकालें - और बतख की और सुरा की चरबी मेथी के लुभाव में मिलाके मलें ॥

जो नारखून कफ़ के कारण दीले होके गिरते होतो पीडा नहोगी - कफ़ का मवाद निकालें - और जो रुधिरकी तो नीसे होतो फ़स्द साफ़िन खोलें और पिंडली पर पछने लगावे जो हाथके नारखूनो में होतो फ़स्द वासलीक और जो पांवके नारखूनो में होतो शरबत उन्नाव पिलावे ॥

जो नारखूनो में खुजली होतो नदी के पानी से घेके और इंजीर कूटके लगावे ॥

जो नारखून कुचल जावैती आदि में आस और नारके पत्ते कूटके बांधें - फिर गेहूंका बाटा जैत में मिलाके बांधें ॥

जो नारखून अवरक की प्रकार सफ़ैद और चमकीले और सुर सुरे होजावे तो माउल उसूल और गुलकंद और सिक्क

भरमें कई बार सूखी गोली फेरा करें- परंतु एक जगह पर रहें-
वे- नहीं तो बाल रुड़ जावेंगे ॥

बालोंके सीधा करने के लिये कि उल्टे नहीते
को पानीमें मिलाके गुन गुना मलें ॥

खिजाव के लिये सुर्दा संग- बुभाहुआ चूना- और
रमुलतानी मिट्टी- तीनों चरावर लेकर पानीमें पीसकर बालों
पर लगावें- और अरंड का पत्ता अपर बांधें- पहर भर पीठ
खोलकर पानी से धोडालें- और लगाने से पहिले भी धो
लें कि मैल न रहे- और न कोई रोगन सिवाय रोगन गुल
के लगावें ॥

और बालोंको लाल पीला पन लिये हुरे कर
नेके लिये महुंदी शराव की तलछट, रातीनज मिलाके पानीमें
पीसें- और फिटकरी और हरताल मिलाके मलें ॥

और बालोंके लाल करने के लिये- सौंदा और कुं
डुशको गोटाके धोवें ॥

बनूमाश को पीसके सिरके में मिलाके लगाना
बालोंको सफेद करता है ॥

चौथा पाठ ४

— . ८ * ८ . —
चार बूनोंके रोगोंके विष
यमें

नारबून सफ़ेद होजावे तो मेथी और अलसीकेबी
जकूटके शहद में मिलाके लेपकरें - और जो इससे लाभ नहो
तो मवाद निकालें ॥

जो पीले पड़ जावे तो जरजीर के बीज सिरके में पी
सके लगावे और पित्त का मवाद निकालें ॥

जो उनमें पीडा होतो आसके पत्ते और सरोकेप
ते कूटके मलें ॥

जो नारबून की जड़ें सोटी और कुरूप होजावे तो
सौदा का मवाद निकालें - और सरहम दारवलियून और
गंसरोगन लगावे ॥

जो नारबून फटते होते तरी पहुंचाना चाहिये
और सौदा का मवाद निकालें - और बतख की और मुर्ग की
चरबी मेथी के लुआव में मिलाके मलें ॥

जो नारबून कफ़ के कारण दीले होके गिरतेहों
तो पीडा नहोगी - कफ़ का मवाद निकालें - और जो रुधिरकीतो
जो से होतो फ़स्द साफ़िन खोलें और पिंडली पर पछने लगावे
जो हाथके नारबून में होतो फ़स्द वासलीक और जो पांवके
नारबून में होतो शरबत उन्नाव पिलावे ॥

जो नारबून में खुजली होतो नदी के पानी से धोके
और इंजीर कूटके लगावे ॥

जो नारबून कुचल जावैतो आदि में आस और ज
नारके पत्ते कूटके बांधें - फिर गेहूंका भाटा जैत में मिलाके
बांधें ॥

जो नारबून अवरक की प्रकार सफ़ेद और चमकी
ले और सुर सुर होजावेतो माउल उसूल और गुलकद और मिर्क
३

वीन रोगन चादाम मिलाके दें जब मवाद पवाचुकेतोइसीसू
गैराके पिलावें और बकरी की पीरका मैल चर्बी और चादाम
मिलाके लगावे ॥

नाखून पर चोट लगने से रुधिरनीचे जम जावे
तो जिहा लगावे - और जरजीरके बीज सिरके में पीसकर मले
और दिन में कई बार मुंहमें उंगली डालकर चूंसे यह अतिल
भदायक है ॥

जो नाखून को उरवेइना होतो हरताल औरजा
वशीर कडुये चादामके तेलमें मिलाके मले - और जो प
हिले मरहम दाखलियून लगाले तो शीघ्र लाभ करेगा ॥

पांचवां पार ५

अलग अलग रोगोंके बिमैसे

चूंये और लीखें और धक चाहें सिरमें या कहीं
और पडेतो स्वारी पानी से स्नान करें और जल्दी जल्दी उजले
कपडे बदला करें - और गोहकी नीट और नौशादर सिरकेमें
घोलकर मले - जो पसीना बहुत आवे अधिक खाने सेतो
भूखा रखें - और जो कमजोरीसे होतो पुए करें - और मानू
पीसके मले और भासके पत्ते जलाके धूनी लें - और सेसे भी
जन रियलावें जिनसे गादा रुधिर उत्पन्न हो और पसीना रुक
जावे - और नंगा रहना - और रुलके कपडे पहनना - और
हवा में बैठना - और पसीने का न पोंछना लाभकारक है -

और यह रोगन पसीने को रोकता है - और दिलकी पुष्ट करता है - और सूँछा को लाभ कारक है - सेब और बिही का पानी और गुलाब रोशन गुल में मिलाके आग पर जलवे कि रोगन रह जावे ॥

बुहरान के दिन जो पसीना विशेष निकले तो उसे बन्द न करें - जबतक कि सूँछा और कमजोरी का डर न हो ॥

जो पसीने में रुधिर निकले तो फ़रसद खोलें - और जुल्लाव दें - और वह औषधें पिलावे जो रुधिर की गर्मी को बुझाती हैं - फिर उसी औषधें शरीर पर मलें जो उसके छिद्रों को बंद करें - जैसे अनार के छिलके और आसके पत्ते पाइनके पानी से स्नान करें ॥

- शकते - अधिक द्रवला पन और मुरापा भी एक रोग है - सोता का उपाय यह है कि पहिले उसके कारण को दूर करें - फिर वह भोजन और औषधें समयके अनुसार दें - जो शरीर को ताजा करें - और यह औषधि गति लाभ कारक है तोदरी सफ़ेद - तोदरी लाल - स्वशस्वाश - सफ़ेद बादाम - हव्युस्तनोवर - हव्युस्तमता - खुन्दुका - हव्यतुलखिजरा सब को बराबर लेके कूट छान के गाय के घी में चिकना करके हलुआ बनावे - और सबेरे और सांरुकी जितना उचित हो खिलावे - और भोजन ऐसा दें जो अच्छा और गादा और तर रुधिर उत्पन्न करें ॥

और द्रवला करने का उपाय यह है कि जुल्लाव दें - और सूत्र लाने वाली औषधें पिलावे - और भोजन और पानी थोड़ा दें - और सोये और कूट का तेल मलें - ९

और इतरीफल और कसूनी खिचने - और कडी जगह पर
सुलावे - और यह औषधि शरीर को दुबला करती है - कोई
हुई लारव ३॥ माशे सिरके में पीसकर नहार सुंह खिचने
वे ॥

सिर और मांथे की खाल खिचने में बनफशे या
कहू और काहू का तेल - और स्त्रीका दूध मले - और भेजेका
मवाद निकाले - और जो जन्म से होता अच्छा नहीं हो सक
ता ॥

जो सिर बड़ा हो जावे तो चमडे की टोपी बनाकर
पहनावे - जो बहुत तंग हो - और पांव और पिंडलियां मले और
भोजन थोडादे ॥

जो सर्दी की समय बंगलियां फूलें और खुजला
वे तो खारी पानी या चुकन्दर के ओटे हुए पानी से धोवे ॥

जो दुई घायल और लाल हो जावे तो आदि मे
चैरने और चितलेटने से रोके - और रसोत - गिलैअर्मनी - अका
क्रिया - और गुलनार आदि लगावे - और घावों पर सफेदेकासर
हम लगावे ॥

जो शरीर से दुर्गंध आती हो तो मवाद निकाले
फिर मुरदा संग गुलाबमें घिसकर मले और नोशदाकू खि
चने ॥

+ 20 (11 11 11 11) -

जो रंड से हाथ पांव काले और विगड जावे तो
सूजन होने से पहिले रोगन जैत या कोई और गरम रोगन मले
और जब सूजन होता आदि में नारखूना और सीया और मेथी अ
लसी आदि को ओंटाके हाथ पांव उसमें रखे और जब उससे
निकालें तो रोगन गुंठ मले - और पिसी हुई मसूरको ओंटाके

और जब कालक आजावे गहरे पछने लगावे
 रक्खे और रुधिर को बहने दें - कि आप बंद होजावे-
 ती गिले अरमनी पानी और शहद और सिरके में पीसकर
 लगावे - और थोड़ी देर पीछे पानी और सिरके से कोई वा
 रघोवे ॥

जो आग से जल जावे और फफोला न पडा होतो
 कोपडा वरफ पर दसडा करके जली हुई जगह पर रक्खे - और
 हर घडी बदले - और गिले अरमनी पानी और सिर के में मलवे
 और मसूर उसमें पकाके लेप करें - और काजल गोंद में घोट
 के लगाता - और अंडे की सफेदी लगाना और दही और दुध मल
 ना लाभ कारक है - और जब छाला पडेतो फरस खोले - और सफे
 और चूने का मरहम लगावे ॥

जलते हुये तेल से जल जाने में बड़ी उपाय
 करें - जो आग से जल जाने का है - फस्तु अन्डे की सफे
 दी तेल में घोलकर सफेदा मिलाके लगाना अति लाभ का
 रक है ॥

खोलते हुये पानी से जल जाने में नीकी राख
 अंडे की जर्दी में मिलाकर लगावे ॥

विजली से जल जाने का उपाय बड़ी है जो भा
 गका है ॥

धूप से जलने से काफूर और सिरके के मूर
 हम मले ॥

मिलावे के चप लगने से जलन होतो पछने
 लगाके सींगी लगावे - फिर सिरके का मरहम लगावे ॥

और उबकाई और हिचकी उसमें बराबर रहती है - छाती का घाव भी ऐसा ही है - उससे हवा निकलती है - छाती के परतों का घाव बुरा है इसमें दम रुकता है - और सड़े का घाव भी बुरा है - पेट का खाना इसमें से निकल आता है - सिवाय इनके जहा घाव हो तो कुछ डरज करें - जो सीधा हो तो संके लगावें - और कोई हड्डी का टुकड़ा हो उसे निकाल डालें - ज़रराह बुद्धि मान और देखकार चाहिये ॥

जो कोई वस्तु चुभ जावे तो पहिले उसे निकालें - फिर मुर और कुन्दर घाव पर छिड़कें ॥

१३
॥

सातवां पाठ

— ❁ —

कुरह के विषयमें

इसकी प्रकारें भी बहुत हैं - यह भी ज़रराही से संबंध रखता है - जो थोड़ा हो तो आँसु आँप अच्छा होजाता है - और जो बहुत हो तो वह मरहम लगावें जो बड़ी पुस्तकों में लिखे गये हैं - और नीव के पत्ते कूटके शहद में मिला के बांधें और परहेज और मवाद निकालना अति लाभदायक है - और नासूर को पहिले गुलाब से जिसमें अंगूर की लकड़ी की सख पडी हो भली भाँति धोवें और समुद्र के पानी से या सावन के पानी से जिसमें थोड़ी हरताल और नोशावर मिठाहो धोना अति लाभकारक है - और फिर पुरानी रुई गुलाब या माउल अस्त में भिगोके इंजस्त - रलुशा - मुर -

जो पान खाने से चूने के कारण जीभ फट जावे तो
 लुभाव अस्पगोल आदि से कुल्ली करें - और घादान
 यफल का तेल मले, और खोपरा चवावे ॥

घाव

॥ ६ ॥



घाव के विषय में

मांस के फटने को घाव कहते हैं - जब उसमें
 पीप पड़े तो उसका नाम कुरहो है - उसकी प्रकारें बहुत हैं -
 उनका वर्णन तिब्ब गकबर आदि बड़ी पुस्तकों में देखें
 यह जरूरी ही से सम्बन्ध रखता है - परन्तु थोड़ा सा जान लेना
 चाहिये दिल को घाव की सहार नहीं उसमें मनुष्य तुरन्त
 मरजाता है - और भेजा भी नहीं सहार सकता - लक्षण उसके
 घावका बुद्धि का विगड जाना है - और गुरदे और मसाने और
 आंत का घाव भी ऐसा ही जानें - और पहिंचान मसाने के
 घाव की यह है कि मूत्र उसी में से निकलेगा - और जो आंत में
 होतो पैरवाना निकलेगा - जिगर का घाव भी बुरा है - परंतु
 अच्छा हो सकता है - और पेट आदि का घाव भी बुरा है -
 उसमें रंग बदलता है - और सूच्छा और रिकवाव होता है -
 और राव का घाव आगे को शोर होतो वचने की आसकम है
 तर पेट का घाव जो भली भांति लगा हो भयानक है -

नवां पाठ २



कोडे की चोटके विषयमें

जो खाल के नीचे मांस टुकड़े हो गया हो तो उसे दवा के और मल के इकट्ठा करे - और फिर नकरी की खाल ज लदी से गरम गरम उधेड़ के बाधे - और जब वह सूख जावे तो उसे खोलें - इस उपाय से राति दिन में अच्छा हो जाता है और जो खाल के नीचे रुधिर सिमट आया हो तो रोटी का गूदा और सूली मले ॥

दसवां पाठ १०

हड्डी के टूटने और उखड़ने और खिसल

नेके विषयमें

इसका
ने में आस के पते कुचल के
की जरूरी

और निपा
रु ३१७

दममुलु भरवैन - कुन्दुर - गफूस - कैसर - पीस के मिला
 वे - और घाव पे रक्वे - जब तक अच्छा न हो और जो इस
 से लाभ न हो तो जहां तक हो सके बुरा मांस काट डालें - कि
 र उसके भरने का उपाय करें ॥

आठवाँ पाद

८

— ८ * ८ —

मारने और गिर पड़ने से चोट लगने के विषय में

जो सूजन और तपन हो तो गिले भरमनी और
 अंडे की सफेदी आदि का लेप करें - और जो सूजन और तप
 हो तो फ्रस्ट और पहने लगाके रोसी ठंडी औषधे लगावे जो
 मवाद को द्रुधर गिरने से रोके - और जो शरीर के किसी बड़े
 स्थान पर लगी हो तो उसे पुष्ट करें - और उनले की चोट पे प
 हिले पीड़ा को दूर करना चाहिये ॥

०८२७

चारहवा पाठ १२

विषेले जानवरों के काटने या डंक मारने के उपायमें

इसका उपाय छः प्रकारसे हो सकता है-जैसा
अत्रित समके वैयाकरणों ॥

पहिले वह औषधदे कि भसली गसमी को उभारे
और भीतर के स्थानों को पुष्ट करें और विष को दूर करें-जैसा
तिरियाक कबीर- और लोवत वरवरी- जिद वार आदि ॥

दूसरे वह औषधदे जो शरीर से तेरी को निका
ले- उलटी या नुल्लाव से परन्तु फसद नखोलें- और नरसि वि
च्छूके डंक मारने में या ऐसे साप के काटने में जिन से किश
रि के हर छिद्र से रुधिर निकलने लगता है- फसद खोल स
कते हैं ॥

तीसरे जहर सुहरा और तिरियाक जो उसी विष
के दूर करने को हों- जैसे घडियाल के काटने में उसीका
मांस और सापके काटने में उसीका मांस खिन्ना देना अतिल
भदायक है ॥
:साप

चौथे वह औषधदे जो उस विषेले जानवरके
मिजाज से विपरीति हो जैसे झोंग विच्छूके लिये- और इसी प्रकार
रसे जोहो ॥

पांचमें वह दवाया उपाय करें- जो मवाद कोहि

अथारहवांपार११

विषके उपायमें

गुन गुना पानी या तिली का तेल या मक्खन व
हुत सा पिलाके तुरंत उलटी करावे - और जो इससे उलटी भ
ली भांति न हो तो सोये के बीज और नमक पानी में बीटाके
और तिली का तेल बहुत सा मिलादे - और उलटी के लिये
जो कुछ दे बहुत सा दे - जब सली भांति उलटी हो चुके तो गी
का ताजा दूध जितना पिया जावे पिलावे - और जो यह भी उ
लटी में निकल जावे तो बहुत अच्छा है - और मक्खन और
घी पिघला के दूध की जगह दे सकते हैं - और तिरियाक क
वीर लाभकारक है - और विष खाने वाले को सोने न दे - औ
र जो भूखा हो तो उचित भोजन पेट भरके खिलावे - और जब
जस विष का नाम मालूम होजावे तो वही औषध दे जो उसे
हूर करती है ॥

जब विष खाने वाले को सूच्छा भाजावे और
आंखोंकी पुतलियां फिर जावे या आंखें लाल हों और नाडी व
द होजावे और जीभ बाहर निकल आवे और रंडा पसीना नि
कलने लगे तो जानो कि अवन बचेगा ॥

होता है जो कुत्ते के काटने में होता है - चाहिये कि उससे भी बचे
 कुत्ते का काटा हुआ पानी से बहुत डरता है - और पानी पीना
 छोड़ देता है इसीसे मर जाता है - उसे पानी पिलाने का उपाय यह
 है कि एक नर कुल बहुत लम्बा लेके एक सिरा उसके मुँह में डालें
 और बहुत दूर से दूसरे सिरा में पानी छोड़ें कि वह पानी को
 देखने न पावे - और कहते हैं कि जब कुत्ता काटे उसी समय
 रुधिर उस का लेके थोड़ा सा पानी में मिलाके पिला दें - और
 छह महीने तक रोज़ एक माशे मुशक खिलवावे और तीन महीने
 तक चाव को वहने दें और जिस कुत्ते का काटा हो उसी का क
 लेजा भून के खिलाना अति लाभ दायक है ॥



समाप्तोपग्रन्थः

लाके विषको खाल की ओर बहादे - जैसे दवा या दौड़ने से पसना निकालना परन्तु इसमें डर है ॥

छटे विषको फैलने न दे इस प्रकार से कि जिस गहकांटा या डंक मार है जो हो सके तो उस स्थान को तुरंत ही कार डालें - और दाग दे - या ऊपर को छटके कसकर बांधें कि विष आगे न चटने पावे - और टंडी व सुँल करने वाले औषधें लगावे - और उस गह सों गी लगाना और मुंह से चूसना लाभदायक है - परंतु चूसने वाले का पेट भरा हो और रोगान गुल से उसे कुल्ली करा दे - जो उसे हानि न हो ॥

लागिया एक पेड़ है जिसमें से दूध निकलता है उसका दूध सांपके काटे हुये को लाभ कारक है - और तुरंत के बीज र माशे सब जान वरों के विषको लाभ देते हैं और किस्का ताजा फल भी अति लाभ कारक है - नियोले का मेदा और पट मवाद छोकर धनियां लगाकर भूनना और सुखाके खिलाना और बकरी की संगनी जलाकर खिलाना और लेप करना और सातर खाना और लेप करना अति लाभदायक है - और पक्का या कच्चा दूध घीके साथ उस स्थान पर लगाना भी अच्छा है ॥

+ ६१५ मिह और चेटी और शहद की भकवी के काटने में तीन हथेली भर धनियां फांके ॥

बावले कुते के काटे को चालीस दिन तक भ्रच्छान होने दें - जो घाव भरने लगते तो ऐसी औषधि लगा दें जिससे वह बहे - और सौदा का मवाद निकालने में बहुत लगे रहें - इसका पिप बरषों के पीछे और करगा है - और जिसकी सीको कुतेने कारी हो उसका काटने में भी वही अव गुण

नाड़ीपरीक्षा

दिलकीसगकेचलनेकोनाड़ीकहतेहैं

वहदिलके खुलने और बंदहोनेसेचलतीहै - खुलनेसेहवादि
 चकेभीतरजातीहै जिससेरूहहैवानीजो दिलमेंहै आरामपानीहै - और
 गरमहवाकेदूर करनेकेलिये दिलबंद होताहै इनदोनोंसेमनुष्यके
 शरीरकाहाल और उसकेरोग और आराममालूमहोतेहैं इसप्रकारसेशरी
 रकाहालजानाजाताहै ॥

सकतौयह किकितनीखुलतीहै औरकितनीबंदहोजातीहै -
 इसकीनौसूरतेहैं क्योंकिनाडीमेंलम्बाई औरचौड़ाई औरगहराईहै और
 हरसक इनतीनमेंसेयाबहुत अधिकहै याकसहै यामध्यमहैजवनतीन
 मेंइनतीनकोगुणाकरोगेतौ इतियनौ होंगेवहनौ यहहैतवीलअर्थात्
 अधिकलम्बी - २कसीरवहुतकमलम्बी - ३मोतदिल अर्थात्नलम्बीन
 छोटी जतनीलम्बी जितनी किचाहिये ४अरीज अधिक चौड़ी ५जैपककम
 चौड़ी ६मोतदिल उतनी चौड़ी जितनी किचाहिये ७मुशाफ अधिक उभरी
 हुई ८मुनरवफिजर्द बीहुई ९मोत दिल न बहुत उभरी नदवी ॥

तवील में जितनाकि, चाहिये वह रोग अधिकमालूम
 होतीहै - कारण इसका गरमीकी अधिकताहै ॥
 २कसीरमेंकस मालूम होतहै उससे जितना किचाहिये
 कारण इसका गरमीकमीहै ॥
 ३मोत दिल मेंराउतनी मालूम होतीहै जितनी किचा
 हिये इसमें मिजाजकी गरमीठीक २होतीहै ॥

औरतीनकुत्तरकेलेनेकीगतिजिसकोसलासीकहतेहैं
प्रकारोंकोसकहीस्वदेऔरतीसरीप्रकारबदलतीरहें ॥

चक्रशासलासीका

त.	त.	त.	त.	त.	त.	त.	त.	त.
अ.	अ.	अ.	ज.	ज.	ज.	मो.	मो.	मो.
मुश.	मुन.	मो.	मुश.	मुन.	मो.	मुश.	मुन.	मो.
क.	क.	क.	क.	क.	क.	कं.	क.	क.
अ.	अ.	अ.	ज.	ज.	ज.	मो.	मो.	मो.
मुश.	मुन.	मो.	मुश.	मुन.	मो.	मुश.	मुन.	मो.
मो.	मो.	मो.	मो.	मो.	मो.	मो.	मो.	मो.
अ.	अ.	अ.	ज.	ज.	ज.	मो.	मो.	मो.
मुश.	मुन.	मो.	मुश.	मुन.	मो.	मुश.	मुन.	मो.

प्रकटहोकिऊपरकेदोचोचक्रोंमें(त)सेतवीलऔर(अ)से
भौलऔर(क)सेकसीरऔर(मो)सेमोतदिलऔर(ज)सेजैयकऔर
(मुश)सेमुशारेफऔर(मुन)सेमुनखफिजजानो।

दूसरीप्रकारजोरऔरकमजोरीजलनाहैवहपहलैजोनाडीजोर
सेलगेदेखनेवालेकीउंगलियोंकेमांसपरतोउसकोपुष्टकहतेहैंउ
समेंदिलभीपुष्टहोताहैऔरजोहोलेसेलगेतोवहकमजोर
वेगीयहपहिंचानहैदिलकीकमजोरीका।

औरतीसरीमोतदिलहैजिससेजोहैवानीकादिममेठीक
होनापायजाताहै ॥

तीसरीप्रकारनाडीकीचालकासमयदेखनाहैजोवह

४ अरीजमें उसका चौडान जितना कि चाहिये उससे अधिक होती है इसमें तरीकी अधिकता होगी ॥

५ जैयक में चौडान कम होता है इसमें तरी कम होती है ।

६ मोतदिलमें जितनी चाहिये उतनी चौडाई होगी उसमें तरी ठीक ठीक होती है ।

७ मुशरिफमें वह संग अधिक उभरती है यह भी गरमीका कारण है

८ मुनस्वफिजमें हृद से कम उभरती है गरमीकी कम होगी ।

९ मोतदिलमें उतना उभार होगा जितना कि चाहिये इसमें गरमी भी ठीक रहोगी-यह नौ प्रकारों तक रक्त की है- लस्वाई और चौडाई और गहराई को यहां पर कुत्तर कहते हैं- जब दो या तीन कुत्तरों को मिलाओ तो दो प्रकारों सत्ताईस रकी निकलेगी जैसे कि आगे के दो नकशोंमें लिखा गया है परन्तु दो कुत्तरों के लेनेकी रीति जिसको सनाई कहते हैं यह है कि लस्वाईकी तीन प्रकारोंको चौडाईकी तीन प्रकारोंके साथ ले तो नौ होंगी फिर लस्वाईकी तीन प्रकारोंकी गहराईकी तीन प्रकारोंके साथ ले यह भी नौ होंगी- फिर चौडाईकी तीन प्रकारोंकी गहराईकी तीन प्रकारोंके साथ ले यह भी नौ होंगी- यह सब वमिलकर सत्ताईस हुई ॥

नकशा सनाईका

त. अ.	त. ज.	त. मो.	क. अ.	क. ज.	क. मो.	मो. अ.	मो. ज.	मो. मो.
त. मुश.	त. मुन.	त. मो.	क. मुश.	क. मुन.	क. मो.	मो. मुश.	मो. मुन.	मो. मो.
अ. मुश.	अ. मुन.	अ. मो.	ज. मुश.	ज. मुन.	ज. मो.	मो. मुश.	मो. मुन.	मो. मो.

अलगरती उसको मुस्तवी फिलवाज़ और मुखतलिफ़ फिलवाज़ कहते हैं इसमें हाल चुराहोगा-जोहरनवजे के टुकड़े सबहालोंमें एक से पाये जायें और जो सब नवजे अलगहोंतो उसे मुस्तवी मुतलक डोंकी राह से कहेंगे-और जो अलगर होंतो मुखतलिफ़ मुतलक टुकड़ोंकी राहसे कहेंगे यह दोनों बुरे हालके चिन्ह हैं मस्तवी और मुखतलिफ़ में अधिक-और जो नवजेके हर टुकड़ेके एक टुकड़ेमें मुस्तवी और मुखतलिफ़ देखें अर्थात् जो टुकड़ानाडीका एक रंग लीतले हो उसके आदि और अंत और मध्यमें इस्तवार्य इस्वितलाफ़ होतो उसे मुस्तवी मुतलक और मुखतलिफ़

-और इसी प्रकार से मुस्तवी फिलवाज़ और वाज़ जानों यह भी हाल के चुराहोने और कमजोरीकी अधिकता और मवादके भारी होनेका लक्षण है परंतु मस्तवी में थोडा और मुखतलिफ़ में अधिक ॥

नवी प्रकार मुखतलिफ़ नाडीमें का दौरानवजे का एक प्रकारका अंतररक्वैतो उसको मुखतलिफ़ मुंतज़म कहते हैं-और जो रक्तमान रहेतो मुखतलिफ़ गैर मुंतज़म यह बहुत बुरे हालका लक्षण है ॥

दसवी प्रकार नाडीकी तोल देखना है-तोल कहते हैं एक वस्तुको दूसरी वस्तुसे अंदाजा करनेको-इसलिये 3 नाडीहोती है उसको जैयदल वजन कहेंगे-और जो इससे विपरीति हो उसे रदी उल वजन कहेंगे-इसकी तीन सूत्रे हैं पहिली मुजावि वह है कि एक अवस्थावाले की नाडी मिलती हो उसके पासवाली अवस्थाकी नाडी से जैसे कि लडके की नाडी जवान की की बुढ़े की सी हो दूसरी मुवाद्दूल वजन वह है कि जो दूरकी अवस्थाकाल से मिलती हो जैसे लडके

तीसरी खारिजुलवजन वह है कि किसी अवस्थाकी सीन हो जैसे कां
पती हुई नाडी जो बहुत बुरी है और इससे ऊपरकी दोनों भी बुरी है परंतु
इससे कम।

नाड़ी रूढ़ और असली गरमीको आराम देती है जब गरमीकी
अधिकता हो और नाडीमें किसी प्रकारको कडापन न हो और जोर
हो तो नाड़ी अजीम होगी अर्थात् तीनों कुतरो पर वटी हुई और जो इस
से कुछ भी लाभ न हो तो सरी हो जावेगी और जो इससे गर्मी बटे और ल
भ न हो तो मुतवातिर हो जावेगी और जो नाडीमें कडापन हो तो सरी
होगी अर्थात् तीनों कुतरो में घटी हुई और जो नाडी नरम हो परंतु उस
में जोर न हो तो सरी होगी और जो उससे लाभ न हो तो मुतवातिर हो जा
वेगी और जो कम जोरी बहुत हो तो कामजल्दी न कर सकेगी और स
गीर हो जावेगी।

जब मवाद या मोजन के जोर के बोर से नाडी दब जावे और उभ
र न सके तो कुछ सगीर हो जाती है जैसा कि तपके आदि में वारियोंके
अन्दर होता है चाहें जोर हो तरी से नाडी नरम हो जाती है और खुशकी
कडी परंतु चुहरानेमें कुछ कडी पाई जाती है।

मवाद के बोर से या कम जोरीकी अधिकता से नाडी में द्रि
लाफ़ पड जात है और जब कम जोरी बहुत बढ़ जाती है तो इन्तिजाम
नाडी का जाता रहता है उचित वजन भी नहीं होता।

नाडीकी सिली हुई प्रकारें

अजीम उस नाडीको कहते हैं जो तीनों कुतरो में घटी हुई हो।

सगीर वह है जो तीनों कुतरो में घटी हुई हो।

गली जब वह है जो चौड़ाई और गहराई में बटी हो और लक्षण है मवा
दकी अधिकताका।

मूत्रपरीक्षा



जानना चाहिये कि मूत्र यह ही पानी पिया हुआ है - पहिले सेवे में भोजन के साथ मिलता है कि उसे पतला करके कैलू संवना में फिर मासारीका में होता हुआ जिगर में पकता है वहां से गुरदे में होके मसाने में डकटा होता है और जो कुछ रुधिर से मिला हुआ जिगर में रह जाता है वह रगों की राह से सारे शरीर में पहुंचके कुल पसीने में निकल जाता है और कुछ फिर गुरदे में होता हुआ मसाने में गिरता है इसी लिये मूत्र रंगीन हो जाता है जिसको पसीना बहुत जाता है उसे पेशाब कम होता है और पसीना कम आने वाले को पेशाब अधिक होता है - जब मसाने में डकटा होता है तो पेशाब लुगता है इसी लिये सारे शरीर का हाल इससे जाना जाता है यहां से दो बातें मालूम हुई - एक यह कि पेशाब में दो वस्तु हैं एक पानी और दूसरे भारीपन ॥

दूसरे पेशाब से जिगर और मसाने का हाल भली भांति जाना जाता है ॥

मूत्रके रंगका वर्णन

असल रंग पांच हैं - पीला - लाल - हरा - काला और सफेद और सिवाय इनके जो हों वह इन्हीं के साथ हैं ॥

पीले रंगकी पांच प्रकार हैं -

तिर्यनी- उस पानी का रंग होता है जिसमें भूसा भिगोया है अर्थात् पीला होता है- सफेदी लिये हुये यह लक्षण है मिजाज की रूकवा क्योंकि या तो पानी की अधिकता होगी या पित्तों की कभी यह हृदयों उंडसे होते हैं परंतु पित्तों की सरसाम में भी सूत्रकारंगरेस होजाता है ॥

उतरुजी- अर्थात् हलका पीला रंग जैसे तुरंज के छिलके का होता है- इसमें पीलापन तिर्यनी से अधिक होता है यह लक्षण है मिजाज के रूक होने का और मली भांति पचाव होने का

अशंकर- यह पीला रंग है लाली लिये हुया मिजाज में गरमी होने का लक्षण है ॥

नारी- यह रंग वह है जिसमें पीलेपन में लाली अधिक होती है और चमक आग की सी होती है- इसमें अशंकर से अधिक गरमी होती है ॥

अहमरनासे- इसमें नारी से लाली अधिक होती है और गरमी भी उससे अधिक होगी ॥ + + + +

दूसरा रंग लाल है वह चार प्रकार का होता है ॥

असहव- थोड़ी लाली हो और सफेदी भरे पतले रुधिरसे ॥

वरदा- गुलाबी रंग को कहते हैं इसमें लाली असहव से अधिक होती है और गाढ़े रुधिरसे पाया जाता है ।

कानी- यह बहुत लाल होता है उस रुधिरसे जिसे गरमी बदी हो- ॥

अकृत्तम- लाल हो कालापन इस सौद ... रुधिरकी गरमी से ॥

यह चारों रुधिर और गरमी की अधिकता के लक्षण हैं

एक दूसरे से अधिक और कभी ठंडे रोगों से भिलालरंग हो जाता है जैसे फाल्ज और सूजल किनीआ में क्योंकि निगर की कमजोरी से रुधिर पानी से भली भाँति अलग नहीं हो सकता और रुधिर पेशाब से निम्ना आता है ॥

तीसरा रंगहरा है - यह भी चार प्रकार का है ॥

फिसतपी अर्थात् फिसतई रंग यह ठंडका चिन्ह है क्योंकि पित्तों और सौदा के मिलने से होता है परंतु वह सौदा जो ठंड से बलवहो कुरशाने कहा है कि युद्ध रंग पित्तों के जलने कालक्षण है क्योंकि इसमें पीले पन की मलका होती है जो ठंडे सौदा से होता तो काला पन होता ॥

नीलनजी - जैसे नील पानी में धुला हो इसमें फिसतकी से भी अधिक ठंड होती है - यह दोनो रंग जो बच्चों के मूत्र में होते फाल्ज या नशाननुज होने का डर है ॥

जनजारी अर्थात् जंगार कासा इसका कारण गरसी की अधिकता और पित्तों का जलना है ॥

कुररासी गंदने कासा रंग यह भी पित्तों के जलने कालक्षण है परंतु जनजारी से कम ॥ + + + +

चौथारंग काला है इसे कई कारण हैं ॥

एकजलना इस प्रकार से कि पहिले शरीर में गरम पित्तों और बड़ जलादे मूत्र के मवाद को और रंग उसका काला हो जावे परंतु इसमें पीले पन की मलका होगी और पहिले से मूत्र में गंध होगी यालाल आवेगा ॥ ६

दूसरा कारण जमना है - इसी प्रकार से शरीर में ठंडा मवाद हो जो मूत्र के मवाद को जमादे और काला करदे इससे पहिले से हरा मूत्र बिना गंध के या खड़ी गंध लिये हुए आवेगा ॥

तीसरा कारण सौदा का सूत्रमें निकलना है यह सौदा की तब
 और बुहरान के दिन आवेगा इससे यहिले मवाद के पकने के लक्षण
 पाये जावेंगे और पीछे रोग में कमी होगी ॥

चौथा कारण किसी रंगीन वस्तु का खाना है जैसे कालोश
 राव आदि जो वह वस्तु जैसी की तैसी सूत्रमें निकले तो जान लो कि नि
 गर का जोर जाता रहा और डरावना है और जो अधिक खालेने से होते
 कुल डर नहीं ॥

पांचवां रंग सफ़ेद यह दो प्रकार का होता है ॥

एक दूध का सा गाढा यह कफ़ की अधिकता और मिजाज
 की गंड या हड्डियों और पेटों के और चर्वों के पिघलने का लक्षण है जैसे
 कि दिक्के अन्त में होता है - कारण इसका अधिक गरमी है इसमें
 चिकनाई सफ़ेदी के साथ होगी और शरीर दुबला और प्रति दिन पि
 घलता जावेगी ॥

दूसरे पानी का सा रंग यह लक्षण है जिगर के पचाव जाते
 होने का गंड की अधिकता से या सूत्र के रस्ते में सुदा पडने से कि रंगीन
 वस्तु नहीं निकलती और निरापानी निकल आता है ॥

सूत्र का गाढा और पतला होना

मोत दिल वह है जो न बहुत गाढा हो न पतला जैसा कि चंगेप
 ने में होता है और लक्षण है पचाव और मल्लि भांति पकने का ॥

गाढा होना लक्षण है न पकने का क्योंकि निवा पचाव भा
 फोक सूत्रमें मिलके उसे गाढा कर देता है और कभी चिन्ह होता है गाढे
 मवाद के पकने का पहिंचान उसकी यह है कि पकने से यहिले सूत्र
 बहुत गाढा आवे और पकने के पीछे कम गाढा आवे ॥

कभी बहुत पानी पीने से सूत्र पतला आता है और कभी म

रस्ते में भी सुड़ा पड़ने से भी पतला आता है पहिचान उसकी यह है कि सुदे की जगह वोभ और तनाव पाया जावेगा और कभी मवाद के न पकने से भी पतला होजाता है - जबकि मवाद ऐसा कच्चा है कि निकलन सके जैसाकि कफ की तपों से होता है ॥

सूत्रका साफ और गदला होना

साफ बड़ है कि रकसा हो और बार बार उसमें से दीख पड़े जैसे पानी-चाहे गाटा हो जैसा अंडे की सफेदी ॥

और गदला यह है जिसमें बार बार नदीरव पड़े ॥

साफ सूत्र चिन्ह है मवाद के पकने और बड़ रनेका ॥

और गदला होना चिन्ह है मवाद के न पकने और ओंरनेका कभी जोर जाते रहने से और शरीर के अंदर की सूजन से सूत्र थोड़ा गदला होजाता है ॥

सूत्रकी गंध

जब तक कि सूत्र में जितनी चाहिये उतनी ही गंध होतो जानो कि मिजाज ठीक और मवाद पका हुआ है और जब उससे बदज वै तो दो बातें होंगी या तो मवाद अधिक सटा होगा जैसाकि सड़ी हुई तपों में या सूत्रके सस्थानों में खुजली और घाव होगा ऐसा बहुधा मसाने के घाव से होता है क्योंकि वहां सूत्र देर तक रहता है और घाव में पीडा पाई जायगी और सूत्रमें पीप और छेछेडे घाव से निकलेंगे और मवाद के सड़ने में यह बातें न होंगी ॥

सूत्र में गंध विलकुल नहोना चिन्ह है मवाद के कं चचा होने और जमजाने का और कभी जोर जाते रहने से भी ऐसा

रसूब मजसून दइहै जिसमें रसूब मइसूत की जातेन पाई जावे - इसकी भी तीन प्रकारे हैं सब में अच्छी रासुमास फिर मुतअल्लिक फिर रासिव जबकि अपर उहरना तलछट कागसी से हो ॥

रसूबरदी - या तो तरी से उत्पन्न होती है या शरीर से - शरीर की रसूब जो असल स्थावों से हो उसे खरराती कहते हैं और जो उन से न हो और विकनाई उसमें पाई जावे तो वसामी कहने है - और जो विकनाई न हो तो लहमी है ॥

खरराती जो अपर से आवितो कशूरी कहेंगे - और जो भीतर से आवे तो टुकडे उसके वडे और चौडे सफेदीया लाल हो तो सफा यही कहेंगे - सफेद चिन्ह है मसाने के छिलनेका - और लाल गुरे तो याजिगर के छिलनेका ॥ ७२१ - २१३ ॥

जोरुकडे वडे चौडे न हो तो - लाल हो खुरसनी कहेंगे और नही तो नखाली ॥

तलछट जो तरी से हो उनमें से जो लाली लिये डूये हो चिन्ह है रुधिर के जलनेका और कभी कफ के जलनेको और जो पिल हो तो पित्त की अधिकताका और काली सोदा के जलनेका ॥

जो सूत्र बिना तलछट के हो उसके कई कारण हैं एक मवाद का नपकना - दूसरे सुहा - तीसरे मवाद की कमी - चंगे मनुष्यों के सूत्र में तलछट बहुत थोड़ी होती है - और जो होती भी है तो बिना पचे हुए भोजन के फोकसे ॥

डुबले मनुष्य के और मिहनत करने वाले के सूत्र में तलछट बहुत कम होती है - और जो रोगी सोटा और आराम चहने वाला हो उसके सूत्र में बहुत आती है - जिस तलछट का फोक पीप हो उसे मही कहते हैं - और जिसका फोक गादा और कचचा मवाद हो कह मुखौती है - यह बहुत करके अरबुनिसा और बजै मुफसिल

के रोगों में आती है - इन दोनों की सूत्र एक सी होती है परंतु अंतर यह है कि मही में दुरगंधि होती है और मूत्रन या ब्रावके फूटनेके पीछे निकलती है - और झिलाने से जलदी फैल जाती है और जल दी इकट्ठा हो जाती है और मुखवाती से यह बात नहीं होती ॥

मूत्रका थोड़ा और घना होना

मूत्रके घने होनेके बहुत कारण हैं एक पानी बहुत पानी अकेला या कोई वस्तु मिलाके या तर भेवोंका खाना - दूसरे शरीर का पिघलना जैसा कि गरम तपों में होता है - तीसरे रुके हुए मवाद का निकलना जैसा कि बुहरान इदरेरी होता है ॥ **जूबानी** ॥

बुहरानी और जूबानी में यह अंतर है कि बुहरानी में जोर होता है और मवाद के निकलनेके पीछे रोगी को आराम होता है और जूबानी में कम जोर होती है उसमें पुष्टगर्मी पाई जाती है और गंधितेज होती है और बुहरान के दिन नहीं होता -

बुरा मूत्र जैसे कोला और गाढा इसमें अच्छा वह है कि बहुत आवे और रुकके न आवे इसमें जोर होता है और जो कम जोरी होगी तो रुकके आवेगा ॥

मूत्रके थोड़ा होनेके कारण भी बहुत हैं - एक तरीका अधिक पचना दूसरे शरीर में तरीका न रहेना गरमीकी अधिकता से तासरे सुहा पड़ना वनरस्तोंमें जिनसे कि तरी मसाने में जाती है चौथे अधिक दस्त या पसीना आना - इससे जो तरी सूत्रमें आती थी वह दस्त और पसीने में निकल जावेगी ॥

पचावके कम होने पर भी जो मूत्र बहुत थोड़ा आवेती जलंधर हो जाने का डर है ॥

बुहरानकावर्णन



रोगकीलड़ाई जो मित्राज के साथ होती है उसे बुहरानका
होते हैं ॥

जो मित्राज जीते और रोग सकवारगी जाता रहै उसे बुहरान
कहसूद या कामिल कहते हैं- और जो रोग जीते और रोगी सकवारगी
मंजावे तो बुहरान रदीताम है- यह दोनों गरम रोगों में होते
हैं ॥

जो रोग अच्छा होने को हो परंतु देर में- इसे तड़ल्लुल्लकह
ते हैं यह बहुधा पुराने रोगों और उहे मवाद में होता है ॥

और जो इसी प्रकार से रोग मार डालने को होतो जूवान में
खड्डल कहते हैं ॥ *खड्डल पुरा पुत्र*

चंगा होने के लक्षण या तो सकवारगी मालूम होवे रो
परंतु देर में अच्छा हो और मवाद थोड़ा निकले या पहिले मित्राज
का जोर दुख न मालूम हो परंतु मवाद की कुछ निकाल के सकवा
रगी जीते जावे तो बुहरान जैयद नाकिस कहते हैं- जो रोग जीते
कुछ जोर को घटा दे या पहिले रोग का जोर मालूम न हो परंतु कुछ
शरीर के जोर को घटाता रहै और सकवारगी मार डाले उसे बुह
रान रदी नाकिस कहते हैं- इन चार पिछलों का नाम बुहरान मुर
रकव है ॥

इन आठों सूतों में रोग प्रकार से बदलते हैं यानी सकवा
रगी चंगा होने की और या सकवारगी मरने की और या थोड़ा चंगा हो
ने की और या थोड़ा मरने की और या दोनों जोर हो और रोगी चंगा

झीजावे या दोनो हों और भ्रजवे ॥

जब बहुरान में भवाद राक वार दूर नहो सकें तो बड़े रस्थानों से दूसरी ओर चला जाता है इसे बहुरान इंतवाली कहते हैं - कुछ रोग जैसे हैं - जैसे यस्काच, खुजली, दाढ़ और कुछ रदी हैं जैसे कोढ़, खुन्नाक, आक्रिला, दुर्वेला, भादि ॥

बहुरान इंतवाली नहीं होता - परंतु जबकि कमजोरी हो और भवाद राटा हो ॥

बहुरान होने से पहिले उसके लक्षण पाये जाते हैं अर्थात् जो वह दिन को होतो पहिली रात को और जो रात को नातो दिन को वह चिन्ह होंगे कभी गरम रोगों में तीन दिन तक बहर रहते हैं चिन्ह जिस दिन अधिकता हो वही दिन बहुरान का जानों ॥

जिस बहुरान में भवाद दूर हो वह पांच प्रकार का होता है नकसीर - जलदी - दस्त - सूत्र - और पसीना ॥

सूत्र और पसीने का बहुरान बहुधा नात्रिस होता है - नकसीर का बहुरान सब से अच्छा है - फिर दस्तों का फिर जलदी का - फिर सूत्र का फिर पसीने का फिर खुराजात का अब हर बहुरान के चिन्ह अलग अलग लिखे जाते हैं ॥

नकसीर के बहुरान के चिन्ह यह हैं - कानों का खुन होना आवाज आनी सिर जलना चमकती हुई दस्त आंखों के सामने दिखने देना - नाक खुजलाना सिरकी रंग धमकना धारण और मुंह ला लहोना ॥

जलदी वाले के चिन्ह यह हैं - दम फूलना - मतली - मिचकाहर - मुंह कडवा होना - फडकना - कौड़ी की पीडा - आंखों के नीचे अंधेरा होना - नाडी का बंद होना - गौरनीचे का होठ फडकना ॥
दस्त के लक्षण यह हैं - पेट की पीडा शरीर का वीरल होना

पक्वियों का तन्ना-पेट फूलना-पीठकी पीडा-दस्त रंगीन होना
 आंतों का बोलना-और नाडी का सगीर-और कवी-और सत्व होना
 और किसी बुहरान के लक्षण न होना ॥ ११ ॥

और सूत्रके लक्षण यह है-मसाले का बोलना-और सूत्र
 का बहुत और गाटा होना-और मवाद का दूर न होना-यह बहु
 धाजाओं में होता है ॥ १२ ॥

पसीने के बिन्दु यह है-मुंहका फूलना चौथे दिन सूत्र र
 न होजावेगा-और सातवें दिन गाटा होना और रोगी स्वप्नमें-हम
 मस और नदी और मेह बरसता देखेगा-और जब उसके शरीर पर
 देर तक हाथ रक्वेंगे तो गरमी अधिक मालूम होगी ॥

बुहरान इंतकाली के लक्षण यह है-नपका जोर और स
 वाद कान निकलना और सारे शरीरमें या एक जगह पीडा होना
 और कोई छरकी वात न होनी और जोर और नाडी का ठीक हो
 ना ॥

कान बहना और चीपड और आंसू और रेट सिरके रोणे
 के बुहरान की पहिंचान है-और राल बहना छाती के रोगोंकी और
 उबासीर का रुधिर बहुत से रोगों का बुहरान जैयद है कभी सरसे
 के चिन्ह मालूम होते हैं और रोगी अच्छा होजाता है और कभी मर
 नेको होता है और रोग घट जाता है उस समय नाडी नर्मली या नद
 होजाती है ॥

बुहरान जैयद की पहिंचान यह है कि मवाद अच्छा पका
 होगा और वह भलि भांति निकलेगा और नाडी ठीक और पुष्ट होगी
 बुहरान रदी इसके विपरीति है-बुहरान के दिन कोई रसी नौद
 र नदें जो मवादको निकालें इस वास्ते बुल्लाव आदि नदें नाचा
 हें ये-जो हो सके तो भोजन भी नदें और नहीं तो हलका भोजन

देना चाहिये- और लक्षणों को देखके मिजाज की मदद करें- जो म
वाद नकसीर से निकाला चाहिये हो

य उसे न निकाल सकता है तो मदद दें-

रमस्खे और गरम पानी से तरें डारें- जो उल्टी

टी करावे और जुल्लाव चाहती हो तो मुलेय्यन

भी जानों जब मालूम हो कि बुहरान इतना काली है और सवाद कि
सी जगह गिरके उसे बिगाड़ेगा तो सवाद को बंधिर गिरावे

कुछ हानि न हो- जैसे कि जो जगह उसके बराबर हो उसे कसके

हो तो वाये हाथ से कोई कडा काम न करें या

उरावे जो सवाद

पिडलिया टखनों तक

सें- और जो मेदे में हो और छाती की ओर गावे तो बाहें और रान को

मूत्र में पसीना निकालें और पसीने में मूत्र उल्टी में दस्त और दस्त

में उल्टी जब तक अधिक आवश्यकता चहो बुहरान में सवाद नि

कालना वदन करें और उसे शरीर की किसी उत्तम और कमजोरी

जगह पर न गिरावे रोग के आदि में बुहरान बहुत बुरा है- बहुत से

इकीम जो रोग दो पहर से पहिले उत्पन्न हुआ हो उस दिन को ही
साव में गिनते हैं- और जो दो पहर के पीछे हो उसे छोड़ देते हैं- ज
के पीछे जो तप हो उसी समय से गिनी जावेगी- रोग में कुछ दिन
बुहरान के दिन हैं- उन्हें बाहुरीया कहते हैं- और कुछ यो मुल
नजार अर्थात् खबर देने वाले और कुछ न बुहरान के है न खबर दे
ने वाले परंतु कभी बुहरान उनमें हो जाता है- उन्हें बाके फिलवस्त
कहते हैं जैसा कि आग के नकशे में लिखा जावेगा- बुहरान का जोर
और कडा पन आठवें दिन तक रहता है फिर घट जाता है ॥

जिन दिनों में बुहरान बहुत करके होता है और अच्छा होता है
 कइग्याह दिन हैं उनकी जगह हमने एकका अंक नकशे में लिखा
 है और जिन दिनों में बुहरान रदी और बुरा होता है कइ आठ दिन हैं
 उनकी जगह दोका अंक लिखा है - और जिन दिनों में बुहरान नही
 होता वह तेरह दिन हैं उनकी जगह तीन का अंक लिखा है और उ
 नमें जुल्लाव भी देसकते हैं वे खरके होकर और छः दिन वाकै
 फिलवस्त है - उनकी जगह षका अंक लिखा है ॥

दिन	हाल	दिन	हाल	दिन	हाल	दिन	हाल
१	बुहरान	११	४	२१	१	३१	१
२	खिलाफी	१२	२	२२	३	३२	३
३	४	१३	४	२३	३	३३	३
४	१	१४	१	२४	१	३४	१
५	४	१५	२	२५	३	३५	३
६	२	१६	२	२६	३	३६	३
७	१	१७	४	२७	१	३७	१
८	२	१८	२	२८	३	३८	३
९	४	१९	२	२९	३	३९	३
१०	२	२०	१	३०	३	४०	३

कभी देखने में रोग मालूम नहीं होता - छोटे दिन बुहरान
 जैयद होजाता है तब वह दिन सानवा होता है - क्योंकि बुहरान जैय

दछते दिन बहुत कम होता है ॥

नक्षत्रों में जो दिन लिखे गये हैं उनमें गरम रोगों का बुहरान होता है - और पुराने रोगों में महीना और बरस दिन की गह है जैसा कि कफ़की और सौदाकी रूवा में सात महीने गिब्वकी सात बारियों के बराबर है - इसलिये बुहरान १२० दिन या सात महीने या सात वर्ष या चौदह या द्वाद्वीस वर्ष पीछे हो ॥

वारी वाली तप में वारीके दिन बुहरान होता है - उस दिन पेट भरान रखवें ॥

बुहरान में बहुत बुरे बुरे लक्षण होना मरने की पहिंका नहै ॥

इति श्री बुहरान का

वर्णन समाप्त

१	शुक्र रात ११	२१	३१
२	शनि रात १२	२२	३२
३	बुहरान १३	२३	३३
४	बुहरान १४	२४	३४
५	बुहरान १५	२५	३५
६	बुहरान १६	२६	३६
७	बुहरान १७	२७	३७
८	बुहरान १८	२८	३८
९	बुहरान १९	२९	३९
१०	बुहरान २०	३०	४०

मिली हुई औषधियों के बनाने

नेकी विधि

— ८ * ९ —

इस पुस्तक में जो बनी हुई औषधों रोगी को देने के लिये बताई गई हैं उनके बनाने की रीति अब लिखते हैं और जिस एंटी में उसका नाम आगया है उस एंटी का भंड भी उसके भागे लिखा है ॥

इतरी फल धनियंका

तीनों हड्डें - बहेडा - छिले हुए आमले - धनियां - उस्तरु हुस - सुडी - वनफाशे के फूल - प्रत्येक ३ तोले तीन तोले रोगन वा दाम में मिलाके तिगुने शहबू के कवाम में मिलाके चालीस दिन तक जौ के अंदर रखवें और उसमें से एक तोले या दो तोले स्वावें ॥

इतरी फल गुददी

उस्तरु हुस - गदूद जो वकरी के गले में होते हैं उन्हें सुखाके - विसफायज - प्रत्येक १७ ॥ माशे - हड - आमला - तुर बुद - प्रत्येक २४ ॥ माशे - इमी मून ३ ॥ माशे - अनी मून - मसगो

लौंग- तज प्रत्येक सात माशे- नीशादर- शैतरज- ^{३३५} नरकचूर- रपरी
 कून- प्रत्येक ७० ॥ माशे कूटछानके वसी प्रकार से शहद में बनाले
 और १७ ॥ माशे खावे ॥

अयारिजिफोकरा

वालछड- दारचीनी- तेज- ^{३६१} इव्वु विलुसान- कद विल
 सान- ससुगी- आसारोन- केसर- प्रत्येक एक तोला- सलुआ
 दो तोले या तीन तोले सब को कूटछान के फंकी बनावे उसमें
 से सात माशे घेत खावी होने पर शहद और गरम पानी के
 साथदे ॥

असानामिया

^{३६२} मुरमक्की- ^{३६३} अफिस- वजकल वजन- केसर- जुन्द
 वेदस्तर- कूट- करद माना- खशखाश- गाफिस- वफूरीका दहन
 सींगजलाहुआ- अडिये का कलेजा सुखायाहुआ- सबको बराबर
 रखके कूट छान के घोलने की दवा घोलके शहद में मिलावे और
 छः महीने पीछे ३ ॥ माशे कासनी के पानी या शहद के पानी के
 साथदे ॥

बासलीकून

चांदीका मैल- सजन्दर फैन प्रत्येक २२ ॥ माशे- सफे
 दाकलाई- जोद- नमक तुर्की- काली सिरने- नीशादर- दारफि
 लफिल- प्रत्येक ४ ॥ माशे- जलाहुआ तांबा ३१ ॥ माशे- लौंग-
 छडीला प्रत्येक १ ॥ माशे- कपूर रती- तेज पात- जुन्द वेदस्तर
 वालछड- सुरमा- प्रत्येक ३ ॥ माशे इन सब को पीसकर सुरमा

बनाले ॥

बहुदवनफासजी १५२५

वनफासेके फूल-घनियां-बबूलकागोंद-कतीरा प्रत्येक ३॥ माशे। निशास्ता १०॥ माशे कूट छानके पांचवार सिरक्रे में भिगोके छायामें सुखावे फिर सुरमाबनाले ॥

बनादिकुलकुमूर ६०१६

स्वरबूजे औरककडोके बीजप्रत्येक १७॥ माशे-क हू-कुलफे-औरस्वेरूके बीज-सफेद बजरुलबनज-बादाग कतीरा-निशास्ता-मुलहरीकासत-खस्वाशसफेद-गिलेज मीनी-कफिसके बीज-प्रत्येक ७ माशे कूटछानके बीदानेके लुब वमे कुर्सकनावे और १० माशेखावे ॥

तिरयाक

गोलभिर्वेसफेद-सुरमक्की-प्रत्येक १॥ माशे-जित यानी ३॥ माशे-जराबन्द सुदहरज-५॥ माशे हूरमुलके बीज-कलोंजी-जीरा-प्रत्येक ७ माशे कूटछानकर गुलाबमें गूंधले औरवाकलेके कराकर खावे ॥

सोंठकी माजून

सोंठ ७० माशे-बबूलकागोंद-इलायचीके दाने-प्रत्येक ७ माशे-लोग-दारचीनी-प्रत्येक १७॥ माशे-जायफलके त र-प्रत्येक ३॥ माशे-वसवासा १४ माशे कूटछानके ४०५ माशे मि श्रीकीचाशनीमें मिलावे ॥

मिठावेकीमाजून

काली मिर्च-दारफिलफिल-कालीहड़-बड़ेडा-आम
ला-जुंदवेदस्तर-प्रत्येक १४माशे-मोथा १७॥माशे-कूट-अस्लव
लादुर-विरंगकाविली-शकरतबरजद-हब्बुलगार-प्रत्येक
४२०माशेकूटछानकेदुगनेशहद और अस्लवलादुरकोचाश
नीकरके मिठावे और छः महीने पीछे खावे ॥

जवारिशजालीनूस

वालछड़-लोग-इलायची-तज-दारचीनी-सोठ-कुली
जन-केसर-सफेद मिर्च-दारफिलफिल-दर्योईकूट-मोथा-अद्वि
लसान-हब्बुलआस-बासारोन-सीराचिरायता-प्रत्येक तोलेमस
मस्तगी ५ तोले-और सबके बराबर शक्कर-दुगने शहद में माजून
चनावे और सात दिन पीछे १ माशे खावे ॥

ऊदकीमाजून

जो पचाव कोरीक करती है और सूरव लगाती है और ती
और कफको मेदे से दूर करती है ॥

केसर-सोठ-दारफिलफिल-जायफल-प्रत्येक ३॥मा
शे-वालछड़-इलायचीकेदाने-बसवासा-प्रत्येक ७ माशे-लोग-
मस्तगी प्रत्येक १०॥माशे-कचचाजद-तज-प्रत्येक १७॥माशे
कूटछानके दो सेर शक्कर में चाशनी करले ॥

जवारिशरवेजी

कन्दुर-अजवायन-मस्तगी-मोथा-वालछड़ प्रत्येक १०॥

माशे-और मुनक्के को सिस्के में भिगोकर निबालके मूतले और
 पोसकर उसमेंसे १०५ माशे इब्बुल आस २१० माशे सबको कूट
 छानके दुगने शहद और कन्दकी चाशनी करके दवाओंको मिल
 दे और १०॥ माशेसे १८ माशे तक खावे ॥

इब्बुकोकाया ॥

फीकरा ३॥ माशे-तरबुदसफेद-मुनाहु आसकसूनि
 या-उस्तरबदूस-प्रत्येक १॥ माशे-घकायन १॥ रस्तीकूटछानके
 सोफके पानी में गोळियां बनावे यह सब एक चार के खाने को
 है ॥

इब्बुलमिस्क

छालियां-लोंग-अकरकरा-प्रत्येक ३॥ माशे-गुलाब
 के फूल-सफेद चन्दन-इड अत्येक ७ माशे-वंसलोवन १॥ माशे
 मुश्क-कपूर प्रत्येक १॥ दांग कूटछानके गुलाब और पानके अर्कने
 गोळियां बनावे ॥

इब्बेराबन्द

राबन्द १॥ माशे-गारीकून ३॥ माशे-तुर्बुद ७ माशे-जंग
 कन्द दोदांग-गुगल १॥ माशे-अनीसून १॥ दांग-कूटछानके गो
 लियां बनावे यह दो बार के खाने को है ॥

इब्बुसिकचीनज

सिकचीनज-सलुआ-गारीकून-गुगल-चरावरलेके गो
 लियां बनावे और ७ माशेसे १०॥ माशे तक खावे ॥

हव्व रवीजरान

भुनाहु भासक सूनियां. जाव जीर. प्रत्येक ४॥ माशे. वर
 कायन ५॥ माशे. नोशादर ७ माशे. गारीकून ८॥ माशे. अयारि
 जफीकरा १०॥ माशे. इजरूत. १४ माशे. तुरबुद २४॥ माशे.
 कूट छान के रांदने के पानी में गोलिया वनावे और ३॥ माशे
 खावे ॥

हव्व वासही

वालकड़. तन. हव्व और जद विल्लान आसानेन. म
 स्तगी. दारचीनी. केसर. प्रत्येक ३॥ माशे तुरबुद ७ माशे. भुनी
 सक सूनियां. १४ माशे उत्तर खुदूस. वकायन प्रत्येक १७॥ म
 तुरबुद २४॥ माशे सलु गा ५६ माशे. कूट छान के पानी में गोलि
 वनावे और १४ माशे खावे ॥

हव्व सिज

भुनीहुई सक सूनियां ७ रती. उसार गाफिस २१ रती.
 गारीकून १८ रती. सिज ३॥ माशे. कूट छान के
 नी में गोलिया वनाले यह एक बार खावे ॥

हव्व इफती सून

उत्तर खुदूस ४ दांग. काली कुटकी. नमक प्रत्येक १॥
 माशे. विसकायज. गारीकून. प्रत्येक ३॥ माशे. अयारिज.
 ३॥ माशे गोलिया वनाले यह सब दो बार खावे और खाने को हैं।

दिवालमिश्रक (धिलज ५१५० ५५५५५५)

मस्तगी. कचचाजड़. तुरंजके हिलके. दारचीनी. लोंग.
 यालछड़. मुक. जायफल. कवाचा. बडी भोर छोरी इलायचीके
 दाने. बोथा. सरकंडेकी जड़. जंगली तुलसी. फिरंज मुश्क. नममा
 म. और वालगूके बीज. दौना मरुवा. बिनाविंथे मोठी. बुसुद. क
 हरुवा शमई. कचचारे शमकटाहुआ. सफेद और लाल बड़मन
 प्रत्येक ३५ माशे. मुश्क १७॥ माशे. हडके मुख्वे केशीरे में गंध
 के माजून बनाले ॥

दवायतुर्वुद

तुर्वुद सफेद किलाहुआ साफ कियाहुआ ३५ माशे. सोडे
 मस्तगी. प्रत्येक १७॥ माशे. कंदइन सवके वरावर कूटछानके फा
 कीवनावे और ४॥ माशे खावे ॥

दवा उलकारकम

केसर ५४ माशे. आसारेन ^{१२} इक्. अनीसून ^{२३} फितरा साल्यू
 न. रेकच. मुरगळकी प्रत्येक १४ माशे. बालछड़ २१ माशे. सीराकूट
 तजफकाह. सरकंडेकी जड़. हब्बविलसान प्रत्येक ७ माशे. मुले
 गी. जोद. मस्तगी. गाफिस. प्रत्येक १०॥ माशे. विलसानकाते ७५
 माशे कूटछानके शहद में मिलाके माजून बनाले और माउल भरल
 के साथ ३॥ माशे खावे ॥

दवा उलतुरंजवीन

२१/१५/५५
 २५/२५/५५
 २

तुरंजवीन सफ़ेद साफ़ करके १०५ माशे डेढ़ सेर दूध में गो
टावे जल गादी हो जावे तो १३ ॥ माशे खावे ॥

जरूर असफ़र

इजरूत सखु भा रसोत प्रत्येक ७ माशे केसर सुन प्रत्ये
क ३ ॥ माशे पीस छानके आंख में लगावे ॥

मस्तगी का तेल

मस्तगी ३५ माशे रोगन गुल्ल ७७५ माशे एक शीशी में
डालके गरम पानी में उसे रक्खे और उसके नीचे आग जलावे -
यहां तक कि वह मस्तगी तेल में पिघल जावे फिर उसे निवाले
ले ॥

कूट का तेल

कूट ३५ माशे काली मिर्च फरफियून प्रत्येक १० ॥ माशे
अकारकारा १५ माशे जुन्द वेदस्तर ८ ॥ माशे जैतका तेल १७५ माशे
कूट और अकारकारे और मिरचांको ३५० माशे पानी में इरात दिन भि
गोवे फिर ओटावे कि आधा जल जावे फिर जैतका तेल मिलाके ओ
टावे कि निरा तेल रह जावे - फिर जुन्द वेदस्तर और फरफियून को
कूट छानके आग परसे उतारके डालदे ॥

केसर का तेल

मुरसवकी १ ॥ माशे चिरायता १७ ॥ माशे केसर ३०
माशे प्रत्येक २१ माशे चिरायते और केसर को अलग और मुरस
वकी को अलग सिस्के में भिगोवे पांच दिन तक और छठे दिन १

कईमानाको भीसिरकेमें भिगोवे. एक दिन सातवें गंज छानके
तिलीका तेल मिलाके ओटावे कि सिरका नलजवे और तेल रह
जावे ॥

विच्छूकातेल

जराबंद सुदहरन. जिनियाना. मोथा. कारनेकी जड़की
छाल प्रत्येक इतले चूटकर शीशेमें भरे-और ४०५ भाशेको डियेवा
दाम या तिलीका तेल उसमें डालदे और उसका मुंहबंद करके धूप
में रखदे- गरमीमें सात दिन और जाडोंमें चौदह दिन- फिर उस द-
वाको उसतेलमें अली भांति धोले- और दो बड़े विच्छू जीते उसमें
छोड़दे फिर मुंहबंद करके चौदह दिन और धूप में रखे फिर छान
ले ॥

सुहावकातेल

इसे सुहावका अर्क २ तोले. तिलीया जैतके तेल में जो ३
तोले हो ओटावे कि पानी नलजावे ॥

नास्दीनकातेल

चिरायता. वरकूलगार. सोदकू फी. अद विलसान
लाख. जेजोत. आसके घने. नास्दीन. सरकन्डेकी जड़. रासीन
गवहल. कुरदमाना. दीना मरुवा चरावरलेके कुवलके १ रात
दिन गुलाब और पानीमें भिगोवे फिर छानके तिलीकातेल मि
लाके ओटावे कि निरातेच रहजावे ॥

६
०५५२
०५५२

रोगनमोर्ची

कान्हे घेंटे जो क्वचरोमें होतेहैं-१०० पकड़े-और संक
शीशेमें जिसमें चमेलीका तेल पडाहो जीते डालें और
गरसीकी धूपमें सात दिन तक फिर साफ़ करलें ॥

आसकातेल

इज्युल आसकूट कर तिलीके तेलमें गोटावे-फिर
६ ले ॥

रोगन आमला

किलेहुस आमले-आसके पत्ते-सुनोवरके जड़
लवरावरलेकर कूटके पानीमें गोटावे-कि गलजावे फिरछान
के बतनातेल मिलाके पानीको जलावेकि निरातेल रहजावे ॥

सोयेकातेल

सोयेके बीज छायामें सुरवाके तीन तोले ले औरति
तेल ५७ ॥ तोले शीशेमें भरके धूपमें २० दिन तक रखके
फिरछानले ॥

गोरवसूकातेल

हरे गोरवसूको कूटके पानी उसका तिल्लीके तेल में मि
आग पर जलावे कि निरातेल रहजावे ॥

गेंहूँ का तेल

इसके बनाने की दोरीतें हैं - एक यह कि गेंहूँ को आतिशय
शीशे में भरके ऊपर से कपडौती करे और उसके मुँह में रेशी किसी
छाछके या तिनके भरदे कि गेंहूँ गिरने न पावे - फिर उसको किसी
वर्तन में कि नीचे उसके छेद ही उल्टा रखके ऊपर इसके अर्ध उ
पले चुने और आग लगादे और तेज १ वरतन में सबदे कि तेल उस
में टपकाकरे ॥

दूसरी रीति यह है कि गेंहूँ को किसी साफ पत्थर पर
रखके ऊपर से कोई लोहे की वस्तु गरम करके जोर से दबामे तेल
निकल आता है ॥

सुमारोशनाई

^{२१} चुड़ासजल ^{२५} ३॥ शादना प्रत्येक १७॥ माशे गोल
मिर्चे दारफिल फिल केसर चक्यायन १॥ माशे जंगार सलु
नमक अर्मनी प्रत्येक ३॥ माशे इकलौमिया ७ माशे पीसके सु
रमावनाले ॥

साजूनजर ओनी

काली मिर्चे दारफिल फिल सोरं तज दारचीनी
लौंग कुलीर्जन प्रत्येक तोले भर दोनो तोदरी और वहमने बु
जीदानां लिसानुल असाफीर सीराकूर मोथा बालहड़ प्रत्य
क ३ तोले कूट छानके शहद में साजून बनाले ॥

सिरके की सिक्जबोन

सिरका और शक्कर दोनो बराबर ले कर बनाले ॥

सिकंजवीन वजूरी गर्म

32

उसारा गाफिस. रेबन्दचीनी. प्रत्येक ७ माशे. कर्फस. का
सनी. और कृशूसके बीज. सोंफ. अनीसून प्रत्येक १७ ॥ माशे. किज
और सोंफ और कर्फसके जडकी छाल २४ ॥ माशे. सबकी कुच
लके १२ १५ माशे पानीमें भिगोवे और पानीसे चौथाई सिरका उसमें
डाले. १ रात दिन उसे भीगा रखवे फिर औटाके साफ करले और ६७
तोले कंद में चाशनी करले ॥

सिकंजवीन अनसिली

33

अनसिल उछटांकलकडीकी छुरी बनाके काटे-छोटे
छोटे टुकडे और पुराना सिरका १०२५ माशे डाले और औटाके कि
विलकुल गलजावे और सिरका पांचवां हिस्सा रह जावे- फिर
उसमें १ ॥ गुणाकंद मिलाके धीमी आंचमें पकावे- और कफ उ
सके अर्थात् भाग निकालते जावे यहां तक कि चाशनी पर १
आजावे ॥

सिकंजवीन इफतीसून

उस्तुग्इस. सोंफ. शाहतरा प्रत्येक १७ ॥ माशे. इफतीसून
विषफायज. सनाय. काविलीहड प्रत्येक ३५ माशे. इन सबकी १३५
माशे सिरकेमें भिगोके औटाके छानले और ६ ॥ आधसेर कंदमें चा
शनी बनावे ॥

सिकंजबीनसफ़रजली

खड़ी विही ताजी कूटके पानी उसका ११ सेरलें और ११ पाव
भा सिरका सिल्लाके ओटावे- फिर सर कंद डालके क्रि वाम अर्थात्
चपनी बनालें और जो सिरके के बदले नीवूका अर्क मिला लें तो अति
लाभकारक होगा ॥

सुफ़फ़ चारतुरवम

ईसवगोल-तुरवमरेंडां- कनौचे और वारतंगके बीज-
वरावर लेके किसी मिट्टीके बरतनमें भूनें- और गरम पानी अपर
डालके छत कारें और थोडासा रोगन गुल या बादाम डालके
खिलावे ॥

सुफ़फ़ हब्बुल रुम्मां

खट्टे अनारके दाने मुने हुये ७० साशे- करीया- धनियां
प्रत्येक १४ साशे- काज- स्वर^{३६} नीवू^{३६} तिबती प्रत्येक ७ साशे- गुलनार-
राई^{३२} सिमाक प्रत्येक १०॥ साशे- करीया और धनियेको सिरकेमें
भिगोके सुखाके भूनें फिर सबको कूटछानके फकी बनावे और ९
साशे खावे ॥

सुफ़फ़ मिक्कलियासा

ईसवगोल ७० साशे- रेंडां- वारतंग मरुके बीज- बबूलका
गोंद- गिले बर्मनी- खशरवाश प्रत्येक ५२॥ साशे- चुके और कुलर
के बीज- निशास्ता- प्रत्येक २५॥ साशे- बीजोंको भूनेके और वाकी
सबको कूटके मिलादे- और ठंडे पानीके साथ फ़कावे ॥

सुफूपतीन

ईसवगोल. मसूर और रेहोंके बीज. निशास्ता. मुनेहसेचु
केकेबीज. गिलेअर्मनी. वंसलोचन. वबूलना गोंद. सबको सिं
यअस्पगोलके कूटके मिलाके १ भाणेरोगानगुलु या वादाससे
चिकनाकारके गुलाबके साथ फांकावे ॥

सुफूपतेरातेजक

तेरातेजक को रक रातिदिन अंगूरके सिरकेमें भिगोवे
गौरथोहासाजौका आटा उसमें मिलाकार सूधे. और धीमीग
रकेतनूर से रोटी उसकी पकावे कि जलन जावे. और सूख
जावे फिर उस रोटीमें से १४० भाणले. और संभालूके बीज- इ
सकालूकान्दरीयून. बिजके जड़की छाल. उजवा प्रत्येक ११॥
माश. गन्दनेके बीज. जोरा. चिरमानी. कि रक राति सिरकेमें
भिगोके सुन लिया हो प्रत्येक २२॥ माशे सबको कूटछानकेफ
कीवनाले ॥

संजनदांतोंका पुष्टकारने

वाला

गुलनार. फिटकरी. आमला. अकाकिया. बराबर लेके
संजनवनावे ॥

दूसरा संजन यह है- मुर. तृतीया. फिटकरी. गर्द सिमाक. गु
लाबके फूल. सबके अनारके छिलके. आमलेका उसारा. माजू.
गुलनारमाज. बराबर लेके कूटछानके संजनवनावे ॥

कूटकेतेलकीदूसरीरीति

तज २१ साशे - सुरसक्की - सारचौवा प्रत्येक १४० साशे - का
हुआकूर ३५० साशे - सबको कुचलके गुलाबमें एक राति दिन भिगो
वे फिर ओटाके और छानके तिलोया गैत के तेलमें जो पानी से तिसु
नाही मिलाके ओटावे कि निरातेल रह जावे ॥

सुरतीजान

खट्टे और मीठे अनार के छिलके प्रत्येक १०५ साशे -
साजू - गुलनार - फिटकरी - जलाहुआकागज - अकरकरा - प्रत्येक
३५ साशे - सिमाक ५२ ॥ साशे - नमक - नौशादर प्रत्येक १७ ॥ सा
शे - कूट छानके इन्बुल आसके सिरके में गंधके टिकियावनाके
सुरवारकवे ॥

शर्वतवर्दमुकरर

गुलाबके फूल ताजे खुशबूदार जीरो और सबनी निकाल
के १ सेर भरले और पांच सेर पानी में ओटावे - यहां तक कि रंग और
स्वाद और गंध उसकी पानी में आजावे - फिर मलके उसका फोक
निकाल डालें और उतने ही नये फूल डालके ओटावे - और उसका भी
फोक निकाल डालें - इसी प्रकार से जितनी बार चाहें नये फूल बदल
ते जावे - फिर छानके पानीके बराबर शफर मिलाके जिवांग करले
और १ या २ तोले पीवे ॥

शर्वतइफसंतीन

इफसंतीनरूमी १७॥ माशे-गुलाबके फूल २० माशे-३५
हरपानीमें भिगोके ओटावे जव चौथाई रहजावे तो-मलके-छान
केशकर मिलाके क्विजाम करे ॥

शर्वतगूफा

सूरजागूफाडंडल निंकालके २०३ माशेले-और उससे दुग
नेपानीमें भिगोवे-फिर ओटाके १०२ माशेकंद और ४०५ माशे
हड्डालके क्विजाम करले ॥

शर्वतखशखाश

पोस्तखशखाशदानोंसमेत १००ले-उन्हें कुचलके दो
सेर पानीमें ओटावे फिर १॥ सेरकंद मिलाके क्विजाम करले ॥

शर्वतपोदीना

खहे अनारका रससंक हिरसाले-और हरेपोदीनेका रस
टके भाधा हिरसाले फिर दोनोंको मिलाके ओटावे और उसके बरा
बरकंद डालके क्विजाम करले ॥

शर्वतदीनार

रेवंद १० माशे-कुशूसके बीज ३७॥ माशे-गुलाबके फूल
५२॥ माशे-कासनीके बीज २० माशे-कासनीकी जड़ १०५ माशे-रे
वंदको कुचलके पोटली में बांधके और भौषधोंके साथ भिगो
दे और हलकी गांचपर ओटावे फिर छानके कंद सफेद ४०५ सा
शेडालके क्विजाम करले-और ३५ माशे-से ४५ माशे-और ५२॥
माशे-तक पीवे ॥

शर्वतहब्बुलआस

हब्बुलआसहरा ४०५ साशेकुचलके औरहरामाजूउसके
 भावरकुचलके मिलाके ७ दिन तक पानीमें भिगोवे-फिर ओटाके
 भावरकंद डालके क्रियामकरले ॥

शर्वतअंजवार

अंजवारकी जड़ और छिलके औरडालीइतोलेसे ७ातो
 तिकले औरकुचलके सक रात दिन गरम पानीमें भिगोवे और
 हलकी आंचपर ओटावे औरमलके छानके ४०५ साशे कन्दमें
 अके क्रियामकरे और चाहेतो १॥ तोले खट्टे जन्मके वाने भी मि
 लले ॥

शर्वतगावजुवां

हरीगावजुवांकारस निकालके औरकन्द सफेद मत्थे
 क १सेरभरलेके और मिलाके ओटावे और कफ अर्थात् राग निका
 रुडाले फिर गुलाब २० साशेडालके क्रियामकरले ॥

शर्वतवालंगू

वालंगूके हरेपते कूटके रस निकाले-सक डिस्सालेके
 इरानीकन्द डालके क्रियामकरले ॥

शर्वतनीलोफर

नीलोफरके फूलहरे २०३ साशेचौगुने पानीमें १ रातदि
 रभिगोयेफिर ओटावे जब तिहाई रहजावे तोमलके साफकरले

और २०३ माशे कन्द मिलाके क्विचाम करलें ॥
 यही रीति शर्वत वनफशा वनाने की है ॥

शर्वतसन्दल

सफेद चन्दन काचूरा खुशबूदार कचचे ५० माशे लेके
 ४०५ माशे. गुलाब में दो राति दिन भिगोवें फिर गुलाब अग
 लगनिकाल लें और चन्दन में थोड़ा पानी डाल के ओटावे
 फिर वह पानी और गुलाब मिलाके ८१० माशे कंद में क्विचाम
 करलें ॥

शर्वतउन्नाव

उन्नाव एक हिस्से चार हिस्से पानी में भिगोके ओटा
 वें जब चौथाई जल जावे तो दुगनी शक्कर डालके क्विचाम
 वनालें ॥

शर्वतके वड़े की भी यही रीति है-उसकी बाल को ओटा
 नाचाहिये ॥

शर्वतफिंजनाश

कचचे अंगूरकारस ४३० माशे. सिमाक. माजू. गुलन
 र. गुलाबके फूल. कुन्दुर. सातर. मोघा. प्रत्येक ३५ माशे. केसर
 फिरकरी प्रत्येक ३ ॥ माशे. लोहेकासेल १३५ माशे. दवाओंको
 चूटके अंगूरके रसमें ओटावे-जब तिहाई रहजाय तो साफकार
 के रखछोडे ॥

शियाफ कुन्दुर

कुन्दुर ३५ माशे-उशक-इंजरूत प्रत्येक १७॥ माशे-
केसर ७ माशे-सेथीके लुआब में शियाफ बनावे-और जब अवश
यहोतो उसे टपकावे-और जो घात्र और फुंसियों को पकाना होतो
पहीसीवाधें ॥

शियाफ अबियज कुन्दुरी

कतीरा-बबूलका गोद प्रत्येक १०॥ माशे-निशास्ता ३॥ मा
शे-कुन्दुर-जौ पीसछानके ईसबगोलके लुआबमें बनावे ॥

शियाफ अहमरलीन

धुलाहुभाशादना ३५ माशे-जलाहुभातावा २५ माशे-
बबूलका गोद-कतीरा-सुरमक्की प्रत्येक ७ माशे-बुनुद-कहर
बा-सोती-तेजपात प्रत्येक १५ माशे-दन्मुल अखर्वैन-केसर प्र
त्येक ३॥ माशे वसी प्रकारसे बनाले ॥

शियाफ जंगार

जंगार-बबूलका गोद-सफेदा प्रत्येक ७ माशे-पीस
के बनाले ॥

शियाफ गर्ब

सलुभा-कुन्दुर-इंजरूत-दन्मुल अखर्वैन-गुलनार-
सुरमा-फिटकरी-प्रत्येक १ तोला-जंगार-३ माशे पीसके बनाले ॥

कुर्समाजरीयून

माजरीयून सुदंजूर. पीलीहड्डके ढिलके. नौका आम
बराबर लैकै शकर मिलाके कुर्स बनावे और ४॥ साशेशर्वत गुल
के साथ रखावे ॥

कुर्सअनीसून

इफ्रसंतीन सूनी. आसारोन. करफसके बीज. वा
दास. अनीसून. कूटछान के पानीमें गूंधके बनावे और सिक्क
चीनके साथ दे ॥

कुर्सकिज

जराबंद तवील ७ माशे किजके जडकी छाल उशके
प्रत्येक १४ माशे. समालके बीज. गोलभिरत्वे प्रत्येक ११ माशे
उशके को पुराने सिरके में घोलके और गीपधोंको कूटछानके
मिलादे और ४॥ माशे सिक्कजीनके साथ रखावे ॥

कुर्सकौकब

बाकलड. जुन्दवेदस्तर. तज. तीनुल्बहीग. वैरु
जके ढिलके. मुरमवकी. प्रत्येक १४ माशे अफ्रीम. केसर. सी
ठाकूट. जलाहुआ अतरकू. प्रत्येक १७॥ माशे. सफेद स्वशासुवाग
दूकू. अनीसून. सीसालियूस. खुरासानी अजवायन. सूबासीग
करफसके बीज प्रत्येक २१ माशे. गोदोंको पानीमें घोलके और
रसब गीपधोंको पीसछानके शहदमें गूंधके कुर्स बनाके का
यामें सुरखावे ॥

कुर्सिसुम्बुल

वालकड़ - पिक्काई - सरकंडेकीजड़ - तज - जरावन्दत
 वील - दारचीनी - चिरायता - प्रत्येक १०॥ माशे - केसर - अनीसून -
 सुरमवकी - काहुवाकूट - कालीमिरचे - प्रत्येक ३॥ माशे - गूगल -
 सरसंगी - प्रत्येक ७ माशे - उशक १॥॥ माशे - पहिले गूगल को गुला
 बमें घोले फिर और ओषधोंको कूट छानके गिलावे और सात
 माशे खावे ॥

कुर्सिगुलाजस

कार्फिसके बीज - अनीसून प्रत्येक ५२॥ माशे - इफसंती
 न ७ माशे - तज - ७ माशे - सुरमवकी - काली मिरचे - मुन्द - अफीम -
 प्रत्येक ८ ॥॥ माशे - सबको कूट छानके पानीमें कुर्सि बनावे और ८
 माशे खावे ॥

कुर्सिकुहल

सुरमा - धोयाहुआ - ज़ादना - दुग्मुल भस्वबैन प्रत्येक
 १०॥ माशे - गुल्जनार - माजू - प्रत्येक ७ माशे - गुंजनका सींगजलाहुआ
 अक्राकिया प्रत्येक ३॥ माशे - ल़ादन केसर प्रत्येक १॥॥ माशे - इं
 सरसज ५॥ माशे - कूट छानके हरे वारतंग के पानीमें गूंधके बना
 वे - और ३॥ माशे वार तंग और कुलफे के पानी के साथ खावे

कुर्सिगुल

वंसलोवन - इफसंतीन - वालकड़ प्रत्येक ७ माशे
 तुंजवीन १०॥ माशे - गुलाब के फूल - मुलैरी - प्रत्येक १० माशे

छान के गुलाब में बनावे. और ३ माशे या उससे अधिक

॥

कुर्सकहरवा

कहरवा-बुसुद-मोती-जलीहुईकोड़ी-

कासीगंजलाहुआ-धोआहुआशादना-प्रत्येक १०॥माशे-गुलाबके फूल-कुलफेके बीज-धनियां-सिसाक-मुनाहुआनिशास्तूर और बबूलका गोद-गुलनार-प्रत्येक १७॥माशे-बसलोचन अक्राकिया-बरगद की डाटीका उसारा प्रत्येक ७ माशे-कूट छानके चार तंग के पानी में सूधके गोलियां बनावे और ७ माशे खावे ॥

- ५०१२ -

कुर्सकाकनज

काकडीके बीज ३५ माशे-काकनज १०॥माशे-कर्फसके बीज-मंग गिल्लैअर्मनी-बबूलकागोद-दम्मुल अखवेन वजसुल वनज प्रत्येक ७ माशे-अफीस-३॥माशे-कूटछानके वनजें और १॥माशे खावे ॥

कुर्सजियाचितुस

बसलोचन-मुलहटीकासत प्रत्येक १७॥माशे-कुलफे और काहूके बीज-गुलाबके फूल-गिल्लै अर्मनी प्रत्येक ५२॥माशे-धनियां-चूकेके बीज-प्रत्येक १०॥माशे-सफेदचंदन-मुलनार-सिसाक-बबूलकागोद प्रत्येक ७ माशे-कपूर १॥माशे कूटछानके कुलफे और काहूके पानी में बनावे ॥

कुर्सवौलुहम

काकडीके बीज ३४ माशे. निशास्ता. कतीरा. गुलनार.
कुर्स. दम्मुल अरववेन. वबूलका गोंद प्रत्येक ३॥ माशे. कूटछान
कुलफे. या वारतंगके बीजमें बनावे ॥

कुर्सनफसुहम

गिल्ले अर्मीनी. जहरुवा. वबूलका गोंद. दम्मुल अ
रववेन. वंसलोचन. निशास्ता. कतीरा. अक्काक्रिया. गुलनार.
बरागद की डाटी. बरावर लेके वारतंग और कुलफे के पानी में
सुंधके बनावे ॥

कुर्सतवाशीरमुल्लयन

निशास्ता. वबूलका गोंद. सफेद स्वशास्वाश. कतीरा प्र
त्येक ३॥ माशे. खीरेक कडीक हुके बीज प्रत्येक १ माशे तुरंजबी
१॥ माशे. सफेद वंसलोचन ३४ माशे कूटछानके ईसबगोलके
सुभावमें बनावे और ४॥ माशे खवे ॥

कुर्सतवाशीस्काविज

वंसलोचन १४ माशे. कुलफेके बीज मुने हुये ७ माशे
जलावके फूल २४ ॥ माशे. सफेद चन्दन. वबूलका गोंद. क
तीरा. निशास्ता. शाहबुलूत. चूकेके बीज सब मुने हुये. मुलह
रिकासत. जरिशक प्रत्येक ७ माशे गुलनार अक्काक्रिया १

प्रत्येक ३॥ साशोकूट छानके सेव या जिरिक के पानी में बनावे
और ४॥ साशे खावे ॥

कुरसकाफूर

कपूर २ माशे. गुलाबके फूल. तुरंजवीन. प्रत्येक २९
माशे. खीरेक कडीके बीज. बंसलोचन. सुलहटी प्रत्येक १७
माशे. काहूके बीज. २४ माशे. कुलफेके बीज २१ माशे. कासने
के बीज ७ माशे. कड़के बीज १४ माशे. सुलहटी का सत ११
माशे. कूट छानके ई सब गोलके लुभावमें बनावे और ७ मा
शे तक खावे ॥

कसूनी

जीरा. मदब्बर. सुहाब. सौंठ. काली भिस्वे. नमक
असनीको शहद में मिलाके मत्तून बनाले ॥

कोहलुलजवाहिर

+ इसकी दो रीते हैं - एक यह कि लाल फीरोजा. मारक
शीशा. सफेदा. निशास्ता. प्रत्येक ७ माशे. धोयाहु आशादना
रसोत. शियाफ्र मामीसा. केकडे जले हुये. इक्लीमिया. प्रत्ये
क ३॥ माशे. तृत्तिया. बंसलोचन. वहना पारंग. प्रत्येक ४॥ माशे.
इंज रूत १४ माशे. सुरमा ७० माशे. कपूर. सौंठ प्रत्येक १६ जो १७॥
माशे काच के अंगूर के रसमें घोटें ॥

दूसरी रीति यह है - सुरमा २४॥ माशे. मार्क शीशा
१७॥ माशे. इक्लीमिया जहवी घुली हुई. वुसुद. सोती प्रत्येक

साशे. शादना ७ साशे. केसर १॥ साशे. सुरमा बनावे ॥

कुहल अजीजी

+ जलाहुआ सुरमा १७ ॥ साशे. सोने और चांदी की इक्की
 लीमिया. शादना. तृतीया. जलाहुआ तांवा प्रत्येक ७ मा. पीलीहड्ड
 के छिलके. तेजपात. काली मिरचें. दारफिलफिल. नोशादर.
 मलुआ. रसोत. केसर. केकड़ा प्रत्येक ३ ॥ साशे. सोंद १ ॥ साशे
 कपूर ८ जी. सुशकतीनजी. लौंग बत्तीसजी. पीसके सुरमा
 बनावे ॥

कलकलानजरम

+ रेबन्द ^{शाद}. उसारागाफिस. अनीसून. चालछड़. प्रत्येक
 सात साशे. ईरसा १० ॥ साशे. साजरीसून सुदब्वर. गारीकून.
 पीलीहड्ड. सिक्वीनज प्रत्येक १७ ॥ साशे. कूटछान के शह
 रसे मिलाके साजून बनावे- और १० ॥ साशे. से चौदह साशे त
 करवावे ॥

कलकलानजठंडी

+ गुलाबके फूल. सुलैटी. कासनी और ककड़ीके बीज
 सुलहटीकासत प्रत्येक ७ साशे. उसाराइफासंतीन ११ ॥ साशे. सा
 जरीसून सुदब्वर. पीलीहड्ड प्रत्येक १३ ॥ साशे. तुरजवीन. अमल
 तास. सफेदकन्द प्रत्येक ५२ ॥ साशे. साजून बनावे और सातमा
 शेसे १० ॥ साशे तक स्वावे ॥

लाजवर्दके घनेकी रीति

लाजवर्दको पीसके सुरमाकरले- और पानी में डालें- और थोडासा जैतून का तेल डालें फिर नितारें फिर बहुत सा पानी डालके होले होले धोले- और रंगीन पानी अलग वर्तन में निकालें के दूक दें घड़ी भर पीछे तलछट वैठजायगी वही तलछट कामकी है- इस प्रकार से फिर उस पहिले लाजवर्द को बहुत सा पानी डालके वैठालें यही तलछट सुरमाके काममें लावे ॥

माजूनफिलासफा

काली मिरचें. दारफिलफिल. सोंठ. दारचीनी. आमला वहेडा. शैतरज हिंदी. जरावन्द मुदहरज. खुसियतुंस्सालिव. चिलगोजेके बीज. वावूनेकी जड़. दरयाई नारियल प्रत्येक ३॥ माशे वावूनेके बीज १७॥ माशे. मुनक्के १०५ माशे. दुगने शहदके क्रिया में माजून बनावे और १ दिन पीछे खावे ॥

माजूननुजाह

काविलीडडके छिलके. कालीइड़. वहेडेके छिलके. छिलेहुस आमले प्रत्येक ३५ माशे. तुरबुद सफेद. विसफायजड़. फ्रीसून. उस्तखुइस प्रत्येक १७॥ माशे. कूटछानके दुगने शहदके क्रिया में माजून बनावे ॥

लोहेकेमैलकीसाजूत

कालीहड्ड. आमला. कालीमिरचें. सोंठ. दारफिलफिल.
मौस्था. शीतरज. बालुछड़. प्रत्येक ३५माशे. गंदने और सोयेकेबीज
प्रत्येक १४माशे. लोहेका मैल घुलाहुआ. ३५०माशे. कूटछानके
सोराजवादास मिलाके गहदमें मिलावे फिर सुखके ७माशेमिला
के चीनीके बर्तनमें रकवे ॥

लोहेकेमैलकेघोनेकी

रीति

मैलको १४दिन अंगूरकेसिरकेमें भिगोवे. और मिट्टीउ
समें न गिरनेदे- फिर उसे सुखाके काममें लावे ॥

साजूतलघूब

बादाम. अरबरोट. हल्केकर्म. हल्केलवतम. हल्केसुनो
वर. हल्केजलम. फिन्दक. पिस्ता. नारियलताजा. हल्केफिलफिल
इनसबकी सींगी. स्वशास्वागसफेद. दोनोतोदरी और ब्रह्मने. छिले
हुयेतिल. रबरवूजे. मिरजीर. पियाज. शल्लगम. रतवा. हिलयून.
इनसबकेबीज. और सोंठ. दारफिलफिल. कवावा. तज. दारचीनी
शकाकुल. कुलीजिनसबकोबराबरलेके कूटछानके. तिगुनेगह
दमें साजूत बनावे ॥

६
५१:११

माजूनबुजूर

- * गाजर. शलगम. पियाज. मूली. हिलयून. रतन.
 बीज. हव्व सुतोवर. हव्व फिल फिल. ल्युल तोदरी.
 पीली तोदरी के बीज. लि सानुल वसाफ़ीर. शकाकु
 ब्रह्मन. घुजी दाना मोठा कूट. सोठ. दार फिल फिल. हींग.
 सब बराबर लैके शहद में बनावे और १०॥ माशे ताजे दूध के

॥

विच्छूकी माजून

- * जलाहु भा विच्छू १२॥ माशे. जिनत याना ५॥ माशे. सोठ.
 ३॥ माशे. दार फिल फिल. काली भिर्चे प्रत्येक ७ माशे. काकनज १५॥
 जुन्द वेद स्तर १४ माशे. कूट छान के शहद में
 और १६ जो स्वावे - और लडके को ८ जो दें ॥

विच्छूके जलाने की रीति

सोटा भा शाक पडौती करके. विच्छूको उसमें छोडदे.
 करके गरम तनूर में सक गति उसे रखवे. और सवेरे लिका

॥

माजून हजरुलयहद

- रुजू. खीरे कूकडी और खरबूजे के बीजोंकी
 ११॥ माशे. हजरुलयहद गसील १७५ माशे. कूट छान के शहद
 मिलावे. और ७ माशे से १०॥ माशे तक रखवे ॥

मातृनकसीला

कसीला.कांचलीहड.वहेडा.आसला.तुरबुद.सोठ.
परावरलेके कूटछानके तिगुनेग्रहद मेंयाकंदके क्लिवाममेंसि
लाकेबनावें और सातमाशेखावे॥

सतवृखमुलप्यन

अननाब.लहसोडे.नीलोफार.रैवैरुकेबीज.वनफ़शेवो
रवाचूनेके फ़ूल.अगलतासकाशीरा.तुरंजवीन.रोगानवादस्प
लीमें गोंलाके मलकेछानके पिलावें॥

सुफ़रिहसरीर

गावजुवां.सूंगेकीजड.धनियां.सोती.सफ़ेदचहमजुं
नके छिलके.कहलवा.रेशम सफ़ेद जलाहुआ.कुलफ़ेकेबीज
पतले.कपूर ६माशे.कूटछानके हडकेसुरख्येके जीरे मेंसंगून
बनावें और ७माशेखावे॥

सुफ़रिहदिलकुशा

सूंगेकीजड.कहलवा.जसकचूर.दरोनज.प्रत्येक३॥
माशे.कचूयाकद६॥माशे.काविलीहड.औरपित्तेऔरतुरंजके
छिलकेकचूचारेरेशमकलाहुआ.सोतीप्रत्येक७माशे.धनियां
वंसलोचन.प्रत्येक१०॥माशे.दोनोंबहमनेप्रत्येक१७॥माशे.
गावजुवां.शाहतरा.वालंगू.सबकोकूटछानके.अनार.चूका.
औरजरिशकका पानीप्रत्येक३५माशेलेकर सफ़ेद कन्द शर्वत

वनफ़शाप्रत्येक ४०५माशे मिलाके क्रिवास वनावें- फिर डालके साजून वनावें ॥

मुलप्यनमुबारिक

अमलतास- इमली- कासनीके पानी या जौके पानीमें पिलावें- और थोडा सा जौ रोगन वादस या रोगन गुल्ले मिलाके तो अतिलभदायक होगा ॥

मरहमवासलीखून

* रातीनज- जिफ़ा चर्वी वरावरलेके- देवक ॥

मरहमरसुल

* जावशीर- जंगार- गन्दा विरोजा- मुरसवकी- ३३
७माशे- कुन्दुर- ज़राबंदतबील- प्रत्येक १०॥माशे- ५३
१५॥माशे- उश्क २४॥माशे- गूगल- सफ़ेद सोम- रातीनज
१४माशे- गूगलको सिरकेमें घोलके औरवाकी
तेलमें जो ६००माशेहो पिघलाके सबको मिलाके ॥

चूनेका मरहम

चूनेको पानीमें घोले- फिर नितारके दूसरा ।
इसी प्रकार ७ बार करें- फिर मुखाके रोगन गुल्ल या वि
तेलमें मिलाके मुलतानी मिट्टी डालके मरहम वनावें ॥

मरहमकापूर

सफ़ेदेके मरहम सेकपूर मिलादेनेसे बनजाताहै ॥

सिरकेकामरहम

सुरदासंग १॥ तोले पीसके ३ तोले अंगूरके सिरके औरदो तोले जैतके पुरानेतेल में डालके हलकी आगपर पकावे और घोंटतेरहे कि सुरदासंग जमनेनपावे- जब वह जलके कालाहो जावे और मरहम का क्वाम रीकहोतो उसे निकालें ॥

मरहमसफ़ेदा

रोगनगुल ४ तोले- सोम एक तोले पिघलाके थोडा सा सफ़ेदा मिलावे इतना किरोगन और सोमको उबालें- फिर अंडेकी सफ़ेदी मिलावे- और कभी थोडासा कपूरभी मिला लेतेहैं ॥

दूसरी रीति इसकी यहहै- कि सफ़ेदा और सफ़ेदसोम रोगनगुल मिलाके मरहमबनाले ॥

मसूरकामरहम

मसूर- वावूनेके फूल- जाखूना- खैर- सबको पानीमें औरावे- जब गाढाहो जावे तो अंडेकी ज़रदी और सुरगीकी चर्बी मित्राके मरहमबनावे ॥

सुरदासंगकामरहस्य

सुरदासंग. सफेदा. केसर. फिटकरी पीसके रोगानवा
दासमें मोम पिघलाके वह औषधें मिलावें ॥

कालामरहस्य

जैतकातेल १२१५ माशेलें उसमें सुरदासंग इतले पी
सके मिलावें और ओटावें कि काला हो जावे- फिर कुंदुर- दम्मु
ल अखवैन- इंजूरुत. प्रत्येक ७ माशे. पीसके मिलावें ॥

सरहस्यजंगार

इंजूरुत. उशक प्रत्येक ६ माशे. जंगार तोला भर. सि
रके में पीसके शहद मिलावें ॥

नोशदारु

गुलाबके फूल २१ माशे. सौंदरूपी १७ ॥ माशे. लोंग. सु
स्तमी. तगर. बालछड़ प्रत्येक १० ॥ माशे. जरस्य. बसवासा. छ
री और वही डलायचीके दाने. जायफल. तुंज. केसर. प्रत्येक
७ माशे कूटछानके अलगरक्ते और ताजे थामले दूधमें तीन
रात दिन भिगोवें और हररोज दूध बदल डालाकर- फिर पा
नी से धोके ताजे पानी में ओटावें- जब भली भांति गल जावे
तो कपड़े में बांधके सारा पानी निचोड़ डालें- और भली भांति

पीसके उनमें से एक सेर भरले फिर दो सेर शहद या कन्दके वि
 वाम में मिलाके पकावे फिर वह औषधें पीसी छनी हुई उसमें मिला
 विं और चीनी या चांदीके बरतनमें रक्खे - और ४० दिन तक सब छोड़े
 फिर ३॥ माशे से ९०॥ मिनक खावे जोर इसका दो वर्ष तक रहता है।
 जब तक नहीं विगड़ता ॥

नवहामिज २८२

वनफलेके फूल १७॥ माशे. इसली छिली हुई ३५ माशेती
 नफूलनी लोफरके - सात बड़े आलू. पीले आलू और उननाव मत्स्य
 क १५ पानीमें भिगोके छानके पिलावे ॥

बनी हुई औषधें समा सहई

औषधियोंकीकैफ़ी

यत्

— ७३७ —

अब हम तुम्हें कैफ़ियत उन औषधोंकी बतलाते हैं- जो इस पुस्तकमें बहुत काम आई हैं- परंतु तुम्हें इतना समझ लेना चाहिये कि औषधकी कैफ़ियत वही औषधकी गरमी ठंड और तरीक़े रस्वुकी हैं- हकीमोंने इन चारोंके चार दरजे ठहराये हैं ॥

जो पीछे पीने से कुछ न मालूम हो परंतु बार बार याग धिक़ खाने से गरमी ठंड आदि मालूम होता यह पहिला दरजा है इसकी जगह हमने १ का अंक लिखा है ॥

और जो असर मालूम हो परंतु मनुष्यके किसी काममें हानि न करे- वह दूसरा दरजा है- उसकी जगह जगह का अंक लिखा है ॥

और जो मनुष्यके कामोंमें हानि हो परंतु मार न डाले- यह तीसरा दरजा है- इसकी जगह ३ का अंक लिखा है ॥

जो कामोंमें हानि हो और मार भी डाले तो चौथा दरजा है इसकी जगह ४ का अंक लिखा है ॥

और हर दरजेमें तीन रुतबे हैं- आदि- मध्यम- अन्त- परंतु हर औषधमें इन रुतबोंको जानना कठिन है- और जो औषधें बाहर लगाई जाती हैं- उनमें तो अत्यंत ही कठिन है ॥

तर औषधोंकी गरमी पहिले दरजे से नहीं बढ़ती क्योंकि

जो गरमी अधिक होजावेगी तो तरीजाती रहेगी- और यह भी ध्या
न रखना चाहिये कि दरजे और रुतवे जो अपरलिखे गये हैं- उन
में इकोमलोग आपसमें कुछ अंतर भी रखते हैं ॥

हिन्दी वैद्योंने औषधोंके दोही दरजे तहराये हैं- पहिला
स्थल जिसमें पहिला और दूसरा दरजा आगया ॥

और दूसरा महा जिसमें- तीसरा और चौथा दरजा आ
जाता है ॥

हमने आगे गरमकी जगह (ग) और ठंडेकी जगह-
(ठ) और तर की जगह (त) और खुशकी जगह (ख) लि
खा है ॥

पहिले दरजेकी गरम औषधें

चना-लादन-गरब-चौडीजंगली-शाहतरा-सलुवा-इफ
संतीन-बावूना-तेंदुआ-कतंकेबीज-आदि ॥

दूसरे दरजेकी गरम औषधें

करफस-कुंहर-मस्तगी-गर्वकीजड़-सफेद-औरकाली
साजरीयून की जड़-बादरूज-जराबंदतवील और सुदहरज आ
इद-चिरायता-केसर-अनसल-सौया-बिरंजासफ-नमक-फरा
सियून-गंधक-सैलारस-शहदके छत्तेवामैल-इसकाकस-दि
लसल-उठंगनकेबीज-सेरी-कुण्डल डिशा-कोठरगा-दुल
केपेडकीछाल-आदि ॥

सान. बरावद. त्रिस्तु शैलम. माहदानज. चिरायता. करसना. क
रम्ब. मकड़ीकाजाला. जावशीर कादूध. आदि ॥

तीसरे दरजे की खुश्क औषधें

लहसन. अनीसून. इम्लीसून. तगर. जलनार. हींग. च
ना. जूफा. तज. मरु. दौनामरुवा. जामन. जायफल. सातर. वु
लूत. अक्राक्रिया. इफसंतीन. अमल. साम्बरीयूनकीजड. विल
सान. नमक. हाशा. चूका. उतरुज. बरशीशगान. नतखुर्वरी.
मूलीकातेल. जलाहुआकेकडा. सरसा. वागीसुदाव. जलीहुई
फिटकरी. कलोजी. जलेहुयेवाल. रलुवा. सिम. झ. फादा
निया. कौसूर. करोया. बच्च. मशकतयमशी. अजब. यन. आदि।

चौथे दरजे की खुश्क औषधें

राई. सुदाववर्षी. गन्दना. अपारीवीयून. कुतरान.
अफीम. धतूरकाफल आदि ॥

पहिले दरजे की तरजौषधें

रोगानगुल. काहू. पालक. गावजवां. खुसयतुस्तालि
व. शफतालू. वनफ्रशेके पत्ते. चिरोंजी. इंनीरगादम. तोदरी.
सीसनका उस्तारा ॥

दूसरे दरजे की तर औषधें

कुलफ्रा. लोनिया. तरबूज. कदू. मिशमिश. अस्पगोल
पलवल ॥

अ, इ, उं,

— ६३३ —

- अस्पगोल ~ ठ-३-त-२- पित्तोंको ठीक करता है ।
 अनीसून ~ ग-२-ख-३- कफको ठीक करता है ।
 सुलहठी ~ ग-२-ख-१- कफको ठीक करता है ।
 इजीर ~ ग-१-त-२- सौदाको ठीक करता है ।
 इरफंज. ~ ग-१-ख-२-
 इज्रसूत ~ ग-२ अंत-ख-२ आदि में ।
 अक्काकिया ~ ठ-२-ख-२ या-ठ-१ ख-२ रुधिरके बसोंको
 लाभकरता है ॥
 उस्तरबुद्दस ~ ग-१-ख-१- सौदाका गुल्लाव है ।
 इफसंतानि ~ ग-१-ख-३ पित्तोंका गुल्लाव है ।
 इज्जास ~ ठ-१-त-२ पित्तोंका गुल्लाव है ।
 इस्तीसून ~ ग-२-ख-३ सौदाका गुल्लाव है ।
 आमला ~ ठ-२ ख-३ आदि में- सौदाका गुल्लाव है ।
 इसफानारब अर्थात् पालक ~ ठ-१-त-१ आदि में- उल्टीमें
 पित्तोंको निकालता है ।
 अक्कल ~ ग-२-ख-२

वाविरग-गर-खर अंतमें।

वारुञ्जव-अर्थात् गोहृकीवीर-गरखर जान्नु (१७)

प.

परसियावशो अर्थात् हंसराज-मीतदिल-गरखर (१७)

त.

तुरम्बकुशूस-ग.१ ख-२ सडेहुये कफको रगो से निकालता है।

{ तुरम्बवाजको कहते हैं-इसकी जगह तु २ लिखा है }

तु-खरवृजा-ग१-तर सौदाको ठीक करता है।

तु-सरु-गर-तर-सौदाको ठीक करता है।

तु-सोया-ग३ अन्त खर आदि-उलटी में कफको निकालता है।

तु-गाजा-ग२-त२

तु-मूली-ग३-खर उलटी में कफको निकालता है।

तुरुवुद-ग३ आदि-खर अंत में कफको जुल्लाव है।

तमर हिन्दी अर्थात् इमली-ठ.१-खर अंत में कफको जुल्लाव है।

तुरजवीन-ग१-त१

तमघोल अर्थात् पान-गर-खर

तरवूज-३१ आदि-गर अंत (१७)

ज.च.

जुदवेदस्तर अर्थात् दरयाई कुतेका पीता-ग३ अंत (खर)

जौ-३१-ख२ आदि।

जलनार अर्थात् गुलनार-ठ२-ख२ आदिमें।

जदवार अर्थात् निरबिसी-ग३-ख३ आदिमें दिलका पुष्ट और प्रसन्न करती है।

जायफल-ग२ अंत-ख३ निगरको पुष्ट करता है।

जाफरान अर्थात् केसर-ग२-ख१।

जूफासूखा ग२-ख२ अंतमें।

जंजूवील अर्थात् सोठ-ग३-ख३।

जरम्बाद अर्थात् नरकाचूर-ग२ ख२ अंत-दिलको पुष्ट और प्रसन्न करती है।

जाक-ग-३-ख३

जिम्हा-ग-ख

जरीनज अर्थात् हस्ताल-पीली-ग३-ख-३-और लाल

ग४-ख४

चिनार-ठ-३

ह

हुजज अर्थात् रसोत-गरमी और ठंडमें मोत दिल है ख२

हिलती अर्थात् हींग ग४ आदि ख२ अंत

हब्बुल मुलूक दूधउसका ग३ ख३ और पते और दाने उस के-ग३ ख३ अंतमें

हब्बुल नील अर्थात् कालादाना-ग३-ख३ कफका जुल्ल वही।

हुरमुल अर्थात् इस्फंद-ग-३ ख-२ कफका जुल्लाव है ॥

हजरलाजवर्द - ग१ ख२ सौदाकाजुल्लावहै।

हजरअरमनी - ग२ ख२ सौदाकाजुल्लावहै।

हस्सामा - ग३ - ख३ जिगरको पुष्टकरताहै।

हव्वविलसान - ग२ - ख२ - अन्तमें जिगरको पुष्ट करता

हजरुल्लयहद - ग१ - ख२

हलैलाजर्द - ग१ अंत - ख२ पित्तोंकाजुल्लावहै।

हलैलाकाविली - मोत दिल रंड में - ख - १ - सौदाकाजुल्ला

हलैलाकाली - ग१ मध्य - ख२ सौदाकाजुल्लावहै - हलै

लाहडकी कहतेहैं।

ख.

खुरफा अर्थात् कुलफा - उ - ३ - त - २ - पित्तोंको ठीककर

ख्यारैन अर्थात् खीरेककडीकेबीज - उ - २ - त - २ - पित्तोंको

खरबक अर्थात् कूटकी - ग - ३ - ख ३

खिश्त अर्थात् ईंट - ग२ - ख४

ख्यारशुम्बर अर्थात् अमलतास - ग१ त - १

खिसकदाना अर्थात् कड़ - ग - २ ख१ अंत में काफ़ काजुल्ला

खैर - त - ३

खिसक अर्थात् गोखरु - ग - ख - या - उ - ख - या मोतदि

खल॥

स्वकला- ग. त. १ लक्ष्मी १०००-१ ॥ १००० (२)

द.

दम्मुल अरबबैन- ठ ३-स्व ३

दमागजानवरोका- ठ-त-भेजेकोपुष्टकरताहै

दुरराज अर्थात् तीतर-ग-स्व १ भेजेकोपुष्टकरताहै

दरोनज-ग ३-स्व ३ दिलकोपुष्ट और प्रसन्नकरतीहै (५४)

र.

रैहां तुलसीयानाजवो १ ग १-स्व २

रैत-स्व ३

रोगानकेसर-ग-२-स्व-१ भेजेकोपुष्टकरताहै

रैवासि-ठ-स्व २ दिलकोपुष्ट और प्रसन्नकरताहै

रोगानजर्द (घी) १ ग. १ त. १ अंतमें पुराने में खुश्की आजातीहै (५५)

स.

सुम्बुलुततीव (बालकड़) ग २-स्व-२ अंत-कफकोठीककर [तीहै]

सिपिस्तां लहसोड़ा १ मोतदिल गरमी और उंडमें-त-१ सोदाको (ठीककरताहै।

सबूस (भृसी) १ ग १-स्व १

सिरका-ठ-स्व २

सुरंजान-ग ३-स्व ३

सोद (मोथा) १ ग-स्व २

सक्रमूनियाँ-ग-३-स्व२ अंत-पित्तोंका जुल्लाव है।

सनायमवकी-ग२ अंत-स्व१ सीदाका जुल्लाव है।

सुहाव-ग-३-स्व३

सलीरवा (तज) ग-२-स्व-२ अन्त-जिरारको पुष्ट करती

साजिज (तेजपात) ग३-स्व२ मेदेको पुष्ट करती है।

सफाल-स्व४-ग१-...

सरेश-ग२-स्व२

सरतां- (केकडा) उ-२-त२

संगयशम-उ२-स्व२

सरो-ग१-स्व२

सलस्वहैया (केचली) ग२-स्व२ अंत

सन्दल-सफ़ेद और पीला-उ३-स्व२ और लाल उ२-स्व३ पित्त

कोरीकवारता है।

सिद्ध-रालुआ) ग-स्व

सातर-ग२-स्व२ अंत

समग (वबूलकागोद) ग-स्व२

सावन ग-३-स्व३

जंसलोचन-उ-२-स्व३-दिलको पुष्ट और असन्न करती

है।

श.

शूनीड़ (कलौंजी) ग३-स्व३

शिव (फिटकरी) ग२-स्व३

शाहतरा-ग-स्व-२

शकवाई-गर-स्वर
 शीरखिषत-ग१ अंत और मोतदिल-त-स्व
 शहमजकायन-ग४-स्वरकफकागुल्लावहै
 शकर-ग१-त१ अंतमें और पुरानी-स्व
 शीरभेड़-गं-तभेजेको पुष्टकरताहै
 शकाकुल-ग-१-त-२- दिल को पुष्ट और प्रसन्न करता है

शादना-उ-१ अंत-स्वर

ग

गारीकूल-ग१-स्वरकफकागुल्लावहै
 गालिया-ग-स्वभेजेको पुष्टकरताहै
 गाफिस-ग१-स्वरजिगरको पुष्टकरताहै
 गावजवां-ग१-स्वसौदको ठीक करतीहै
 गुलकनफशा-उ१-त१
 गुलावः क्याग
 गुलावके फूल-उ१-स्वरभेजेको पुष्टकरताहै
 गजमानज (भाऊ) उ१-स्वर
 गावरस (वाजरा) उ१-स्वर
 गुलनीलोफर-उ१-तर
 गिलमरवतूम-उ-२-स्व-२ दिल को पुष्ट और प्रसन्न करती है
 गिलमुल्तानी-ग-स्व

फ.

फिरंजसुशक (रामतुलसी) गर-स्व३ दिलको पुष्ट और प्रसन्न

फेदानिया - गरम- दिलको पुष्ट और प्रसन्न करती है

फरफियून - गर-स्व३
फिज्जत (संभालू) गर-स्व३

क.

काकला (इलायची) वडी गर-स्व२-छोटी-गर-स्व२ कफ
(कोठीक करती है)

कास्तफाल (लोंग) गर-स्व३

कास्त (कूट) गर-स्व३

कालूकतार - गर-स्व३

कान्दूरियून - वडी-गर अंत-स्व३-छोटी गर-स्व३ कफको ठीक करती है

काशर उतरुज (छिलके बिजोडेके) गर-स्व२ दिलको पुष्ट और

कासाउल हिमार - शुन्लावकी औषध है

कामीला गर-स्व२

कासनी - उर-स्व२ पित्तको ठीक करती है

कामानोज - धनिया) उर-स्व२ पित्तको ठीक करती है

काहू - उर-स्व३ अंत पित्तको ठीक करती है

कसूच (जीरा) गर-स्व३ कफको ठीक करती है

कासूर - गर-स्व२

१५६६७१

^{१२} कुन्दुश-ग३-स्व३ अन्त

काहू-ठ२-त२

काकिनन-ठ२-स्व२

कवावा-ग२-स्व२

कहरुवा- मोतदिल गरसी और ठरड में-स्व-दिलको पुष्टी
इससन्नकरतीहै

(२०)

करन्व-ग१-स्व२

करोया-ग२-स्व२ मेदेको पुष्टकरोहै

ल.

१/२५/५२

^{१६} लवलव-ठ२-स्व२ पितोकाजुल्लावहै

लोबिया-लाल-ग१ अंत-त२ मोरो

लोबिया सफेद-मोतदिल गरसी और ठड में

लाख-ग२-स्व३-या-ग१-स्व२

लागिया-ग-४-स्व४

लोवतवरकरी-ग२-स्व२

म.

लोमलडो हर पो

मामीरा-ग३-स्व३ अंत

मुनक्का-ग२-त१ कफको ठीक करतीहै

मुश्क-ग२-स्व३

मुर-ग३ अन्त-स्व३ अन्त

मारजनजोरा-(दोनामरवा) ग२ अन्त-स्व१

माहीजहरज-ग३-स्व३ कफकाजुल्लावहै-इसमेंसे बालवाँप
सजतीहै ॥ २६१

मस्तगी- गर- स्वर अंत *मिठे वीण*

मिलह निफ़ती- (नमक दुर्गंधवाला) गर- स्वर कफ़ और सौद
(को निकालता है)

मोम- गर आदि में

मोती- उर- स्वर अन्त- डिल और भेजेको पुष्ट और प्रसन्न कर
(ते हैं)

^{२१}सुर्ग- गर अंत- मोत विन्तरो में भेजेको पुष्ट करता है

मिशक़ तरामशी (पह्लाडी योदीत्ता) गर अन्त- भेदेको पुष्ट कर
(रता है)

सुरदासंग- गर- स्वर विष है- ऊपर लगाने से बच्छा मांस उ
(तपन्न होता है)

न-

नमक- गर- स्वर

नानक़ालाग़ (खुव्याज़ी) उ१- त१

नानखाह (अजवायन) गर- स्वर आदि में

नारंज- पीले डिलके और फ़ल उमके- गर- स्वर

नारंजकी खटाई- उर अन्त स्वर

नारंजके छिलके और बीज- उ-२- ख-२ भेजेको पुष्ट कर
(ता है)

^{२२}नारदीन- गर- स्वर जिगरको पुष्ट करता है।

नौशादर- गर- स्वर मोहनको पचाता है- और भेदे और आंतोंसे
सवाद निकालता है।

व.

वरक चांदीके - व-१-स्व१- दिलको पुष्ट और प्रसन्न कर
(नेहै)

वरक सोनेके - मोत दिल और गरमी भी रखतेहैं- दिलको पुष्ट
और प्रसन्न करतेहैं।

य.

याकृत - मोत दिल गरमी और बंडमें-स्व१- दिलको पुष्ट और
प्रसन्न करताहै।

इति सस्यूर्णसः

द्वारेनेकावर्षन

— ८*७ —

रोगीके हाल रक्तु और शरीरके स्थानके अनुसार औषध देनी चाहिये - और जो तस्तु भोजन में खानेके योग्य हों उन्हें भोजन में खागा चाहिये - और जो दवाकी तरह पर खाने पीने और लगाने के लिये हो उन्हें उसी प्रकार से वास्ये अर्थात् जो औषध खाने की हो - इसके लगाने से कुछ लाभ होगा ॥

वह औषधें जो रुधिरके बिगाड़को ठीक करें ॥

चाहे वह बिगाड़ केवल रुधिरमें हो - या किसी और के मिलने से हो ॥

रुधिरके ओंठनेको ठीक करनेवाली औषधें

कासती और काहूके जीन - धनियां गुलाबके फूलकारस - सिक्जवीन - उन्नावचन्दन और केत्रडेकार

गादे रुधिरको पतला करनेवाली औषधें

गान्धुबुस्वरेका पानी - सौंफका धुँवाँ - ग्राहतेर सिक्जवीन - मानल अस्त ॥

पतले रुधिरको गाढ़ा करने वाली औषधें

बिल्लीलीटन-रेहांके बीज-इंसराज-काबिलीहड-ओरवाकी औषधें रुधिरकी ठीक करने वाली यह हैं - विर्मंडंडी-आवनूस और शीशम की लकड़ी-नीमके फूल और पत्ते-नीलोफार गौस्वामफाशेके फूल-गार्जरका शर्वत-मुन्डी-संहदी-कचताल नीलकंठी ॥

पित्तकी ठीक करने वाली औषधें

ईसवगोल-त्रीदाना-कुलफा-कासनी-खीरेकवाडी के बीज-घनियां-सफैदचन्दन-कापूर-काहूके बीज-वनफाशे गालूनीलोफार और चन्दनका शर्वत-कुर्सकापूर-कुर्सतवाशीर सुलय्यन-कुर्सतवाशीर काविज ॥

कफकी ठीक करने वाली औषधें

सौंफ-अनीसून-ठिलीहुई सुलहरी-जीरा-दारचीनी-सुनकके-बालछड-खैरु-खुन्वाजी-इलायची-बिरंजासफा-सूत सीर-माचून फिलासफा-सौरकी माचून-जवारि शजाली नूस ॥

(१५)

सौदाकी ठीक करने वाली औषधें

लहसोडा-गावजवां-खरबूजेके बीज-सुलहरी-इंजीर सुनकके-इफतीमून-कनीचेके बीज-सिकंजबान-इफतीमून माचून सुक्रात-याकूतीवु मली-नोशदारु-मुफरह दिलकुश शर्वत बालंगू-शर्वत गावजवां ॥

(१५)

गाढे मवादको पतला करने वाली औषधें

अवहल-इसकील-चूका-सिरका-उस्तरबुहूस-ह
 व्व विलसान-उकहवान-इंजीर-जुन्दवेदस्तर-राई-करतम
 लहसन-सरकंडेकीजड़-संभालू-बावृजा-दारचीनी-सोथ
 जादा-वज-सूरवाजूफा-कूट-सातर-पोदीना-ज़राबन्द-अज
 वायन-उटंगन-शोरा-अकरकारा सिकावीनज-सुदाव-नम्मा
 म-ईरसा-हुर्मुल-हुफ़-सशकतरामशी-विल्लीलोटन-क
 रदमाना-कमाज़रीयूस ॥

सुंजिशें.

वह औषधें हैं- जो बिगड़े हुये मवादको पकाके नि
 कालनेके योग्य करदे- अर्थात् पतलेको गाढाकरे- जैसे ख
 शखाश और काहके बीज- या गाड़ेको पतलाकरे- जैसे सूखे
 फा और हाशाकाजुशादा- या कड़े और जमे हुये को नरम करे-
 जैसे अलसी और मेश्रीके लेपसे कफ़ और सौदाकी सूजन नरम
 होजाती है ॥

पित्तोकी सुंजिशें.

उन्नाव-गुलावके फूल-जनफशे और नीलोफास्के फू
 ल-शाहतरा-कासनीके बीज और जड़-मकोह-सिकंजवान-सु
 रंजबीन-लालशकर-शर्वत आलू-गुलवान्द आफतावी ॥

कफकी सुंजिशें.

मुनक्के-खैरुके बीज-सौफ़-अनीसून-मुलहदी-

हंसराज. शकार्द- पीला इंजीर- गुलाब के फूल- गुलकन्द-
सिकंजवीन ॥

सौदाकीमुंजिशें

लहसोडा- उन्नाव- गावजवां- बिल्ली लोटन- छि
लीहुई- सुलहटी- हंसराज- उस्त खुहूस- शाहतरा- शकार्द- वादा
वर्द- सौफ- तुरंजवीन- गुलकन्द ॥

गुल्लावोंकी औषधें

यह औषधें बुरे मवादको पैखाने से निकाल देती हैं

पित्तोंके गुल्लाव.

इमली- आलूबुखारा- तुरंजवीन- शीरग्विशत- सनाय
के पत्ते- पीली हड़- वनफुशे और गुल्लावके फूल- कुशूसके बीज
अमलतास- इफसंतीन- सकसूनियां- शाहतरा- सलुआ- लबला
व- शिवरम- साजरीयून ॥

काफके गुल्लाव.

बकायन- कान्दरीयून- माहीजहरज- गारीकून- काल
दाना- तुर्बुद ह सुल- रिन्नसकादाना- विसफायज- कलैजी- शक
कार्द- सीरीसुरजान्त- रेबन्द चीनी- सौंठ- गूगल- वेदइंजीरके बी
जोंकी गिरी और तैल- अमलतास- हब्ब भयारिज- हब्बुसलती
न- फुरफियून- माहूदाना- कुसा उलहिमार ॥

सौदाकेसुल्लाव

इफ़तीसून. उस्त खुइस. चिल्ली लोटन. आमला. लजवर्द. हजर अर्सेनी. काबिलोइड. कालीहड़. सनामवकी. कुशूस. बिसफायज. गारीकून. कालादाना. अयारिजफ़ीकरा. रेवन्दस्वताई ॥

सूत्रलनेवालीओषधें

यह ओषधें पतले और चुरे मवादको सूत्र में निबडलतीहैं ॥

टंडी.

खीरे ककड़ी और कुलफेके बीज. खैरुके फूल. गवर खिराक. कहुककड़ी और तरबूजका पानी. खरबूजे और चिरचिरेके बीज. भलसीके बीज. आशजो. कामनीको पानी और बीज और सजह का कनज. नीबूका अर्क मिलाहुआ. शोरा. सिंकनबीन ॥

गरस

करफमके बीज. सौफ़. मनीसून. त्रिंजासफ़. सूखा शूफ़ा. कवावा. गजवामन. सुहाब. गाजरके बीज. हंसराज. वालछड़. भमलतास. सीताकूट. केसर. तज. तगर. अद्विलसा. न. अवइल. कडके बीजोंकी सींगी. कालेंजी. पीदीना. खुब्जी. चनोंका पानी ॥

मोतदिल.

इंजरज. खरबूजेके बीज- गरम और ठंढी औषधको मिलाके पीना ॥

हैज्रवहाने वाली औषधें

तज. कलोंजी. अबइल. हुरमुल. जुन्दवेदस्तर. चावि. डंग. विरंजासफ. कर्दमाना. वावूना. मीराकूट. कजावचीनी. हंसराज. फारसीयून. अंद. फादानियां. जिन्तयाना. अजवायन. जावशीर. जादा. सुहाब. केसर. तगर. नम्मास. सूखजूफा. करफस. दोनामरुवा. कमाजरीयूस. चुन. मशक. तरामशी. चनेका पानी. अमलतासके छिलके. मोथा वुरमुस ॥

वीर्यनिकालने वाली औषधें

करफस- इफसंतीन- सौंफ- तुमुस- दरमनातुरकी सुहाब ॥

उलटीलने वाली औषधें

{ जोमेदे और उसके आसपाससे मवादके उल्टीमें निकालती हैं }

सूली. सोये. कडुवेबादासका पानी और बीज. खरबूजेकी गड़. विनीछिल्लीमुलइटी. शइद. सिकंजवीन. लालशकर. ननक. गरम पानी. जरजीरके बीज. कुन्दुश. मवीजुज. साउलअरल. भेडकादूध. माजरीयूनके बीज. लाललोबिया अशतरगार ॥

उलटीलानेवालीपुष्टौषधें

कुटकी-राई-जौलुलकै-कंकरजद-जिविलहक ॥

भेजेकीपुष्टकरनेवालीऔषधें

(हंटीऔरतर)

मोती-भासला-बिहीसेबऔरअमरुदकेतानेफूल
गुलाबऔरगुलाबकेफूल-चारंज ॥
गरम

बलादुर-फिल्दक-बिल्लीलोटन-सोद-सोया-चा
लछड़-मुश्क-जद-भम्बर-गालिया-लोग-कुन्दुर-सोरांनअबह
र-जानवरकेभेजे-सुर्मा-तीतर-भेड़केदूध ॥

* औरबाकीयहहैं-इहकासुरब्बा-सेब-बिही-अमरु
द-नाशपाती-फिरंजमुश्क-जायफल-केसर-इस्तखुहूस-चमे
ली-काहूऔरकाहूकेबीज-सपैदचन्दन-दादाम-लजा-शर्ब
तनरंज ॥

हिलकीपुष्टऔरप्रसन्नकरनेवालीऔषधें

(हंटी)

अमरुद-नाशपाती-अनार-आमला-इमली-सेब-
चंदन-वंसलोवन-शिलेमन्वतूम-रैवास-वुसुद-कहूवा-क
पू-गाबजवा-धनियां-गुलाबकेफूल-मोती-नीलोफर-

हड़-याकूत-चांदीकेवर्क ॥

(गरम)

सोनेकेवर्क-उतरुजके छिलके-उस्तरबुहूस-रेशम-
यहमने-विसफायज-विल्लीलोटन-बादरूज-जदवार-दा
स्वीनी-जरकाचूर-दरोनज-केसर-सुम्बुल-सोया-तज-शकाकु
ल-जदगरकी-अम्बर-फिरंजमुशक-फादानियां-इलायची-
लाजवरद-नाना ॥

वाकीयहहैं-छडीला-इजफारुत्तीब-आलू-धनि
यां-सूंगा-सूगेकीजड़-नीलोफर-वजरुलहुम्मास-पान-हड़-
सोसन्त-जद-अम्बर-याकूत-फिरंजमुशक-मुशक ॥

जिगरकीपुष्टकरनेवालीऔषधें

(ठंडी)

कासनी-जरिशक-अनार-और उनकेपानी-लुआव-
ईसब-गोल-शर्वतसन्दल-सिबंजवीन ॥

(गरम)

छडीला-इजफारुत्तीब-जायफल-हम्मामा-हप्पवि
लसान-दारचीनी-गाफिस-लोग-तज-कुशूस-रुमीअस्तगी-
नारदीन-सौफ-कर्कसकेवीज-गुलकन्ड-असली-असानासिय
दवा उलकरवान ॥

और वाकी यह हैं-इफसन्तीन-जरकाचूर-सोया

वरौनज-तगर-इलायची-पिस्ते-जरावंद-विल्लीलोटन-मुन
-गुलाबके फूल-निशास्ता-मेहकाब्रानी-उदहिन्दी ॥

मेदेकी पुष्ट करने वाली औषधें

(ठंडी)

भामला-अनारदाना-सिमाक-बहेडा-
-विहीबंसलोचन-गुलाबके फूल ॥

(गरम)

सरकंडेकीजड़-तुरंजके छिलके-विल्लीलोटन-
-दारचीनी-नरकचूर-सोया-तज-तेजपात-लौंग-
-कुन्दुर-करोया-रुमीसस्तरी-मशकतरामशी
-अदगरकी ॥

वाकी यह है-काचचेमालू-जामन-तगर-गोलमि
रच-कंदिनीकादूध-छडीला-काचनाल-पोदीना-अदहिन्दी
संगदान मुर्गा-दही-हम्मामा ॥

जिगरकी हानिकारक औषधें

३
ठंदापानी-नारंगी-छुवारा-इंजीर^{*}तर-इंजीर^{*}
-सिरुका नितरवाना-जाडोकाशहद-कालीहड
-हब्बुलवान-दारश्रीगवान ॥

मेदेकी हानिकारक औषधें

तिली-ससूर-माउप्रशद्वर-हालसकेबीज-मीठेआलू
उन्नाव-अलसीकेबीज-मुअसफरकेफूल-अदरक-बोरक
इंजीर-साफसिया-जादा-हसरम-हम्मामा-पुरानापत्तीर-
गरमपानी-गौकाची-मिठाई ॥

मेदेकी दीला करनेवाली औषधें

हज्वुलवान-हजरअर्मनी-पैठेकेबीज-सज्जी-लौ
बियेकासाग-नारियलकादूध ॥

भेजेकी हानिकारक और पीडा उत्पन्न

कासेवाली

इजफारुत्तीबकीधूनी-वजरुलवनज-कुन्दुर-गदना-
सोया-लहसन-पिपाज-गैरुकेफूल-सूँघना-ससूर-मेथी-अल
सीकेबीज-वैंगन-मूली-खूबकलां-उतुराज-तूत-इफसंतीत-
पालक-संभालू-सरकंडेकीजड-तदर्व-बुलूत-जादा-मुल्ल
र-जायफल-लुवान-पैवन्देमरियम-झांगू-खशाखाश-इज्जोर
अपतरंगार-काविलीहड-तम्बाकू-सरशफ ॥

पेटकी नरम करनेवाली औषधें

मूली-पालक-करंभ-बिनील-चुकन्दर-गन्धेका

रस. शहदकफ्रसमेत-शफतालू- सिरका अंसिली-इव्युस्सना-
ना-कुलफे और वथुयेका साग. मेडकादूध-वकरीकादूध-
मकवनबहत स्वाजा. तरा. सौफ-हड-सजा-इमली-गुलाब
तुरंजलीन-सौफकीजड़ और भकी-गुलकान्द ॥

पेटवन्द करनेवाली औषधें

वकरी और मेडका कालेजा मुत्ताहुआ-मुत्ताहुआबा
काला-अंजवारकी जड़-जीकासत्तू-कल्लुपाये मुनेहुये-क
नाल्ल-जीरा-सिमाक-रैहांकेबीज-ईसबगोल-कनोचा-वार
तंग-वेलगिरी-इव्युलआस-इलायची-सौफ. अनीसून-निर
स्ता- गिलेअर्मनी-जहरमुहरा ॥

सुहा और बायदूर करनेवाली औषधें

सस्कन्देकी जड़-शाहतरा-गारीकून-सौफ. अफीम.
इफसंतीन-सातर-वसर्वसा-संभानू-नावशीर-कफ्रस. उस्त
रबुहूस-इफतीसून-जिन्नियाना-जीराकिरमानी-ईरसा. अज
वायन-हालों-गानस्केबीज-सौठ-दारफिलफिल-सुहाब-
दारचीनी-केसर-दोनामरुवा-जराबन्द-कवावचीनी-कुश
साइस्पद-अनीसून-अद-तुरमुस-हाशा.सलारस-कानूरीपू
करसना ॥

काकज करनेवाली औषधें

तुरंजके छिलके - संगदानसुरिका

पिस्तेके बाहरके छिलके - जरिशक - इच्चुलवास
 सलौचन - दम्मुल शरववेन - गुलजार - वुसुद - शरवरी
 का - मसूर - बारतग - सरकडेकी जड़ - सरोंके फल - जामनेग
 आमकी गुठलीकी सींगी - मस्तगी - चना - चावल - साई - माजू -
 कुंदुर - तीनमखतूस - ईसबगोल मुनाहुवा - सोनेके बर्की - अम
 रुद - कहरुवा - रेंहांके बीज - निशास्ता - जारुत - गावरस - नार
 दीन - कुनारकी गुठलीकी सींगी ॥

नींदलनेवाली औषधें

स्वशरवाश और पोस्तका तरेडा - स्वशरवाशके फूलस
 घना - सोया सिरहानेरवना - केसर - सुअंसफरके फूल - कनफ
 शेके फूल - हराधनियां - आशजौ - बादामका शीरा - और रोगान -
 रोगानगुल - रोगाननीलोफर - हाथपांवसलना - पानीकी आवाज
 गाना - हवासे पत्तोंके हिलनेकी आवाज - काहूका साग - कजकी
 मिट्टी सोतेहुये आदमीके मुंहपर छिड़वाना - अफीम - तुफाई -
 हस्माना - वावूना ॥

नींदस्वनेवाली औषधें

पोदीना - सिरका - राई - लोंग - सिर और साथे और क
 नपटीपर लगाना - गोलसिरके मुश्कनमक सिरकाकपूर और
 गुलाबके फूल सूचना - अयारिजफाकरा से कुल्लीकरना - फा
 स्वताया बिमगादडकी बीट सिरपर बांधना - चाय और कुनपीन

पोरके माने को सलाई से लगाना - चंद्रमाकी ओर देखना - सि
रका ॥

वह औषध जो मवाद को आरव पर न गि
ने दे ॥

तरबूजके छिलके - कुन्दुर - कारनुल इवलदकीक -
आजन्म - वेगसल बनज - केसर इस्त्रीके दूधमें मिली हुई - च
क्रशा - लज्जलाज - छालियां - तिगियाक फारका - इंजस्त - म
कोड़ - बिही - मसूर - बादरुज - सफेदसंदल - बकायन - फिसक
जरवरद - बकाकिया - जौ - सिमाक - अमरुद - बुसुद - त्रिपा
रसीत - कुतोरान ॥

दृष्टिकी हरिकारक

खारीभोजन - गरम पानी सिरपर डालना - सूजनको दे
खना - बैरी अर्थात् शत्रुको देखाकरना - मसूर - कुलपा - चूका
कारम्ब - काहू - चिरचिरा - गन्दना - विषयकी अधिकता - घूपमें
और आमाके पास बैरना - चमकीली वस्तु देखना ॥

विषयकी चाहनाको पुष्ट करनेवाली औ
षधें ॥

स्वामरुका, उरीकाजचदा - सुर्ग - तीतर - रंज
ली - अल्ले - विडिया - लज्जलाज - गाजर - मूली - अन्न - और जने

- गाय और भेड़ का दूध - गाय का घी - खीर - छुआ।
 - फिन्दक - हल्लु रसमना - पिस्त - चिलगोजा - सालव -
 - कुलीजन - वृजीदान - गोरखरू - बहसन - तोदरी -
 तिल्ली - हाँलो - चिरचिरेके बीज - केवांचके बीजोंकी सिंगी -
 - सूसली अकरकरा - मस्तगी - गंदनेके बीज -
 - झार फिलफिल - स्वशरवाशसपैद - सोठ - उशना - तगर - न
 - बाकला - इच्छुजों - लेंहे कामेल - रेगसाही - साहीरोवि
 - साही सक्कदूर - मुश्क - मोती - चिडियां और अन्हे उसके
 अंगूर - करफस - बसबासा - कतीरा - अखरोट - पनीर - सायसत
 - जिरजीर - हल्लुज्जलम - हींग - सुरंजान - फिल्लक - तज -
 - भेड़के चचेका भेजा - हिलपूतके बीज - लोविया - न
 गिरी - इंजीर ॥

की चाहना की खोनेवाली और हा

निवारक औषधें

- फिंजमुश्क - कासनी - काह - उन्नाब - ईरसा -
 - मडोडफली - धनियां - मकोह - कचचालहसन -
 - काली स्वशरवाश - कपूर - पानी
 पीछे पानी पीना - खटाई - इमली - आलूबुखारा -
 - काय तोड़ने वाली वस्तु - चूका - बकालाय सानि

पोसके माने की सलाई से लगाना - चंद्रमाकी ओर देखना - सि
रका ॥

**वह औषध जो सवाद को आँख पर न गिर
जेदे ॥**

तरबूजके छिलके - कुन्दुर - कारनुल इव लदकीक -
आबचूस - बंजुराल बनज - केसर इस्वीके दूधमें गिलीहुई - क
फ़शा - रुबलाब - छालियां - तिगियाके फारुका - इजस्त - म
कोइ - बिही - मसूर - बादरुज - सफ़ेदसंदल - बकापन - फिजक
जरबेइ - अक्काकिया - जो - सिमाक - अमरुद - चुसुद - त्रिया
रसीत - कुतरान ॥

दृष्टिकी हानिकारक

खारीभोजन - गरम पानी सिरपर डालना - सूरजको दे
खना - नैरी अर्थात् शत्रुको देखा करना - मसूर - कुलपा - चूका
कारम्ब - काहू - चिरचिरा - गन्दना - विषयकी अधिकता - घूपमें
और आगके पास बैठना - चमकीली वस्तु देखना ॥

**दृष्टिकी च्वाइनाको पुष्ट करनेवाली औ
षधें ॥**

सकईजात उरीकानचका - सुरी - तीतर - रंज
ली - वन्दे - डिडिया - मन्त्राग - राजर - मूली - गन्ना - औरतने

लिंगकी बढ़ानेवाली औषधें

कैचुये- अक्रंकरा- सफ़ेद कनेर कीजड कीछाल-
घोंडेके सुम- लोंग- जायफल- दारचीनी- केसर- रोगानजैतचि
तमलना- कर्फ़सके पानीसे कई बार धोना- बकरीके घीसे कई
बार चिकानाना- कैचुये और जोंक सूखेहुये सौसनके तेलमें पी
सकेमलना ॥

भगकी तंग करनेवाली औषधें

घकायन और अनारकीछाल- मौलसिरीकीछाल
कोपीसके कपड़ेमें लगाके रखना- साजूफल- औरकपूर और
शहद मिलाके भगमें लगाना- बबूल- इसफ़ज- कालीतिली
गोरखरू- इसलीके बीज- बीरबहुही ॥

नीचे लिखीहुई औषधों से बच्चा जल्दी

जनाजाता है.

गूगल- तज- गुलनार- बकायनकीछाल- नीलोफर
कीजड- मोथा- वारतंग और सकोहका उसाग- कालीखशवा
मलना- चुस्वक पत्थरका बड़ा टुकड़ा उलटे हाथमें पकड़ना
बुसुद सीधी जांचपर बांधना- दारचीनी- स्वाना- तिलीका
तेल बालसीके लुभावमें मिलाके भगमें लगाना ॥

पौष्टिक
आहार

विषय उत्पन्न करने वाली औषधें

गन्दनेबोबीज-शकाकुल-मीठासुरंजान-काड़के
बीजोंकीसींगी-पियाज-गौकीदूध-कंटनीकादूधचूरासिक
हुआ-वतख-सुरग-हल्बुलस-वृज्जीदान-वहसन-वादा
म-पिस्ता-शलजम-हालों-चना-इन्द्रनी-सुगास-चारिय
ल-तोदरी-अलसीकेबीज-छडीला-तुरंजबीन-सोंठ-मुश्क
केसूर ॥

विषय करने में अधिकतर हराने वाली औषधें:

अफ्रीम-जायफल-वीरबहुडी-पूगल-धतूरेकेबी
ज-भौरपत्ते-खुरासानीअजवायन-लौंग-कालीमिर्च-बस
वासा-केसर-सस्तगी-दारचीनी-सोंठ-कपूर-मुश्क-अकर
करा-बबूलकेफूल-गौमाकेबीज-गिलीकासत ॥

विषय करने में मज़ा देने वाली औषधें

लौंग-दारचीनी-कवावा-अकरकरा-सवीज़नकुच
लकेगौरसोंठशहदमेंभिगोकेधूकेसाथलिंरापरमलकेवि
षयकरना।सिरकेवालपोसकेचमेलीकेतेलमेंमिठाकेलिं
परमलकेविषयकरना-वीरबहुडी-पारा-केसर-कपूर-
कचूरकीबीट ॥

लिंगकी बढ़ाने वाली औषधें

कैचुये- अक्रंरवारा- सफ़ेद कनेर की जड़ की छाल-
घोंडेके सुम- लोंग- जायफल- दारचीनी- केसर- रोगानजैत नि
तमलना- कफ़सके पानी से कई बार धोना- बकरीके घीसे कई
बार चिकनाना- कैचुये और जोंक सूखे हुये सौसनके तेलमें पी
सके मलना ॥

भगकी तंग करने वाली औषधें

बकायन और अनारकी छाल- मौलसिरीकी छाल
कोपीसके कपडेमें लगाके रखना- माजूफल- औरकपुर और
शहद मिलाके भगमें लगाना- बबूल- इसफ़ज- कालीतिली
गोरखरू- इसलीके बीज- बीरबहुटी ॥

नीचे लिखी हुई औषधों से बच्चा जल्दी

जना जाता है.

सूगल- तज- गुलनार- बकायनकी छाल- नीलोफर
की जड़- मोथा- वारतंग और सकोहका उसारा- काचीरखशवा
मलगाना- खुस्वक यत्परका बड़ा डुकड़ा उलटे हाथमें पकड़ना
बुसुद सीधी जांघपर बांधना- दारचीनी- स्वाना- तिलीका
तेल बलसीके लुभावमें मिलाके भगमें लगाना ॥

मरेहुये बच्चेको निकालनेवाली औ०

जराबन्द- भवहल- भलसी- तज- गोलमिस्च-
 वूजीदान- हंसराज- कालीकुठकी- कालाजीरा- माजूपीसके
 पीना- कालीजी- हरीमहंदाकी छाल- चांसके पत्ते भीटाके पी
 ना- पीपलासूल और काली कुठकी पीसके विरोजा मिलाके
 टूंडी पर लेपकरना- पिसाहुआ कुन्दु शशहृद में मिलाके टूंडी
 यापेड पर लेपकरना ॥

मशीसाकी निकालनेवाली औ०

हंसराज- कारम्बके बीज- कचूतरकी वीट- तज- काले
 जी- विरंजास्फ- कुन्दवेदस्तर- ईरसा- पिसाहुआ भवहलरह
 ममें टपकाना- और पीना- वावूना- हव्वुलकली ॥

मसाने और गुरदेकी पथरीकी तोड़ने वाली औषधें.

तगर- विरंजास्फ- समगु गालू- स्वरबूजेके बीज-
 गोरखह- हंसराज- सौफ- कालेचने- इनसल यहूद- संगसस
 ही- हव्वुल किल्त- कहुवावादा म- सोथा- सिकवीनज- वि
 च्छूकी राख ॥

सूजनकीटपकानेवाली औषधें

कामाजरीयूस- गाज- हाशा- जरावन्द- नारवूना
 वज- खरुहरा- इजार जिशान- जादा- जाबगीर- उशकाहस
 राज- जंगली पियाज़- बावूना- विरंजारफ़- सरकाबेकीजड़-
 वाक़ला- तगर- उकहवान- खैरु- जिफ़- बतमकागोंद- ल
 दन- नम्मास- सुलहदी- तुरमुस- कुसाजलहिमार- दीनाम
 वा- गाफिस- किन्ना- फोदना- खुस्त- जुन्दवेदस्तर- आई-
 दारहल्द- खैरी- दाग्चीनी- केकड़ा- सोया- सलुआ ॥

सूजनकीनरसकरनेवाली औ.

गोंद- वैतून- बजरुलवनज- गुगल- मोया- वेद
 इंजीरऔर विनौला और खुरुकातेल- बतककीचवी- नल
 कागूदा- ईसबगोल- खैरुऔर कलौच- जिफ़- इलकुलवात
 म- ईरसा- सलारस- नारवूना- कारम्ब- अम्बर- मोम- मुर-
 लादन- सुक- अलसी- मिहदी- ॥

सूजनकीपकानेवाली औषधें

नारवूना- ईरसा- कारम्ब- बतसकागोंद- अम्बर
 लादन- सलारस- मोम- खैरुके बीज- मुर- सुक ॥

सूजनकीफोडनेवाली औषधें

जंगलीपियानु- गंधक-हरीजाज-इफ्री-पेडोकादूध
कवूतरकीबीट-चक्ता-कूट-फरफियून-सावन-कलकता
र-गन्जार-जरारीह ॥

बुरेसांसकोगलदेनेवालीओषधें

इंजिरुत-उशानन-चमक-सुरदासंग-तांवेकाशु
राद-सपौदा-सैन्दूर-बलीहुईसीपी-जंगार-तूतिया-धूत

साफकरनेवालीओषधें

अवहल-जिफ्र-शोग-चमक मिसरी-आवकास
ईरसा-शहद-गंधक-इब्बजिलसान-इंजरुत ॥

कीडेमारनेवालीओषधें

वाबिहंस-इफ्रासन्तीन-जादा-सूरवानूफा-करो
या-इफ्री-पोदीना-कनीला-गीह-कलौंगी-शफताबूके
ते-तुलसुत ॥

धावकीभरनेवाली

सुर्गा-समगाअलू-इंजरुत-इस्फंज-वकीबुलूत
दस्मुलभववैन जिफ्र अरावन्द-वारवंग-कालाजोरा-
ईरसा सलूआ गिलेभस्वतूम संगजिराहत-राल-कतीर
गुलनार सफदकनार सफदमोम-गोकादूधधोयाहुभा-

लिसानुलडमलकापानी ॥

घाबकीसुखानेवाली

जलीहुईसीपीजीरकुआराभौरघोडेगधेकासुम-
इंजिरूत-छडीला-सुरदासंग-सलुभा-धोयाहुभाचूना-तू-
तिया-सुन्दरूस ॥

नाकसुंहऔरदस्तोंकेरुधिरकोरोकने वालीओ.

दस्मुलअरबवेन-मस्तगी-कन्तूरीयून-सरोकेपाल
धनियां-जरिशक-बुसुद-रसौत-जीरा-कापूर-अंजवारकील
इ-पोदीना-गेरू-बादरूज-सुरमा-बुलूत-वारतंग-कहरू
वा-निशास्ता-अजरुलवनज-शादना-गुलनार-कुन्दुर-मा
हू-गिलेअर्मनी-अरगदकीडादी-पत्थर-रेवन्दचीनी-भाऊ
कापाल-पेठेकेबीज ॥

जुन्कवेदस्तर-साफसिया-सवादकीखेचनेवा
लीहैं ॥

चूरा-गंधकसफेद-राखकापानी-वालउडानेवा
लीहैं ॥

मोम-निशास्ता-कहरूवा-कतीरा-जमानेवालीहैं
इंजिरूत-छडीला-धुलाचूना-तूतिया-सलुभा-ज
लीहुईसीपी-साफकरनेवालीहैं ॥

मकोह-सबगोल-गुलनार-छलियां-धनियां-मवा
दको रोगमाजगह नहीं गिस्ते देती ॥

अफीम-अफरीवीयून-बछनाग-निफ-मारडालने
वाली है ॥

राई-फौदनज-इंजीर-लालानोचानी-लालकरने
वाले है ॥

अफीम-इस्पन्द-कुचला-जर्वकीजड़-शाहूतरेकी
जड़-तम्बाकूके पत्ते और बीज-कुन्दुर-शूकरांन-लोग-धतू
रिकाफल-बजरुलबन्ज-काकनज-यबरूनुस्सनम-सुनक
रनेवाली है ॥

अफीम-बतरकीचरबी-यबरूनुस्सनमकीजड़-
अंडेकी सफेदी-निशास्ता-कतीरा-बबूलकागोद-पीडाके
रोकनेवाले है ॥

उकहुवान-इसतरक-हम्मामा-केसर-सोया-श
कायक-काह-लफाह-शाहसफरम-सुलनेवाले और
सुनकरनेवाले है ॥

तगर-हव्वुलकिल्त-हाशा-शाहतरा-बादाबर्द-
बनफ्रगेकीजड़-हजरुलगाफातीस-फेफडेवोहानिदेती है
तम्बाकू-नकाछिकली-छींकलानेवाली है ॥

बबूलकागोद-निशास्ता-कतीरा-धोयाचूना-चिपक
नेवाली और सुहाउत्पन्नकरनेवाली है ॥

बनीसून-इफीसून-बसवास-गजरके बीज-संम
लू-जावशीर-हम्मामा-दारफिलफिल-कालीमिरच-जीरा
करदमांन-सोठ-नरकचूर-जराबन्द-सुहाव-मोथा-सातर
कन्दर-कारपास-अजवायन-पेठफूलने और वायको लाभ